नया जीवन

अखिलन

9.3
9.3

नया जीवन

मा. प्रिन्टू



cti D ed by eGangotri

नया जीवन एक मर्मस्पर्शी उपन्यास है। अन्याय, भ्रष्टाचार के विरुद्ध सघर्षरत पत्रकार-साहित्यकार की कहानी है। व्यावसायिकता के लिए अपराध, सेक्स विषयक सामग्री लिखने और प्रकाशित करने से इनकार करने पर पत्रस्वामी द्वारा प्रताड़ित और नेहरू-गांधी के आदर्श को स्वीकारते हुए सुख-सुविधा त्यागकर असुविधाओं को स्वीकार करना। स्वतन्त्र रूप से पत्र निकालने का संकल्प। तभी पत्र के लिए अपनी पाप की कमाई समर्पित कर आत्महत्या करती भुवनेश्वरी। संस्कारों, आदर्शों, परिस्थितियों और यथार्थ का अद्भुत सघर्ष।

ISBN 81-7124-023-2

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्री मुमुक्षु भवन
वेदवेदाङ्ग महाविद्यालय
वाराणसी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नया जीवन

(उपन्यास)

अखिलन



विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

NAYA JIWAN

(Novel)

by

Akhilan

1988

अनुवादक

रामलखन मिश्र

ISBN 81-7124-023-2

प्रथम संस्करण : १९८८ ई०

मूल्य : साठ रुपये

प्रकाशक

विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक, वाराणसी

मुद्रक

अञ्जनी मुद्रणालय

के० २०/१८७ राजमन्दिर, वाराणसी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सवाल और जवाब

हम कहाँ जा रहे हैं ? देश कहाँ जा रहा है ?—स्वतंत्रता प्राप्ति के दस वर्षों के भीतर ही सन् १९५७ से ये प्रश्न मेरे अन्दर उठने लगे थे। चोरबाजारी करने वाले, जमाखोर, अंग्रेजी शासन की दुहाई देने वाले जैसे महापुरुषों को खद्दर के कुर्ते पहनाकर 'जनप्रतिनिधि' के नाम पर, तमिलनाड में, चुनाव के लिए खड़ा कर दिया गया था। इतना ही नहीं; सुशिक्षित, सुसंस्कृत और गांधीवाद से लगाव रखने वाले राजनीतिज्ञ राजनीति से अलग कर दिए गये थे।

विवेक, सिद्धान्त, निष्ठा, सेवाभाव और श्रम करने की क्षमता, इन सबकी अपेक्षा अवसरवादिता, पैसे के बल पर नेतृत्व और जाति-नेतृत्व ही राजनीतिक जीवन के आधारभूत गुण मान लिए गए थे। राष्ट्र की वेदना को मैं बड़े ध्यान से देखता-परखता था।

'जैसा राजा वैसी प्रजा' का सिद्धान्त, यद्यपि राजशाही के जमाने का था, फिर भी ऐसा लगता है कि प्रजातांत्रिक शासन से अनभिज्ञ हमारी जनता के लिए वही अनुकूल था। प्रजातंत्र के आधारभूत राजनीतिक सिद्धान्त, आर्थिक विकास, सांस्कृतिक विवेक जैसी भावनाओं को जनता के बीच प्रचारित करने वाली पत्र-पत्रिकाएं जनता को धोखा देने लगीं। पूर्व में, स्वतंत्रता-संघर्ष को ही अपना लक्ष्य मानने वाली पत्र-पत्रिकाएँ, बाद में, स्वार्थ लाभ में लिप्त हो, उसी को अपना एक-मात्र सिद्धान्त मान लिया। पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन के माध्यम से पैसा भी आसानी से मिलेगा और राजनीतिक लाभ भी होगा, ऐसा देखकर बहुत सारे लोग उसी में कूद पड़े और छक्कर खेलने लगे। तमिलनाड में, काले पैसे को लक्ष्य बनाकर, राज-नीति, पत्र-पत्रिकाएं और सिनेमा, तीनों ने एक गुप्त समझौता कर लिया।

वह समय चला गया जब पत्र-पत्रिकाओं के संपादकगण, पूर्ण निरपेक्ष भाव से, किसी से भी भयभीत न हो साहस के साथ जनता को सत्य बताया करते थे। मैं बालकाल से ही, श्री बी.क.टी.एस. चोक्कलिंगम, भारती, पुदुमैपित्तन् और कल्की जैसे पत्र-संपादकों के लेखन को पढ़ता रहा हूँ। जिस जगह पर बैठकर आदमी, आदमी का निर्माण करता था, उस जगह में आकर पैसा बैठ गया और जनता को ठगने लगा। अब, रोज-रोज, सनसनीखेज खबरें, सिनेमा के श्रृंगार-आकर्षण और पुरुष-स्त्री की अंतरंग विलास-क्रीड़ाएं जनता के मध्य फैलाई जाने लगीं। जो लोग अपने को वेदों और शास्त्रों का अध्येता कहते थे, वे लोग भी, इस हीन कार्य में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सगर्व लिप्त हो गए थे । सम्पादकीय लिखने वाले शीर्ष को ही जब बीमारी लग जाय तब क्या देह अंगों का निर्माण कर सकेगी ? मार्ग दर्शक ही जब फिसलकर गिर जाय तब देश कहाँ जायगा ?

प्रजातंत्र की मुख्य जड़ है लेखन की स्वतंत्रता । गणतंत्रीय शासन की रक्षा, उसका विकास और विनाश में इसका बहुत बड़ा महत्व है । देश में, ऐसे राजनीतिक वातावरण का निर्माण, जिसमें जनता का आर्थिक विकास भी और वह साँस्कृतिक जागृति के साथ जी भी सके, पत्र-पत्रिकाओं के द्वारा ही संभव है । पत्र-पत्रिकाओं के पीछे आदमी का महत्व घट गया, पैसे का महत्व बढ़ गया । देश में पैसावाद सिर ऊंचा कर नाचने लगा ।

'जैसी प्रजा वैसा शासन' गणतंत्रीय शासन का यही सिद्धान्त है । जनता की बुराई करने से कोई लाभ नहीं । तमिलनाड में सामान्यतया, जनता के मार्गदर्शक हैं तमिल सिनेमा, लोटे में जल लेकर उनका चरण पखारने वाली हैं पत्र-पत्रिकाएँ । इस सत्य को देश जान गया है । ये पत्र-पत्रिकाएँ, कालेजों में पढ़ने वाले नवयुवक-युवतियों के बीच में 'हिप्पी' संस्कृति और अधकचरे पढ़े लिखे लोगों के बीच में, तमिल सिनेमा-संस्कृति का प्रसार, यहाँ-वहाँ अब भी करती जा रही हैं । पैसे की ताकत दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है, घट नहीं रही ।

गाँधी के जन्म का सौंवाँ साल भी बीत गया । स्वतंत्रता के पुनीत दिन का रजत समारोह का समय भी निकट आ गया है । १९७० में 'कलैमहल' (पत्रिका) में, 'एरिमलै'—ज्वालामुखी——नामक कहानी के माध्यम से मेरी मनोवेदना फूट पड़ी थी । उस कहानी की प्रतिध्वनि, राज्य के कोने-कोने से मुझे सुनाई पड़ी थी । प्रशंसा करने वालों ने बड़े उत्साह से उसकी प्रशंसा की थी; निन्दा करने वालों ने भी जी-भर कर निंदा की थी । 'बहरे के कान में राख फूंकने का समय अब नहीं रहा' ऐसा साहस अब मुझमें पैदा हो गया है । अब मैंने निंदकों को भी समझ लिया है । चिंतन के अनुरूप लिखे गए लेखन को, समझ सकने की क्षमता वाले समझ सकते है; भावावेश में पड़ने वाले लोग भावावेश में पड़ सकते हैं, चिंतन की क्षमता रखनेवाले चिंतन कर सकते हैं—आज नहीं तो कल अथवा दूसरी पीढ़ी में यह किसी रचनात्मक कर्मवीर के हाथों में न पड़ेगी क्या ?

वेश्यावृत्ति के लिए अपनी देह को मूलधन के रूप में लगाकर धन-बटोरने के लिए बाध्य, एक त्याज्य नारी को मैंने जान-बूझकर इसकी नायिका बनाया है । समाज में सम्भ्रांन्त का चोला ओढ़े विचरण करने वाले अनेक लोग उससे भी अधिक तुच्छ हैं । पैसे के लिए अंतरात्मा, कथनी, करनी, आत्मा इन सबका व्यापार करने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वाले व्यभिचारी हैं ऐसे लोग। समाज में, जहाँ-तहाँ, दुष्ट व्यक्ति होते ही हैं। लेकिन, क्या दुष्टों को अपना मार्गदर्शक बनाकर समाज आगे बढ़ेगा? इस उपन्यास में उठाया गया मेरा प्रश्न यही है। गाँधी को मार्गदर्शक बनाकर स्वतंत्रता प्राप्त करने वाला है यह देश। इन पचीस वर्षों में इस देश की ऐसी हालत होनी चाहिए?

गाँधी के त्याग के फलस्वरूप प्राप्त देश की स्वतंत्रता में अपने हिस्से की लेखन-स्वतंत्रता का उपयोग मैं इसमें कर रहा हूँ। इस उपन्यास में मैंने उन्हें ही पुन खोजने का प्रयत्न किया है। उन्हीं की धड़कन के साथ, अंत में धड़कती हुई संघर्ष-भावना उन्हीं के साथ मर गई, ऐसा सोचनेवाले लोग दया के पात्र हैं। जैसे सत्य की हत्या कोई नहीं कर सकता, वैसे ही गाँधी की भी हत्या कोई नहीं कर सकता।

विदेशों से उधार ली गई उपन्यास विधा यहाँ जमकर बैठ गई है। उसकी मैं, न तो पूरी तरह उपेक्षा ही कर रहा हूँ और न ज्यों का त्यों स्वीकार ही करता हूँ। कुछ विशेष व्यक्तियों और उनके आंतरिक व्यवहारों को लेकर उनका गुणानुवाद करना ही, एक विधा है। दूसरी विधा है, समाज कल्याण के नाम पर, इस सिद्धान्त के निर्माता लेखक का मुँह बंद करना। इसलिए, इस उपन्यास के साहित्यिक कलेवर, वस्तु-गठन, संचयन और अंतर्निविष्ट भाव का मूल्यांकन करने वाले अथवा निर्णय देने वाले, इसमें अपने मापदण्ड की कमजोरी ही देख सकेंगे।

इसके पास बड़ी सजगता से आइए। 'ज्वालामुखी' में फूटने के बाद, जिसके सत्यावेश की उष्णता अब भी शीतल नहीं हुई है, ऐसी आग की चिनगारी है यह।

'आत्मा का उद्घाटन ही कला है, सत्य के सौन्दर्य को देखो, बाहरी आँखों को सत्य का रूप असुन्दर जैसा भले दिखाई पड़े, आन्तरिक चक्षुओं से सत्य-सौन्दर्य को खोजो' इस प्रकार, इस माटी में प्रस्फुटित साहित्यिक कला का दिग्दर्शन गाँधी जी ने इस देश के युवक कलाकारों को कराया था। इस उपन्यास में मैंने उसी का परीक्षण करने का प्रयत्न किया हैं। जहाँ तक मेरा संबंध है, गाँधी के साहित्यिक सिद्धान्तों को प्रकाशित करने में संलग्न तमिलनाड की पहली परीक्षा है यह उपन्यास। इन दिनों, जबकि सत्य और असत्य को एक कर, सत्य और झूठ को मिलाकर, जैसे इतर धातु पर सोने का पानी चढ़ाकर सोने की तरह और सोने को जंग लगे लोहे के रूप में प्रदर्शित किया जा रहा है, इनकी असलियत को बताना अपना कर्त्तव्य समझकर मैंने इसे लिखा है।

पत्रिकाओं में स्थान न पाने वाले लेखक ही, खीझकर, मुझे 'पत्रिकाओं में लिखने वाले जन-रंजक लेखक' की उपाधि से विभूषित करने वाले हैं। मैं पत्रिकाओं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में लिखता हूँ, किन्तु पत्रिकाओं के लिए——पत्र-मालिकों की इच्छा-अनिच्छा से सहमत हो——मैंने कुछ भी नहीं लिखा। इस विषय में भी मैं गाँधी जी के कथन को भूला नहीं। 'कला और साहित्य को लाखों लोगों के पास पहुँचना चाहिए।' ऐसा आदेश देनेवाले हैं गाँधी। गाँधी जी एक जनप्रिय नेता थे। इसीलिए, असंख्य लोगों को झकझोर कर, उन्हें संग्राम सेनानी बना सके थे वे। एक कोने में बैठकर 'अति दयालु ब्रिटिश सरकार' को प्रार्थनापत्र देकर स्वतंत्रता नहीं प्राप्त किया था उन्होंने। पत्रिकाओं का पाठक, जन-समूह ही मेरा धन है। मेरे लेखन को समझने की क्षमता रखनेवाले ही समझ सकते हैं।

मेरी स्वतंत्र लेखन भावना की जड़ को शीतल जल देकर, इस राज्य में, मेरे और मेरे लेखन के विकास के मूल कारण हैं 'कलैमहल' के संपादक श्री की० वा० जगन्नाथन् महोदय। 'कलैमहल' में उपजी फसल का ही दूसरी पत्रिकाओं ने उपयोग किया। मैंने भी, अपने पाठकों के पास पहुँचने के उद्देश्य से, उनका उपयोग किया। मेरी लेखन-स्वतंत्रता में टाँग अड़ाने के लिए अभी तक कोई भी आगे नहीं आया। पैसे के लिए लिखने की परिस्थिति मेरे सामने हमेशा बनी रही, क्या इसीलिए चिंतित रहता था ? समय-समय पर दूसरे कार्यों के द्वारा मैं अपनी छोटी-मोटी चिंताओं से छुटकारा पाकर, मैं अब तक अपनी लेखन-स्वतंत्रता की रक्षा करता आ रहा हूँ। मैं सीमित आवश्यकताओं वाला व्यक्ति हूँ। इसलिए अपने लेखन के संबंध में मुझे अपनी स्वतंत्रता को कीमत पर चढ़ाने की आवश्यकता कभी नहीं पड़ी। 'सादा जीवन, उच्चविचार' इस गाँधीवादी दृढ़ता का गर्व मुझमें है।

'कलैमहल' में इस उपन्यास के धारावाहिक प्रकाशन के कारण हैं श्री की० वा० ज०। आज की परिस्थिति में भी, संपादक में होनेवाली सभी विशेषताएँ उनमें एक साथ हैं। उनको पूरी स्वतंत्रता और सम्मान देनेवाले 'कलैमहल' के मालिक श्री ना० रामरत्नम् की भी प्रशंसा करना, इस समय मैं अपना कर्त्तव्य मानता हूँ।

मेरे लेखन के प्रथम प्रशंसक, मेरे लेखन और मेरे जीवन के कल्याण के लिए सद्भावना रखनेवाले 'पारी पुस्तकालय' के, मित्र श्री कण० मुत्तैया ने इसे पुस्तकाकार रूप में प्रकाशित किया। उन्हें भी मेरा हार्दिक धन्यवाद।

मद्रास
२ अप्रैल, १९७३

सप्रेम
अखिलन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नया जीवन



अखिलन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri



CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

१. मानव-कुल का सपूत

सन् १९५६ के जनवरी महीने की पचीसवीं तारीख।

सुबह सात बजे का समय।

मद्रास की 'माउण्ट रोड' का केन्द्रबिन्दु 'रौण्डाना सर्कल' में अभी पूरी गर्मी नहीं आई थी। कुछ और समय बीत जाने के बाद, इसके चारों ओर विभिन्न वाहनों में, लोगों को भागते हुए देखा जा सकता है। तेज गति, हड़बड़ी, धक्कामुक्की, वाहनों के इंजनों का शोरशराबा, 'फुटपाथ की चीख-पुकार—इन सबका मिला-जुला रूप है 'रौण्डाना'।

नगर के ऐसे इस भाग के बगल में ही, इसके ठीक विपरीत, शान्ति और सुन्दरता से भरी एक वाटिका भी है। ऊँचे-ऊँचे सघन पेड़, हरी-भरी झाड़ियाँ-लताएँ और सुन्दर 'लान', ऐसी है वह वाटिका। लम्बी चहारदीवारी से घिरे उस भूभाग को चाहे 'सरकारी इस्टेट' के नाम से कहें अथवा 'माउण्ट रोड इस्टेट' के नाम से कहें, मद्रास के निवासी समझ लेते हैं। इस देश में हमारा शासन हमेशा-हमेशा के लिए बना रहेगा, शायद इस कल्पना के कारण ही, इस देश पर शासन करनेवाले अंग्रेज ने, अब से लगभग दस वर्ष के पहले तक इस 'पार्क' का निर्माण करवाया था।

सर्दी का समय था, इसलिए अभी तक पूरी तरह धूप नहीं खिली थी। 'पार्क' के पेड़ों की डालियों को अपना निवास-स्थल बनानेवाली चिड़ियों का दल पहले ही जगकर, चहल-पहल करने लगा था। अगर पूस महीने की सर्दी न हुई होती, तो इनके भूपाली राग की संगीत-सभा बहुत पहले से ही जम गई होती।

सोती हुई पत्तियों को धीरे-धीरे सहलाती हुई, बाल रवि की किरणें सिरीष के वृक्षों को जगा रही थीं। ओस पिघल-पिघलकर जहाँ-तहाँ बूंद-बूंद टपक रही थी। दौड़ते-फुदकते गिलहरियों के बच्चों का खेल अभी-अभी शुरू हुआ था।

वहाँ, छोटी-सी चहारदीवारी से घिरे एक मकान की बैठक के कमरे में 'टेलिफोन' की घंटी खनखना उठी। उसे उठाने के लिए उस कमरे में कोई न था। घंटी लगातार बजे जा रही थी। बगल के कमरे में कार्य में व्यस्त चिदम्बरम्, तेजी से आ 'टेलीफोन' को उठा लिया, उसका नम्बर बताकर, "कौन ?" पूछा।

"पिताजी कहाँ गए ?"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पूछनेवाले की आवाज पहचानकर, उत्तर देने से झिझकता हुआ चिदम्बरम् एक क्षण मौन रहा।

"क्यों भाँजे ! हमें नहीं पहचाना ? अभी-अभी सोकर उठे हो क्या ? अथवा··· बाहर जाते समय तुम्हारे पिता, उस संबंध में मुझसे भी न बताने के लिए कह गए हैं क्या·······"

इसके बाद उनके हँसने की आवाज सुनायी पड़ी। खुलकर हँसने जैसी आवाज न थी उनकी।

पोन्नइया के प्रश्न और हँसी से वह अचकचा गया। इधर कुछ महीनों से पोन्नइया और उसके पिता रामलिंगम् के बीच विचारों के विरोध की बातें उसे मालूम थीं। फिर भी उसे प्रकट न करते हुए, "नहीं मामा; आपको न बताई जाय, ऐसी कोई बात नहीं है", बोला।

"कहाँ गये हैं ? कब आएँगे ?"

"मदुरई की तरफ 'टूर' में गए हैं। आज शाम को अथवा कल सुबह लौट आएँगे। आते ही बता दूँगा कि आपने 'टेलीफोन' किया था।"

"तुम आफिस कितने बजे जाते हो ?"

"दस बजे वहाँ पहुँच जाना चाहिए, 'विडिवेल्ली' का आज अंतिम 'फरमा' छपना है·····"

"ओहो !" इस आवाज के बाद कुछ देर तक कुछ भी नहीं सुनाई पड़ा। चिदम्बरम् समझ गया कि पोन्नइया कुछ सोच रहे हैं। चौथाई मिनट के बाद उनकी आवाज फिर सुनाई पड़ी; "ऐसा है, तब जाते समय मुझसे मिलकर चले जाना; नौ, सवा नौ बजे घर आ जाना।"

"ठीक है, मामा।"

"दरवाजे पर प्रतीक्षा में बैठे लोगों के साथ बैठ न जाना, सीधे अंदर चले आना। पीछे के रास्ते से भी आ जाओगे तब भी ठीक है। बहुत जरूरी और जल्दी का काम है।" उनके 'टेलीफोन' रखने की आवाज सुनाई पड़ी।

'बहुत जरूरी और जल्दी का काम है' उनके इन अंतिम बातों को चिदम्बरम् कुछ देर तक मन ही मन दुहराता रहा। दो दिन पूर्व, उसके पिता रामलिंगम् भी, अचानक कार से रवाना होने के समय ऐसे ही कहकर गये थे—'बहुत जरूरी काम है।'

रेल में 'रिजर्वेशन' कराकर ही वे प्रायः टूर में जाया करते थे। वहीं बीच-बीच में जीप या कार लेकर घूमते और किसी जगह से रेल में वापस आया करते

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

थे। पूर्व सूचना के बिना, 'आफिस कार' से कहीं भी जाना उन्हें अच्छा न लगता था।

चिदम्बरम् ने घड़ी देखी। सवा सात बजे थे। पोन्नइया की बातों से उसमें जो घबड़ाहट आ गई थी, उससे छुटकारा पाने के लिए मानो, वह पिता की कुर्सी पर बैठ गया। सामने टँगी गांधीजी की फोटो पर उसकी धुँधली-सी परछाईं दिखाई पड़ रही थी।

उसके घुँघराले बाल, बड़ा गोल चेहरा, घनी भौंहों के ऊपर चौड़ा माथा, उभरी नासिका, पैनी दृष्टि और उसके होंठों से ऐसा साफ दिखता था कि वह कुछ समयों में विशेष भावुक होनेवाला व्यक्ति था। वह खद्दर की आधे बाँह की 'शर्ट' और चार हाथ की धोती पहने हुए था। उसकी उमर सत्ताइस अथवा अट्ठाइस के आसपास होगी।

एकाएक उसकी नजर मेज पर रखे, शीशे के फ्रेम के अन्दर एक छपे हुए कागज पर पड़ी। उसमें २६ जनवरी १९५० को प्रकाशित भारतीय गणतंत्र के संविधान के मूलभूत अधिकार छपे हुए थे। उन्हें, उसके पिता, रामलिंगम् शासन के मूलमंत्र कहा करते थे। दूसरे दिन 'गणतंत्र-दिवस' था। वह उस कागज को पढ़ने लगा—

"हम भारत के निवासी, भारत को संपूर्ण प्रभुत्वसम्पन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य बनाने के लिए एवं इसके समस्त निवासियों को सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक स्वतंत्रता एवं समानता का लाभ दिलाने के लिए इस संविधान को आत्मार्पित करते हैं।"

इस छपे हुए कागज के नीचे के हिस्से में रामलिंगम् ने अपने हाथ से गांधीजी का एक वाक्य लिख रखा था। "स्वतंत्र भारत के आर्थिक नियमों के अनुसार, भारत का कोई भी नागरिक, चाहे वह कितना ही निम्न वर्ग का क्यों न हो, भोजन और वस्त्र के लिए दुखी न रहे।"

देश की स्वतंत्रता-प्राप्ति के कुछ महीनों के भीतर ही, एक मजहबी पागल की गोलियों का शिकार बनकर, आर्थिक स्वतंत्रता की प्राप्ति के पूर्व ही, यह महात्मा, शासन को इंगित कर इस लोक से बिदा हो गया था। इस बात को न भुलानेवाले अपने पिता के प्रति विचार कर चिदम्बरम् खुशी से भर गया।

चिदम्बरम् की छोटी बहन, भारती ने, पहले ही धूपबत्ती जलाकर लगा दी थी। गुलदस्तों में ताजे खिले पुष्प, हरी-हरी टहनियों के साथ लगे हुए थे। गांधीजी की फोटो के दोनों ओर, व० उ० चिदम्बरम् पिल्लै, राष्ट्रीय कवि भारती,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्री वी० कल्याणसुन्दर मुदलियार जैसे देशभक्त, स्वतंत्रता-संग्राम-सेनानियों के चित्र लगे हुए थे। उनकी याद चित्रों तक ही सीमित न रह जाय इसलिए रामलिंगम् ने अपने बड़े लड़के का नाम चिदम्बरम्, दूसरी, पुत्री का नाम भारती रख दिया था। सबसे छोटे पुत्र का नाम था सुभाष।

अपना काम समाप्त करने की इच्छा से चिदम्बरम् अपने कमरे में चला गया। उस छोटे-से कमरे में चारों ओर किताबें भरी हुई थीं। झुग्गीझोपड़ियों में रहनेवालों के द्वारा बाँस की खपच्चियों से बनाकर बेचे जानेवाले 'बुक स्टैंड' में विश्व के श्रेष्ठतम धार्मिक लेखकों और वैज्ञानिकों के ग्रंथ रखे हुए थे। पिछली रात लिखा गया 'विडिवेल्ली' का सम्पादकीय और पत्रिका का आवरण पृष्ठ का चित्र मेज के ऊपर रखा था। उसने सम्पादकीय को देखा, उसकी त्रुटियों का सुधार करने के बाद, मुखचित्र को देखकर उसे संतोष हो गया। दोनों को कार्यालय ले जाने के लिए अपने 'बैग' में रख दिया।

उसकी माँ लक्ष्मीअम्मा रसोईघर में, काम में व्यस्त रहतीं। साढ़े आठ बजते-बजते भोजन तैयार हो जाया करता है। सुभाष एक कोने में, 'फर्श' पर अपनी किताब-कापियाँ फैलाये हुए, घुटने मोड़कर झुका बैठा था। शिक्षक ने घर से लगाकर ले आने के लिए जो गणित के प्रश्न दिये थे, उन्हीसे वह जूझ रहा था। उसके लिखने-पढ़ने के लिए, सामने मुनीमजीवाला ढलुआँ 'डेस्क' रखा था, लेकिन वह उस पर ध्यान नहीं देता था। जमीन पर ही झुककर लिखने-पढ़ने में उसको विशेष आनन्द आता था।

चिदम्बरम् कपड़े लेकर नहाने के लिए जा रहा था। उसकी बहन भारती, खिड़की से बाहर देखती खड़ी हुई, कूकती हुई कोयल के साथ उसीकी तरह कू-कू कर रही थी। इसे देखकर वह थोड़ी देर तक ठहर गया। अगर वह खुलकर हँस देता तो बहन के मन की खुशी छिन जाती इसलिए उसको अपनी हँसी दबा लेनी पड़ी। बी० ए० पास, वह लड़की, खिड़की के बाहर, एक पेड़ की डाली पर बैठी कोयल की कूक में साथ दे रही थी। कोयल भी कूक रही थी; वह भी उसीके समान कूक रही थी, बारी-बारी से सुनाई पड़नेवाली 'कू····! कू···!' की आवाजों में कौन कोयल की आवाज थी, कौन उसकी थी, यह चिदम्बरम् की समझ में नहीं आ रहा था।

कोयल को प्रायः चैत-वैसाख के महीनों में ही उमंग उठती है, लेकिन, न जाने क्यों, मद्रास नगर की कोयल की उमंग इस पूस के महीने में भी दबी नहीं रह सकती। उसे सुनकर भारती भी स्वयं को भूल गई।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नल के नीचे खड़े ही, शीतल जल में स्नान करते समय चिदम्बरम् अपनी बहन की हालत पर भावुक हो गया। वह प्रतिदिन, आत्मविभोर हो, सुबह का स्वागत करनेवाली मनोदशा में थी। भारती के हृदय में भरा असीम आनन्द ही मानो, उसको, पंख फैलाकर, कोयल के साथ प्रतिस्पर्धा करने के लिए प्रेरित कर रहा था। उसकी छोटी-सी आत्मा ही मानो, कोयल का रूप धारण कर मधुर संगीत की वर्षा कर रही थी—हाँ, उस समय वह अपने भावी पति राजन् की याद में खोई हुई थी।

राजन्, डॉक्टरी की पढ़ाई समाप्त कर 'हाउस सर्जन' का काम कर रहा था। भारती ने भी कुछ ही महीनों पहले, अपनी बी० ए० की पढ़ाई समाप्त की थी। चिदम्बरम् इस बात को जानता था कि जब घर में कोई नहीं रहता था, उस समय दोनों 'टेलीफोन' पर अंतरंग बातें कर लिया करते थे। चिदम्बरम् को यह भी मालूम था कि घर के बाहर, जब कभी मौका मिल जाता था, दोनों आदमी मिल लिया करते थे। यह बात केवल चिदम्बरम् को ही मालूम थी। एक दिन शाम को, चिदम्बरम् अपने मित्रों के साथ समुद्र के किनारे की ओर गया था, वहाँ एक कोने में दोनों को बैठे बात करते हुए उसने देख लिया था। उस समय उनकी आँखों से ओझल हो, अपने मित्रों से भी इस बात को छिपाकर, उसे बैठने के लिए कोई दूसरी जगह देखनी पड़ी थी।

'कल दोनों आदमी पति-पत्नी बनकर अपना घर बसानेवाले थे। तब इस प्रकार सबसे छिपकर एकान्त में मिलने से मिलनेवाला आनन्द उनको दुर्लभ होगा। इस समय दोनों के मन भावी जीवन की खुशियों से भरे थे। दोनों एक-दूसरे को अच्छी तरह समझ लेने के लिए अगर उत्सुक हैं तो इसमें बुराई ही क्या है?

यद्यपि चिदम्बरम् की उम्र विवाह-योग्य हो गई थी, फिर भी वह उस दिन को टालता ही चला जा रहा था।

एक पुराने, धुंधले स्वप्न का सुखद अनुभव भी इसमें आड़े आ रहा था। इसी कारण से वह अपनी बहन को समझ सका था।

चिदम्बरम् भोजन के लिए बैठ गया। उसको भोजन परोसने के लिए भारती दौड़कर आ गई। सुभाष, अपना सवाल लगाए बिना भोजन करने से इन्कार कर दिया था। उसकी माँ, लक्ष्मी गरम-गरम 'अप्पलम्' तल रही थी।

उसके नाहीं करते-करते, भारती जबरन उसकी थाली में अधिक रखने लगी; उसको रोकते हुए, "पिताजी की बातों को भूल गई क्या?" हँसते हुए बोला।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"छोड़ो भइया !" भारती बड़े प्यार से नाराज होती हुई बोली ।

"भोजन बनाना, 'उत्पादन' कार्य है, परोसने का काम ही 'वितरण' है—सामूहिक वितरण-प्रणाली है। केवल अपने चहेतों को अधिक देना गलत बात है ! समधर्म का भाव यहीं से प्रारंभ होना चाहिए। कल राजन् के आ जाने के बाद तुम्हारा यही हाथ, मैं ऐसा देख रहा हूँ, बड़ी उदारता से उसकी ओर बढ़ जायगा !"

"अम्मा ! इधर देखो भइया को, अम्मा !"

"इसे और अप्पा को भी, तमाम गाँव को उपदेश देने से रोको न !"

"यह सही है, भारती; मैं 'सीरियसली' कह रहा हूँ", चिदम्बरम् ने बात शुरू की। "राजन् के 'हाउस सर्जन' का काम पूरा करने के पहले, तुम भी यहाँ 'हाउस वाइफ' (गृहिणी) की ट्रेनिंग पूरी कर लो। तुम्हारे 'कॉलेज' और इसके बीच में बड़ी लंबी दूरी है।"

"अम्मा, अम्मा !" भारती बनावटी नाराजगी से चिल्लाने लगी ।

"क्यों रे ! उससे क्यों झगड़ रहे हो ? कल जो तुम्हारे पास आनेवाली है उसे पाठ पढ़ा लेना न!" लक्ष्मी ने अपनी बेटी का पक्ष लिया। रामलिंगम् के होने पर ऐसे झगड़े नहीं हुआ करते। उनके न रहने पर ही वह खिलखिलाता रहता था।

भोजन समाप्त हो गया। अपना बैग लेकर चिदम्बरम् चल पड़ा। 'पार्क' की शीतल छाया में वह पाँच मिनट भी नहीं चल पाया। 'एस्टेट' की चहारदीवारी के दरवाजे से बाहर निकलते ही, मद्रास नगर की हड़बड़ी में वह भी फँस गया। चारों ओर भागदौड़, हड़बड़ी। साइकिल, रिक्शा, टैक्सी, मोटर साइकिल, ट्रक, बस आदि वाहनों में लोग बेतहाशा भागे चले जा रहे थे। पैदल चलनेवाले लोग भी कुछ दौड़ते, कुछ चलते, चारों ओर भागे चले जा रहे थे।

भागती चली जा रही एक टैक्सी को चिदम्बरम् ने रोका। उस पर चढ़कर मयिलापुर चलने के लिए कहा।

२. फाँसी का फन्दा

मयिलापुर के दक्षिणी भाग में नये बन रहे मकानों में से एक मकान के भीतर चिदम्बरम् की किराये की कार घुस गई। पोन्नइया का मकान भी किराये का ही था। उनके परिचय के एक आदमी का मकान था। उनके मकान के बाहर, सड़क पर कुछ नई-नई कारें खड़ी थीं। देश की स्वतंत्रता के साथ-साथ, नगरों में, नये-नये मकान, नई-नई कारें और नई-नई झुग्गी-झोपड़ी की बस्तियाँ बढ़ रही थीं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पोन्नइया के मकान के बाहरी बरामदे में, उनसे मिलने के लिए आए लोगों को, चिदम्बरम् ने प्रतीक्षा में बैठे देखा। टैक्सी का किराया चुकाकर वह तेजी से अन्दर चला गया। नगर के बड़े-बड़े लोगों को प्रतीक्षा करने के लिए, बाहर बैठाए रखनेवाला पोन्नइया के 'सेक्रेटरी', वेणु ने अपनी मुसकान के साथ, उसको भीतर चले जाने के लिए अनुमति 'चिट' दे दिया था। पीछे के रास्ते से अन्दर जाने की परिस्थिति उसके सामने नहीं आई।

घर के भीतर जाने पर मालूम हुआ कि वहाँ नाश्ते की तैयारी थी। पोन्नइया, उनका पुत्र और पुत्री, तीनों मेज के अगल-बगल बैठे बड़ी उत्सुकता से नाश्ते की चीजों को देख रहे थे। उनकी पत्नी परोसने में व्यस्त थीं।

"आओ, भांजे ! ठीक समय पर आए हो ! आओ इधर बैठो !" अपनी बगल में रखी कुर्सी की ओर पोन्नइया ने इशारा किया। बाकी तीनों आदमी भी स्वागत में पीछे न रहे। उसके बार-बार कहने पर भी कि वह नाश्ता कर चुका है, उन्होंने उसे छोड़ा नहीं। नाहीं करते-करते थक जाने पर, वह, 'एवर सिलवर' थाली में ले आए गए एक 'दोशे' को धीरे धीरे खाने की कोशिश करने लगा। तेल से तले दोसे, नारियल की चटनी और पिसी हुई मिर्चं थे।

पोन्नइया का शरीर गठीला और कसा था। उनका रंग सागौन के रंग जैसा था। कुछ चौड़ा चेहरा, उभरे हुए गाल और आँखें गोल थीं। लौकी के फूल जैसे सफेद खद्दर का पूरी बाँह का कुर्ता और धोती पहने हुए थे। चौपर्ती तौलिया कंधे पर पड़ी थी। सब कुछ खद्दर का ही था। उनकी उम्र पचास के आसपास रही होगी। छोटे-छोटे बाल। मांसल, कसे हुए शरीर में उनकी नई तोंद थोड़ी बाहर झाँकती हुई दिख रही थी।

जल्दी-जल्दी दोसे निगलकर, काफी पीकर, थाली में ही हाथ धो, तौलिया से हाथ-मुँह पोंछकर पोन्नइया उठ खड़े हो गए। चिदम्बरम् उनसे पहले ही तैयार था।

बड़ी विनम्रता से हाथ में चिटें लिए हुए, वेणु आकर खड़ा हो गया। उसके हाथ की चिटें लेकर, प्रतीक्षा करनेवालों के नाम देखने के बाद, "सबसे थोड़ी देर ठहरने के लिए कह दो; 'टेलीफोन' आए तो उसे भी देख लेना; अभी जल्दी ही आ रहा हूँ" बोले।

फिर चिदम्बरम् के साथ एक छोटे-से कमरे के अंदर घुस गए। एक सोफे पर बैठकर उसे भी बैठा लिया। कुछ समय तक वे कुछ बोले नहीं। उनकी आँखें कहीं दूर देख रही थीं। उनके चेहरे पर झलकते हुए आवेश को चिदम्बरम् भाँप गया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"तुमसे मेरा एक जरूरी काम है" छूटते ही बोले।

चिदम्बरम् को अपने कानों पर विश्वास करने में बड़ी कठिनाई हुई। पोन्नइया से अपना काम करवाने के लिए लखपती लोग बाहर प्रतीक्षा कर रहे हैं। इसके अलावा समूचे देश में कितने ही लोग अपने-अपने कामों की सिद्धि के लिए इन्हीं के भरोसे पर बैठे हैं। 'ऐसी स्थितिवाले व्यक्ति को मुझसे अपना काम करवाने की आवश्यकता आ पड़ी ?'

"मुझसे ?" उसने सन्देहपूर्वक पूछा।

वे कहीं दूसरी जगह देखते हुए, कुछ असंदर्भित बात करने लगे। उनकी आवाज भी, पचीस-तीस वर्ष पुरानी आवाज जैसी लग रही थी।

"तुम्हारे पिताजी के साथ मेरी घनिष्ठता, तुम्हारे जन्म के समय से ही चली आ रही है। तब ये 'रेवन्यू इंस्पेक्टर' थे। इनकी कार्यकुशलता देखकर इन्हें एकदम तहसीलदार बना दिया गया था। उस समय उनकी उम्र तुम्हारी उमर जैसी भी न रही होगी। उस समय तहसीलदारी करना, राजदरबार चलाने के समान था। जमाबन्दी के कारण पूरे इलाके को ही नचाया जा सकता था। उस तहसीलदारी के आदेश को फाड़कर, कूड़ेदानी में फेंक, स्वतंत्रता-संग्राम में कूद कर बड़े-बड़े कष्ट झेलनेवाले हैं तुम्हारे अप्पा··· ····यह सब तुमसे इसलिए कह रहा हूँ कि तुम भी जान लो कि मैं उनकी महत्ता को भूला नहीं हूँ।"

जिन पोन्नइया का मन कभी नहीं पसीजा था, आज उनकी आँखों में पानी की बूंदें झलक रही थीं। चिदम्बरम् बीच में ही बोल उठा, "आप यह सब न भुला कर ही तो, पिताजी को उससे भी अधिक उँचे पद पर बैठाए हुए हैं।"

"केवल यही कारण नहीं है; उनके समान, हमारी जनता के लिए परिश्रम करनेवाला आदमी लाखों में एक भी मिलना कठिन है। इस समय मैं भी इस बात को देखता आ रहा हूँ। उस समय की सत्यनिष्ठा, उन्हें अब भी नहीं छोड़ रही है।

चिदम्बरम् को महान गर्व का अनुभव हुआ। उसके पिता के साथ तीव्र वैचारिक विरोध होने पर भी पोन्नइया उनका इतना अधिक सम्मान करते थे, चिदम्बरम् इस बात को भी समझ गया।

कुछ मिनटों तक पुरानी गाथा समाप्त कर, पोन्नइया सीधे अपने असली मुद्दे पर आ गए।

"मुझे इस बात की चिंता है कि कहीं हम दोनों आदामियों का संबंध-विच्छेद न हो जाय। इसीलिए जो बातें सीधे उनसे कहनी चाहिए थीं, उन्हें तुमसे कह रहा हूँ। उनका सिद्धान्त, लक्ष्य और गांधीयता का नशा मैं कई वर्षों से जानता हूँ। मैं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उनका दाहिना हाथ रह चुका हूँ। लेकिन कोरे सिद्धान्त ही सब कुछ नहीं है; काम सधना चाहिए। यह बात उनकी समझ में नहीं आती।"

"मैं क्या कर सकता हूँ, मामा ?" चिदम्बरम् ने पूछा।

"बात ये है; उनकी देखरेख में चल रहे ग्राम-विकास कार्यक्रम में, मैंने एक आदमी को कुछ काम देने के लिए कहा था। यह पिछले वर्ष की बात है। इनको यह बात उसी समय पसन्द नहीं आई थी। मेरे जोर देने पर ही, उस आदमी को ठीका मंजूर कर दिया था। जैसा इन्हें भय था, इस आदमी ने गलत काम कर ही दिया। शहद उठाने वाला, हाथ चाटने के बजाय, शहद ही चट कर गया। उसने जो कुछ किया, गलत है, इसे मैं स्वीकार करता हूँ। इसके लिए, तुम्हारे पिता उसकी गरदन ही मरोड़ देने की कोशिश में हैं।"

"कुछ जरूरी काम है, केवल इतना ही कहकर चले गए थे, विशेष विवरण मुझे नहीं मालूम।"

"वे कभी बताएँगे क्या ? मुझसे ही बिना बताए चले गए ?" इतना पूछकर पोन्नइया आगे कहने लगे। "हमारे अपने परिवार का कोई आदमी अगर कुछ गलती कर दे तो उसका सिर काट लेना मुझे पसन्द नहीं है। समूचा देश, हमारा बड़ा परिवार ही है। उस आदमी के पास, पैसा, जाति और आदमियों की ताकत है; बाहर प्रतीक्षा कर रहे लोगों में उसके आदमी भी हैं।"

चिदम्बरम् की समझ में अब आया कि वह किस स्थिति में फँस गया था। वह यह भी समझ गया कि यह काम न केवल उसकी उम्र और अनुभव के बाहर की चीज है, बल्कि उसके सिद्धान्तों के प्रतिकूल भी है।

पोन्नइया ने ही आगे बात बढ़ाई।

"उसने जो गोलमाल किया है, वह पचास हजार या एक लाख रु० का है, मुझे ठीक से नहीं मालूम। तुम्हें जान लेना चाहिए कि इसमें मुझे एक कौड़ी की भी लालच नहीं है। इस मामले में अगर मैं उसकी कोई मदद न कर सका तो वह पार्टी में झंझट खड़ी कर सकता है। उसके साथ कुछ भी न करने के लिए, मैंने ऊपरवालों से कह दिया है। नीचे के लोग भी हमारी बात में सहमत रहेंगे। केवल तुम्हारे पिता मामले को न उभाड़ें, बस इतना काफी है ......तुम्हें उनको रास्ते पर ले आना है।"

पोन्नइया, शक्तिशाली पार्टी के प्रमुख स्तंभों में से एक थे। पार्टी के संगठन, विकास और उसको मजबूत बनाने में उन्होंने अपनी जिन्दगी ही खपा दिया है; ऐसा भी कहा जा सकता है। उनके इशारे मात्र से उनके विरोध में खड़े होनेवाले

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

घवड़ा जाते हैं। फिर भी यह बात चिदम्बरम् की समझ में नहीं आ रही थी कि, जो बातें उन्होंने कही हैं, उनको वह अपने पिता के सामने कौनसा मुँह लेकर कह सकेगा। पोन्नइया स्वयं अगर उनसे कहते हैं तब भी वे इन्कार कर देनेवाले आदमी हैं।

अपनी बात समाप्त कर पोन्नइया चिदम्बरम् के चेहरे की ओर इस प्रकार देख रहे थे मानो उसके उत्तर की प्रतीक्षा में हों। वह क्या जवाब दे, चिदम्बरम् को जल्दी कुछ न सूझा। धीरे-धीरे तेज होती हुई पोन्नइया की नजरें उसे वेधने लगीं। पहाड़ से पहाड़ के टकराने पर, बीच में उछलते हुए हिरण की जो हालत होगी, वह उसी हालत में था।

"तुम्हारा क्या जवाब है?" अधीर होकर, पोन्नइया ने उससे सीधे सवाल किया।

"मैं समझ नहीं पा रहा हूँ कि मैं पिताजी से कहूँगा कैसे?"

"ओ·······!" उनकी नजरों की गर्मी उनकी आवाज में उतर आई। झट से तौलिया 'झाड़कर', कंधे पर रख, उठकर खड़े हो गए। उसके चेहरे पर नजरें गड़ाए हुए ही कहने लगे, "वे चाहे जो भी लिखें, होगा वही जो होना है। मैं सोचता हूँ कि संबंध बिगाड़कर शत्रुता बढ़ाना ठीक नहीं है। फिर तुम्हारी इच्छा।"

चिदम्बरम् सोचने लगा कि उसे दूत का काम सौंपा गया है। उसे आदर, सम्मान, संबंध सब छोड़कर इच्छा या अनिच्छा से पूरा करना है, ऐसा चाहते हैं ये। उनके उठ जाने के बाद वह सोफे पर कैसे बैठा रह सकता था?

सामने खड़े चिदम्बरम् के कंधे को पोन्नइया ने धीरे से पकड़ लिया। चिदम्बरम् समझ गया कि वे पुनः कुछ प्यार प्रदर्शित करेंगे। पोन्नइया ने कुछ और नजदीक आकर, आहिस्ते से उसकी गर्दन में हाथ डाल दिया।

"केवल मेरी बात उनसे कर देनेभर से काम न चलेगा। 'टेलीफोन' पर मैं ही उनसे कह दूंगा। तुम्हें उनको ठीक रास्ते पर ले आना है। तुम काफी पढ़े-लिखे हो। पत्रिका का सम्पादकीय लिखकर न जाने कितने लोगों को अपने अनुसार मोड़ देने में सक्षम हो। अब तुम्हारी क्षमता के लिए एक चुनौती है।"

उसके गले में पड़ा उनका हाथ, चिदम्बरम् को फाँसी के फंदे जैसा लगता था। पिंजड़े में फँसे मूस की तरह बन गया था वह। जिस बात को उसका ही मन स्वीकार नहीं कर रहा था, उसी बात पर अपने पिता को वह कैसे राजी कर सकता था? उसकी आँखें घूम गईं। चिदम्बरम् का दम घुटने लगा।

"मैं उस आदमी को, किसी भी तरह बचाने के लिए वचन दे चुका हूँ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मेरी बात की रक्षा की जिम्मेदारी तुम दोनों पर है" कहकर, अपना हाथ खींचकर, पोन्नइया ने उसे मुक्त कर दिया।

"मैं चलता हूँ, मामा !" उसने हाथ जोड़कर नमस्कार किया।

"तुम्हारे पिता को तो परिवार की कभी चिंता नहीं रही। अपने परिवार की जिम्मेदारी अब तुम्हें ले लेनी चाहिए। उस आदमी के पक्ष में जितनी सिफारिशें आई हैं उनमें तुम्हारी पत्रिका के मालिक की भी सिफारिश है। यह सब सोचकर ही मैंने तुम्हें बुलाया था।"

वह झिझकता हुआ खड़ा था, इसे पूरी तरह जैसे भूल गये हों, 'मैं चलता हूं !' कहकर वे तेजी से बाहर चले गये।

चिदम्बरम् सड़क पर आकर, अपने कार्यालय जाने के लिए, 'टैक्सी' ढूंढ़ने लगा। उस क्षेत्र में 'टैक्सी' मिलना मुश्किल काम था। वह 'बस स्टाप' की ओर तेजी से बढ़ गया। उसको लग रहा था जैसे फांसी का फन्दा उसका पीछा कर रहा हो।

३. विडिवेल्ली

तमिलनाड के पत्र-जगत् में 'विडिवेल्लि' का अपना एक इतिहास है। इस देश के स्वतन्त्रता-संग्राम का इतिहास और 'विडिवेल्ली' का इतिहास, दोनों एक-दूसरे से सम्बद्ध हैं। उसको प्रकाश में ले आनेवाले कवम के बहादुर गोपालन् अब इस संसार में नहीं हैं। किन्तु उनका प्राण, मन और उनकी आत्मा की धड़कन, उनके समय की 'विडिवेल्ली' में चली आ रही है।

जिस आदमी के सामने एक लक्ष्य हो, तथा उसकी प्राप्ति के लिए अथक श्रम, क्षमता हो, यदि पहाड़ भी आकर उससे टकरा जाय, तब भी वह निराश न हो और उसकी दृढ़ता बनी रहे, तो कोई भी शक्ति उसको कुचल नहीं सकती। गोपालन् इस बात के सफल उदाहरण थे। विदेशी शासन के पंजे में फँसा लेखन-अधिकार छटपटा रहा था, हाथ में एक कौड़ी भी न थी; ऐसी परिस्थिति में भी गोपालन् ने अपनी लेखनी और अपने मित्र, तुरैसामी की निर्वाह-क्षमता पर विश्वास कर, पत्रिका प्रारम्भ की थी। हाँ, उस समय, पैसा और शक्तिशाली यंत्र-साधना की अपेक्षा सत्यनिष्ठ आदमी का महत्त्व अधिक था।

'विडिवेल्ली' की रणभेरी, केवल राजनीतिक दासता के विरोध में ही नहीं बजी थी; वह मात्र आर्थिक संघर्ष के साथ भी न रुकी थी। सदियों से जिसके चिंतन और आत्मा में घुन लग गया था, ऐसे तमिल जन को उसने साहित्य, कला

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और संस्कृति का नया प्रकाश दिया था। कलश के दीप के समान भुला दिये गये, योग्य व्यक्तियों को, हर क्षेत्र से खोज-खोजकर, गोपुरम् के ऊपर बैठाकर सम्मानित किया था। काल-चक्र की गति के कारण गोपुरम् पर चढ़कर, आनन्द मनानेवाले बंदरों की पोल जनता के सामने खोलने में भी वह न चूकी थी।

सशक्त अंग्रेजी शासन की बंदूक की नोक, अपना प्रहार और अपनी कृपा के बल पर धन बटोरनेवाले छद्मवेशधारी लोगों का पोल खोलनेवाले कार्यों को देखती-सहती, यों ही चुप बनी रह सकती थी क्या? उनको दबाने के लिए अनेक प्रकार के बाण सनसनाते हुए आने लगे—राजद्रोह का अपराध, मुकदमे, लूट-खसोट, गुप्तचर पुलिस की झंझटें, कारागार—इस तरह की कितनी ही परीक्षाएँ गोपालन् के सामने थीं। किन्तु इन परीक्षाओं के विरुद्ध, उनके लेखन को पढ़नेवाली जनता, उनके पीछे एकत्रित होने लगी थी।

एक बार, जब अथक परिश्रम के कारण वे अस्वस्थ थे, उन्हें एक वर्ष का कठोर कारावास दिया गया। उनके समय की जेल की कोठरियाँ, भयंकर अपराधियों के लिए बनाई गई थीं। उन पर नजर रखनेवाले अधिकारी भी, उन जैसे लोगों को दबाने-कुचलने के काम में अभ्यस्त थे। उनके स्वास्थ्य की जैसी हालत थी, उसे देखते हुए, गोपालन् को विश्वास न था कि वे, वहाँ से जीवित बाहर निकल सकेंगे।

यह उनका अंतिम सम्पादकीय होगा, ऐसा सोचकर उन्होंने इस प्रकार लिखा था :

" 'धर्म करो' इस नीति-वाक्य को हम प्राचीन काल से पढ़ते और कहते चले आ रहे हैं। लेकिन यह हमारे जीवन-व्यवहार की आधारभूत नीति है, हमें इस बात का एहसास करानेवाला है कौन? मन, वचन और अपने जीवन के प्रत्येक कार्य से इसे प्रत्यक्ष करनेवाला कौन है? वह है वृद्ध गांधी। अपनी लेखनी से, जिसे मैं सत्य समझूं, लिखने के लिए, मुझे प्रेरित करनेवाले वही हैं। मेरे लेखन के लिए पुरस्कारस्वरूप, मुझे एक वर्ष का कठोर कारावास दिया गया है, अंग्रेजी शासन है....मैं चलता हूँ। मेरा जन्म गुलाम माटी में हुआ था, लेकिन मरते समय मैं स्वतंत्र माटी में मरूँ ऐसी मेरी आकांक्षा है...हो सकता है कि वह अवसर मुझे न मिल सके, लेकिन आप लोग निराश न हों, स्वतंत्रता की फसल, सबसे पहले अपने हृदय में उगाइए। इस मिट्टी में मिलनेवाले मुझ जैसे लोगों की हड्डियाँ और मांस, उसके लिए खाद का काम करेंगी!"

उनकी देह स्वतंत्र माटी में विलीन हो, उनकी यह आशा निष्फल नहीं गई। उन्हें एक वर्ष का कारावास देनेवालों को जेल के अन्दर ही उन्हें मार डालने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

का साहस नहीं हुआ और पाँचवें महीने में ही उन्हें मुक्त कर दिया गया। हाथ में एक पैसा भी न रखनेवाले उन सम्पादक की चिकित्सा, चारों ओर से आनेवाले डॉक्टरों ने किया। वे, वो दिन थे जब पैसे को धूल के समान और आदमी को आदमी मानने का संस्कार सर्वोपरि था।

स्वस्थ होने के बाद गोपालन् पुनः अपने लेखन के द्वारा सत्य की चिनगारी बिखेरने लगे।

इस प्रकार, गांधीयता की चुंबकीय शक्ति पहले-पहल उसको समझनेवाले मार्गदर्शकों के मध्य उत्पन्न हुई। कॉलेज और स्कूलों के शिक्षक, वकील, डॉक्टर, कवि, लेखक, पत्र-संपादक आदि लोग इसकी ओर आकर्षित हुए। इनको राह दिखानेवाले छोटे नेताओं के द्वारा तमाम साधारण लोगों के बीच में इसका प्रकाश फैल गया। अंधकूप में गिरे-पड़े तमाम अंधों को भी इसने चेतना प्रदान किया। अशिक्षित जनसमूह, किसान, कल-कारखानों में काम करनेवाले मजदूर, छोटे-मोटे धंधों के द्वारा जीविका चलानेवाले जैसे लाखों लोग नया जीवन पाकर सिर ऊँचा कर खड़े हो गये।

'गाँव में एक भी भला आदमी होने पर, पूरे गाँव के लिए वर्षा होती है' इस तमिल वाक्य की गहराई को अनेक लोगों ने समझा। 'देश के सम्पूर्ण गाँवों को मिलाकर भी देश नहीं बनता, जहाँ योग्य और आदर्श पुरुष होते हैं वही देश कहा जाता है' यह प्राचीन कवि की पुकार, उस समय, अशिक्षित जनता के हृदय में भी प्रतिध्वनित होने लगी थी।

अंग्रेजी शासन से भीख में प्राप्त पैसे के बल पर, विलासिता का जीवन व्यतीत करनेवाले और ऊँची-ऊँची पदवियों से चिपके रहने के लिए, जन-आन्दोलन को कुचलनेवाले गांधीयता की साँस लेनेवालों के झूठे भक्त बन गये थे। धोखेबाज लोगों को समाज में कोई सम्मान नहीं मिला। जिन्होंने अपना स्वार्थ भूलकर, गरीबों के जीवन को ही जिन्होंने अपना जीवन समझा ऐसे लोग नेता के रूप में सिर उठाकर चलते थे।

ऐसी स्थिति के फलस्वरूप इस धरती पर, संसार का एक महान् आश्चर्य हुआ। संसार के किसी भी भाग में, किसी भी समय में ऐसा महान आश्चर्य नहीं हुआ था।

'अहिंसा परमो धर्मः' सैकड़ों वर्ष पूर्व, ऐसी आवाज देकर एक महापुरुष संसार से विदा हो गया था। बुद्ध और महावीर उक्त सिद्धान्त को जीवन-मार्ग बनाने के लिए प्रयत्नशील रहे किन्तु स्वयं सफलता न पाकर उसकी आधारशिला

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रख गये थे। दक्षिण में वल्लुवर भी, 'अपरिग्रह और सत्यनिष्ठा धारण करो' ऐसी घोषणा कर गए हैं। किन्तु ये लोग मिलकर भी जिस स्वप्न को कभी साकार न कर सके थे, उसे साकार करने के लिए, इस धरती पर बीसवीं सदी में एक महापुरुष का आविर्भाव हुआ। हमारे काव्य और पुराण कल्पना के द्वारा भी, जिस पुरुष की रचना न कर सके थे, वह महापुरुष अपरिग्रह और सत्यनिष्ठा के बल पर स्वतंत्रता-संग्राम में विजयी हुआ। देवों की तरह पूजे जानेवाले हमारे काव्य-नायकों ने भी, शस्त्रों और सेनाओं के बल पर ही शत्रुओं पर विजय पा सकी थी। संसार के इतिहास में जितनी भी राजनीतिक क्रांतियाँ हुई हैं सब हिंसा के द्वारा ही हुई हैं। राजनीतिक क्रांति के इतिहास में, इसके पूर्व कभी भी न दिखाई पड़नेवाली, न सुनाई पड़नेवाली नई राह, गांधी ने दिखा दिया था।

उनके अनुयायियों को उस समय क्या मिला था?—लाठियों का प्रहार, घोड़ों की टापों के नीचे कुचला जाना, कारावास, सम्पत्ति का अधिग्रहण, संन्यास-जीवन, वंदूक की गोलियाँ, फाँसी का फन्दा, उपवास, भूख, भय···

अन्त में हुआ क्या?

सन् १९१९ में दुर्ग जैसी दीवारों से घिरे प्रांगण में एकत्रित जनसमूह को, दरवाजा वंद कर, जब तक वंदूक में गोलियाँ रहीं तब तक, गोलियों से धराशायी कर देनेवाले, सड़क पर लोगों को जानवरों की तरह, हाथ-पैर के बल चलने के लिए बाध्य करनेवाले—१९२८ में पंजाब-केसरी लाजपतराय के सिर और सीने पर लाठियों का प्रहार कर और उनकी खोपड़ी फोड़ देने वाले,—१९४२ में पुरुषों के ऊपर सेना झोंककर, स्त्रियों का सतीत्व लूटनेवाले—विमानों से निहत्थे लोगों पर बम बरसानेवाले—गांधी को पकड़कर, गुप्त स्थान में ले जाकर, उपवास के द्वारा चुपके-चुपके मार डालने का षड्यंत्र रचनेवाले—अंत में वही लोग अपने शत्रु गांधी से, जिसके मुख में हमेशा हँसी दिखाई पड़ती थी, हाथ मिलाकर विदा होने के दृश्य को विश्व-इतिहास में, केवल इसी धरती ने देखा था।

"किसी व्यक्तिविशेष और किसी भी धर्म के साथ मेरा कोई विरोध नहीं है, बुराई जहाँ कहीं भी है, जिस किसी रूप में है, मैं उसका विरोध करता हूँ" ऐसा कहनेवाला और अपने कार्यों के द्वारा उसे प्रकट करनेवाले ऐसे महान् नेता को पूरे मन से गले लगाकर, विदेशी शासन का अंतिम प्रतिनिधि विदा ले चला गया था।

देश की राजनीतिक स्वतंत्रता मिल गई थी। जनता में अपार आनन्द था। वे गा रहे थे, नाच रहे थे और स्वतन्त्रता का आनन्द धूमधाम से मना रहे थे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

परीक्षा समाप्त हो गई, अब साधना पर ध्यान लगाना संभव होगा, ऐसा विश्वास था, गोपालन् का। स्वतंत्रता-प्राप्ति के कुछ महीनों के भीतर ही उनके इस विश्वास की परीक्षा का समय आ गया। वह परीक्षा और किसी दूसरी जगह से नहीं आई, पत्रिका का निर्वाह करते आ रहे उनके मित्र तुरैसामी के रूप में ही वह आई थी।

" 'विडिवेल्ली' का काम समाप्त हो गया, स्वतंत्रता का सूर्य निकल आया; अब 'विडिवेल्ली' का यहाँ कोई काम नहीं" इस प्रकार अपनी बात आरंभ कर, तुरैसामी ने, "जन साधारण के बीच में आपका बहुत सम्मान है, आप मंत्रिपरिषद् में शामिल होकर, शासन-कार्य देखिए; मैं भी किसी लाभकारी उद्योग पर ध्यान दूँगा" ऐसा कहकर अपनी बात समाप्त कर दी।

"अगर हमारा उद्देश्य केवल राजनीतिक स्वतन्त्रता होता, तो जैसा आप कहते हैं। वैसा कर सकते थे, लेकिन देश में, इस पत्रकारिता के उत्तरदायित्व के कर्तव्य-निर्वाह का समय यही है।"

तुरैसामी इन बातों पर कान न दे, अपनी ही बात बड़े उत्साह से कहे जा रहे थे। संपादक गोपालन् कहते थे कि अपने लेखन को कार्यरूप में परिणत करने के लिए सुनहला अवसर मिला है। इसे तुरैसामी को इन्कार न करना चाहिए। जिस पत्रिका का उन्होंने अभी तक निर्वाह किया, एक उद्योग के रूप में उसके निर्वाह में मदद देनी चाहिए।

अर्थशास्त्र के अनुभवी, चतुर तुरैसामी स्वतन्त्रता का अर्थ खाना, कपड़ा और मकान ही मानते थे। उनका विचार था कि पश्चिम में होनेवाली औद्योगिक क्रांति को ज्यों का त्यों आयात कर लेने पर यहाँ शहद और दूध की नदियाँ बहेंगी। अपने चहेते लोग उस नदी में जी भरकर तैरने का आनन्द ले सकेंगे; जी भरकर पी सकेंगे; मोटे हो सकेंगे!

तुरैसामी जैसे लोगों को ही जब स्वतन्त्रता का अर्थ नहीं मालूम, तब देश के करोड़ों अशिक्षित लोग उसे कैसे समझ सकते हैं, गोपालन् को इस बात की चिन्ता थी।

"तुरैसामी! स्वतन्त्रता, संसार को मिलनेवाली एक नवीन जीवन-पद्धति है। यह वह प्रणाली है, जिसमें जनता छल-कपट, धोखाधड़ी से मुक्त हो, कर्तव्य-परायणता और हृदय की पवित्रता तथा कुशलता के साथ स्वयं अपने ऊपर शासन कर सके। यह एक मार्ग मात्र है। इस मार्ग पर चलने के लिए जनता को, हमें उनके कर्तव्यों और अधिकारों का बोध कराकर उनमें जागृति पैदा करनी होगी। दूसरी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ओर, जनता का नेतृत्व करनेवालों पर भी, हमें जनता की ओर से, नजर रखनी पड़ेगी। स्वतंत्र देश का राजदंड, सम्पादक की लेखनी ही है। वह, अगर इसका उपयोग गलत तरीके से करता है, अथवा बन्द कर रखता है तो देश में भेड़ों का झुण्ड ही पैदा होगा। भेड़ों को व्यवस्थित रखने के लिए हाथ में बंदूक लिए, पुनः कोई कहीं से आ जायेगा।"

तुरैसामी, विद्यार्थी बनकर, सम्पादक गोपालन् से शिक्षा लेने के लिए नहीं आए थे। वे पहले से ही अपने अन्दर एक निश्चय लेकर आए थे। यदि सम्भव हो सका तो गोपालन् को राजनीति में खींचकर, स्वयं कोई दूसरा उद्योग देखेंगे, यदि ऐसा न हो सका तो वे अकेले ही पत्रिका छोड़ देंगे।

"अगर ऐसा है तो मुझे 'विडिवेल्ली' से छुट्टी दे दीजिए" तुरैसामी ने दृढ़ता से कहा।

गोपालन् स्तब्ध रह गए। दोनों का चोली-दामन का साथ था। यदि गोपालन् पत्रिका के प्राण थे, तो तुरैसामी उसके शरीर थे। जब भी गोपालन् जेल गए, तुरैसामी उसकी रक्षा करते रहे हैं। इसके अलावा, उनके बाद, पत्रिका के संचालन को बनाये रखने के लिए उनके कोई संतान भी न थी। 'विडिवेल्ली' मात्र उनकी एक सन्तान थी।

"अपने जीवन तक हम दोनों को इससे जुदा न होना चाहिए", गोपालन् ने कहा। "इसके साथ-साथ, आप अपनी रुचि का कोई दूसरा काम भी देखते रहिए। दिन-प्रतिदिन का काम जिसे आप देखते हैं, कोई दूसरा आदमी देख लेगा। संपादकीय विभाग मैं पूर्ववत् देखता रहूँगा। अब मुझे जेल जाने की भी कोई स्थिति आनेवाली नहीं है।"

तुरैसामी ने विचार किया। उन्हें लगा कि यह भी एक तरह से अच्छा ही रहेगा। भविष्य में जनता में शिक्षा का अधिक प्रसार होने की संभावना है। पत्रिका-व्यवसाय भी एक लाभकारी व्यवसाय हो सकता है। सामर्थ्य के अनुसार, एक, दो, तीन, यहाँ तक कि यदि दस व्यवसाय भी हों तो अच्छा ही है। एक में यदि घाटा भी होगा तो दूसरे से मदद मिलेगी।

"मैं इससे सहमत हूँ। लेकिन आप अपना अवसर छोड़ते हैं, यह मुझे पसंद नहीं है। यदि आप चुनाव में खड़े होते हैं, तो आपके विरोध में कोई दूसरा खड़ा नहीं होगा। अगर आप कुछ जिम्मेदारी सँभाल लेते हैं तो इससे मेरा भी कुछ प्रयोजन सिद्ध होगा।"

तुरैसामी अगर कहते कि 'देश का प्रयोजन सिद्ध होगा' तो गोपालन् को प्रिय लगता। 'देश' का तात्पर्य है 'हम'; वह बदलकर 'मैं' हो गया था।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है, मेरे लिए इससे बढ़कर कोई दूसरा काम नहीं है। यदि हम राजनीति को ध्यान से देखें तो, किन्हीं-किन्हीं जगहों में कलम की महत्ता दिखाई पड़ती है, और कहीं बंदूक की। स्वतंत्रता की मुख्य जड़ कलम ही है। मैं लेखन से ही जीना चाहता हूँ, और लिखते हुए ही मरना चाहता हूँ। इसकी अपेक्षा मैं किसी भी पदवी को श्रेष्ठ नहीं समझता।"

इसके आगे तुरैसामी से वहाँ न रहा गया, उन्होंने विदा ले ली। अब सेवा करने का समय समाप्त हो गया, पैसा बनाने का समय आ गया है, ऐसा सोचनेवाले वे, क्या पागल थे कि सम्पादक की इन बातों को सुनें ?

लेखा-कार्य करनेवाले को और दूसरे काम भी समझाकर, तुरैसामी, पत्रिका के दिन-प्रतिदिन के काम से छुट्टी पा गए। हजारों और लाखों की राशि का वारा-न्यारा करनेवाले उद्योगों की खोज में, और उनके लिए आदमी और राजनीतिक मदद की खोज में वे घूमने लगे। किसी की भी कार को अपनी स्वयं की कार मानकर, पचास मील की गति से वे चक्कर लगाने लगे।

कुछ दिनों में ही गोपालन् समझ गये कि उनके मित्र उनसे जुदा हो, काफी दूर चले गये हैं। पत्रिका की जिम्मेदारी से गोपालन् की कमर टूट गई थी। संपादकीय विभाग में, यद्यपि पहले से ही कई सहायक थे, फिर भी अपनी जगह भरने के लिए, वे एक नवयुवक की तलाश में थे। उन्हें एक सिद्धान्तवादी और लेखन में क्षमता रखनेवाले व्यक्ति की आवश्यकता थी।

उसी समय चिदम्बरम् ने, अपनी एम० ए० की पढ़ाई समाप्त कर, एक निबंध लिखकर, डाक से गोपालन् के पास भेज दिया। उसे पढ़कर गोपालन् को अपार खुशी हुई। उन्होंने उसे प्रकाशित कर दिया। बाद में एक और निबन्ध आया। उन्होंने, उसको, स्वयं आकर मिलने के लिए लिख दिया।

उनके पत्र को साथ लिए चिदम्बरम् आया। उसको अपने पास बैठाकर, "बेटा ! तुमने केवल किताबें ही नहीं पढ़ी हैं, देश पर भी तुम्हारा ध्यान है, भलीभाँति विचार कर, बड़ी संवेदनशीलता से लिखते हो" जी भरकर उसकी प्रशंसा की।

लेखन-जगत् के हिमालय के पास बैठना ही उसको रोमांचित कर दिया। उनकी प्रशंसा के कारण उसको इस प्रकार का आनन्द मिला जैसे वह हवाई जहाज में बैठकर ऊपर उड़ रहा हो।

"शासकीय पद के लिए कहीं दरखास्त दी है तुमने ?"

२

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"नहीं ! कॉलेज में शिक्षक-पद के लिए प्रयत्न कर रहा हूँ।"

"एम० ए० किस विषय में किया है?"

"राजनीतिशास्त्र, अर्थशास्त्र, इतिहास।"

"शासकीय काम में जाने से पदोन्नति के अवसर, अधिक वेतन, सेवा की सुरक्षा सब कुछ मिलेगा, है न !"

"मुझे शिक्षक का कार्य ही सबसे अधिक प्रिय है। मैंने जो कुछ पढ़ा है उसे दूसरे विद्यार्थियों को भी बता सकूँ, ऐसी मेरी इच्छा है।"

"यदि मैं पत्रिका के सह-सम्पादक का कार्य दूँ तो क्या उसे स्वीकार करोगे? यहाँ कॉलेज-शिक्षक के वेतन के समान वेतन नहीं मिलेगा। इस समय मैं तुम्हें केवल डेढ़ सौ रुपये दे सकूँगा। बाद में तुम्हारी क्षमता और पत्रिका की सुविधा के अनुसार अधिक देने का प्रयत्न करूँगा।"

चिदम्बरम् को अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ। सम्पादक गोपालन् के सान्निध्य में काम सीखने के लिए मिलनेवाले अवसर को उसने बहुत बड़ी उपलब्धि समझा।

"इसी समय स्वीकार करता हूँ।"

गोपालन् ने चिदम्बरम् के पिता रामलिंगम् से 'टेलीफोन' पर बात की। "आपकी इच्छा है और उसकी भी सम्मति है तो मुझे कोई भी आपत्ति नहीं ! अब वह भी सयाना हो चुका है।" उसके पिता ने कहा।

चिदम्बरम् के काम में आने के एक वर्ष के भीतर ही उन्हें उस पर पूर्ण विश्वास हो गया। गोपालन् को इस बात की चिन्ता न थी कि उनके परिवार में उनका कोई वारिस न था, 'विडिवेल्ली' को एक वारिस मिल गया था इस बात की उन्हें विशेष खुशी थी। उसका काम भी बढ़ता चला गया; उसका वेतन भी बढ़ता चला गया। वह दो वर्ष के भीतर ही गोपालन् के बाद दूसरे स्थान पर पहुँच गया था।

बीमारी के कारण गोपालन् चारपाई से न उठ सके। आँखें मूँद लेने के एक दिन पूर्व उन्होंने चिदम्बरम् से जो कुछ कहा था वह इस प्रकार है :

"वर्तमान समय में अपने लिए धन बटोरने और अपने सुख-साधन के लिए बहुत से लोग घूम रहे हैं। किन्तु इस देश की सम्पत्ति हम सभी हैं। हमारा कार्य, जनसमूह को मार्ग दिखानेवाला कार्य है; उनको धक्का देकर गिरानेवाला कार्य नहीं है। संपादकीय लिखनेवाला भी एक नेता होता है। उसमें नेतृत्व की योग्यता का गुण होना चाहिए। उसे, समाज की बुराइयाँ देखकर न तो डरना चाहिए और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

न अपने लिए किसी प्रकार की आशा रखनी चाहिए। जिसे तुम सत्य समझते हो उसे साहस के साथ कहो। वह सत्य तुम्हें कभी छोड़ेगा नहीं।"

अपनी अन्तिम साँस तक सत्य मार्ग से ही संघर्ष करने का साहस रखनेवाले गोपालन्, ने, उसके दूसरे ही दिन, चिदम्बरम्, अपने प्राणों से भी अधिक प्रिय इस देश की जनता को छोड़कर अपनी आँखें मूद ली थीं। इस देश के इतिहास के साथ सम्बद्ध 'त्रिडिवेल्ली' के इतिहास का एक कालखण्ड समाप्त हो चुका था।

४. आत्मा की पुकार

"पोन्नइया से मिलने के वाद जब चिदम्बरम् 'त्रिडिवेल्ली' कार्यालय पहुँचा, तो देखता है कि वहाँ पहले से ही काम तेजी से चल रहा था। एक ओर छपाई मशीनों के साथ श्रमिक चक्कर काट रहे थे; दूसरी ओर एकदम शान्त वातावरण में लेखाकार्य चल रहा था; सामने के हिस्से में सपादकीय खण्ड में छपे हुए कागजों की त्रुटियों को सुधारने का कार्य अन्तिम क्षण की व्यस्तता के साथ चल रहा था—वाहर दूर के स्थानों को उसी दिन शाम को पत्रिका अवश्य भेज दी जानी थी।

सह-संपादक, पंजावकेशन, जब तक अपना काम पूरा न कर लें तब तक वे नहीं चाहते थे कि उनके काम में कोई दूसरा वाधा डाले। जब उनका काम समाप्त हो जाता था तब यदि वे दूसरों से वात न कर लें तो लगता था कि उनका कपार ही फट जायेगा। वे और राघवन् एक ही कमरे में काम करते थे। दोनों की उम्र भी लगभग एक ही थी; चालीस-पैंतालीस रही होगी।

"इस अंक के मुखपृष्ठ का पादुकाभिषेक करना चाहते हैं क्या? पूछते हुए, बंजू ने, मुखपृष्ठ को राघवन् के चेहरे के सामने कर दिया। "हर वर्ष गांधी की हड्डियाँ खोदकर 'दिवस' समारोह करने की परंपरा वन गई है!"

गांधी के सम्बन्ध में अगर कोई आलोचना करता है तो राघवन् को जल्दी ही क्रोध आ जाता है। साथ ही, अपना काम समाप्त कर, बंजू का दूसरे के काम में वाधा डालना उन्हें अच्छा नहीं लगता।

"आपके छुट्टी ले लेने के वाद आपके घर में चाहे जिसका 'दिवस' हर महीने मनाया जा सकता है। इस देश के, सवों के घर के लिए मरनेवाले को वर्ष में एक वार भी याद न किया जाय क्या? दूसरे लोगों की तरह, जैसे इस समय सिनेमा 'मार्केट' में हो रहा है, सिनमा 'स्टार्स' भड़कीले चित्र नहीं छापते हैं, इसी वात की चिंता है आपको क्या?"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"नहीं, मेरा वह मतलब नहीं..." कहकर वंजू थोड़ा दव गए। "गांधी का चित्र भी लगा सकते हैं; मेरा मतलव था कि शिष्य गुरु से भी आगे वढ़ गया।"

"उनकी देह में अव भी इस देश का रक्त वह रहा है; लेखन की स्वतंत्रता को वे जीविका की स्वतंत्रता नहीं मानते।"

वंजू घबड़ा गए थे, अव उनका पीछे हट जाना ही अच्छा था। "वैसे ही, थोड़ा सा आपको उकसाकर, मजा लेना चाहा था; यह वात किसी दूसरे के कान में न डालिएगा।"

"क्या मेरे पास यही काम है ?"

वंजू ने, आश्वस्त हो, लम्बी साँस ली; उसी समय चिदम्बरम् को कार्यालय में घुसते हुए देखकर घवड़ा गये। जो कुछ उन्होंने कहा था, राघवन् उसको किसी से भी न कहेंगे, यह जानते हुए भी वंजू के अन्दर कचोट थी।

वंजू, धीरे से उस कमरे के बाहर आ गये। चिदम्बरम् के पीछे-पीछे, उसके कमरे में जाकर, पंखा चालू कर दिया। कहाँ है, आपका संपादकीय तैयार हो गया ? दीजिए, पहले मेरे पढ़ लेने के वाद ही उसे 'कम्पोज' के लिए देना है।"

चिदम्वरम् ने लेख की प्रति दे दी।

उसके सामने रखी कुर्सी पर वैठकर, "वाह ! वाह ! वहुत अच्छा, वहुत अच्छा !" इस प्रकार बीच-बीच में प्रशंसा करते हुए, "वड़ी वारीकी से सत्य का उद्घाटन किया है आपने !" वंजू ने पूर्ण विराम लगा दिया।

"वहुत धन्यवाद" चिदम्वरम् ने वड़ी शालीनता से कहा।

"इस सम्पादकीय का अनुवाद कर, आवरण-पृष्ठ के साथ, इसे पूरे देश में भेजना चाहिए। सम्पादक, गोपालन् ने, आपकी उम्र पर भी ध्यान न दे, क्या बिना समझे-वूझे आपको अपनी कुर्सी पर वैठाया था ?"

यह मुखस्तुति, चिदम्वरम् से न सही गई; उसका मुँह सिकुड़ गया।

"अच्छा, समय हो गया; इसे छपने के लिए देकर मैं अपना काम देखूंगा" कहकर वंजू वहाँ से चले गये।

पोन्नइया से मिलने के वाद चिदम्बरम् में जो घवड़ाहट पैदा हो गई थी, वह अव भी दूर न हुई थी। उनका आदेश, उसके मन के एक कोने में, वर्रे की तरह कुरेद रहा था। उससे छुटकारा पाने के लिये उसने मुखपृष्ठ को उठा लिया। उस चित्र की ऊपरी सतह से, धीरे-धीरे, उसका मन उसकी गहराई तक पहुँचने की कोशिश करने लगा।

महात्मा गांधी, अपने दिन-प्रतिदिन के जीवन में जिन वस्तुओं का उपयोग

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करते थे, और जिन्हें बाद में संसार के लिये छोड़कर, इस दुनिया से विदा हो गए थे, उन्हीं भौतिक वस्तुओं का चित्र था वह । उसमें उनकी संपत्ति थी । उसमें सेवा-ग्राम-आश्रम की कुटिया भर न थी ।

एक जोड़ी चमड़े की चप्पल, लकड़ी से बनी पादुका एक जोड़ी, भगवद्गीता, चश्मा, पुराने जमाने की एक घड़ी, चरखा, भोजन करने के लिए चीनी मिट्टी के दो कटोरे, दो चम्मच, एक ही में मिले हुए, तीन बंदरों का खिलौना—'बंदर-मन के रास्ते जानेवाली, इंद्रियों के रास्ते, बुराइयों को अन्दर मत बैठाओ; उन्हें बाहर मत जाने दो !' ऐसी चेतावनी देनेवाला था, वह खिलौना; इस समय, वह, पोन्नइया के मुँह से निकले हुए शब्दों की तुलना किये बिना न रह सका । 'चोर, फरेबी और जनता को धोखा देनेवाले को, किसी भी प्रकार बचाओ' उनकी बातों का सार यही था ।

वह गांधीजी के जीवन पर विचार किये बिना न रह सका । वे, देशी रियासत के दीवान के पुत्र थे; उन्होंने, उस युग में भी, पश्चिम में शिक्षा प्राप्त कर, उपाधि प्राप्त की थी; दक्षिण अफ्रीका में काम करने के समय, उन्हें धन बटोरने का अवसर भी मिला था; राजनीति में आने के बाद, अनेक कोटीश्वर, उनके चरणों पर पड़े रहते थे ।

जिसका जीवन इस प्रकार का था, वही, व्यक्ति देश की अधिकांश जनता को अच्छा भोजन नहीं मिलता था, इस कारण, साधारण से भी साधारण भोजन लेता था । उनकी पगड़ी और कुर्ते के लिये जितने कपड़े की आवश्यकता पड़ती थी, उससे दो गरीबों को अँगौछे मिल सकते थे, ऐसा सोचकर, उन्होंने चार हाथ कपड़े से ही अपना काम चलाया । अपना निवास-स्थल भी, गरीबों और कुलियों की झोपड़ी को ही बनाया था ।

'ऐसे महान् व्यक्ति के मार्ग पर चलनेवाले पोन्नइया को, पहले से ही गरीबों को चूसकर मोटा होनेवाले एक भ्रष्ट आदमी का संरक्षण करना चाहिए क्या ? जिससे वह उन्हें और अधिक चूसकर उनका विनाश ही कर दे ! ऐसी स्थिति में, ईमानदारी से परिश्रम कर, जीवन-यापन के लिये उत्सुक करोड़ों मूक कीड़ों की रक्षा कौन करेगा ?' चिदम्बरम् ने स्वयं से प्रश्न किया ।

यह वह समय था, जब, ठग, बिचौलिये और धन बटोरने की विद्या में चतुर लोग, बिलकुल निर्भय हो, धीरे-धीरे सिर उठाने लगे थे । बीच के समय में, गांधी के लोगों का नाम सुनते ही डर जानेवाले काले पैसेवाले बड़े लोग, जमाखोर बहादुर, मिलावट करने वाले धोखेबाज, घूस के बल पर मोटे होनेवाले, व्याज के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बल पर महल खड़ा करनेवाले लोग संभ्रान्त वेश में फिर से सिर उठाने लगे थे। इन लोगों ने, मोटी खद्दर को अपने सीने का कवच बना लिया था।

ऐसी स्थिति के विरुद्ध आवाज उठानेवाली पत्र-पत्रिकाओं में कुछ, जनता को ठगनेवालों के ऊपर चमर चलाने लगी थीं। चिदम्बरम् 'विडिवेल्ली' के माध्यम से अकेले आवाज उठा रहा था। 'गणतंत्र-दिवस' और गांधी-निर्वाण-दिवस, दोनों के अवसर पर, इस मुखपृष्ठ के साथ-साथ, 'मार्गदर्शकों से एक प्रार्थना' इस शीर्षक से उसने संपादकीय भी लिखा था। यदि मार्ग-दर्शक हृदय की दृढ़ता और पवित्रता से चलेंगे तो जनता भी उसी मार्ग से चलेगी, उसने उदाहरण देकर इन बातों को लिखा था।

उस सर्वोदय अंक के प्रकाशन के दिन ही, उसके सामने उस परीक्षा का समय आ गया था! बंदूक की तीन गोलियों से सत्यनिष्ठा का अंत हो गया था, लोगों ने ऐसा निर्णय कर लिया था क्या?

शाम चार बजे 'विडिवेल्ली' की पहली प्रति उसकी मेज पर आ गई। उसे लेकर उसने पलटा, संपादकीय को पढ़ा; उसके लिखे अक्षर ही, उसकी आत्मा को आवाज दे रहे थे, 'संपादकीय लिखकर, देश को राह दिखानेवाले युवक नेता! तुमसे एक प्रार्थना है; पोन्नइया ने जो मार्ग तुम्हें दिखाया है, उसके संबंध में तुम्हारा निर्णय क्या है? गाँव को उपदेश और तुम्हारे लिए दूसरा मार्ग? तुम क्या करने जा रहे हो?'

पोन्नइया की बातें वहाँ भी उसका पीछा कर रही थीं।

'शहद उठाने वाला हाथ चाटने के बजाय, शहद ही चट कर गया........ तुम्हारे पिता उसकी गर्दन ही मरोड़ देना चाहते हैं........तुम्हें, उन्हें रास्ते पर ले आना है........पत्रिका का संपादकीय लिखकर, न जाने कितने लोगों को तुमने अपने रास्ते पर घुमा लिया है........इस समय तुम्हारी क्षमता के लिए एक चुनौती है......'

'क्षमता को चुनौती? सच्चाई को चुनौती?' उसने अपने मन ही मन पूछा।

समय बीत गया। अपना काम समाप्त कर, जिन लोगों को घर जाना था, वे अपने-अपने घर चले गये। संपादकीय विभाग में उसको छोड़कर कोई न था। चिदम्बरम् भी पत्रिका को बैग में रखकर, कुर्सी से उठ बैठा। 'टेलीफोन' की घंटी बज उठी। उसे हाथ में लेकर 'कौन?' उसने पूछा।

"कौन, चिदम्बरम्? मैं तुरैसामी बोल रहा हूँ।"

चिदम्बरम् को महान् आश्चर्य हुआ। तुरैसामी पत्रिका से बहुत दूर चले गये थे। उनके पास, आमने-सामने, अथवा टेलीफोन से चिदम्बरम् से बात करने का

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

समय न था। वे पत्रिका के मालिक थे, लेकिन वे उसको पलटकर देखते भी होंगे इस बात पर भी संदेह था। वे ही बोल रहे हैं ?

"चिदम्बरम् ! पोन्नइया ने आपसे कह दिया होगा। भूलिएगा नहीं, उसे अपने पिता से कह दीजिएगा। मेरा भी उसमें 'इण्टरेस्ट' है, यह बात उनके कानों में डाल दीजिएगा।"

"ब्रे......"

उसके जवाब देने के पहले ही तुरैसामी ने 'टेलीफोन' रख दिया। घर जाते समय चिदम्बरम् का चेहरा पसीने-पसीने हो रहा था। रूमाल से मुँह पोंछकर वह कार्यालय से बाहर निकला। बस में बैठकर, माउण्ट रोड के 'सर्कल' में उतर गया। 'एस्टेट पार्क' में घुस गया।

उसके घर के सामने खड़ी कार यह बता रही थी कि रामलिंगम् वापस आ गए थे। मिलने के लिए आए एक आदमी से बात करते, वे बरामदे में बैठे थे। फौजी जवान की भाँति गंभीर शरीर; देह की गठन और ऊँचाई ऐसा ही बता रही थी, सिर के बाल कुछ सफेद हो गए थे। कमर में धोती और अँगौछे से अपना चौड़ा सीना ढँके हुए वे बैठे थे।

चिदम्बरम् को देखते ही, 'विडिवेल्ली' आ गई ?' उत्सुकता से पूछा।

चिदम्बरम् अपने बैग से पत्रिका निकाल, उन्हें देकर, अंदर चला गया। मिलने के लिए आए आदमी के चले जाने पर, कुछ देर तक वे पत्रिका में खोये रहे, फिर अपने कमरे में चले गये।

चिदम्बरम्, अकेले में उनसे मिलने की प्रतीक्षा में था; उनके पास आ, "आपसे एक जरूरी बात करनी है" उसने खड़े-खड़े ही बात शुरू की।

"बैठो" कहकर, कुर्सी की ओर इशारा कर, "क्या बात है ?" उन्होंने पूछा।

कैसे बात प्रारंभ करे, किस प्रकार कहे, चिदम्बरम् कुछ देर तक इसी असमंजस में पड़ा रहा। उनसे, वह बात कहने का उसका साहस भी नहीं हो रहा था, बिना कहे रहा भी नहीं जा रहा था। किसी प्रकार उसने अपना मौन भंग किया। सुबह पोन्नइया से 'टेलीफोन' पर हुई बातों से लेकर, शाम को, तुरैसामी द्वारा उसकी याद दिलाये जाने तक की सभी बातें बता गया।

"ओहो ! मामला इतनी दूर तक पहुँच गया ?" कहकर रामलिंगम् मूर्तिवत् हो गए। कुछ देर तक, वे पलकें गिराना भी भूलकर, एकदम अचल बने रहे। चिदम्बरम् ने आहिस्ते से उठकर कमरे की 'लाइट' जला दी। पंखा खोल दिया; आकर पुनः कुर्सी पर बैठकर, ध्यान से उनके चेहरे को देखा। उसको लगा, जैसे उनके चेहरे की पेशियाँ, नसें वेदना से फड़क रही थीं। जब आवश्यकता से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अधिक आवेश में वे आ जाते थे, तब ऐसा ही हुआ करता था। जैसे घूमते हुए लट्टू की गति आँखों को नहीं दिखाई पड़ती, उसी प्रकार उनके अंदर घूमता हुआ बवंडर भी बाहर नहीं दिख रहा था।

रामलिंगम् उठकर, जा गांधीजी के चित्र के सामने एक क्षण के लिए खड़े हो गये। फिर सामने की ओर दोनों हाथ बाँधकर कमरे के अंदर ही चहल-कदमी करने लगे। उनका मन गर्व से तना हुआ था, केवल सिर झुका हुआ था। लगता था, चिदम्बरम् का पास होना, उन्हें बिलकुल भूल गया था।

"पिताजी !" चिदम्बरम् बोला। ऐसा नहीं लगा कि यह उनके कानों में पड़ा था। उसने फिर पुकारा। हड़बड़ाकर, पीछे घूमकर उन्होंने देखा और आकर अपनी कुर्सी पर बैठ गए।

"इस पर हमें क्या करना चाहिए ?" चिदम्बरम् ने पूछा।

इसी प्रश्न को वे भी, उस समय, अपने मन ही मन बार-बार पूछ रहे थे। उनके लिए वह प्रश्न, अचानक उसी दिन उठा हुआ प्रश्न न था। इस तरह की झंझटें एक वर्ष पूर्व ही उठने लगी थीं। खामियों और बुराइयों पर कम ध्यान देने के लिए जब कभी पोन्नइया जिद पकड़ लेते थे, रामलिंगम् उसे नजरन्दाज कर दिया करते थे। लेकिन यह तो योजनाबद्ध तरीके से किया गया चोरी का अपराध था। सामाजिक विकास-कार्य में भ्रष्टाचार का अपराध था। इसके लिए किया क्या जाय ?

पोन्नइया के साथ मित्रता और संबंध टूट जाने पर, उसका फल क्या होगा, इस बात पर उन्होंने विचार न किया हो, ऐसी बात न थी। जीवन से, जवानी के जोशभरे पचीस वर्ष, लगातार संघर्ष में व्यतीत हुए थे। सात-आठ साल से ही उन्हें, परिवार और नौकरी का जीवन मिला था। उनका काम, देश में व्याप्त अज्ञान और गरीबी से संघर्ष करने का काम था, इसीलिए वे बड़ी लगन से परिश्रम करते रहे थे। इसमें पोन्नइया के विरोध करने के कारण भविष्य में क्या होगा, कहा नहीं जा सकता था।

"चिदम्बरम् ?"

उसने अपने पिता के चेहरे की ओर देखा।

"मुझे क्या करना चाहिए, इस संबंध में तुम क्या कहते हो ?"

"पिताजी !" चिदम्बरम् घबड़ाकर बोला।

"तुम सयाने लड़के हो। कार्य और उसके बाद के फल को अच्छी तरह समझने की स्थिति में हो। इसीलिए तुमसे पूछता हूँ। मेरी स्थिति में अगर तुम होते तो क्या करते ?"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"अपराध सिद्ध हो गया है ?"

"तमाम सारे प्रमाण इकट्ठा करके ले आया हूँ। जनता को मिलनेवाले लाभ में बाधा खड़ी कर, कितने ही बुरे तरीकों से इतना पैसा एकत्रित किया जा सकता है, इस बात को सिद्ध करने के लिए अकेले यह आदमी ही पर्याप्त है।"

चिदम्बरम् सोचने लगा। जो कुछ वह कहना चाहता था, उनसे कहने के लिए उसका साहस नहीं हो रहा था। उसने, उनकी आँखों को ध्यान से देखा।

"बोलो, चिदम्बरम् !"

"यदि मैं होता तो…"

"तुम होते तो ?"

"पोन्नइया कहते तब भी न सुनता; तुरैसामी कहते तब भी न सुनता; चाहे मेरा बेटा ही क्यों न कहता तब भी न सुनता। जिस देश में अपराध करनेवाले बिना दंड पाये बच जाते हैं, उस देश के भले और योग्य आदमियों का सुरक्षित जी सकना असम्भव है।"

रामलिंगम् संवेदनशील हो गये। वह उनका बड़ा बेटा था; पहला बच्चा था। उसके जन्म के समय उनको जितना आनन्द मिला था, उस समय, उससे हजारोंगुना आनन्द उन्हें मिला। उसको एकदम पकड़कर, कुर्सी से खींचकर, उसका चेहरा, अपने चौड़े सीने से चिपका लिया। स्नेह-प्रवाह के साथ उसको थपथपाने लगे।

पूर्व में, अपने जिस विशाल वक्षस्थल को, अंग्रेज पुलिस-अधिकारी के सामने खोलकर, गोली चलाने के लिए कहा था, उसी वक्षस्थल में, इस समय, अपने प्रिय पुत्र को आँसू बहाते हुए, रामलिंगम् ने देखा। उन्हें असीम आनन्द मिला; वे गर्व और खुशी से भर गए !

"बेटे ! तुम आदमी हो, तुम आदमी हो; तुम आदमी हो !" इस प्रकार कहते उनका मन नाच रहा था।

"पिताजी !" चिदम्बरम् की जीभ लड़खड़ा गई।

"चिदम्बरम् ! तुम्हारे संपादकीय को मैंने पढ़ लिया है। मुझे इस बात का भय था कि कहीं तुम उस सत्य के विरोध में न लिख दो। अपनी आत्मा बेचकर जीनेवाले बेटे तुम नहीं हो !"

चिदम्बरम् के आँसू रुक नहीं रहे थे। आत्मारूपी बलि पीठ पर देने के लिए आवश्यक बलि को सोचकर वह काँप गया। उसके पिता को मासिक सात सौ रु० वेतन मिलता था। उसके साथ ही, सब सुविधाओं सहित मकान, कार, 'टेलीफोन',

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सेवक, पद के कारण मिलनेवाला सामाजिक सम्मान—यह सब कुछ था। वह भी 'विडिवेल्ली' में चार सौ रु० महीने पाता था।

सत्य की खातिर दिए जानेवाले मूल्य को सोचकर, उसकी साँस बंद होने लगी। उसके पिता थे कि जैसे किसी बात की कोई चिंता ही न हो, आनन्द-सागर में डुबकी लगा रहे थे। वे, अपने पुत्र के मूल्य की महत्ता समझ गये थे।

५. सत्य और कर्म-फल

पुनीत, गणतंत्र-दिवस का सूर्य चमकने लगा। जनवरी मास की छब्बीसवीं तारीख रामलिंगम् को कभी न भूलती थी। सन् १९३० से उस दिन को 'पूर्ण स्वराज्य-दिवस' के रूप में मनानेवाले वे, देश की स्वतंत्रता बाद उसे अब 'गणतन्त्र-दिवस के रूप में मनाते हैं। उस समय, जब उत्सव मनाने के समय शासकों के द्वारा बाधाएँ खड़ी की जाती थीं, उनके आदेश का उल्लंघन कर, मनाने के कारण, उन्होंने लाठियाँ खाई थीं। लाठी 'चार्ज' कोई साधारण 'चार्ज' न था; सिर पर लोहाजड़ी लाठियों का प्रहार था! स्वतन्त्रता-सेनानियों की हड्डियाँ भुरकुस करने के लिए, समूचे देश में पुलिसवालों को लोहा लगी छोटी-छोटी लाठियाँ बाँटी गई थीं। उन लाठियों के कारण हुए रामलिंगम् के भीतरी घाव पहले ही ठीक हो गये थे! लेकिन बाजुओं और सीने के दाग आज भी नहीं मिटे थे।

बड़े सुबह ही समूचे परिवार को साथ ले, मकान के ऊपर ध्वज फहराकर, रामलिंगम् ने बड़े उत्साह से गणतंत्र-दिवस मनाया। फिर जल्दी-जल्दी दो घूंट 'काफी' पीकर, 'आफिस फाइलों' को लेकर कार में रख दिया। उस दिन छुट्टी होने पर भी उन्हें आफिस में काम था।

"खाना खाने के लिए आने में कुछ देर होगी। मुझसे मिलने के लिए यदि कोई आये, तो उसे आफिस न भेजना। शाम को लौटूंगा, केवल इतना बता देना।"

"गणतंत्र-दिवस की बधाइयाँ देने के लिए अगर कोई आये तो ?" चिदम्बरम् ने पूछा।

"हाँ; हार आएँगे; फलों की डालियाँ आएँगी; कार में कौओं का झुंड आएगा" कहकर भारती ने शैतानी से हँस दिया।

उसी समय, भारती द्वारा बनाये गये खद्दर की मालाओं में से एक माला अपने लिये रख लेना भी वे नहीं भूले। 'अप्पा भी किसी को कौए की तरह पकड़ने के लिए

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जा रहे हैं, उनके छोटे पुत्र सुभाष ने सोचा। उसमें अवस्था से कुछ अधिक बुद्धि और शैतानी थी। वे कहां जा रहे थे, यह बात केवल चिदम्बरम् को ही मालूम थी।

रामलिंगम् के जाने के थोड़ी देर बाद ही उनके घर में कारें आने लगीं। खद्दर के हार, फूलों के हार, फलों की डालियों सहित, हाथ जोड़े, मुसकराते हुए बड़े-बड़े लोग आ रहे थे। निराश होकर वापस जानेवालों में अधिकांश लोग ऐसे थे, जो गोरों के समय में, गोरों और उनका काम देखनेवाले काले साहबों से मिलकर, क्रिसमस के त्योहार के दिन और जनवरी के नए साल के दिन, उन्हें बधाइयाँ देना नहीं भूलते थे।

किन-किन समयों में, किन-किन लोगों के पास कितना अधिकार रहता है, उन समयों में, उन लोगों के अधिकार की महत्ता के अनुरूप सम्मान-प्रदर्शन की अनूठी कला में पारंगत थे वे लोग। जिस देश में श्रम और श्रम के अनुकूल वेतन के लिए कोई रास्ता नहीं, उसी देश में श्रम की अपेक्षा नौगुना से लेकर नब्बे गुना तक वेतन कैसे, आसानी से कमाया जा सकता है, इस कला में माहिर हैं वे महान् लोग।

रामलिंगम् की कार भी एक फल की दुकान के सामने खड़ी हो गई। ड्राइवर को पाँच रुपया देकर, संतरे और केले एक डलिया में मँगवा लिये। कार मयिलापुर की ओर चल पड़ी। सँकरे रास्ते और गलियों को पार करती हुई, एक छोटे-से घर के सामने जाकर खड़ी हो गई। लगता था कि उस छोटे-से घर में भी, दो-तीन परिवार रह रहे थे।

"आरावमुदन् यहीं रहते हैं ?"

वहाँ रहनेवालों में से एक आदमी अंदर समाचार भेजकर, रामलिंगम् को ससम्मान और गरमजोशी के साथ अंदर ले चला। ड्राइवर भी फलों की डलिया लिए रामलिंगम् के पीछे हो लिया। इसी बीच आरावमुदन् स्वयं अपने घर से बाहर निकल आए। रामलिंगम् को देखने से उनमें जो आश्चर्य पैदा हो गया था, वह उनकी आँखों में झलक रहा था।

आरावमुदन्, दुबले-पतले, ऊँचे कद और लाल रंग के थे। उनकी उम्र पचास की रही होगी। ऊपर अंगौछा भी न था, केवल कमर में धोती थी।

"हुजूर, आप ? कहलवा देते तो मैं ही चला आता !" आरावमुदन् ने कहा; उनके ऐसा कहने का एक कारण भी था। आए हुए मेहमान को बैठाने और उसका स्वागत करने के लिए भी उनके घर में जगह न थी।

"आज के दिन मुझे ही आपके पास आना उचित है !" ऐसा कहकर साथ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ले आये हुए खद्दर के हार को उनके गले में डाल दिया। फल की डलिया भी उनको जबरन् दे दी।

"यह सब किसलिए ?" आरावमुदन् संकोच से बोले।

"साल में एक बार, इसी दिन, अपने पुराने मित्रों से मिलना मेरी परंपरा है। इस साल आपकी याद आ गई। खोजता चला आया।"

रामलिंगम् स्वयं चलकर, उनके घर के बरामदे की फर्श पर कुछ देर तक बैठे रहे। "आज कौन सी तारीख है, याद है आपको ? सन् १९३२ की इसी तारीख को आपने, मद्रास दुर्ग के अन्दर घुसकर, ध्वज-स्तंभ में स्वतंत्रता का ध्वज चढ़ा दिया था, याद है ?"

आरावमुदन् की आँखों से आनन्दाश्रु झरने लगे। अपने युवा-काल में उन्होंने देश की स्वतन्त्रता के लिए जितने भी बहादुरी के कार्य साहस के साथ किये थे, उनमें वह प्रमुख कार्य था; 'स्वराज्य दिन' २६ जनवरी की पूर्व आधी-रात में, कठोर पहरे के बीच से वे किसी न किसी प्रकार किले के अंदर घुस गये थे। अपने प्राणों की बाजी लगाकर, दो सौ फीट ऊँचे खंभे के ऊपर, बड़ी सावधानी से चढ़ गये थे। बंदरगाह के घूमते हुए प्रकाश के कारण, पहरेदार देख न लें, इसलिए छिप-छिपकर चल रहे थे। मौत के डर से वे नहीं छिप रहे थे; ध्वज चढ़ाने के पहले पहरेदार न देख सकें, इस बात की चिंता थी उन्हें। ये वे दिन थे जब हमारे देश के नवयुवक उस ध्वज को अपने प्राणों से भी अधिक कीमती समझते थे।

"बेल्लारी जेल में, आपके हाथ-पाँव बधांकर आपको तीस कोड़े लगाये गये थे और आपका खून 'टप्' 'टप्' गिर रहा था, उसे मैं कभी न भुला सका" रामलिंगम् ने कहा। उस समय वे और आरावमुदन् भी बेल्लारी-जेल में थे; उन्होंने उस क्रूरता को अपनी आँखों से देखा था।

आरावमुदन् इस प्रकार हँसने लगे जैसे उसे वे पूरी तरह भूल गये हों; रामलिंगम् अपने मन में उठे प्रेम-प्रवाह को रोक न सके, उस पुराने दृश्य की याद कर आहिस्ते-आहिस्ते उनकी पीठ पर हाथ फेरने लगे। युवा-काल में, आरावमुदन् को अहिंसा में बिलकुल विश्वास न था। बेल्लारी-जेल में, पंजाब के युवक को कोड़े से पीटे जाते हुए देखकर, आरावमुदन् सह न सके थे और अंग्रेज अधिकारी को, जो पीट रहा था, इन्होंने पीट दिया था। इसीलिये वही दंड इन्हें भी दिया गया था।

विदा लेकर खड़े हो जाने वाले रामलिंगम् आरावमुदन् के एक काम को देखकर चकित रह गये।

वहाँ रहनेवाले सभी बच्चों को आवाज देकर, "सुनो, हम सब लोग उत्सव

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मनाएंगे, आओ !" इस प्रकार बुलाकर डलिया का पूरा फल""आरावमुदन् ने बाँट दिया। उनका जीवन साधारण और गरीबी का था। लगता था, इसकी उनको तनिक भी चिंता न थी। उस स्थिति में भी, वे कितने महान् थे, इस बात को उन्होंने अपने कार्य से सिद्ध कर दिया था।

"आरावमुदन्, आप अब भी उसी समय के आदमी हैं" रामलिंगम् ने कहा। यह वह समय है जब न जाने कितने लोग स्वयं को देशभक्त कहते हैं। आप हैं कि त्याग का भी त्यागकर, जो आपको मिला उसे भी दूसरों को बाँटकर, 'यह है देशभक्ति' इस बात को बिना कहे, कह रहे हैं !"

"आप ही कैसे हैं ? बड़े अधिकारी होकर भी, मुझे खोजते हुए, जिस जगह में कोई लाभ नहीं उस जगह चले आये !" आरावमुदन् खिलखिलाकर हँसने लगे।

रामलिंगम् विदा लेकर वहाँ से चल पड़े। नगर के कुछ मकानों और सरकारी भवनों में उड़ते हुए ध्वज, उन्हें मात्र कपड़े के, सिले हुए ध्वज न लग रहे थे। उन ध्वजों में उन्होंने, वांजीनाथन्, भगतसिंह, सुभाष बोस, आजाद हिन्द फौज के बहादुरों की तरह अहिंसा में विश्वास न रखनेवाले कितने ही वीर, त्यागी युवकों के हृदय की धड़कन और शासकों की क्रूरता के कारण जेलों के भीतर उनके बाहर भी, तिरुप्पूरकुमरन् जैसे मरकर धूल में मिल जानेवाले अनगिनत अहिंसावादियों के प्राणों की धड़कन, उसमें उन्हें दिखाई पड़ती थी। प्राण न्योछावर करने वाले तो एक तरफ रहे। संघर्ष के कारण अपना भविष्य ही बिगाड़ बैठे कितने ही आरावमुदन् पूरे देश में कष्ट भोग रहे हैं !

अपने कार्यालय की ओर जाते समय रामलिंगम् ने कार से मद्रास नगर की सड़कों को नये नजरिये से देखा। पिछले दस वर्षों में हुए आर्थिक विकास के चिह्न नगर में स्पष्ट दिख रहे थे। नये-नये बँगले, कार्यालय-भवन, सड़कें, कारें, होटल, 'थियेटर', दुकानें, औद्योगिक संस्थानों की भरपूर वृद्धि हो गई थी। किन्तु इनके साथ-साथ, इनसे होड़ लगाकर मानो नई-नई झुग्गी झोपड़ियाँ और 'फुटपाथों' की रिहायशी, गरीबी के चिह्न भी न जाने कैसे बढ़ गये थे ? यह बात इनकी समझ में न आ रही थी।

'कहीं जड़ में ही कोई गड़बड़ी होनी चाहिए; नहीं तो विकास समुचित रूप से होता', रामलिंगम् का निष्कर्ष था।

कार्यालय में उन्हें, उनकी इच्छानुसार एकांत मिल गया। सबसे पहले उन्होंने, घर से ले आई फाइलों को ध्यान से देखा। सभी फाइलें उसी 'काण्ट्रैक्टर' के सम्बन्ध की थीं जिसकी सिफारिश पोन्नइया ने की थी। मौके पर जाकर, उसके

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

द्वारा किये गये सभी कामों का निरीक्षण करने के बाद, उन्होंने जो प्रमाण एकत्रित किया था, उन्हें क्रमानुसार लगाया। वहाँ कई तरीकों से भ्रष्टाचार किया गया था। जो काम पाँच हजार में किया जा सकता था, उस काम में पचीस हजार का खर्च बताकर झूठा हिसाब तैयार किया था। जो काम किये ही नहीं गये थे, वे भी कागज में लिखे गए थे। इतना सब, सरकारी निरीक्षकों को घूस दिए बगैर अथवा उनको डराए-धमकाए बिना, वह नहीं कर सकता था। घूस देने की अपेक्षा, वह पोन्नइया का नाम बताकर ही दूसरों को डरवा दिया होगा।

प्रमाणों के अनुसार अपराधों को छाँटकर, अलग-अलग करने के बाद, उन्होंने अपनी रिपोर्ट भी स्पष्ट लिखी। इन कामों से सामान्य जनता के साथ किस प्रकार धोखाधड़ी की गई थी और किस प्रकार ऐसी परिस्थिति ले आई गई थी, जिससे श्रमिक ईमानदारी से काम न कर सकें, इन बातों को भी स्पष्ट किया। उन्होंने कारण-सहित इन बातों की ओर भी संकेत किया कि घूस के अनुचित प्रलोभन से अथवा राजनीतिक दबाव के भय से कर्मचारी-वर्ग 'कान्ट्रक्टर' का गुलाम बन गया था।

अंत में, वे, अपने स्वयं के विचार प्रकट करने से भी नहीं चूके। उसे लिखते समय, न जाने क्यों उनके अन्दर यह भावना उठ रही थी कि उनकी यह टीप अंतिम, महत्त्वशाली टीप थी।

"इसके समान आदमी को जनता का पैसा सौंपना ठीक उसी प्रकार है, जैसे हमारे बच्चों के भोजन की गठरी घुइस को सौंप दी जाय। हम जिस उद्देश्य को लेकर पैसा खर्च करते हैं, उस उद्देश्य से लगाव रखनेवाले, उसे पूरा कर सकने की क्षमता और श्रम की कुशलता रखनेवाले आदमी को खोजकर उसे जिम्मेदारी सौंपनी चाहिए। निम्न स्तर के आदमी से उच्च स्तर के काम की आशा नहीं की जा सकती। शासकीय धर्म का मौलिक धर्म आर्थिक धर्म ही है। आर्थिक धर्म के बिगड़ जाने से, भ्रष्ट लोगों को सात मंजिले भवन में और भले लोगों को बीच सड़क में जीने की परिस्थिति पैदा हो जायगी। जिस स्वतंत्रता के लिए हमने संघर्ष किया था वह स्वतंत्रता ही खतरे में पड़कर छिन जायगी। देश में, इस प्रकार के लक्षण अभी से दिखाई पड़ने लगे हैं; सावधानी आवश्यक है।"

जो कुछ लिखा था, रामलिंगम् ने उसे एक बार फिर से देखा। 'आफिस नोट' सीमा से अधिक भले दिखता था, किन्तु उसने सत्य की सीमा का उल्लंघन नहीं किया था। इसलिये उन्होंने उसे ज्यों का त्यों रहने दिया। 'ऊपर के लोग इसे पढ़कर, चाहे नाराजगी से इसे फाड़कर कूड़ेदानी में फेंक दें अथवा इस पर विचार करें, मेरा कर्तव्य पूरा हो गया' ऐसा सोचकर उन्हें संतोष हो गया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रामलिंगम् को लगा, जैसे उसके मन से एक भार उतर गया। उठकर जा, आगंतुकों के लिए रखे गये सोफे पर टिक गए। सामान्य जनता से पैसा लेने में और उसको खर्च करने में गांधीजी कितने कुशल थे, यह बात वे जानते थे। गांधीजी पैसे, दो पैसे से लेकर, हजारों रुपयों तक के लिए हाथ फैलाने वाले थे। अगर उनके पास कोई महिला आवश्यकता से अधिक जेवर पहनकर आती थी, तो वे उन्हें भी उतरवा लेने से नहीं चूकते थे। यदि कोई उनके हस्ताक्षर लेना चाहता था तो उसे भी हरेक हस्ताक्षर के लिए पाँच रुपये देने पड़ते थे। इस प्रकार जन-सेवा के लिए गांधीजी कई तरीकों से कर वसूल कर अपना अलग शासन चलाया करते थे। वसूल किए गए पैसे का एवं चीजों का पूरा हिसाब, अगर उनके पास तुरंत न पेश किया गया तो वे स्वयंसेवकों की खबर ले लेते थे। पैसे के संबंध में गांधीजी को कोई भी धोखा नहीं दे सकता था। इस विषय में, वे बहुत कठोर एवं महान् थे।

दिल्ली में अथवा वर्धा में गांधीजी से मिलने के समय, वहाँ होनेवाली छोटी-मोटी घटनाएं भी रामलिंगम् को याद हो आईं। उन छोटी-मोटी घटनाओं में एक घटना, इस समय, उन्हें विशेष रूप से याद आ गई। वह छोटी-मोटी बात थी ?

गांधीजी से मिलने के लिए आये एक सज्जन, अपने साथ कुछ आम लेते आए थे। उन आमों में से, एक आम का रस निकालकर, कप में, एक स्वयंसेवक गांधीजी के सामने ले गया। गांधीजी जैसे ही उस रस को पीने के लिए, कप को मुँह के पास ले गए, ऐसा लगा, मानो उसकी महक से गांधीजी समझ गए कि वह आम बहुत अच्छी किस्म का था। माथा सिकोड़ कर, गाँधी जी ने उस स्वयं सेवक की ओर ऊपर से नीचे तक देखा।

"यह आम कौन ले आया है ? इसकी कीमत क्या है ?" उन्होंने पूछा।

स्वयंसेवक ने फल ले आनेवाले की ओर घूमकर देखा। ले आनेवाला भी उसकी कीमत बताने से झिझक रहा था। अगल-बगल के लोगों से पूछने पर पता चला कि एक आम की कीमत चार आने होगी।

गांधीजी ने कप नीचे रख दिया।

"इस समय हमारे देश में लोगों की आमदनी लगभग सात पैसे रोज की है। न्याय के अनुसार हमें इससे अधिक खर्च करने का अधिकार नहीं है। हम अपना जीवन-यापन देश के पैसे से करते हैं, यह बात हमें न भूलनी चाहिए। इतनी कीमत के आम का रस पीना मेरे लिए आडंबरपूर्ण बात होगी।"

उन्होंने कप को छुआ तक नहीं। उन्होंने ध्यान से चारों ओर देखा। एक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गरीब बच्चा अपनी माँ के साथ दिखाई पड़ा। उसे बुलाकर, उस महापुरुष ने उस रस को उसको पिला दिया। भीड़ में बैठे रामलिंगम् को इस कार्य को देखकर, इतना अचंभा हुआ कि उन्हें प्रकृतस्थ होने में कई मिनट लग गए। एक दिन गांधीजी के पास रहकर, उन्होंने इस दृश्य को अपनी आँखों से देखा था।

सोफा पर टिके रामलिंगम् की आँखें, इस स्मृति से नम हो गईं। कहाँ सात मंजिले भवन के मालिकों का गरीबों के नाम पर दिखावटी आँसू बहाना और कहाँ गरीबों की न मिलनेवाली जिन्दगी मुझे ही क्यों मिले, ऐसा सोचकर जीवन का ही त्याग करना ?

'बापू ! तुमने जिस कठोर संन्यास-व्रत को अपनाया था, वह हम लोगों से नहीं हो सकता' ऐसा मन ही मन कहकर, बाद में होनेवाली सभी बातों पर उन्होंने विचार किया। 'तुम्हारे मार्ग में चलते आ रहे कम-से-कम कुछ लोगों को, जो भी मिले उसे हजम कर जानेवाले तुच्छ लोगों की संगति में भी न पड़ना चाहिए' ऐसा सोचकर उन्होंने लंबी साँस ले ली।

किसीके दरवाजा खटखटाने की आवाज सुनाई पड़ी। दरवाजा खुला ही था। रामलिंगम् ने घूम कर देखा। पोन्नइया मुसकराते हुए खड़े थे।

"आइये !" उठकर रामलिंगम् ने उन्हें बैठाया।

"बधाई हो, गणतंत्र-दिवस की बधाइयाँ" कहते हुए, पोन्नइया ने अपनी जेब से एक खद्दर का माला निकालकर उनके गले में डाल दिया। इस अप्रत्याशित स्वागत से रामलिंगम् एक क्षण के लिए सकते में पड़ गए, फिर माला निकालकर, "फोन से कह देते तो मैं ही चला आता" बोले।

"लगता है मालाओं के भय से आकर यहाँ छिप गये थे। ध्वजारोहण समारोह के समय भी आप नहीं दिखाई पड़े। फोन पर चिदम्बरम् से पूछकर ही यहाँ आया हूँ।"

पोन्नइया के चिदम्बरम् का नाम लेते ही, रामलिंगम् ने सीधे उनकी नजरों की ओर देखा। पोन्नइया, ने जैसे उनसे आँखें मिलाना न चाहते हों, अपनी नजरें दूसरी ओर घुमा लीं।

६. लक्ष्य और मार्ग

कुछ देर तक, रामलिंगम् के परिवार के कुशल-क्षेम के संबंध में बात करने के बाद पोन्नइया अपने असली मुद्दे पर आ गए। "हमारे 'काण्ट्रकर' के केस में क्या हुआ ? उसको किस स्थिति में ले आए हैं, आप ?" उन्होंने पूछा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रामलिंगम् उठकर उसके संबंध की फाइल उठाकर ले आए। उन्होंने, उसमें जो 'चार्ज रिपोर्ट' लिखी थी, उसको पढ़कर उन्हें सुना गये। उसको सुनकर पोन्नइया को असह्य आश्चर्य हुआ। उन्हें जितनी आशा थी, उसने उससे अधिक गोलमाल किया था। अगर यह बात उन्हें पहले मालूम हो जाती तो इसके बीच में पड़ने के पहले वे सोचते। इस समय, गलती मालूम हुई लेकिन अब तो वह उनकी प्रतिष्ठा का प्रश्न बन गया था।

"इस बात को छोड़िये; पहले मैं जान लेना चाहता हूँ कि इस विषय में मेरे प्रति आपके विचार क्या हैं। आप ऐसा सोचते हैं क्या, कि मैं अपने लाभ के लिए सिफारिश कर रहा हूँ?"

"आपको अपने फायदे की चिंता नहीं है, इस बात को मैं जानता हूँ" रामलिंगम् ने हँसते हुए कहा। "जनता के कल्याण के लिए आपने बहुत किया है, अब भी कर रहे हैं। आपके इरादों में, मैंने कोई बुराई कभी नहीं देखी।"

"ऐसा है; तब हम दोनों के बीच, समय-समय पर टकराव क्यों हो जाता है?"

रामलिंगम् ने कुछ सोचकर जवाब दिया। "केवल उद्देश्य अच्छा हो, इतना ही पर्याप्त नहीं है; उसकी प्राप्ति का मार्ग भी अच्छा होना चाहिए; गांधीजी का मार्ग यही है। छल-कपट, धोखाधड़ी राजनीति के अंग हैं इस मान्यता को बदलकर राजनीति भी धर्म-मार्ग से चलाई जा सकती है, गांधीजी ने इस बात को सिद्ध कर दिखा दिया है। परीक्षा की घड़ियों में हम उनके बताए मार्ग पर चलते रहे; अब उस मार्ग से फिसल जाना मुझे पसंद नहीं।"

पोन्नइया का मुँह सिकुड़ गया। उनको लगा, दुनिया को न समझनेवाले एक कोरे सिद्धान्तवादी की बातें हैं ये।

"उस समय में भी, क्या सभी लोग गांधी की अहिंसा पर विश्वास करते थे? लाठी-डंडा चलानेवाले, विस्फोट करनेवाले भी तब हमारे साथ थे। गांधी का कहना था कि हमें सत्य-मार्ग पर चलना चाहिए, लेकिन तब भी धर्मपेटी को हिलाकर पैसा बीननेवाले लोग भी थे कि नहीं? अच्छाई और बुराई, दोनों हमेशा रही हैं।"

पोन्नइया की ये बातें रामलिंगम् को अच्छी नहीं लगीं। स्वतंत्रता-संघर्ष-काल की राजनीति, त्याग करने के लिए तैयार रहनेवालों की राजनीति थी। अधिकांश लोग यह जानते हुए उसमें कूदे थे कि उन्हें कष्ट और यातनाएँ ही मिलेंगी। कुछ लोग, जिन्होंने उस अवसर का गलत उपयोग करना चाहा, वे दूसरों के द्वारा प्रताड़ित किये जाते थे। रामलिंगम् कुछ जवाब न दे, मौन साधे रहे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"यदि राजनीति चलाना है, तो सबका विश्वास करके ही चलाई जा सकती है कि नहीं; बताइए ?" पोन्नइया ने कहा। "कल आप ही किसी मदद के लिए कहेंगे तो मैं 'न' कर सकूँगा क्या ?"

"जिन लोगों पर विश्वास न करना चाहिए, हम उनका विश्वास कर रहे हैं। जिनका विश्वास किया जाना चाहिए, उन्हें छोड़कर हम दूर जा रहे हैं" रामलिंगम् ने कहा।

"इस तरह घुमा-फिराकर बात करने से मेरी समझ में नहीं आता, साफ-साफ, दो टूक बात कीजिये। खामियाँ-बुराइयाँ खुलकर बताइये।"

पोन्नइया की योजना थी कि रामलिंगम् के अंदर की बातें कहलवा लेने के बाद, घुमाफिरा कर बात कर, किसी प्रकार अपना काम साध लें।

रामलिंगम् के सामने, अब अपनी बातें साफ-साफ, खुलकर कहने की स्थिति आ गई थी।

"संघर्ष-काल की राजनीति, राजसी ठाटबाट से जीनेवाले को भी संन्यासी बना देने की राजनीति थी। आज जिस राजनीति को हम चला रहे हैं न, वह संन्यासी को भी राजा बना देने की राजनीति है। हमें, करोड़ों रुपये इकट्ठा करने और खर्च करने का अधिकार है। लाखों लोगों से श्रम कराने का अधिकार भी हमारे हाथों में है। हमारे पास जो पैसे की ताकत और जन-बल है उसे, हमें शासन सौंपनेवाले नब्बे प्रतिशत लोग नहीं समझते। वे लोग, कुछ न जाननेवाले, भोले-भाले लोग हैं। आँख मूँदकर हमारा विश्वास करनेवाले हैं। उन्हें, जो फल हमसे न्यायपूर्वक मिलना चाहिए उसे भी माँगना वे नहीं जानते।"

"इसको कौन इन्कार करता है ? गरीबों के विकास के लिये ही न हम लोग कष्ट उठा रहे हैं ?" पोन्नइया बीच में ही बोल उठे।

"मेरे और आप जैसे लोग चाहें तो कष्ट उठा सकते हैं, दूसरे लोगों को पहले अपना विकास ही प्रमुख बन गया है। हमारी इस कमजोरी को देखकर ही, जो लोग हमें देखने से ही डर जाते थे, अब खद्दर का कुर्ता पहनकर, हमारे साथ शामिल हो रहे हैं। 'आपत्कालीन राजनीति' में जो लोग हमारे पाँव पकड़-कर खींचते थे, वही लोग 'फायदे की राजनीति' में पहली कतार में आ गये हैं। हमारे खजाने पर आँख लगाए बैठे लोगों का विश्वास करके क्या हम गरीबों का उद्धार कर सकते हैं ? 'देश के जीने पर ही हम जी सकेंगे', जिन लोगों में ऐसा विश्वास नहीं है, उन लोगों का हमसे क्या काम ?"

पोन्नइया के लिए यह कड़वी घूंट थी। लेकिन इस कड़ुएपन के साथ मिले सत्य की उपेक्षा वे न कर सके। दूसरे विश्व-युद्ध के समय, चोरबाजारी, जमा-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खोरी, घूसखोरी, मिलावट आदि को व्यापार मानकर जनता को धोखा देनेवाले, इस समय गांधीवादियों की चाटुकारिता करने लगे हैं। पहले से ही सात पीढ़ियों तक के लिए सम्पत्ति एकत्रित करके भी, उसे अपर्याप्त समझकर, जागीरदार, जमींदार और अमीर लोग पैसा चुगनेवाले गिद्ध के रूप में राजनीति के आसमान में चक्कर काटने लगे हैं।

"आपकी बातें भी सही ही हैं। ऐसा नहीं है कि इसे मैं नहीं जानता" इस प्रकार सहमत होते हुए, पोन्नइया चिंतित हो, कुछ देर तक विचारों में खो गये। उनके अन्दर का संघर्ष उनके चेहरे में दिख रहा था। "पैसा और जाति की ताकत रखनेवाले पर विश्वास करके ही पार्टी चलाई जा सकती है; पैसे का सम्मान और जातिवाद की भावना अभी भी हमारी जनता से अलग नहीं हुई है।"

पोन्नइया के अन्दर ऐसी गलत धारणा पैठ गई है, इस बात का अंदाजा रामलिंगम् ने पहले ही लगा लिया था। अब यह बात उनके ही मुंह से निकल आई थी।

"पैसे और जातिवाद पर विश्वास करने से यहां पैसा-तंत्र ही पनपेगा; जनतंत्र नहीं। जनता के मन को परिवर्तित कर, हम उनको जनतंत्र के अनुकूल बनाना होगा, हमें उनके पीछे न चलना चाहिए। हमारे जैसे नेताओं को यह बात पहले समझ लेनी चाहिए।"

'हमारे जैसे नेताओं को' रामलिंगम् के इन शब्दों से पोन्नइया का धैर्य टूट गया। ये मेरे ऊपर ही दोषारोपण का साहस कर चुके हैं, ऐसा समझकर, "जिसका व्यावहारिकता से कोई सम्बन्ध नहीं, वैसा स्वप्न देख रहे हैं आप!" पोन्नइया फुफकार उठे। "वोट के लिए नोट मांगनेवाले और अपनी जातिवाले को ही वोट देंगे, ऐसा कहनेवाले इस देश में कितने लोग हैं, जानते हैं आप?"

"देनेवाले हैं, इसीलिए मांगनेवाले हैं? जाति को छोड़कर हम अपनी योग्यता के बल पर' वोट मांग सकते हैं?"

"दूसरा नोट बढ़ाएगा; हमारा विरोधी जाति दिखाएगा। हम हारें; पैसा और जाति की जीत हो, यही कहना चाहते हैं आप? "पोन्नइया ने आवेश में पूछा।

"दूसरे के रास्ते चलकर हम विजय भले प्राप्त कर लें, यह विजय पैसे और जाति की विजय ही कही जाएगी, जनतंत्र की नहीं।"

"तब, हमें चुनाव में हारना चाहिए, आपकी यही इच्छा है?"

"हार जाने में क्या फरक पड़ता है?"

"क्या कहा?" पोन्नइया गरज उठे। 'पराजय' शब्द उनसे नहीं सहा गया।

"हम हारेंगे ही!" रामलिंगम् ने शान्तभाव से उत्तर दिया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"पहले से ही चूसकर मोटे हुए लोगों के हाथ देश सौंप देने के लिए कह रहे हैं ?"

"वे कितने दिन तक चूस सकेंगे ? जनतंत्र में, शासन-पद्धति बपौती नहीं होती। हम उन्हें भगा भी सकते हैं; वे चूसकर जो भी एकत्रित करेंगे, उसे छीन-कर हम जनता को दे सकते हैं।"

"आप सूंड़ छोड़कर, पूँछ पकड़ने के लिए कह रहे हैं। अंग्रेजों के साथ संघर्ष करना मानो कम है, इन चोरों-लुटेरों के साथ और संघर्ष किया जाय, आप यही कहना चाह रहे हैं !"

"संघर्ष करेंगे" रामलिंगम् ने कहा; "नहीं तो, हमीं लोग, चोर-लुटेरे अथवा उनके साझीदार बन जायेंगे।"

"हुजूर !" हाथ-पांव फटकारते हुए, लाल मुंह किये, पोन्नइया सोफा से उठ खड़े हो गए। रामलिंगम् के अलावा कोई दूसरा आदमी अगर उनसे इस प्रकार की बातें कहता तो क्या हो जाता, कहा नहीं जा सकता।

रामलिंगम् भी हड़बड़ाकर उठ खड़े हो गये और पोन्नइया के दोनों हाथों को पकड़ लिया। उनकी नजरों में नजरें गड़ाकर उन्हें देखा। उनके मन में वह पुराना समय आ गया जब पोन्नइया उनके पहले विश्वासपात्र जनसेवक थे। देश के लिए, पत्नी, बच्चे और सगे-सम्बन्धियों को त्यागकर, किसी भी समय, प्राण-त्याग का भी साहस रखते थे वे। रामलिंगम् की आँखों से झर-झर आँसू झरने लगे।

"पोन्नइया ! नाराज न हों, मेरी बात सुनिए। मुझे लगता है कि हम दोनों के जुदा होने का समय आ गया है। मैं सोचता हूँ कि इस प्रकार मन खोलकर बात करने का अवसर अब हमें न मिलेगा। बैठ जाइए।"

पोन्नइया बैठ गए।

"हमें इस बात पर विश्वास है कि हम देश का शासन अपने हाथ में लेकर ही जनता के कल्याण के लिए काम कर सकते हैं; यह विचार न्यायपूर्ण है लेकिन इस इच्छा की पूर्ति के लिए हमें गलत रास्ते पर न जाना चाहिए।"

"ऐसा नहीं हो सकता न ! पार्टी का संगठन कर, इस शासन को मजबूत बनाने के लिए मैंने कितने पापड़ बेले हैं, आप नहीं जानते क्या ?" ऐसा कहकर पोन्नइया ने अपनी असमर्थता को स्वीकार किया।

"मूल बुराई, जनता को, वोट के लिए घूस देकर उसे, धोखा देकर, दूसरे मार्ग में ले जाने में है। यदि हम, घूस देकर जनता को ठगनेवाले का साथ देते हैं तो वह विजय प्राप्त करने के बाद भी, अपने खर्च की पूर्ति के लिए और अधिक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पैसा इकट्ठा करेगा। जब बारी ही खेत खायेगी, और रास्ता दिखानेवाला ही जब फिसलकर गिर जायगा, तब शासन-तंत्र के अन्दर ऊपर से नीचे तक घूस प्रवेश कर जायगी। घूस देने की सुविधा और चतुराई रखनेवाले तथा घूस लेने के लिए मौका पानेवाले लोग और साहस के साथ लेंगे, और तब जो अंश जनता को मिलना चाहिए उसे यही लोग चट कर जायेंगे। इस प्रकार के लक्षण अभी से दिखने लगे हैं।"

पोन्नइया से वहाँ रहा नहीं जाता था, वे एक धोखेबाज, भ्रष्ट आदमी को बचाने के लिए ही, उन्हें खोजते हुए उनके पास आये थे।

"आज गणतंत्र दिवस है। अगर हम चाहते हैं कि देश में गणतंत्र की फसल लहलहाए, तो हमें इसके चारों ओर सत्य की बारी लगानी होगी। गांधी ने कभी भी ऐसी आशा न की थी, कि हम हमेशा इस देश पर शासन करते रहें ! शासन-पीठ पर बैठने के दिन ही, वे सन्यासी वेश में, बिना किसी सुरक्षा के, नोवाखाली के संहार-क्षेत्र में गये थे, कि नहीं ? हमारे लिए पदवी ही सबसे बड़ी है ?"

पोन्नइया को क्रोध आ गया।

"आपकी क्या, शासकीय नौकरी में हैं ! चाहे राम का शासन हो या रावण का, आपका पद कोई नहीं छीनेगा। पाँच वर्ष में एक बार, वोट की भीख माँगने के लिए मुझे न गली-गली भटकना है ?"

"पोन्नइया !" रामलिंगम् ने झिड़क दिया। "रावण का शासन आने पर मैं अपने पद को लात मार देने वाला हूँ, पोन्नइया !"

"ठीक है, छोड़ दीजिए" पोन्नइया घूरते हुए बोले। "मैं जिस काम के लिए आया तो उसके लिए मैं वचन दे चुका हूँ। यह मेरी प्रतिष्ठा का प्रश्न है।"

"आपका दिया हुआ वचन सत्य वचन नहीं है, इस पर मैं कुछ भी नहीं कर सकता।"

"आप न भी करेंगे तब भी यह काम होगा" कह कर पोन्नइया ने अपनी तौलिया को झाड़कर पुनः कंधे में डाल लिया।

उस समय जिसकी उन्हें आशा नहीं थी, वह हो गया। "लीजिए, इस 'गणतंत्र दिवस' के दिन मुझे मुक्ति दे दीजिए !" मुख्य सचिव के नाम, पहले से ही लिख रखे, अपने त्यागपत्र को जेब से निकाल कर रामलिंगम् ने दे दिया।

"इस काम के लिए, मुझे राजी करने के लिए आप ही ने मुझ पर दबाव डाला था, आप ही ने इसका प्रबंध किया था। आप ही को इसे दे रहा हूँ।"

अपने मित्र का त्यागपत्र हाथ में लिए पोन्नइया आश्चर्य चकित बैठे थे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रामलिंगम्, कार्यालय की फाइलों को व्यवस्थित रख कर तेजी से बाहर निकल आए। "हुजूर !" कहते हुए ड्राइवर पीछे-पीछे चला। "कार को 'शेड' में रखकर, ताला लगा, चाभी सेक्रेटरी को दे दो" उन्होंने कहा।

ऐसा लगा मानो, आश्चर्य से मुक्त होकर पोन्नइया उनके पास आ रहे हों। उनके पास आने के पहले ही रामलिंगम् एक टैक्सी को रोक कर, उस पर बैठ गए। उनके और पोन्नइया के बीच की दूरी तीस मील की गति से बढ़ती जा रही थी। पोन्नइया की कार उनके पीछे नहीं गई।

७. सत्य की बलि

नौकरी से इस्तीफ़ा देकर, जब रामलिंगम् केवल आदमी बन, घर वापस आये, तो देखते हैं कि उनके घर के सामने एक कार खड़ी थी। वह कार उनके होने वाले समधी—डा० राजन् के पिता—बालसुन्दरम् की थी। घर के अन्दर एक ही चहल-पहल थी। मेहमानों के आने के कारण घर उत्साह और खुशी से भरा था। लक्ष्मी अम्मा दौड़इयाँ आकर, दूल्हे के माता-पिता के आने का समाचार रामलिंगम् के कानों में डालकर अन्दर चली गईं। घी, इलायची, चीनी की मिली-जुली सुवास रसोईघर से दरवाजे तक आकर, रामलिंगम् को जता गई कि अन्दर कुछ स्वादिष्ट चीजें बन रही थीं। रामलिंगम् सकपका गये।

बहुत प्रयत्न करने के बाद चेहरे में प्रसन्नता का भाव प्रदर्शित करते हुए, "विराजिये, विराजिये, राजन् को भी साथ लेते आते !" बनावटी हँसी के साथ, उन्होंने आगन्तुकों का स्वागत किया। मेहमानों में आने के कारण रामलिंगम् का कलेजा धक् धक् करने लगा। आगंतुक कोई साधारण अतिथि न थे; भारती को देखने के लिए आए हुए थे। 'जब इन्हें मालूम होगा कि मैं इस्तीफ़ा देकर आ रहा हूँ, तब क्या होगा ?'

राजन् के पिता, बालसुन्दरम् केन्द्रीय सरकार के बड़े ओहदे से 'रिटायर' हुए थे। उनकी पत्नी का जन्म भी सम्पन्न परिवार में हुआ था। अपनी बड़ी बेटी का विवाह भी उन्होंने अच्छी जगह में कर दिया था। इसके बाद राजन् ही अकेला था। लड़के को डाक्टरी पढ़ाने का उद्देश्य ही यही है कि पढ़ाई समाप्त होते ही अच्छी कमाई करने लगेगा। संभव हुआ तो उसे पश्चिम के देशों में, उच्चशिक्षा के लिए भी भेज देंगे और तब उसको और ऊँचे पद पर भी ढकेल सकेंगे, बालसुन्दरम् ने ऐसी योजना बना रखी थी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रामलिंगम् के परिवार के साथ सम्बन्ध हो जाने से बेटे का भाग्य खुल जायगा, ऐसा उनका विश्वास था। रामलिंगम् के विषय में, बालसुन्दरम् को बहुत सी बातें मालूम थीं। वे इतने भोले-भाले थे कि उन्हें अपने लिए पैसा इकट्ठा करना नहीं आता था, जहाँ तक सम्भव होता, वे बहुत सादा जीवन बनाये रखने में बड़े कड़े थे। हाथी को क्या अपनी ताकत का थोड़ा भी अंदाज होता है! उसी प्रकार रामलिंगम् को भी अपने प्रभाव और सामाजिक प्रतिष्ठा का अंदाज नहीं था; इतने सरल थे वे—यह सब जानकर ही बालसुन्दरम् उनसे सम्बन्ध बनाना चाहते थे।

रामलिंगम् के मात्र भारती, एक पुत्री थी; लाड़ली बेटी थी। उसके लिए, अगर वे दिल खोलकर भरपूर खर्च न भी करें तो भी दामाद की उन्नति के लिए आवश्यक सब प्रकार की सहायता करने में पीछे न रहेंगे, है न? अगर वे पीछे रहे भी, तब भी उनके राजनीतिक प्रभाव का उपयोग वे स्वयं कर सकेंगे, बालसुन्दरम् को ऐसा विश्वास था। विवाह हो जाने के बाद, वह 'रिटायर्ड अधिकारी' स्वयं रामलिंगम् का 'प्राइवेट सेक्रेटरी' बनना चाहता था।

बालसुन्दरम्, केवल अपनी शिक्षा और श्रम के बल पर ही आगे नहीं बढ़े थे। उनसे अधिक पढ़े-लिखे, उनसे अधिक मेहनत करने वाले और चक्कर काटने वाले लोग जब उनसे नीचे के पद पर ही थे, तब वे अकेले अपनी सामर्थ्य के बल पर धकाधक आगे बढ़ते गये थे। किस आदमी को कब पकड़ना चाहिए, उसकी पसंदगी और नापसंदगी को जानकर, उसके अनुकूल काम करने में वे अपने समान आप ही थे। काम के समय का ठीक आधा समय वे अपनी उन्नति के लिए ही व्यतीत करते थे, इसमें कोई संदेह नहीं। जिन्हें जीना नहीं आता था, उन कूप मंडूकों ने उनको कौवे की भाँति उपाधि दे रखी थी। कौआ ऊपर और ऊपर उड़ता चला जाता था, और मंडूक सूखे में 'टर्र-टर्र' करते पड़े थे।

बालसुन्दरम् की उमर साठ के ऊपर पहुँच गई थी। केवल सिर में रुई फैल गई थी, किन्तु देह की गठन ढीली नहीं पड़ी थी। बँधा-गठा शरीर; बड़े चुस्त और फुर्तीले थे। उस उमर में भी, बाहर जाने के समय वे ही कार चलाते थे।

बालसुन्दरम्, रामलिंगम् के कमरे में आकर कुर्सी पर बैठ गये। 'केसरी भात' के साथ-साथ फल भी दो प्लेटों में ले आकर भारती ने रख दिया। उसकी चाल में झलकती खुशी को देखकर, रामलिंगम् ने गहरी साँस ली।

"पूस लगे हुए, दस दिन से अधिक हो गया" इस प्रकार बात आरम्भ कर, "चैत अथवा वैसाख में कोई अच्छा मुहूर्त देख कर काम पूरा कर ही लेना चाहिए;

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इस पूस महीने में सगाई की रस्म पूरी की जा सकती है "बालसुन्दरम् ने अपनी बात समाप्त की।"

रामलिंगम्, नाम मात्र के लिए 'केसरी भात' मुँह में डाल रहे थे, इस बात को सुनकर न जाने क्यों,.उनका गला ही पकड़ लिया। उनकी साँस घुटने लगी। एक घंटे पूर्व, पोन्नइया को दिये गये अपने इस्तीफे के विषय में, आते ही 'केसरी भात' खाने की स्थिति आ जाने और उसके साथ-साथ, बालसुन्दरम् का भारती के विवाह के सम्बन्ध में बात चलाना, रामलिगम् ने इन सब पर एक साथ विचार किया। जीवन में परीक्षा की घड़ियाँ इसी प्रकार आकर झंझटें पैदा करती हैं ? क्या जवाब दें, यह उनकी समझ में नहीं आ रहा था।

"मैं जानता हूँ आप क्या सोच रहे हैं !" एक केला छीलकर, अन्दर करते हुए, बालसुन्दरम् कह कर हँसने लगे।

"सोचना ही पड़ता है" निराशाभरी आवाज से रामलिंगम् ने कहा।

"लड़की को कितने जेवर देंगे आप, लड़के को कितना पैसा देंगे अथवा विवाह में कितना खर्च कीजियेगा, इन बातों के सम्बन्ध में मैं कुछ पूछने नहीं जा रहा हूँ। इन रस्मों से आप बहुत दूर हैं, यह मैं जानता हूँ। आप गांधीवादी हैं न ! जानकर ही सम्बन्ध करने के लिए आया हूँ।"

रामलिंगम् के मन में एक आशा की किरण चमक कर गायब हो गई। उन्होंने मुसकराने का प्रयत्न किया। "उस विषय में कोई बात नहीं, वो····वो····" जो कुछ कहना चाहते थे, न कहकर, वे बीच में ही चुप हो गये।

"आपने सभी बातें मुझे पहले ही साफ़-साफ दिखा दिया है ! भारतो, खद्दर की ही धोती पहनना चाहेगी, तो शौक से पहन सकती है, गहने जेवर पहनने की अगर उसकी इच्छा न होगी, तो मैं दबाव न दूंगा। इस समय भारती जो जंजीर और चूड़ियाँ पहने हुए है, इतना ही पर्याप्त है। उस समय, अपने घर की मालकिन के सभी जेवर गांधीजी को आप ही ने दे दिया था ना ! क्या मैं जानता नहीं ?"

"वह एक दूसरा समय था; देने वालों का समय था" कहकर रामलिगम् ने लंबी साँस ली। दस-पंद्रह वर्ष भी नहीं हुए, इसी बीच में अब वह बदल कर ले लेनेवालों का समय होता आ रहा है। गरीब और साधारण लोगों को जो कुछ मिलना चाहिए उसको भी ले लेने वालों का समय है यह !—कितना बड़ा परिवर्तन हो गया है, देखा आपने ?"

रामलिंगम् की बातें, भारती के विवाह की पटरी से उलट कर, सिद्धांतवाद पर आ गई थीं, यह बालसुन्दरम् को अच्छा नहीं लगा। लेकिन वे अपने सेवाकाल में अपने ऊपर के अधिकारियों की सुर में ताल मिलाने में माहिर थे। उनकी राग

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में राग मिलाने में कुशल थे। उनकी समझ के मुताबिक रामलिंगम् भी एक ऊँचे अधिकारी ही थे।

"वाह, क्या वात कही है! क्या बात कही है!" कह कर बालसुन्दरम् फूल गए। "पुराने समय के राजर्षि, राजा जनक महाराजा के विषय में सुना है हमने। मैं अपनी घरवाली से आपके विषय में भी यही कहा करता हूँ। आपके साथ सम्बन्ध बनाना, मेरा अहोभाग्य है!"

रामलिंगम् का मन धवल था, इसलिए, उनके लिए, जो कुछ सफेद था वह दूध ही होता था। उस समय उनको विश्वास हो गया कि भारती का विवाह अवश्य हो जायगा। 'मुझे सन्यासी जानकर ही मेरी वेटी को मांगने आए हैं?'

"आपके कथनानुसार, विवाह कर लेंगे" रामलिंगम् ने कहा।

"केवल एक वात के लिये मुझे मजबूर न कीजियेगा।"

"किस वात के लिये?"

"विवाह में कितने लोगों को बुलाया जायेगा, यह बात मुझ पर छोड़ दीजिए। मेरे एक ही वेटा है। आपके परिवार का भी यह पहला विवाह है।"

"एक दिन के तमाशा के लिए दस हजार, बीस हजार खर्च करना क्या आवश्यक है, इस वात पर गौर कीजिये। अपने नजदीकी रिश्तेदारों और पारिवारिक मित्रों को ही बुलाना पर्याप्त होगा न मेरे पास इतना पैसा है, और न मैं कर्ज लेना पसन्द करता" रामलिंगम् ने कहा।

"विवाह का खर्च मेरा रहेगा, लेकिन बुलाना सबको ही चाहिये। आप कितने बड़े आदमी हैं, इस बात को आप ही नहीं जानते।"

"आपके वेटे और मेरी बेटी की शादी की गांव वालों को क्या चिंता पड़ी है? उनके समय और श्रम को बिगाड़ कर, हम अधिक खर्च का भार और झंझट क्यों मोल लें? हमारे वेटे-वेटी के विवाह में, देश के विकास में लगने वाला कितना धन और कितना जन-श्रम व्यर्थ होगा, जानते हैं आप?"

"जब देखो, आप को देश की ही चिंता लगी रहती है" कह कर बाल-सुन्दरम् हँसने लगे; "आप के घर की देखभाल के लिये, आप को मेरे समान एक आदमी की जरूरत है; मैं स्वयं आ जाऊँगा, देख लीजियेगा।"

"चाहे खर्च आप ही क्यों न करें, मुझे यह पसंद नहीं। पैसे वालों की देखा देखी, जिनके पास पैसा नहीं है, वे भी होड़ लगाते हैं; कर्ज लेते हैं; बाद में दुख भोगते हैं" रामलिंगम् ने कहा।

"देखिये, आप अपने नाम, पद और प्रतिष्ठा को चाहे भले महत्व न दें, मुझे महत्व देना ही चाहिए। शादी में सभी मंत्री अवश्य आयेंगे। पोन्नइया जैसे बड़े

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राजनीतिक लोग भी आएंगे। बड़े-बड़े उद्योगपतियों और व्यापारियों को आप अलग नहीं रख सकते। इन सबों के बीच, यह बता कर कि मैं ही इनका समधी हूँ, मुझे गर्व न होगा क्या? मेरा बेटा ही आप का दामाद है, यह बात उसके लिये महत्व की नहीं है क्या? पैसा कौन बड़ी चीज है, आप के साथ संबंध के लिये मैं चाहे जितना खर्च कर सकता हूँ।"

बालसुन्दरम् के मन में क्या था, इस बात को रामलिंगम् अब भी न समझ पाये थे। बालसुन्दरम्, रामलिंगम् के संबंध के बहाने, पद और पैसे की ताकत रखने वाले लोगों के निकट जा उनसे संबंध बनाना चाह रहे थे। रामलिंगम् के नाम को औजार बना कर वे अपनी बढ़ोत्तरी की फसल बढ़ाना चाहते थे। उसके बीज के रूप में, विवाह में खुल कर खर्च करने का विचार रखते थे। परिवार की प्रतिष्ठा और प्रसन्नता के नाम पर किया जाने वाला काम कालाबाजारी में बदलने जा रहा था, इस बात को रामलिंगम् न जान सके।

"यह व्यर्थ का दिखावा और आडंबर होगा। इसके अलावा इस स्थिति में, अगर मैं बुलाता भी हूँ, तो भी बहुत से लोग आयेंगे भी नहीं" रामलिंगम् ने कहा।

"बिना आये कैसे रहेंगे?"

रामलिंगम् ने एक क्षण विचार किया। उन्होंने जो निर्णय लिया था, उसे पहले अपने परिवार- वालों को बताकर, बाद में-दूसरों को बताना चाहते थे वे। लेकिन परिस्थिति ठीक इसके विपरीत बन गई थी। यह ऐसी बात थी कि कल, नहीं तो परसों बालसुन्दरम् को मालूम ही हो जायगी। उसे इसी समय, उनके सामने कह देने में हर्ज क्या है?

रामलिंगम्, बालसुन्दरम् की नजरों में नजरें डालकर, "अभी अभी मैं, अपने जीवन का एक अहम निश्चय कर के आ रहा हूँ" बोले।

बालसुन्दरम् ने अपनी नजरें ऐसे ऊपर उठाया जैसे पूछ रहे हों, 'वह निश्चय है क्या?'

"आप सन्यास के विषय में कह रहे थे, है न? मेरा निश्चय भी एक तरह से सन्यास ही है। मैं अपना काम, अपना पद छोड़ कर आया हूँ। अब मैं केवल रामलिंगम् हूँ, अधिकारी रामलिंगम् नहीं।"

बालसुन्दरम् की आँखें फटी की फटी रह गईं। उन आँखों से, उन्होंने पूर्व में बनाये गये अपने सात मंजिले भवन को भरभराकर गिरते देखा। भवन के ऊपर खड़े हुए वे, उसके मलवे के बीच में फँस कर अपनी हड्डियों के टूटने की वेदना का अनुभव करने लगे। एक क्षण में ही, उन्हें लगा, उनकी उमर तीस साल अधिक हो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गई है। निराश हो, वे धीरे से कुर्सी से उठ गये। धीरे-धीरे पाँव रखते हुए, पास आ कर, रामलिंगम् के सामने अपना दाहिना हाथ बढ़ा दिया।

रामलिंगम् का हाथ भी बढ़ गया।

हाथ मिलाने की कोशिश करते हुए, "अच्छा अब हम चलते हैं" बालसुन्दरम् ने भारी आवाज से कहा।

"ठीक है, चलिये" रामलिंगम् ने कहा।

"मैं भी एक निश्चय पर पहुँच गया हूँ; यह भी एक तरह से सन्यास ही है, ऐसा आप मान लीजिये। हम लोग अपने संबंध का त्याग करेंगे। अब हमारे बीच संबंध की कोई जरूरत नहीं। आप जिससे चाहें, अपनी लड़की की शादी और कहीं कर लीजिये।"

बालसुन्दरम् धीरे-धीरे कमरे से बाहर आ गये। अपनी पत्नी के कानों में कुछ कहा। किसी से बिना कुछ कहे, लक्ष्मी अम्मा के प्रश्न का कोई जवाब दिये बगैर वे लोग चलते बने। कार की गुर्राहट में, रामलिंगम् ने, बालसुन्दरम् के गुस्से को समझ लिया।

लड़खड़ाते हुये कमरे से बाहर निकले रामलिंगम् का प्रश्न भरी दो जोड़ी नजरों ने, स्वागत किया। भारती और लक्ष्मी अम्मा भयभीत, उन्हें देखने खड़ी थीं। रामलिंगम् आहिस्ते से भारती के पास गये।

"बेटी, भारती !…………बेटी, भारती………… !"

उनके हाथ, ने अपनी बेटी की गर्दन को घेर लिया। मुँह से, उनसे कुछ बोला न गया। बच्चे की तरह वे फूट-फूट कर रोने लगे। उनको रोता देख कर; दोनों के कलेजे में रक्त के आँसू भर गये। उन दोनों को कारण नहीं मालूम था। कारण जानने वाले, रामलिंगम् में, उसे बताने का साहस न था। जो देश की रक्षा करने के लिये सोच रहा था, वह घर की रक्षा में असमर्थ हो विह्वल था। फूट-फूट कर फफक रहा था।

८. परिवार-गोष्ठी

रात, सात बजे, रामलिंगम् के मकान के सामने के हाल में परिवार की गोष्ठी आरंभ हुई। हमेशा की तरह रामलिंगम् ही उसके सभापति थे। लक्ष्मी अम्मा, भारती, चिदम्बरम् और सुभाष, सभाध्यक्ष के बिलकुल पास फर्श पर बैठे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

थे। केवल रामलिंगम् 'इजी चेयर' पर, सीधे बैठे थे। दुख भरे समाचार की प्रत्याशित वेदना, सुभाष को छोड़कर, दूसरे, सभी लोगों के चेहरों पर झलक रही थी।

पच्चीस वर्षों से, परिवार-गोष्ठी करने के लिये, रामलिंगम् ने एक आदत ही बना ली थी। इन्होंने जब इसे शुरू किया था, उस समय लक्ष्मी अम्मा के माता-पिता भी उसी परिवार के साथ रहते थे। उनके परलोक सिधार जाने के बाद, उस जगह की पूर्ति बच्चों ने कर दी थी। जेल जाने अथवा काम से बाहर जाने के कारण रामलिंगम् को बहुत दिनों तक परिवार से विलग रहना पड़ा था। उन समयों के अलावा, जब कभी वे परिवार के साथ रहते थे, सप्ताह में एक बार वे, निश्चित रूप से गोष्ठी किया करते थे। अपने अनुभव, लक्ष्य और समस्यायें बताया करते थे। उन्होंने जिस संघर्षपूर्ण जीवन को अपनाया था, उसमें उनका परिवार एक दुर्ग जैसा रहेगा, रामलिंगम् ने ऐसी आशा की थी। उनका ध्यान, इस बात पर भी था कि सेनापति के गिर जाने के बाद भी 'दुर्ग' भहरा न जाय।

कुर्सी पर बैठे-बैठे ही, रामलिंगम् ने दूसरों को ध्यान से देखा। वे जो कुछ कहना चाहते थे उसे कहें कैसे, यह न समझ पा वे झिझक रहे थे। पहाड़ एक बार पिघल भी जाय लेकिन उनका मन नहीं पिघल सकता, ऐसा विश्वास था रामलिंगम् का, थोड़ी देर पहले भारती को पकड़ कर फूट-फूट कर अपने रोने पर सोच कर वे शर्मिन्दा हो गये। उन्हें इस बात का भय था, कि वहाँ कायरता, कहाँ फिर तो न विचलित कर देगी उन्हें!

"बताइये अप्पा, क्या बात है?" मानो उनकी अन्तर्वेदना का अनुभव कर रहा हो, इस प्रकार चिदम्बरम् ने पूछा। उसके उकसाने से उन्हें कुछ बल मिला।

"मैं अपने काम की जिम्मेदारी ने छुट्टी पा गया हूँ; नौकरी से इस्तीफ़ा लगा दिया हूँ; "उन्होंने बात आरंभ की। अब मुझे हर महीने पहली तारीख को मिलने वाला वेतन नहीं मिलेगा। कम किराये पर मिले हुए इस मकान को, हमें शीघ्र ही खाली करना होगा। कार, नौकर, टेलिफोन आदि की सुविधा अब हमें न मिलेगी। चिदम्बरम् के वेतन से ही अब हमें अपना पेट भरना होगा और परिवार चलाना होगा। मैं और कहीं काम तलाशने की कोशिश करूँगा।"

"अप्पा!" सुभाष क्रोधित हो, चिल्लाया।

रामलिंगम् ने उसको ऊपर से नीचे तक देखा। उसकी आँखें लाल पड़ गई थीं। वह, उस समय, झपटने वाला बघेलुआ बन गया था। जो लोग समझने की उमर में थे, जब वे लोग शान्त है तब अकेला वही क्यों धैर्य खो रहा हैं, यह बात उनकी समझ में नहीं आई।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"शान्त रहो, सुभाष" कह, उसे हाथ से इशारा कर, "अभी मैंने जो बताया हैं वह आधा भाग ही है; दूसरा आधा भाग ही मुख्य है" रामलिंगम् ने कहा। "मेरे नौकरी छोड़ देने से..........भारती के विवाह के लिये हमने जो प्रबंध कर रखा था, लगता है अब वह रुक जायगा। निश्चय करने के लिये आये, लड़के के पिता, 'न' करके चले गये हैं। हमारे सामने आने वाली सबसे बड़ी परीक्षा यही है..........।"

भारती के विवाह की बात चलाते ही उनका गला एक बार फिर भर आया। उनकी आँखों को पानी के पर्दे ने ढँक लिया। दोनों बेटों की अपेक्षा, भारती के ऊपर उनका बहुत अधिक प्यार था। उसके प्रति अपने कर्तव्य का निर्वाह भली-भाँति करने का विश्वास उन्हें, उस दिन दूसरे पहर तक था। उसकी शादी के लिये, वे कुछ रुपया भी बचा कर रख सके थे।

भारती, पहले ही खूब रो चुकी थी। इस समय उसके चेहरे में किसी प्रकार की उदासी भी न दिखाई पड़ती थी। चिदम्बरम् के लिये, यह समाचार थोड़ा भी अप्रत्याशित न था। पिता के इस्तीफा देने से वह घबड़ाया नहीं, बहन की शादी का क्या होगा, इसी बात से वह तिलमिला गया था।

"मैं बीच में बोल सकती हूँ?' लक्ष्मी अम्मा, निराशाभरी आवाज से बोलीं। वह आवाज उनके अंदर की नसों से फूटी थी।

अपराधी की तरह, अपना सिर उठा कर, रामलिंगम् ने अपनी पत्नी को देखा।

"इस लड़की का... ....मेरी कोंख से जन्मी इस अभागन का विवाह करने के बाद आप नौकरी नहीं छोड़ सकते थे? इसके पहले ही ऐसा क्या हो गया कि आपने इस शुभ दिन को देख कर आज ही यह काम कर दिया? आप से शादी करने के लिये मुझे न जाने कितने दिन परेशान रहना पड़ा था; वही गति आपकी बेटी की भी होनी है क्या?"

लक्ष्मी अम्मा का आवेश क्षण-क्षण बढ़ता जा रहा था। भारती जब पेट में थी, वे जेल में थे। महीने में कम से कम एक पत्र भी नहीं लिख सकते थे, ऐसी पाबन्दी थी इन पर। अर्जी देकर, अनुमति मिलने पर, गर्भावस्था में वे, छोटे चिदम्बरम् को भी साथ ले कर जेल जाती थीं। वहाँ जेल के संतरियों की अनाप शनाप बातें सुननी पड़ती थीं। तृतीय श्रेणी के कैदियों की तरह, मूड़ मुड़ाए, हड्डियों के ढाँचा जैसे ये दिखाई पड़ते थे। इनके जेल में रहने के कारण रिश्तेदारों और गाँव वालों की अपमान जनक बातों से लक्ष्मी अम्मा को अपमानित होना पड़ता;

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

था। भारती के जन्म के समय भी वे पास न थे—इतना सब लक्ष्मी अम्मा तमत-माती हुई कह गईं।

रामलिंगम् इन बातों को धैर्य से सुनते रहे। लक्ष्मी अम्मा को वे अच्छी तरह जानते थे। वे अपने मन की वेदना प्रकट कर लें, इसके लिये उन्हें पूरी छूटी देना उचित था। अपने मन का मलाल बाहर निकाल देने के बाद रामलिंगम् चाहे जो कहें, उसे सुन कर लक्ष्मी अम्मा मुँह से जो कह दें, काम से वे मदारी के साँप की तरह सिकुड़ जाती थीं! अब भी लक्ष्मी अम्मा की बातें समाप्त नहीं हुईं।

"जिसको देश की सेवा करनी है, उसको घर-गृहस्थी रखनी ही न चाहिए। उसे शादी ही न करनी चाहिये; लड़के-बच्चे न पैदा करना चाहिये" इस प्रकार, उन्होंने स्थायी से प्रारंभ कर अपनी आलाप समाप्त किया।

रामलिंगम् ने, हमेशा की तरह, इस समय भी विचार किया। स्वतंत्रता-संघर्ष में लगे हुये बहुत से लोगों ने, गृहस्थ जीवन से दूर रहने के लिये शादी ही नहीं की थी। रामलिंगम् के मन में, संघर्ष में शामिल होने की बात तब पैदा हुई थी, जब देश में, दमन बहुत अधिक बढ़ गया था। उस समय, उन्होंने नौकरी तो छोड़ दी थी, किन्तु परिवार न छोड़ सके थे। इसी लिये, परिवार को भी अपने साथ चलने के लिये, उन्होंने, हर हफ्ते, परिवार-गोष्ठी का आयोजन शुरू कर दिया था। पुलिस ने, लक्ष्मी अम्मा को पकड़ कर जेल में भले नहीं बंद कर दिया था, लेकिन वे दूसरे कष्टों से न बच सकी थीं। खद्दर के पक्ष में, विदेशी कपड़ों के बहिष्कार के समय, विदेशी कपड़ों की दूकानों के सामने, धरना देने पर; लक्ष्मी अम्मा और दूसरे स्वयं सेवकों के ऊपर; पुलिस वाले नाली का पानी डाल कर उनका अभिषेक किया करते थे। सड़कों पर, उन लोगों को लाठियों से धक्का दे, लुढ़का कर मजा लेते थे। ये सब, उस समय के अधिकारियों के दिमाग में उत्पन्न कुछ अनोखी दंड-विधायें थीं!

"लक्ष्मी, मैंने स्तीफ़ा देने के समय तक, इस बात पर विचार नहीं किया था, इसका संबंध भारती की शादी से होगा। यदि मैं, इस पर विचार करता भी, तब भी मेरा मन नौकरी से चिपके रहने के लिये गवाही न देता। एक साल से मेरे अंदर इसके लिये संघर्ष चलता रहा था, उसके बाद मैं इस निर्णय पर पहुँचा हूँ। घर देखता था, तो देश को नहीं देख सकता था; देश को देखता था, तो घर देखना संभव न हो सकता था। तुम मेरे अंदर के कष्ट को समझती हो। मैं और कर ही क्या सकता था! तुम्हीं बताओ!"

"अच्छा देश है, यह" चिदम्बरम् मन ही मन कुरमुराया। "जो देशद्रोह करता है, वही सुख-सुविधायें जुटाने में समर्थ है; घर से द्रोह करने वाला ही देश की सेवा कर सकता है। स्वतंत्रता मिलने के बाद भी यह हालत?"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"अप्पा, आपको चिंता करने की कोई जरूरत नहीं, अप्पा ! "भारती ने कहा।" मुझे डाक्टर पर अब भी विश्वास है; माँ-बाप के डर से, वे भी अपना मन वदल देंगे, ऐसा नहीं सोचती मैं।"

"हाँ, मैं भी राजन् से बात करूँगा" अपनी बिखरी आशा हो बटोरते हुए चिदम्बरम् ने कहा।

"तुम दोनों के विश्वास को मैं नकारता नहीं; लेकिन डाक्टर के पिता की बातों से मैंने एक बात जान ली है। वे, मेरे पद के कारण ही, हमसे संबंध करना चाहते थे। उनका परिवार प्रतिष्ठित और सम्मानित परिवार है। हमें किसी भी परिस्थिति के लिये तैयार रहना, अच्छा होगा।"

"मैं उन्हें जानती हूँ, अप्पा; वे अच्छे आदमी हैं" भारती, कुछ डरी हुई सी, फिर से राजन् के पक्ष में बोली।

भारती के विश्वास के कारण, उसकी माँ को कुछ संतोष मिला, लेकिन रामलिंगम्, इससे और अधिक चिंतित हो गये। वे इस बात को न्याय पूर्ण नहीं मानते थे, कि, उनसे संवंध बनाने के लिये, राजन् अपने माता-पिता से संबंध तोड़ ले। उस परिवार में वही एक अकेला पुत्र था।

"राजन् अच्छा लड़का है। अगर वह अपने माता-पिता के मन को बदल कर, सहमत कर लेता है, तो शादी की जा सकती है" रामलिंगम् ने कहा।

उनकी बातों के भीतरी अर्थ को समझ कर; लक्ष्मी अम्मा, चिदम्बरम् और भारती चुप रहे, केवल सुभाष ने मुँह सिकोड़ लिया। सुभाष की उमर पन्द्रह-सोलह की रही होगी, लेकिन तुनक उमर से ज्यादा थी; उमर से अधिक बुद्धि थी।

"क्या है सुभाष ?" रामलिंगम् ने पूछा।

"आपने स्तीफा क्यों दे दिया ? इसका कारण नहीं बताया ना ?" उसने पूछा। हर बात में, क्यों, किसलिये, कैसे, आदि प्रश्न करने की उसकी आदत थी। उसकी जिज्ञासा कुंठित न हो, इस लिये रामलिंगम्, समय-समय पर उसके प्रश्नों का उत्तर दे देते थे।

इस समय भी, अपने किये गये कार्य का कारण, वह समझ सके इस ढंग से उसे समझा कर वताया। लक्ष्मी अम्मा और चिदम्बरम् इसे कुछ हद तक पहले से ही समझते थे। सुभाष और भारती के लिये यह बात नई थी।

"जो लाभ देश की जनता को मिलना चाहिये, उसे एक आदमी ने अपने और अपने परिवार के लिये चुरा कर ले लिया था। मैंने उसे रँगे हाथों पकड़ लिया है। यह बात पोन्नइया को पसंद न थी। उनका कहना है कि उसकी चोरी को छिपा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कर उसे, छोड़ दिया जाना चाहिये। ऐसा करना मुझे देश-द्रोह का काम लगता था। हम दोनों के बीच, इसी प्रकार के और मामलों में भी मतैक्य न था। मैं नौकरी छोड़ कर अलग हो गया" रामलिंगम् ने कहा।

सुभाष की आँखें लाल हो गईं। अच्छा काम करने वाले अपने पिता का दंड भोगना और चोट की रक्षा किया जाना, उससे न सहा गया।

"देश की संपत्ति चुराने वाले के हाथ काट लिये जाने चाहिये, उसके पाँव काट लिये जाने चाहिये; उसे फाँसी पर लटका दिया जाना चाहिये" सुभाष ने चिल्ला कर कहा।

"सुभाष !" रामलिंगम् चीख उठे, "ऐसा मत कहो सुभाष ! क्या इसी लिये मैंने तुम्हें अहिंसा-मूर्ति का 'सत्य-शोध' पढ़ कर सुनाया था ?"

"जब सत्य रहेगा, तभी अहिंसा भी रहेगी, आप ही ने बताया था ना ? असत्यवादी चोर के हाथ काट डालने में हर्ज क्या है ? विश्वास घाती को फाँसी पर चढ़ा देने में क्या बुराई है ?"

झपट कर उसे पकड़ भारती ने उसका मुँह बंद कर दिया। वह उसकी पकड़ में स्थिर न था; छटपटा रहा था, उछल रहा था। उसका मुँह बंद करने वाले भारती के हाथ में उसके गरम-गरम आँसू गिर रहे थे।

"अप्पा सत्य बोल रहे हैं, अब तुम्हारी शादी रुक गई, हमें सड़क पर रहना होगा। अच्छा सत्य है ! भली है अहिंसा ! इस गाँधी ने अप्पा को बिगाड़ दिया, देश को बर्बाद कर दिया; मैं सब जानता हूँ ! छोड़ो मुझे, छोड़ दो !"

रामलिंगम्, यह सब तमाशा जैसे देखते रहे। उनका धीरज दिखावटी था। सुभाष को वे कुछ-कुछ पहले से ही जानते थे, लेकिन उस दिन उनको वह बिलकुल बदला हुआ दिखाई पड़ा। उनके मन में आया कि जब उसका नाम रखा गया था वह समय अच्छा न था। देश की स्वतंत्रता के लिये बर्मा, मलाया आदि पूर्व के दूर देशों में एक बड़ी सेना खड़ी कर अंग्रेजों के विरुद्ध हथियार लेकर युद्ध करने वाले, बंगाल के सिंह थे कि नहीं सुभाष बोस।

परिवार गोष्ठी में, उनके विरुद्ध आवाज उठाने वाली लक्ष्मी अम्मा ही थीं लेकिन उनकी आवाज ही विरोध की आवाज होती थी। लेकिन गोष्ठी के बाद, सभापति की आवाज ही सब की आवाज होती थी, यह परिवार का नियम था। सभापति भी, दूसरों के विचार जानकर ही निर्णय लेता था।

उनके इस पुराने विश्वास को, आज उनके बेटे ने छिन्नभिन्न कर दिया था। वह भी कल पैदा हुए अन्तिम बेटे ने।

गोष्ठी खत्म हो गई। उस दिन घर के किसी भी आदमी से खाना न खाया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गया। भारती हठकर सुभाष को खाना खिला रही थी। रामलिंगम् धीरे-धीरे सुभाष के पढ़नेवाले कमरे में चले गये। उसकी पुस्तकों को खड़े-खड़े ही देखा। अधिकांश उसकी पाठ्य पुस्तकें ही थीं।

उन्होंने कुछ सामान्य पुस्तकें खरीदकर उसको दिया था, वे बाँस की आलमारी के अंतिम खाने में रखी थीं। उन्होंने पलटकर देखा। उनके साथ एक पुरानी पुस्तक भी थी, जिसे उन्होंने नहीं खरीदा था। वह भी गांधीजी के 'सत्य-शोध' के बगल में थी। उसे उठाकर देखा। वह एक बड़े देशभक्त और तमिल में पहले-पहले विचारपूर्ण पुस्तकें लिखकर ढेर लगा देनेवाले वे० सामीनाथ शर्मा का लिखा ग्रंथ था—कार्लमार्क्स का इतिहास।

रामलिंगम् के भाल पर, दोनों भौहों के बीच में एक प्रश्न चिह्न उभर आया, इसको समझ लेने की उम्र हो गई क्या इसकी ? अथवा क्या वह, इसे किसी दूसरे से समझ कर पढ़ता है ?

९. फौलाद के विरुद्ध तिनका

रामलिंगम का, काम करने और सोने के लिये एक ही कमरा था। उस दिन, रात में उनके कमरे की बत्ती बड़ी देर तक जलती रही। फर्श में एक नारियल के पत्तों की चटाई, तकिया सहित, बिछी थी। लेकिन वे, अभी लेटे नहीं थे।

उस दिन की परिस्थितियों के कारण हुए उनके मानसिक दुख से छुटकारा पाने के लिये, उन्हें एक साथी की जरूरत थी। उन्होंने, चरखे की पेटी सामने रख लिया; चश्में को साफ कर, चढ़ा लिया; रुई की पोनियों से सूत बनाने के लिये चरखे को घुमाने लगे।

शुरू-शुरू में उनका चरखा, उनके साथ आँख-मिचौनी खेलने लगा। सूत का तार, एक ही तरह का शुद्ध नहीं आ रहा था; कहीं मोटा कहीं पतला सूत, उनकी परीक्षा ले रहा था। कभी कभी टूट भी जाता था। कुछ देर तक संघर्ष करने के बाद, मन को एकाग्र कर वे आसानी से सूत कातने लगे।

लक्ष्मी अम्मा ने, आकर चुपचाप, कमरे के भीतर झांक कर देखा। उनका ध्यान उन पर नहीं गया। वे, आधे मिनट तक खड़ी-खड़ी चुपचाप देखने के बाद, अपने रास्ते वापस चली गईं। उस समय रात के ग्यारह बज गये थे। रामलिंगम् जब हाथ में चरखा ले लेते थे, तब वे भगवान में लीन भक्त बन जाते थे, यह बात उस घर के सभी लोग जानते थे। यह काम, उनके लिये, ध्यान करने का साधन था। सूत कातना उनके लिये एक यज्ञ था। यज्ञ का अर्थ, दूसरों के लिये स्वयं का त्याग और दूसरों के लिये श्रम करना है, यह व्याख्या गाँधी जी ने बताई थी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पहले रामलिंगम् हर समय हाथ में तकली लिये रहते थे। उनकी जेब में रुई की पोनियाँ और कते सूत की गुंडियाँ रहा करतीं। वे चाहे खड़े हों, चल रहे हों अथवा मित्रों से बातें कर रहे हों, हर समय उनके हाथ रुई से सूत बनाने का चमत्कार करते रहते थे। नौकरी कर लेने के बाद वे हमेशा हाथ में तकली न रख सके। रात में सोने से पहले कुछ देर तक चरखे में सूत कातने के बाद ही सोया करते थे।

चरखे में सूत कातते ही मेरी मृत्यु हो, गाँधी जी की ऐसी इच्छा थी। वैसा न हो सका। वे जब ईश्वर की प्रार्थना करने के लिये प्रार्थना स्थल पर गये, उस समय एक दुष्ट ने उन्हें गोलियों से छलनी कर दिया था। जो अवसर गाँधी को नहीं मिला, वह क्या उन्हें नहीं मिलेगा, रामलिंगम् को इस बात की चिंता थी।

जिनके पास कोई काम नहीं, जिन्हें भोजन नहीं मिलता, ऐसे दुखी लोगों को चरखा कम से कम एक समय का भोजन देगा। वे अपनी झोपड़ियों में ही सूत कात सकते हैं। खेत में काम करने वाले मजदूरों को, जब खेत का काम न मिलेगा, तब चरखा इन्हें काम देगा; मजदूरी देगा, गाँधी जी ने ऐसा कहा था। उन्होंने, केवल अपने स्वयं सेवकों को उसे यज्ञ के रूप में ग्रहण करने के लिये आदेशित किया था। 'भोजन करने वाले प्रत्येक व्यक्ति को, उसके लिये कम से कम थोड़े समय के लिये शारीरिक श्रम करना चाहिये, यह सत्य तुम्हें चरखा बताता है। यह इस बात की ओर भी संकेत करता है कि तुम आंडबर के मोह में फँस कर अनावश्यक वस्तुओं का, अपने लिये ढेर न लगा, सादा जीवन और उच्च विचार के सिद्धान्त को अपना कर, जनता की भलाई के लिये परिश्रम करो। पैसे के बल से ऊँचे उठने के लिये परेशान न हो, मन से महान बनने का प्रयत्न करो, तुम्हारे लिये खद्दर का यही मुख्य संदेश हैं!' चरखे को नव जीवन देने वाले गाँधी जी ने ऐसा कहा है।

कमरे में, किट्-किट् करती घड़ी की आवाज भी रामलिंगम् को ठीक से न सुनाई पड़ती थी। वे चरखे के मंद-मंद सुर में, धीरे-धीरे खोते जा रहे थे। उस समय वह, उन्हें, सागर में फेंक दिये गये आदमी को मिल जाने वाली एक नाव के समान प्रतीत हुआ था। वीणा की झंकार में तल्लीन वीणावादक की मनःस्थिति में थे उस समय रामलिंगम्। चाँदी से ढले हुए वीणा के तार के समान, घुंडी से सूत निकलता जा रहा था। 'कितना कोमल है यह सूत! पकड़ कर थोड़ा भी खींच देने पर टुकड़े-टुकड़े हो जायगा। दस साल पहले तक, इसी सूत के लिये इस देश में कितनी शक्ति थी!'

स्वयं रामलिंगम् को—खद्दर आंदोलन में प्राणपन से जुटे रामलिंगम् ने, न केवल विदेशी कपड़ों को आग लगाकर जलाया था, वरन, विदेशी कपड़ों की दूकानों में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धरना देने के लिये साथ में अपनी पत्नी को भी ले जाया करते थे—जो कुछ हुआ था उस पर विश्वास करना कठिन था।

'खद्दर आन्दोलन की कहानी अविश्वसनीय कहानी है, फिर भी है सच' रामलिंगम् ने मन ही मन कहा। उन्हें ऐसा भ्रम हो रहा था मानो वह छोटा सा चरखा, उनको वही कहानी सुना रहा था।

यह है वह अविश्वसनीय पर सच कहानी :

पाश्चात्य देशों में होने वाली औद्योगिक क्रांति का साधन रूप में उपयोग करने के लिये अंग्रेजी साम्राज्य के मालिक जी जान से जुटे थे। सूत बनाने की बड़ी बड़ी मशीनें और यांत्रिक पुतली घर, हजारों श्रमिकों के द्वारा किये जाने वाले काम को, सौ-पचास लोगों के द्वारा ही पूरा करने के लिये आ चुकी थीं। इन मशीनों की कपड़ा उत्पादन की शक्ति भी राक्षसी शक्ति थी; उन मशीनों से बुने गये कपड़े को बेच कर पैसा बनाने के लिये, उनके पास, अपार जनसंख्या वाला यह गुलाम देश तैयार था।

लेकिन इसमें एक कठिनाई थी। यहाँ खेत में काम करने वाले लाखों मजदूर, सूत कताई और बुनाई को दूसरे धंधे के रूप में अपना कर अपनी जीविका चलाते आ रहे थे। भारत के गाँवों का दूसरा बड़ा धंधा कताई-बुनाई का धंधा था। अपने देश के कुछ पुतली घरों के मालिकों को मोटा करने के लिये, अंग्रेजी शासन, ने हमारे देश के बुनाई के धंधे की गरदन पर हाथ रख दिया था। उसकी कमर तोड़कर उसे पंगु बना दिया था। उसके द्वारा जीने वाले लाखों परिवारों का पेट मारकर, उन्हें बेरोजगार और जीविका विहीन बना दिया था। उन्हें फिर से खेतों की ओर खदेड़ दिया था। वहाँ भी काम न पा यहाँ वहाँ भटकने वालों को गुलाम बनाकर अपने दूसरे उपनिवेशों में भेज देते थे। हमारे देश की जनता, लंका बर्मा, सिंगापुर, फिजी द्वीप, अफ्रीका आदि देशों को, कुली के रूप में भेजी जाती थी। हमारे देश की दूकानों में, लंकाशायर और मैनचेस्टर की मशीनों के बने कपड़े उतारे जाते थे। यहाँ से, कच्चेमाल के रूप में कपास, और पैसा, उन्हीं जहाजों में इंगलैण्ड भेजा जाता था।

पैसा, कपास और दूसरे कच्चे माल; हमारे देश की संपत्ति, लूट के माल के रूप में इंगलैण्ड जा रही थी, श्रम करने वाले हाथों को यहाँ जीविका नहीं थी; चिपके पेट के लिये भोजन नहीं था। ऐसे लोगों के पास जा, उनमें स्वतंत्रता की भावना जागृत करने की दुर्भाग्य पूर्ण परिस्थिति में गाँधी जी ने स्वयं को झोंक दिया था। जिस समय उन्होंने देश का राजनीतिक नेतृत्व संभाला था, उस समय देश की भूखी पलटन बड़ी सस्ती हो रही थी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उन लाख-लाख लोगों को, दिन में कम से कम एक जून का भोजन देना था; उन्हें उनके श्रम का फल देना था, मजदूरी देना था, उनमें आत्म विश्वास पैदा करना था। उन्हें मिलने वाला काम ऐसा हो जिसे वे अपनी झोपड़ियों में ही कर सकें, वे उसे बिना किसी पूँजी और बिना कठोर प्रशिक्षण के कर सकें। इसके साथ-साथ उनका उत्पादन कम कीमत का तथा प्रत्येक पुरुष-नारी और बच्चे के उपयोग का भी हो।

न जाने कहाँ से, कब और किस के घर से, फेंक दिये गये, जंग लगे पड़े चरखे को गाँधी जी बाहर निकाल ले आये। इस देश का बहुत पुराना उद्योग, जिसका चलन एकदम बंद हो गया था और जो किसी समय, पश्चिम में रोम और पूरब में चीन, कांजीवरम् और कलिंग के नाम से निर्यात किया जाता था, उस चमत्कारी वृद्ध के द्वारा नव जीवन पा गया था। यंत्र, बड़े-बड़े कारखाने पूँजीपति, बिजली, कोयला और भाप के बिना ही झोपड़ियों में नई जान आ गई थी। कुटियों में रहने वाले हर आदमी के हाथ चलने लगे थे, चरखे का मधुर संगीत कन्याकुमारी से हिमालय तक सुनाई पड़ने लगा था।

हजारों स्वयं सेवकों के हाथों में तकली घूमने लगी थी, उनके और लाखों गरीबों के घरों में चरखे घूमने लगे थे। उनके मधुर संगीत में हाथ करघे, मृदंग की ताल मिला रहे थे। इसका फल? लंकाशायर की मिलों की मशीनों का चलना बंद हो गया, उनके लिये वहाँ काम ही न था!

मशीन रखने वाले अंग्रेज मालिकों और उनके साम्राज्य द्वारा चलाई गई औद्योगिक क्रांति की चुनौती स्वीकार कर, उसके विरुद्ध तिनका स्वरूप केवल चरखे के बलपर क्रान्ति अपना कर, उस डेढ़ हड्डी के बूढ़े ने इस बात को सिद्ध कर दिखा दिया था कि जन समूह के श्रम में आपार शक्ति छिपी है। वे ऐसे मालिक थे, जिसने आदमी और सत्य के अलावा कल-कारखानों, मशीनों, पैसा आदि किसी भी पूँजी को कभी कोई महत्व नहीं दिया। इस खद्दर-उत्पादन कार्य में कितने ही लोगों को काम और मजदूरी पाने का मार्ग प्रशस्त करने वाले उस मालिक ने अपने लाभ के लिये अपने उपयोग में आने वाले कपड़े की कुल लंबाई का ठीक आधा भाग कम कर लिया था!

"यह सब आपने क्यों किया था, जिस कारण किया था लोगों ने उसे भी भुला दिया" मन ही मन कहते हुये, रामलिंगम् ने गाँधी के चित्र की ओर घूम कर देखा। लंकाशायर के मिलों की होड़ एक तरह से शान्त पड़ गई थी। लेकिन देश स्वतंत्र होने के बाद, देशी मिलों और खद्दर तथा हाथ करघे के बीच की प्रतिस्पर्धा और अधिक बढ़ गई थी। देश के श्रमिक हाथों को कोई काम नहीं, वे बेकार ही, इधर-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उधर भटकते फिर रहे हैं, ऐसी परिस्थिति में इस प्रतिस्पर्धा को कैसे स्थान मिल गया, यह बात रामलिंगम् की समझ में न आ रही थी। पूर्व में, इस विषय में भी पोन्नइया से टकराकर वे निराश हो चुके थे।

कमरे में टँगी दीवाल घड़ी ने एक बजाया। तब भी उनका कताई कार्य बंद न हुआ। लगता था कि वे सारी रात अपने काम में लगे रहने का निश्चय कर चुके थे।

तीसरी बार वहाँ आ झाँककर देखनेवाली लक्ष्मी अम्मा से अब धीरज न धरा गया। इसके अलावा वे, उनसे एक मुख्य विषय पर बात भी करना चाहती थीं। अंदर जा, उनके पास बैठकर, "आपको यह अच्छा लगता है क्या ?" पूछा।

"क्या बात है ?" उन्होंने कताई नहीं बंद की।

"समय क्या हो गया, मालूम है ?"

"तुम अभी तक नहीं सोई ?" पूछकर उन्होंने हँसने की कोशिश की। उनकी मन:स्थिति कुछ हद तक अनुकूल थी, यह समझकर, लक्ष्मी अम्मा ने, "अगर आप नाराज न हों तो आपसे एक जरूरी बात कहना चाहती हूँ" कहकर, उनके चेहरे की ओर देखा।

उन्होंने भी उनके चेहरे की ओर देखा। उन नजरों में झलकते बचपने को देखकर लक्ष्मी अम्मा को थोड़ा साहस मिला।

"कल बात लीजिएगा, पहले थोड़ा लेटकर शान्तिपूर्वक सो जाइये" कहकर लक्ष्मी अम्मा ने उनके हाथ की पोनी को धीरे से थाम लिया। उन्होंने भी रोका नहीं। चरखे को बंद कर, पेटी को सामने की ओर थोड़ा खिसका दिया। मुड़े हुए पाँवों को थोड़ा उठाने की कोशिश की, नहीं हो सका। रक्त संचार में बाधा पड़ने से दोनों पाँव सुन्न पड़ गये थे। धीरे से पाँव पकड़े हुए, पास बिछी चटाई पर रामलिंगम् लुढ़क गये। स्थिति समझकर, लक्ष्मी अम्मा उनके पाँव दबाने लगीं। थोड़ी देर दबाने के बाद जब उन्होंने "बस हो गया" कह कर मना किया, लक्ष्मी अम्मा ने उनको दोनों पाँव पकड़कर, उनके बीच में अपना चेहरा छिपा लिया। गरम-गरम आँसू उनके पाँवों को भिगो रहे थे।

"यह क्या लक्ष्मी ?" कहकर रामलिंगम् अपने पाँव छुड़ाने की कोशिश करने लगे। उन्होंने नहीं छोड़ा।

"तुम कुछ कहना चाहती थी ?" पूछते हुए वे उठकर बैठ गये। उन्हें भी पकड़ कर बैठा दिया।

"कहूँ, तो सुनियेगा आप ?"

"सुनने लायक होगा तो सुनूँगा।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वे सुनेंगे ऐसा विश्वास उन्हें न था, यह भाव उनके चेहरे में दिखता था। फिर भी इच्छा उन्हें छोड़ न रही थी।

"पोन्नइया के घर से पार्वती ने मुझे फोन किया था। यहाँ फोन करने से शायद आप ही न फोन उठा लें, इस डर से उसने बगल वाले घर में मुझसे फोन पर बातें की है।"

पार्वती पोन्नइया की पत्नी थी। पोन्नइया के कहने से ही उसने बात की होगी, इस बात का अंदाजा उन्होंने लगा लिया।

"उसने बताया कि वे आपके इस्तीफे को फाड़कर फेंक देने के लिए तैयार हैं, आप उन सब बातों को भूलकर कल आफिस जाइये। उन्होंने उस विषय में वचन दे रखा है इसलिए आप उसमें अड़ंगा न लगाइये। पार्वती ने रोते हुए, ये सब बातें मुझसे बताई है।"

"तुमने क्या कहा ?"

"कुछ नहीं कहा। उसने, आपसे बात कर, कल फोन पर बता देने के लिए कह दिया था।"

"कल अपने घर से ही फोन करके उन्हें बता देना कि मैं कहता हूँ कि यह असंभव है।"

उनके आवाज की दृढ़ता से वे घबरा गईं। उस सम्बन्ध में आगे कहने के लिए उनका साहस न हुआ। वे चुपचाप उनकी आँखों को इस प्रकार देखती रहीं मानो उनसे विनती करती हों। उनके मन की वेदना को रामलिंगम् अच्छी तरह समझ रहे थे।

"लक्ष्मी ! मैं एकाएक इस निर्णय पर नहीं पहुँचा हूँ। जब तक सहा गया सहता रहा। जब असंभव हो गया तभी ऐसा किया है।"

"उस समय भी, जब आपने नौकरी छोड़ी थी, आपने ऐसा ही कहा था" लक्ष्मी अम्मा ने पुरानी बातों की याद दिलाई।

"तुम मुझे क्या करने के लिए कहती हो ?" कहकर, रामलिंगम् ने लंबी साँस खींची। "संघर्ष के दिनों में जब हाथ में न पैसा था, न पास में कोई अधिकार था, तब भी गाँव की जनता के सहारे मैं गांधीजी के विकास कार्यों को देख सका था। इस समय हाथ में पर्याप्त पैसा भी है, उसे खर्च कर काम कराने के लिए अधिकार भी है; सब प्रकार की सुविधायें भी हैं तब भी, ग्रामीण लोगों के प्रति अपने कर्तव्यों का निर्वाह मैं अपनी अन्तरात्मा के अनुसार कर सकने में असमर्थ हूँ।"

"कौन कहता है कि आप न करें ? पोन्नइया क्या रोकते हैं आपको ?" सोचकर रामलिंगम् कहने लगे। लक्ष्मी अम्मा समझ लेंगी, वे इसे जानते थे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"हमारे हाथ में पैसा और अधिकार आ गया है, इसे देखते ही आसान तरीके से पैसा बटोरनेवाले टुच्चे, खद्दर का कुर्ता पहनकर पोन्नइया के निकट आ गये। जो पानी धान को मिलना चाहिये, उसे पीकर खरपतवार मोटा होने की सोचने लगा है। गरीबों की भलाई करनी चाहिये, ऐसा कहनेवाले पोन्नइया भी, इस समय पैसे वालों की मदद के बिना पार्टी नहीं चल सकती ऐसा विश्वास करते हैं। जगह-जगह कुछ समाज विरोधियों को अमीर बनाकर, करोड़ों भोले-भाले लोगों को बीच खड़ा करने के लिए मैं भी एक साधन बनूं ऐसा नहीं हो सकता। अधर्म का साथ सड़क पर देकर अब मैं अपना पेट भरना नहीं चाहता।"

लक्ष्मी अम्मा रामलिंगम के चेहरे को अपलक देखती रहीं। लक्ष्मी अम्मा के अंदर, एक ओर असह्य दुख और दूसरी ओर असीम गर्व एक दूसरे से टकरा रहे थे। वे, उनकी पत्नी बन, तीस साल से भी अधिक समय से उनके साथ रह रही थीं, फिर भी वे उनकी पहुँच के बाहर की ऊँचाई तक ऊँचे उठते जा रहे थे, यह बात लक्ष्मी अम्मा के मन में जड़ जमाकर बैठ गई थी। इस समय उनका यह विचार और अधिक दृढ़ हो गया था।

लक्ष्मी अम्मा उनकी गोद में औंधी हो गईं। सिसकने के कारण उनकी देह हिल रही थी। रामलिंगम् अपने हाथों से, उनके केशों को धीरे-धीरे सहलाने लगे। उनसे भी अपनी वेदना रोकी न गई।

"रोओ नहीं लक्ष्मी, जिसका तुम्हें डर है, वैसी कोई बात होगी नहीं" राम-लिंगम् ने भर्राई आवाज से उन्हें धीरज बँधाया।

१०. प्यार और विवाह

डॉ० राजन्, अपने पिता की कार लेकर, सूर्य निकलने के पहले ही रामलिंगम् के घर पहुँच गये। सारी रात आँख खोले, छटपटाती भारती के गये प्राण, कार में अकेले राजन् को देखकर, मानों लौट आये हों ऐसा लगा। तेजी से जा, उसने अपने पिता के कमरे में झाँककर देखा। अधिक रात बीत जाने पर; आँख लगानेवाले रामलिंगम् अभी भी बिस्तर से न उठे थे। रसोईघर में जा, माँ के कानों में एक शब्द डालकर; चिदम्बरम् के कमरे में जा, "भइया, वे आ गये भइया ! वे आ गये भइया !" दुखभरी आवाज से बोली।

चिदम्बरम् ने खिड़की से राजन् को पहले ही देख लिया था, राजन् की अग-वानी करने के लिए वह बाहर आ गया। भारती भी उसके पीछे आकर, उसीके साथ दरवाजे पर खड़ी हो गई।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"आइए, मैं जानती थी, चाहे जैसे हो, आप अवश्य आएँगे" भारती ने कहा।

कुछ जवाब न दे, उसके चेहरे को ध्यान से देखकर, राजन् अंदर चला गया। वे लोग चिदम्बरम् के कमरे में आ गये। दोनों कुर्सी पर बैठ गये, भारती वहीं, दरवाजे की बगल में खड़ी हो गई।

राजन् एक सुन्दर युवक था। आकर्षक चेहरा, घुंघराले बाल, लाल शरीर। उसकी आँखें लाल, मुरझाई थीं। बाल बिखरे थे। रात भर वह बहुत चिंतित रहा होगा!

कुछ देर तक कोई, कुछ नहीं बोला। इसी बीच रसोई से काफी लाकर, भारती के द्वारा, लक्ष्मी अम्मा ने राजन् के पास भेजवा दिया। उसने काफी ले लिया किन्तु पिया नहीं।

वहाँ छाये मौन को भंग करते हुये, "आज मैं स्वयं आप से मिलना चाहता था" चिदम्बरम् ने कहा।

"मैं बहुत चिंतित हूँ; कुछ समझ में नहीं आता; बिलकुल नहीं समझ पा रहा हूँ" राजन् बोला। भारती की आँखें झर-झर आँसू गिराने लगीं। उसकी इस बात की थोड़ी भी चिंता न थी कि उसे देखने वाले क्या सोचेंगे, वह एक टक राजन् को ही देखे जा रही थी।

'समझ में नहीं आता' ऐसा कहने वाले को चिदम्बरम् ने परिस्थिति समझाया, "सगाई की तारीख तय करने के लिये आप के माता-पिता कल घर आये थे। कल ही हमारे पिता जी भी अपनी सर्विस से इस्तीफा देकर आये थे। इस बात को सुनते ही, उन लोगों को हमारे परिवार के साथ संबंध करना पसंद नहीं आया। बात इतनी है।"

"उन्हें इसी समय इस्तीफा देता था? विवाह के बाद नहीं दे सकते थे?" राजन् ने कहा। वहाँ खड़ी दोनों औरतें भी इसी प्रश्न को रात भर अपने से पूछती रही थीं।

चिदम्बरम् को राजन् से इसकी आशा न थी।

"जो होना था, हो गया। इसके बाद, क्या मेरे कुछ कर सकने का कोई रास्ता है, इस बात पर विचार करना चाहिये।"

राजन् ने कोई उत्तर नहीं दिया। उसने अपना चेहरा और आँखें पोछ कर, फिर से भारती को देख कर अपना सिर झुका लिया।

वह कुछ कहेगा, इस आशा से खड़ी लक्ष्मी अम्मा, उसको असमंजस में पड़े देख कर, रामलिंगम् के कमरे में चली गई। वे, बच्चे की तरह, नींद में डूबे थे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लक्ष्मी अम्मा उन्हें सोते हुये प्रायः नहीं जगाती थीं। धीरे से उनकी बाजू में हाथ रख कर, "उठिये, लड़का आ गया है" उन्हें जगाया ।

वर को कुछ न कहते हुये देख कर, "आपका क्या कहना है ?" चिदम्बरम् ने पूछा ।

"मैं बड़े असमंजस में हूँ; कुछ नहीं सूझ रहा" राजन् ने फिर से कहा। उसके प्यार में एक साल से मुग्ध भारती को, उससे झिझक और असमंजस की आशा न थी । उसे गुस्सा आ गया ।

"आप क्या कहते हैं ? आपका विचार क्या है ? वही बता दीजिये" उसने आवेश में कहा ।

भारती के गुस्से के कारण राजन् को रोष आ गया, सीधे उसके चेहरे में आँखे गड़ा कर, उससे बोलाः "मैं तुम्हीं से शादी करूँगा । तुम्हारे बिना मैं जी नहीं सकता । चाहे जैसे भी हो शादी करूँगा ।"

"निश्चित करके ही कह रहे हैं न ?"

"मेरा निश्चय यही है ।"

उसकी बात सुनते ही भारती का सारा दुःख काफूर हो गया। रात भर रोने से सूजी हुई उसकी आँखें हँसने लगीं । उसके वाक्य को वरदान मानकर, भारती ने अपने मन में जमा लिया । 'मेरा निश्चय यही है' मानो उसका एक यही वाक्य उसके लिये पर्याप्त था, ऐसा लगा। काफी उठा, उसके हाथ में देकर, "ठंडी हो रही है, पी लीजिये !" भारती ने मुसकराते हुये कहा ।

इसी बीच रामलिंगम् वहाँ आगये । आते समय, राजन् की बातें, उनके कान में पड़ गई थीं । उन्हें जिस रूप में भारती ने लिया था, उन्होंने नहीं लिया । उन्होंने सोचा, यह एक भावुक युवक की आवेशभरी बातें हैं ।

"आपका जो विचार है, वही हम सब लोगों का है । इसी प्रकार आपके माँ-बाप की सहमति हो, तो विवाह करना अच्छा रहेगा" रामलिंगम् ने कहा ।

"वे लोग सहमत हों तो ठीक, न हों तो ठीक, मुझे उसकी परवाह नहीं" राजन् बोला ।

"ऐसा कहना अच्छा होगा ?"

"मैं अब कोई छोटा बच्चा नहीं हूँ । मेरी उमर पर्याप्त हो गई है । डाक्टरी भी करता हूँ । अगर मुझे पिता जी पैसा न देंगे, तब भी अपने वेतन से मैं अपना परिवार चला सकता हूँ । वे अपनी सम्पत्ति जिसे चाहें दे सकते हैं ।

रामलिंगम् ने उसकी बातों को ध्यान से सुना । वह अपने माँ-बाप का अकेला

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वेटा था, इसलिये उसका लालन-पालन बड़े लाड़प्यार से हुआ था, इसे भी वे जानते थे। माँ-बाप और वेटे का संवंध भी पैसे से तौला जाना देखकर उन्हें बड़ी वेदना हुई।

"अगर आप कोशिश करेंगे तो अपने माता-पिता को राजी कर सकेंगे, ऐसा मैं सोचता हूँ" रामलिंगम् वोले।

"यह असंभव है; नहीं हो सकता" कहकर राजन् ने सिर हिलाया।

"असंभव कुछ भी नहीं है। अगर आप कोशिश करेंगे तो उनके मन को बदल सकते हैं। आप अगर दृढ़ रहे तो, यदि जल्दी नहीं तो छः महीनों में अथवा एक साल में वे बदल जायेंगे। आपके अलावा, उनके कोई दूसरा वेटा नहीं है ना ?"

"आप मेरे अप्पा को नहीं जानते," राजन् ने कहा, "इस जन्म में उन्हें बदलना असंभव है।"

"हर घर के अप्पा ऐसे ही हैं" लक्ष्मी अम्मा बीच में ही बोल उठीं "क्यों, इस लड़की के अप्पा के मन को ही कोई बदल दे यही पर्याप्त है; टेलीफोन पर केवल एक शब्द कह देना पर्याप्त है, वे इस्तीफा फाड़कर फेंक देने के लिये तैयार हैं।"

रामलिंगम् ने अपनी पत्नी की ओर इस प्रकार देखा जैसे बर्छी लगने पर सिंह अपने केश फुरफुराकर, घूम कर देखता है। लक्ष्मी अम्मा का सारा शरीर पसीने-पसीने हो गया। जिस बेटी को आँख की पुतली के समान पाला है, उसे, उसकी आँखों में बसे वर को दे सकें यही चिंता थी लक्ष्मी अम्मा की। इसीलिये अपना संयम खोकर वे बीच में बोल उठी थीं।

रामलिंगम् की नजरें देखकर, राजन् का कलेजा भी काँप गया। उनके काम के संवंध में साँस लेने का भी उसका साहस न हुआ।

"मैं एक बात सोचता हूँ, उसके अनुसार चल सकते हैं क्या, ऐसी कोशिश कीजिये" रामलिंगम् ने कहा।

सभी लोगों ने उनके चेहरे को ध्यान से देखा। भारती नजदीक जा, उनके पास चिपककर खड़ी हो गई। वह इस बात से चिंतित थी कि वे क्या कहने जा रहे थे।

"हम अधिक से अधिक एक वर्ष तक प्रतीक्षा कर सकते हैं। इस अवधि में आप अपने पिता की सम्मति प्राप्त करने की कोशिश कर लीजिये। इसके पहले भी उनकी सम्मति मिल जाती है तो और अच्छा है, तभी विवाह कर देंगे।"

राजन् और भारती ने, आशा, निराशा और संतोष, असंतोष से एक दूसरे की ओर देखा। वे इस योजना को न तो स्वीकार कर सके और न अस्वीकार कर सके।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रामलिंगम् ने ही आगे कहना जारी रखा : "तुम जैसे युवक-युवतियों के विवाह की बातों को, मेरे जैसे सयाने लोगों की मुट्ठी में रखना, मुझे पसंद नहीं। इसके साथ ही अगर तुम दोनों सोचते हो कि यह विषय केवल तुम दोनों से ही संबंधित है तो यह भी सत्य के विपरीत है। तुम दोनों के विवाह से तीन पीढ़ियों की अच्छाई-बुराई का प्रश्न भी संबंधित है। तुम लोगों को जन्म देनेवाले हम लोगों को अथवा अपनी होनेवाली संतान को तुम त्याग नहीं सकते हो। इस विषय में, हमारे बुजुर्गों का आधिपत्य उतना बुरा नहीं है जितना बुरा पश्चिम के लोगों की तरह निरंकुश जीवन है। इसीलिए मैं भली-भाँति धैर्यपूर्वक सोचकर करने के लिए कहता हूँ।"

"एक वर्ष के बाद भी यदि मेरे अप्पा अड़े रहे तब ?" राजन् ने ससंदेह पूछा।

"संदेह न कीजिये, विश्वास रखिये" रामलिंगम् ने कहा। "यदि आपके पास विश्वास है तो एक पहाड़ को भी हिला सकते हैं; आपके पिता उतने कठोर न होंगे।"

"अप्पा !" मिन्नतें करती हुई सी भारती ने उनकी ओर देखा।

"क्या, बेटी ?"

"यदि·······यदि·······उसके बाद भी इनके पिता राजी न हुए तो····?"

"राजन् और तुम अगर अटल रहे और उसके बाद भी यदि बालसुन्दरम् बाधक होते हैं तब मैं तुम लोगों की सहायता करूँगा। लेकिन ऐसी स्थिति न आ पाये, ऐसी कोशिश राजन् कर सकते हैं।"

लंबी साँस लेते हुए राजन् ने अपनी घड़ी देखी। फिर भारती के चेहरे को देखा।

"यदि आप अपनी कोशिश में सफल होना चाहते हैं तो आपको एक परीक्षा के लिए अपने को संयमित करना होगा। यदि आप परीक्षा के लिए तैयार नहीं होते तो साधना की आशा नहीं कर सकते" राजन् और भारती, दोनों चौंक गये।

"इस एक वर्ष की अवधि तक, अथवा इसके पूर्व ही बालसुन्दरम् यदि सहमत हो जाते हैं तब तक, तुम दोनों को, एक दूसरे को देखना या बात नहीं करना है। पत्र लिखना अथवा टेलीफोन पर बात करना भी इसी समय से बंद करना होगा। अपने लक्ष्य की पूर्ति के लिए तुम लोगों को, इस बंधन को एक व्रत के रूप में लेना होगा। इस समय, जिस प्रकार लड़का-लड़की एक दूसरे के लिए सस्ते बन रहे हैं, उससे मनुष्य का जीवन पशु से भी बदतर हो जायगा। विवाह भी एक तरह का यज्ञ है; एक दूसरे में देवत्व पाने की सुविधा देनेवाला यज्ञ है यह।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इसे सुनकर, लक्ष्मी अम्मा की आँखों से आँसुओं की धार लग गई। उनके मन में जमें विचारों को, जिन्हें वे अपने मुँह से न कह सकी थीं, रामलिंगम् ने अपने मुँह से प्रकट कर दिया था। उनके सामने चाहे वे जितना नाराज होकर बात करती रही हों, भुनभुनाती रही हों, लेकिन समय-समय पर उन्हें यह लगता था कि उन्होंने अपना जीवन एक जीते-जागते देवता के साथ बाँध रखा है। वे भी मेरे प्रति ऐसे ही विचार रखते हैं, इसे आज ही उन्होंने समझा।

टेलीफोन बजने की आवाज सुनाई पड़ी। इसे सुनते ही, राजन् के चेहरे की सफेदी को रामलिंगम् ताड़ गये। चिदम्बरम् उठकर जाने लगा। उसको रोककर, स्वयं उठकर जा, उसे उठा लिया।

दूसरी ओर से बालसुन्दरम् की झिड़की सुनाई पड़ी, "मेरा लड़का, राजन् आपके घर गया है?"

"हाँ, यहीं हैं।"

"वहीं गया है?'

"हाँ।"

"किसी मित्र के यहाँ जाने के लिए कहकर·······ठीक है, ठीक है, जैसी मुझे शंका थी वैसा ही हुआ·······वहाँ किसी को लगाकर उसे लुभाने की कोशिश न की जाय, उसे जल्दी वापस आने के लिए कह दीजिये।"

उनका गुस्से से, टेलीफोन के कपाल पर रिसीवर को 'टक्' से पटकने का शब्द सुनाई पड़ा। इसके बाद उसमें साँस भी न सुनाई पड़ी। कल अपने सामने बालसुन्दरम् का गिड़गिड़ाना और आज की उनकी बातों की तुलना किये बगैर रामलिंगम् न रह सके। शहर का रहना, शिक्षा, सभ्यता, संस्कृति, संस्कार, शील आदि का उन बातों में कोई स्थान था, रामलिंगम् को इसमें संदेह था।

इसी बीच राजन् स्वयं घबड़ाया हुआ वहाँ आ गया।

"आपके पिताजी, आपको घर बुला रहे हैं" रामलिंगम् ने शान्तिपूर्वक कहा।

राजन् जल्दी-जल्दी, विदा ले, वहाँ से चल पड़ा। उसे विदा देने के लिए गई भारती, दरवाजे पर मूर्तिवत् खड़ी थी। लक्ष्मी अम्मा को घर के काम की याद आ गई। रामलिंगम् ने इशारे से चिदम्बरम् को अपने पास बुला लिया।

"तुम अभी भारती से कहकर, उसे दुःखी न करना। मुझे लगता है यह विवाह नहीं होगा।" बोले

"अप्पा!" चिदम्बरम् व्यथित हो गया।

"डॉक्टरी करनेवाला एक नौजवान, अपने पिता से झूठ बोलकर हमारे घर आया। इस स्थिति में भी उस लड़के में सत्य बोलने का साहस नहीं है। सच्चा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्यार ही सत्य है। अगर लड़का सत्य बात बताकर आता तो मेरे मन में ऐसा संदेह न पैदा होता। "एक कायर व्यक्ति, अपनी इच्छित वस्तु पाने के लिए संघर्ष नहीं कर सकता। इस लड़के में वह साहस नहीं है। भारती के सामने एक परीक्षा है, ऐसा सोचता हूँ।"

किसी भी परीक्षा के विषय में, कुछ भी न जानती हुई भारती ने कार में बैठकर ओझल हुए राजन् के पीछे अपने मन को उड़ने के लिए छोड़ दिया था। उस समय भी, शिरीष के पेड़ पर छिपी एक कोयल अपनी दुखभरी कूक सुना देती है। पहले की तरह, भारती उसके जवाब में न कूक सकी। उसके मन की कोयल, जिसके पखने कट गए थे, राजन् की कार के पीछे लड़खड़ा रही थी।

११. लक्ष्य के भीतर लक्ष्य

'माउण्ट रोड एस्टेट' के घर को खाली करके, रामलिंगम् का परिवार मयिलापुर में रहने लगा था। रामलिंगम् के एक मित्र ने, पचहत्तर रु० महीने के किराये पर, एक खपड़ैल घर का प्रबंध कर दिया था, मकान सड़क से लगा हुआ था। वह घर पुराने जमाने का था। बाहर दोनों ओर दो चबूतरे, भीतर तीन कमरे, एक हाल, रसोईघर, पीछे कुआँ आदि सब कुछ था। एस्टेट के जिस मकान में वे लोग रहते थे, उसके आधे से कुछ अधिक जगह थी उसमें। इस नये परिवर्तन के अनुसार, परिवार के सभी दूसरों ने अपने को ढाल लिया था, केवल सुभाष को पसंद न था। वह घर उसे जेल की कोठरी जैसा लगता था। 'अरुमै नायकम्, मार्ग' नाम से जाना जाता हुआ वह मार्ग उसके लिए 'एरुमै नायकम्, मार्ग' में बदल गया था।

उसका कहना भी गलत न था। वहाँ बूढ़े, बीमार भैसों से लेकर भैसों के बच्चों तक, भैसें ही भैसें भरी थीं। जगह-जगह गोबर-मूत्र के भरे रहने के कारण पूरी सड़क ही भैसों का बाड़ा बन गई थी। अपने गुस्से के कारण, सुभाष ने उस सड़क के लिए कुछ न कुछ करने के लिए सोचा। सड़क के दोनों ओर, दीवालों पर लिखे नाम के प्रथम अक्षर 'अ' को उसने 'ए' में बदल दिया। दूसरे दिन सुबह, उस मार्ग पर रहने वालों ने देखा कि वे 'एरुमै नायकम् मार्ग' में रह रहे हैं। किसी ने मुँह नहीं सिकोड़ा, नाम उपयुक्त था, है न ?

रामलिंगम् के मित्र, सलीम के कारण भारती को एक 'महिलागृह' में 'पार्ट टाइम' काम मिल गया था। उसके मन की शान्ति के लिए दोनों मित्रों ने यह प्रबंध कर दिया था।

१. एक ऐतिहासिक पुरुष, २. भैंस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रामलिंगम् के साथ के लिए चरखा, किताबें और अब्दुल सलीम थे। अपनी युवावस्था में, अब्दुल सलीम, मूछों पर ताव देते, अकड़कर चलने और हर समय झगड़े के लिए तैयार रहने के कारण, 'उस्ताद' कहे जाते थे। गांधीवाद की हवा लगने पर, अहिंसावादी स्वयं-सेवक-सेना के नायक बन गये थे। बगल की सड़क पर उनका मकान था। शाम को या तो अब्दुल सलीम रामलिंगम् के घर आ जाते अथवा रामलिंगम् उनके यूनानी दवाखाने में पहुँच जाते।

चिदम्बरम् पहले की तरह 'विडिवेल्ली' में काम कर रहा था।

पिता के निर्णय के कारण, उसका काम भी प्रभावित होगा, ऐसा चिदम्बरम् ने सोचा था। पत्रिका के मालिक तुरैसामी और पोन्नइया, घनिष्ट मित्र थे। तुरैसामी ने भी, चिदम्बरम् के माध्यम से, रामलिंगम् से सिफारिश की थी। वह काम न हो सका था, इसलिए तुरैसामी उसके ऊपर नाराज होंगे, उसने ऐसा सोचा था। लेकिन उसके सोचने के अनुसार वैसा कुछ हुआ नहीं।

'विडिवेल्ली' को पाठकों का अच्छा सम्मान मिल रहा था तुरैसामी के विचारों के प्रतिकूल वह लाभ में चल रही थी। इसका कारण चिदम्बरम् ही था, यह बात भी तुरैसामी से छिपी न थी। इसीलिए वे भी कुछ न कह सके थे।

सह संपादक, पंजाबकेशन् उर्फ पंजू, इस समय कुछ अधिक दबाव वाले बन गये थे। पहले, वे चिदम्बरम् से भयभीत रहते थे, इसका कारण था, उसके पिता का पद, और पोन्नइया, तुरैसामी जैसे लोगों से उनकी मित्रता। अब, पंजू के लिए चिदम्बरम् पहले का चिदम्बरम् न था। अधिकार, राजनीतिक प्रभाव और अपनी आमदनी से हाथ धो लेनेवाले एक पूर्व अधिकारी का पुत्र मात्र था।

दूसरे सह-सम्पादक, राघवन् एक दिन चिदम्बरम् के पास अकेले में आकर बोले :

"पंजू आपको नीचा दिखाने की कोशिश में है। उससे बहुत सावधान रहिये। वह आपसे इधर-उधर की बातें करेगा, यदि आपके मुँह से कुछ निकल गया तो वह तुरैसामी के कानों में डाल देगा। लगता है, वह अक्सर तुरैसामी से मिलता भी रहता है।"

इसे सुनकर, चिदम्बरम् दुख से मुसकरा दिया, बोला कुछ नहीं। पंजू, पीठ पीछे उसके खिलाफ कुछ षड्यंत्र रच रहा है, वह केवल इतना सोच सका। क्या करने जा रहा है, यह बात वह न समझ सका।

चिदम्बरम्, कार्यालय में पाठकों के पत्रों को देख रहा था। उस सप्ताह के अंक को पढ़कर, कुछ पाठकों ने पत्र लिखा था। बेकार, ग्रामीण जनता के दुखों पर उसने जो विशेष लेख लिखा था, उसने पाठकों के चिंतन को उकसा दिया था।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'यहाँ बसने वाले सभी लोगों के पेट के लिए भोजन देना चाहिए' भारती के इस वाक्य को शीर्षक बनाकर, उसने वह लेख लिखा था। चिदम्बरम् ने दूसरे उद्योगों में मशीनीकरण का पक्षधर होते हुए, केवल कपड़ा-उद्योग में, मशीनों का कम से कम उपयोग कर, उसे ग्रामवासियों के हाथ छोड़ देने के लिए, अपने निबंध में निवेदन किया था। देश में, आवश्यकता से अधिक मिलें खोलने की उसने निंदा की थी। उनके बदले में, खद्दर, चरखा, हाथ करघा और विद्युत करघों के विकास के साथ गाँव की लाखों जनता को काम और भोजन मिलेगा, इन बातों को उसने सविस्तार लिखा था।

चिदम्बरम्, कालेज में पढ़ाई गई अर्थशास्त्र की पुस्तकों के ज्ञान को ही पर्याप्त न समझता था। भारत के करोड़ों लोगों को राह दिखाने वाला गाँधीवादी अर्थशास्त्र अब भी कालेजों में प्रवेश न पा सका था। उसने कार्ल मार्क्स के अर्थशास्त्र का भी अध्ययन कर, एक बीच का मार्ग निकाल लिया था। किसी भी बात को ज्यों का त्यों स्वीकार कर लेना वह नहीं चाहता था। चिदम्बरम् का कथन था कि समय, स्थान, समस्यायें आदि सबको ध्यान में रखकर देश की आर्थिक नींव डाली जानी चाहिये।

"भारती की बातों को ही, यहाँ हम भी दुहराते हैं; हमें, लोगों में श्रम के प्रति लगाव पैदा कर, उन्हें ऐसा काम देना होगा जिससे वे कम से कम अपना पेट पाल सकें। दूसरे उन लोगों को दूसरे, उद्योगों में प्रशिक्षित कर, देश में उत्पादन में वृद्धि की जानी चाहिये। उत्पादन वृद्धि के साथ-साथ जनता की क्रयशक्ति बढ़ाने पर ही हमारी योजनायें सफल कही जा सकेंगी। देश में, जहाँ बेरोजगार, भूखे लोगों की भीड़ है, क्यों और कैसे बड़े विशाल मिलों की स्थापना के लिये अनुमति दी जाती है, यह समझ में नहीं आता। यदि गाँधीजी जीवित होते तो क्या वे इनका स्वागत करते, हमें इस पर भी विचार करना चाहिये।"

जितने पत्र आये थे, उनमें से अधिकांश पत्र पूर्व में, खद्दर व हाथ करघे के उद्योग में लगे अब, बेरोजगारी के कारण विपत्ति में फँसे लोगों की दुर्गति के संबंध में थे। जो लोग हाथ करघे के उद्योग में दैनिक मजदूरी में लगे भी हैं, उन्हें पूरे महीने भर का काम नहीं मिलता। सूत बनाने वाली मिलों से, हाथकरघों को पर्याप्त सूत नहीं मिल पाता। जब करघे को सूत ही नहीं मिलता, तो काम कैसे मिले ? पुतली घरों को सूत धड़ाधड़ भेजा जाता है। इस प्रकार के पत्र थे।

"आप सीधे यहाँ आकर हमलोगों की दुर्गति को पास से देख लीजिये। बालबच्चे वाले हमलोग, आधे दिन के लिये काम न पा, कैसे गुजारा करते हैं, इसे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अपनी आँखों से देखिये और इसके लिये कोई रास्ता सुझाइये" एक आदमी ने लिखा था।

चिदम्बरम्, इन शोकपूर्ण पत्रों की कहानियों में खोया हुआ था, उसी समय उसके कमरे के दरवाजे को 'भड़ाक्' से धकेलते हुए, पंजू तेजी से अंदर घुस आया। चिदम्बरम् ने सिर उठा कर देखा।

"अपने तुरैसामी आ गये हैं; आप से मिलना चाहते हैं, यह बात उन्होंने कल ही बता दिया था। अभी मैंनेजर से बात कर रहे हैं..... ....."

'धक्' से बन्द होकर, दूसरे ही क्षण, चिदम्बरम् का कलेजा पुनः धड़कने लगा। तुरैसामी के आने से चिदम्बरम् को डर न था, पंजू और तुरैसामी एक दूसरे के घनिष्ठ हैं, यह बात स्वयं पंजू के मुँह से सुन कर, चिदम्बरम् को कुछ अटपटा सा लगा।

इसी बीच तुरैसामी स्वयं वहाँ आ गये। आनेवाले के मुँह में, चिदम्बरम् को मुसकान दिखाई पड़ी। उठकर, हाथ जोड़ अभिवादन कर, उसने सामने की कुर्सी की ओर इशारा कर दिया। तुरैसामी ने पंजू की ओर इस प्रकार देखा, मानो उसे वहाँ से चले जाने के लिये कह रहे हों।

"आप लोग बात कीजिये, मैं चलता हूँ" कह कर पंजू वहाँ से धीरे से खिसक गया।

"एक हफ्ते से आना चाह रहा था, लेकिन समय है कि मिलता ही न था" तुरैसामी ने बात आरंभ कर, "चाहे कोई कितना ही बड़ा उद्योग क्यों न चलाये, पत्रिका-उद्योग की अपनी एक अलग विशेषता है" बोले।

"यह उद्योग आदमी की जिन्दगी को प्रभावित करनेवाला उद्योग है, इसमें यदि हम सद्भावना और सद्विचारों से काम करें, तो जन-जीवन का वैसे ही विकास होगा जैसे खाद पाने से फसल लहलहाती है। यदि हम गलती करते हैं तो, कीड़े लग जाने से जैसे फसल नष्ट हो जाती है वैसे ही हमारे पाठक भी निराश होंगें। लेकिन हमारे कार्यों की अच्छाई-बुराई को बहुत से लोग नहीं जानते।"

"आप यह कैसे कह रहे हैं, केवल आपके संपादकीय को पढ़ने के लिये बहुत से लोग पैसा खर्च कर पत्रिका खरीदते हैं, मैं इसे जानता हूँ।"

चिदम्बरम् को अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ। उसे हर महीने मिलने वाला वेतन, इस प्रशंसा के सामने बहुत अल्प लगा।

"पाठकों के पत्रों को देखिये" कह कर उसने पत्रों का पुलिन्दा आगे बढ़ा दिया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तुरैसामी ने सतही नजरों से पत्रों को देखा। उनके चेहरे के भाव से, चिदम्बरम् कुछ न जान सका। पत्रों को देखकर वे कुछ देर सोचते रहे।

"आपका संपादकीय कुछ कटु था, मैंने भी पढ़कर देखा था" बोले।

"खद्दर पहन कर गाँधी का नाम जपने वाले हम लोगों को, केवल कपड़े का उत्पादन ग्रामवासियों के हाथ छोड़ देना चाहिये!"

"मशीनों को आप देखना भी पसंद नहीं करते?"

"गाँधी जी के कथनानुसार, यंत्रों के द्वारा आने वाली औद्योगिक क्रांति अनावश्यक है ऐसा मैं नहीं कहता। दूसरे उद्योगों में यंत्रों का भरपूर उपयोग किया जा सकता है। केवल इस उद्योग में अगर हम यंत्रों का सीमित उपयोग करें, तो सामान्य ग्रामीण लोगों को काम का अवसर मिल सकेगा।"

"इस कारण से, पोन्नइया आप से बहुत नाराज है।" ऐसा कह, तुरैसामी ने उसके चेहरे में आये परिवर्तन को ध्यान से परखा।

"इसे, उन्हें सद्भावना से लेना चाहिये था। मैं देश को बैलगाड़ी के युग में ले जाने की बात नहीं कहता। जब तक दूसरे तरीकों से हम जनता को काम नहीं दे सकते, कम से कम तब तक हम ऐसा कर सकते हैं।"

"इस समय मैं आपसे एक जरूरी बात करने आया हूँ। चाहे जितना भी काम हो, अब मैं सप्ताह में कम से कम एक दिन यहाँ आने के लिए सोच रहा हूँ।"

"शौक से आइए" चिदम्बरम् ने कहा।

"हाँ, एस्टेट का मकान छोड़ने के बाद, आपको टेलीफोन की जरूरत है इस बात को आपने मैनेजर कृष्णन् से नहीं कहा?"

चिदम्बरम् चुप रहा।

"फोन का प्रबंध कर दिया है। जल्दी ही आपको फोन मिल जायगा। इस समय, आफिस की जो 'बात' है उसके अलावा एक और कार खरीदकर आफिस को देने की सोच रहा हूँ। आफिस काम से बाहर आने-जाने में आपको सुविधा रहेगी।"

जिन बातों को उसने सोचा था, उनसे विपरीत बातें तुरैसामी से सुनने को मिल रही थीं। पत्रिका-उद्योग में दम है इस बात पर उनका विश्वास था, ऐसा उसने सोचा। पंजू के प्रति उसके मन में जो सन्देह हो गया था, वह धीरे-धीरे कम होने लगा।

तुरैसामी ही आगे बोले :

"इस समय 'सर्क्युलेशन' बढ़ता जा रहा है। यदि हम एक बात और पकड़ लें, तो दूसरी पत्रिकाओं को पीछे धकेल सकते हैं, ऐसा पंजू कहते हैं……"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"यदि स्तर की चीजें रखी जाय, तो अच्छा ही है। निम्न स्तर की चीजें अपनाने से, हम भी आकर्षण की दूकान लगाने की स्थिति में नीचे उतर जायेंगे। चाहे जो भी करें, संपादक गोपालन् ने इसे प्रारम्भ करने के समय जिस दृष्टिकोण को सामने रखा था, उसे हम मन में रखें तो अच्छा रहेगा।"

चिदम्बरम् के मुँह से गोपालन् का नाम सुनकर, तुरैसामी थोड़ा घबड़ाये। 'भूखा बाघ क्या घास खायगा ?' कभी सुना गया यह प्रश्न उन्हें याद आ गया।

"इस उद्योग में, अपने अधिकारों और कर्तव्यों पर ध्यान न दे, कुछ लोग आसान तरीके से पैसा बटोरने के लिए न मालूम कितने हथकंडे अपनाने लगे हैं। जनतंत्र को पैसातंत्र में बदलने के उनके प्रयत्न के कारण, अंत में जनतंत्र खतरे में पड़ जायगा। 'विडिवेल्ली' के पीछे एक इतिहास है; एक परंपरा है" चिदम्बरम् ने कहा।

"आपका कहना सही है" वे मन से स्वीकार कर, तुरैसामी ने, "विज्ञापन देनेवालों को हमें जवाब देना पड़ता है; मैं मैनेजर से बात करके आ रहा हूँ; अगर विज्ञापन नहीं छापते हैं तो घाटे में पत्रिका चलाना मेरे लिए असंभव होगा" बोले।

चिदम्बरम् ने कोई उत्तर नहीं दिया। क्या जवाब दे, उसकी समझ में न आ रहा था। विज्ञापन देनेवालों की इच्छा के लिए, विज्ञापन प्रबंधक की सलाह पर पत्रिका चलाने का समय आ गया है, केवल इतना समझ सका, वह।

"चिंता न कीजिए; बातों की अच्छाई को समझिए।" तुरैसामी ने उसे उत्साहित किया। "नई मशीन के लिए, जर्मनी आर्डर भेज दिया है। एक ही समय में दो-तीन 'कलर' दे सकते हैं।"

"नई मशीन ?"

"इस मशीन का विरोध आप न करेंगे, ऐसा सोचता हूँ" कहकर हँसते हुए, तुरैसामी ने, "आप हमेशा की तरह अपना लेखन जारी रखिये; और अधिक लोग पढ़ेंगे तो आपके लिए भी अच्छा ही होगा।" बोले।

'मशीन केवल एक साधन है; वह भी, अपने पीछे लगे आदमी को ही प्रतिफल देगी ?' सोचकर चिदम्बरम् को संतोष हुआ। इससे उसको, एक तरह से कुछ खुशी ही हुई। चाहे निम्न स्तर की प्रतिस्पर्धा हो या उच्चस्तर की, दोनों में मशीन को घुमाया जा सकता है, है न ?

तुरैसामी की आवाज से चिदम्बरम् का चिंतन भंग हो गया :

"केवल एक बात में आपको थोड़ी छूट देनी होगी। पश्चिम की पत्रिकाओं की सफलता देखकर, अपने पंजू ने कुछ 'आइडिया' बना रखा है। उनकी बात पर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ध्यान देने से, मुझे लगता है उन्हें भी एक मौका देकर देख लिया जाय। केवल सोलह पृष्ठ उनकी जिम्मेदारी पर छोड़ दीजिये। उनमें वे जो भी चाहें कर सकते हैं।

चिदम्बरम् भौचक्का रह गया। तुरैसामी ने जिस मशीन के लिए जर्मनी आर्डर भेजा है, उसे लगा, वह मशीन जर्मनी से उड़ती हुई आकर, उसके सिर पर वज्र की तरह गिर पड़ी थी।

"बड़ी मशीन आ जाने से, एक दिन में ही वह लाखों प्रतियाँ छाप सकेगी। उसके आगे हमें भी चारा डालना होगा, ध्यान रखिए ! यदि आप अपनी जिम्मेदारी पंजू के साथ बाँट लेंगे, तो आपको भी सहायता मिलेगी" तुरैसामी ने कहा।

चिदम्बरम् का मुँह बंद हो गया।

चिदम्बरम्, इस समय भी, सहसंपादकों के साथ काम का बँटवारा करके ही पत्रिका चला रहा था। पंजू के साथ वे किस प्रकार का बँटवारा चाहते थे, उसको स्पष्ट न हुआ। पंजू, 'मूर मार्केट' से पश्चिम की तीसरे स्तर की पत्रिकायें खरीदकर, पलटा करता था। 'सेक्स', हत्या, डकैती, व्यभिचार, जैसे संस्कार विहीन विषय, हर समय, सब उमरवालों और सभी देशवालों को आकर्षित करने की क्षमता रखते हैं, इस पर उनका अटल विश्वास था। एक घड़े दूध के लिए एक बूंद विष पर्याप्त है, अगर यह सही है तो एक अंक के सोलह पृष्ठों में पंजू क्या न कर सकेगा ?

चिदम्बरम् का चिंतन जब भंग हुआ, तुरैसामी उससे हाथ मिला विदा ले चलते बने।

१२. अविस्मरणीय मुख

तुरैसामी की बातों से चिदम्बरम् को जो धक्का लगा था, उसके कारण बहुत देर तक उसका मन किसी काम में न लगा। पत्रिका में प्रकाशनार्थ आये हुए पत्रों-निबंधों को पढ़ने की कोशिश की उसने। मिलने के लिए आये हुए एक लेखक से प्रसन्न मन से बात करनी चाही। किसी भी में उसका मन न लगा। उसके पिता के सामने जो परिस्थिति आ गई थी, उसके सामने भी वही परिस्थिति आ गई, इस विचार से उसे न जाने कैसा लगा।

किसी काम में मन न लगने से, वह विरक्ति भाव से कुर्सी पर टिका ही था कि टेलीफोन की घंटी बज उठी। उठाकर कान से लगा लिया। तुरैसामी की आवाज सुनाई पड़ी।

"एक जरूरी बात, एक खुशी की बात आपसे कहना चाहता था, भूल से बिना कहे ही चला आया......अचानक आपके पिता के नौकरी छोड़ देने से आपका

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

परिवार कष्ट में होगा·········इस पर विचार कर इसी महीने से आपके वेतन में डेढ़ सौ रु० की वृद्धि के लिए कह दिया हूँ। उत्साह से काम कीजिए।"

उन्होंने टेलीफोन रख दिया। उस समय वह, वेतन वृद्धि के कारण खुश होने अथवा इसके लिए धन्यवाद देने की स्थिति में न था। वह, इसके ठीक विपरीत सोचने लगा। ऐसी बात न थी कि इस काम को छोड़ देने के बाद उसको कोई दूसरा काम न मिलेगा। प्रथम श्रेणी में पास हुआ था इसलिए किसी न किसी कालेज में उसे ले लिया जायगा। हो सकता है कुछ महीने उसे प्रतीक्षा करनी पड़े, लेकिन छुट्टियों के बाद, कालेज खुलने पर उसको काम मिल जायगा। वेतन कुछ कम भले मिले, किन्तु अंतरात्मा के विरुद्ध काम करने की परिस्थिति वहाँ न आयेगी।

किन्तु वह भावावेश में कोई निर्णय न लेना चाहता था। पिता से बात करने के लिए सोचा। स्वयं भी एकान्त में बैठकर विचार करने की सोचा। उस समय उसके वेतन की वृद्धि सचमुच उसके परिवार के लिए सहायक थी। कार्यालय के खर्च से घर में टेलीफोन देने की बात भी कह दी थी उन्होंने····फिर भी····फिर भी···· उसका मन अशान्त हो व्यथित था।

चिदम्बरम् ने घड़ी देखी। दूसरे पहर के साढ़े-तीन बजे थे। उससे वहाँ रहा न गया। वह घर जाने की बात राघवन् से कहकर, बाहर सड़क पर आ गया। 'बीच' होकर, मयिलापुर जानेवाली एक 'सिटी बस' आकर खड़ी हो गई, वह बस में चढ़ गया।

'बीच' के पास, विश्वविद्यालय के सामने बस खड़ी हुई। उतरकर उसने सागर की ओर देखा। धूप अब भी तेज थी। पाँव के नीचे की बालू भी, उसके मन की तरह ही गरम थी। कुछ देर तक विश्वविद्यालय के पुस्तकालय में समय काटकर, धूप कम हो जाने पर 'बीच' जाने की बात उसने सोची।

पुस्तकालय में, जहाँ-तहाँ बैठे लोग किताबें पढ़-पढ़कर 'नोट' लेने में लगे थे। एक खाली कुर्सी के सामने मेज पर कुछ पुस्तकें रखी थीं। वहाँ बैठकर थोड़ा सा उन किताबों को पलटकर देखा। फिर आहिस्ते से उठकर पीछे के भाग की ओर चला गया। राजनीति और अर्थशास्त्र उसके प्रिय विषय थे। उस विभाग में जा; वहाँ रखी पुस्तकों के नाम देखते हुए चलता रहा।

वहाँ फैली 'सेण्ट' की भीनी सुगंध की ओर उसका ध्यान नहीं गया। उस जगह तेज प्रकाश न था। उसकी आँखें पुस्तकों पर लगी थीं। वह अनूठी सुगंध उसके पास आ गई, इसे भी वह न जान सका।

"संपादक जी·······"

चिदम्बरम् ने हड़बड़ाकर पीछे घूमकर देखा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सभ्य दिखनेवाली एक युवती उसके पास खड़ी थी। मंद प्रकाश के कारण उसका चेहरा ठीक से न दिखाई पड़ता था, केवल सुगंध उसके अंदर भरी जा रही थी।

"क्यों, मिस्टर चिदम्बरम् ऐसे देख रहे हैं ! मुझे नहीं पहचाना ?"

उसका हृदय उछलकर गले में आ गया, "भुवना !" उत्सुकता से बोला।

वह मुसकराई; उसके मोती से दाँत एक झलक देकर फिर अधरों के पर्दे में छिप गये। वह कुछ देर तक अपलक उसका मुखड़ा देखता रहा। उस मुखड़े को देखे हुए कितने दिन बीत गये थे ! भुवना एक चपल मुसकान के साथ, उसकी आँखों की चमक को ताड़ गई।

"कालेज के पागलपन ने अब भी आपका पीछा नहीं छोड़ा क्या ?" केवल उसको सुनाई पड़ने की आवाज में बोली।

उसने किस पागलपन के विषय में कहा था, वह न समझ सका। उसका जो पागलपन उसके प्रति था, उसी की ओर उसका इशारा है क्या ? या और किसी दूसरे विषय में कह रही है ?

"घबराइये नहीं; मैं 'उस' पागलपन के विषय में नहीं कह रहीं हूँ; 'डिगरी' पाकर भी, राजनीति और अर्थशास्त्र को खोजते यहाँ आ गये हैं, इसको पूछा था मैंने।"

"आप यहाँ क्यों आई हैं, बोलिए ?"

"दीमक लगी पुस्तकों के पढ़ने से, मानो दीमक मेरे दिमाग को कुरेंद रहे हों, मुझे ऐसा सुख मिलता है। दीमकों का कुरेंदा दिमाग, बाद में तेजी से काम करता है। 'बैटरी चार्ज' हो जाने पर जैसे कार तेजी से भागती है, वैसे ही मान लीजिए....."

इसी समय पुस्तकें खोजते हुए कोई वहाँ आ गया।

" 'बीच' में समय काटने के लिए आया था, धूप तेज थी, छाया में घुस आया" चिदम्बरम् ने कहा।

"तब, बाहर पेड़ की छाँव में चल सकते हैं, आइए। जो सचमुच किताबी कीड़े हैं उनके लिए हमें बाधक न बनना चाहिये।"

चिदम्बरम् और भुवना साथ-साथ बाहर आ गये। बहुत सी आँखें, एक साथ भुवना की ओर घूम गईं। वह उसके लिए अभ्यस्त हो गई थी। उसके चेहरे का सौन्दर्य और देह की गठन ऐसी थी कि सभी देखनेवालों का सिर घूम जाता था। भुवना तेजी से बढ़कर एक पेड़ की छाया में पहुँच गई। छाया और ओट

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दोनों की आवश्यकता थी। चिदम्बरम् उसके पास ही दीवाल से टिक कर खड़ा हो गया।

"आप को देखे हुए बहुत दिन हो गए" चिदम्बरम् ने कहा।

"आपको देख न सकी फिर भी आपके विषय में बहुत से बातें सुनती रही हूँ। 'विडिवेल्ली' भी नियमित पढ़ती हूँ।"

"मेरे विषय में क्या सुना है?"

"आपके पिता इस समय 'सर्विस' में नहीं हैं, उसकी वजह से आप की बहन भारती का विवाह रुक गया है। इस समय आप मयिलापुर में 'अरुमै नायकम्' रोड पर रह रहे हैं। यदि आप इसी प्रकार खरा संपादकीय लिखते रहे तो आपकी संपादक पदवी को भी आपत्ति आ सकती है। क्यों मेरा कहना, सब सच है न?"

"भुवना—" चिदम्बरम् चौंक गया।

फीकी हँसी हँस कर, भुवना ने उसे प्यार भरी नजरों से देखा। "सोचती थी, एक दिन आपके कार्यालय में आकर आपको आश्चर्य में डाल दूँ। आपको सावधान करने का मन था। जब आदमी के विचार अच्छे होते हैं, तो व्यर्थ नहीं जाते। आप स्वयं आज दिखाई पड़ गये।"

कालेज की परीक्षा के बाद अंतिम दिन उससे मिलने के बाद, उसकी जिंदगी कैसी रही, यह बात जानने के लिए उसने कोई कोशिश न की। उसका कोई दूर का रिश्तेदार, सुन्दरेशन् उससे शादी करने के लिए तैयार है, यह बात भुवना के मुँह से ही सुनने के बाद, चिदम्बरम् ने उसे पूरी तरह भूल जाना चाहा था।

"सुन्दरेशन् इस समय क्या करते हैं? आपके बाल बच्चे.... ...."

भुवनेश्वरी खिलखिला कर हँस पड़ी।

"क्या हँस रही हैं?"

"मुझे देखने से क्या लगता है कि मैं बाल बच्चे वाली हूँ? अभी शादी ही नहीं हुई। आप बच्चों तक पहुँच गये!"

"सच?"—नई आशा, नया स्वप्न और नये विश्वास के साथ चिदम्बरम् ने उसकी नजरों को पढ़ने की कोशिश की।

"मुझ से शादी करने वाला, मुझे जिन्दगी देने के बजाय, एक 'दर्शन' देकर चला गया। आपने कालेज के दिनों में जिस भुवना को देखा था, कार्ल मार्क्स पर विश्वास करने वाली कम्युनिस्ट, क्रान्तिकारी उस भुवना को सुन्दरेशन् ने एक ही दिन में पूरी 'बुर्जुआ' बना दिया।"

चिदम्बरम् जिस मन के भार को कार्यालय से लेकर आया था, वह कपास

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की तरह उड़ गया। अपने ऊपर उसके प्यार और लगाव को देख कर, उसे नया बल मिला। उस अप्रत्याशित मिलन को वह इतने से ही छोड़ना न चाहता था।

"हम समुद्र के किनारे बैठकर बात करेंगे चलियेगा ?

"मेरी शादी नहीं हुई, यह जान लेने के बाद, आप फिर से वही पुराने पागल बन जाना चाहते हैं ? समुद्र के किनारे नहीं, यहीं कहीं एकान्त में बैठेंगे, आइये।"

विश्वविद्यालय के एक किनारे जाकर, एकान्त में सीढ़ियों पर बैठ गये। एम० ए० की पढ़ाई के समय, भुवना अनेक रोमियों के लिए जुलियट् के रूप में प्रसिद्ध थी। कुछों के लिये केवल स्वप्नवत् थी। वह एक दिन, चिदम्बरम् के लिये प्रत्यक्ष होने जा रही है, ऐसा दूसरे विद्यार्थी कहा करते थे। दूसरों के विश्वास के अनुकूल वह भी चिदम्बरम् के बहुत निकट रहती थी। चिदम्बरम् भी उसी विचार में था।

उस दिन की भुवना की अपेक्षा आज की भुवना अधिक सुन्दर दिखाई पड़ती थी। उमर उससे हार गई थी। अनेक रंगों वाले, मीनी सुगंध के अधखिले कचनार का गुच्छा, जैसे उसके पास बैठा हो, चिदम्बरम् को ऐसा भ्रम हो गया था।

"शादी क्यों नहीं हुई ?"

"उसे पूछ कर, अब आपको कोई लाभ न होगा" कह कर भुवना ने ठंडी साँस ली। बाद में, सहानुभूति और प्यार से उसकी ओर देखा। मानो अपने प्रेमी को बहुत दिनों बाद देखा हो, ऐसो विषाद भरी नजरें थीं भुवना की। काली पुतलियों के नीचे बूंदें भरी थीं, धीरे-धीरे उसके गालों में लुढ़क गईं।

चिदम्बरम् कुछ बोला नहीं, पुराने स्वप्न रूपी रेगिस्तान की एक सूखी जगह से मानों एक शीतल झरना फूट पड़ा हो और वह उसमें सुख से भींगता हुआ आनंदित हो रहा हो, उसे ऐसा भ्रम हो गया।

भुवना बोली :

तंजौर के जागीरदार कुल में मेरे पिता पैदा हुए थे, परिवार वालों की बातें सुनते न थे, इसलिये उन्हें बीच सड़क में छोड़ दिया गया था। उनके पिता, छोटे-बड़े भाई सभी ने उनसे, विलग होने का दस्तावेज लेकर, उन्हें गाँव से खदेड़ दिया था। बाद में, विपत्ति की स्थिति में, मेरी पढ़ाई के लिए, मेरे पिता ने उन लोगों से भीख माँगी। पत्र लिखा, नजदीक जाकर माँगा, कुछ न हुआ, केवल अपमान ही हाथ लगा।

कालेज के दिनों में उसकी पैसे की तंगी को चिदम्बरम् जानता था। परीक्षा की फीस देने के लिये एक बार उसी ने उसको पैसा दिया था। वह अपनी किताबें भी दिया करता था।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"मैंने केवल आप ही से पैसा माँगा था। भूख लगने पर सुन्दरेशन् के अलावा केवल आप ही के साथ होटल में बैठकर, खाया करती थी। उसके बदले में कुछ भी पाने के लिये, आप मुझ पर दबाव न डालेंगे, इस बात का मुझे विश्वास था। वह अंत तक निभा भी। मेरा उनसे प्यार था, इस बात को जानते ही आप मुझ से अलग हो गये थे।"

"शादी क्यों नहीं हुई ?" चिदम्बरम् ने पूछा।

"मेरे लिये जान देने वाले सुन्दरेशन् को मेरा प्राण, शरीर, प्यार कुछ भी 'कैपिटल' जैसा नहीं लगा। मेरा यौवन, मेरी शिक्षा और भविष्य में मेरी कमाई से उन्हें मिलने वाला पैसा कुछ भी उन्हें 'पूंजी' जैसा नहीं प्रतीत हुआ। उन्होंने कहा कि उनके माता-पिता परंपरा तोड़ने के लिये तैयार नहीं हैं। पन्द्रह हजार रु० के साथ दूसरी लड़की मिल रही है, यदि उसे छोड़ते हैं तो शादी से पहले कम से कम पाँच हजार तो उनके हाथ में देना ही चाहिए। मुझसे शादी करने के लिये वह हिजड़ा पाँच हजार चाहता था। पैसा ही 'पूँजी' है, इस भयावह सत्य को दिखा कर उस आदमी ने मेरी आँखें खोल दीं।"

"शिक्षा, समझ, कुशलता यह सब होते हुए भी आपने, पहले से ही बिना उन्हें समझे—"

पढ़ाई होने से क्या होता है ? सिद्धान्त से क्या बनता-बिगड़ता है ? उमर का तकाजा था वह ! उस उमर में उनके चेहरे का सौन्दर्य, रंग और शारीरिक आकर्षण ने मुझे पागल बना दिया था। अपने से अधिक सुन्दर लड़का पाने की तुच्छ आशा थी मुझ में। इन सबके साथ वे संबंध के भीतर के भी थे। घर आकर प्यार से मिलते भी थे।"

"यह सब उसी समय मुझसे बता देती ? मेरे संबंध में इतना सब आप जानती हैं, मुझ से कह सकती थी ?"

"जो हो गया, उसे छोड़िये ! इस समय मेरा लक्ष्य केवल एक है" भुवना बोली, "एक बड़े 'कैपिटलिस्ट' की तरह, एक बड़े 'बुर्जुआ' के समान एक दिन में कम से कम पाँच हजार रुपये कमाने वाली बन सकूँ। मेरी गर्दन में रस्सी बाँधकर उन्होंने पाँच हजार ही माँगा था। इस राशि को मैं कभी भूल नहीं सकती।"

"आप 'कैपिटालिस्ट' बनने के लिये भले सोच रही हों, लेकिन आपकी आवाज में वही पुरानी 'कम्युनिस्ट' का जोश झलकता है।"

"मार्क्स की बनाई हुई 'पूंजी' दूसरी है, मेरी दूसरी है। मैं अपनी पूंजी से, आदम स्मिथ और उनके बड़े भाइयों के मार्ग पर चल कर, साल में पाँच हजार

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की कमाई से शुरु कर, महीने में पाँच हजार तक पहुँच गई हूँ। जल्दी ही सप्ताह में पाँच हजार तक पहुँच कर, वाद में अपना लक्ष्य पूरा कर लूंगी !"

भुवनेश्वरी गर्व से हँसने लगी। उसके गुलाबी चेहरे में, धीरे-धीरे लज्जा छाने लगी। उसके विद्यार्थी जीवन में, जब सभी विद्यार्थी उसको, कपड़े की दूकानों में खड़ी आकर्षक 'माडल' मानते थे, तब केवल चिदम्बरम् ही उसके ज्ञान और संस्कार के कारण उसका सम्मान करता था।

जैसे कुछ याद आ गया हो, इस भाव से भुवनेश्वरी ने, अपने हाथ की घड़ी को देखा। "अब कुछ ही मिनटों में मुझे यहाँ से चल देना है, इसलिये जो आप से कहना चाहती थी, कहे देती हूँ। 'मिल' के हिस्सेदार बनने को कोशिश करने वाले तुरैसामी की पत्रिका में काम करते हुए आप खद्दर और हाथ करघा के विषय में लिखते हैं; न लिखिए, मैं नहीं कहती, लेकिन सचेत रहिये।"

"इसके लिये पैसा कहाँ से आयेगा ? पूछ कर; चिदम्बरम् चकित हो गया।

भुवनेश्वरी परिहास-सी करती हुई हँसी।

"इस समय लोग अपना पैसा लगा कर ही, हजारों, लाखों का वारान्यारा कर रहे हैं, ऐसी बात नहीं है। कर्ज देने के लिए बैंक हैं, सरकार है। पैसे के लिये यहाँ और भी रास्ते हैं।" बोली।

"मैं अपनी समस्या पर विचार करने के लिये ही समुद्र के किनारे आया था" इस प्रकार बात आरंभ कर उसने उस दिन तुरैसामी के साथ हुई सभी बातें उससे बता गया। अंत में, "कालेज में शिक्षक का कार्य खोज कर इसे छोड़ देना चाहता हूँ" बोला।

भुवना थोड़ी देर सोच कर, "बेटे ही किस बाप के हैं आप !" बोली। "दूसरा रास्ता ?"

"अभी आपको काम नहीं छोड़ना चाहिए। पंजू को पैसा बनाने वाला ऊँट समझ कर, उन्होंने उसे जगह दिया है। इस समय अगर आप अलग हो जायेंगे तो उस जगह बहुत से ऊँट घुसकर लेट जायेंगे। पैसावादी ऊँट जब तक आपको धक्का देकर भगा नहीं देते तब तक आप स्वयं न हटिये। धक्का देने के बाद देखेंगे।"

"यह तुच्छ व्यापार-प्रवृत्ति मुझे अच्छी नहीं लगती।"

"इस समय हर जगह पैसावाद ही सिर उठाये नाचता दिखाई पड़ता है। सेवा करने वालों को जीना मुश्किल है; इस समय, जबकि गड्ढा खोदने वाले को चमर चलाये जाते हैं, बुराई के लिये जगह छोड़ कर पीछे न हटना चाहिए। आप बड़े ऊँचे संपादक हैं। आपकी तरह सब लोग पत्रिका नहीं चला सकते। जब तक कोई बाधा सामने न आये, लिखने चलिये।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उस जगह से उठकर, चिदम्बरम् के साथ, भुवना पुस्तकालय के द्वार पर आ गई। घड़ी देखते हुए, "एक मित्र से यहाँ मिलने के लिये कह दिया था, वे अब आने ही वाले हैं" बोली।

"आप रहती कहाँ हैं ? अपना पता दे दीजिये।"

घूम कर उसके चेहरे को देख, चपल हँसी हँसती हुई", मेरे पते की आपको कोई जरूरत नहीं; समय मिलने पर मैं स्वयं आप से टेलिफोन पर बात कर लूँगी अथवा आकर मिल लूँगी।" बोली

चिदम्बरम् का चेहरा उतर गया।

"कारण से ही कह रही हूँ; आपके साथ की अपेक्षा मेरे लिये आपकी महानता प्रमुख है। मेरे लिये आप बहुत महत्वशाली हैं।"

उसी समय जहाज के समान, नीले रंग की एक विशाल कार आकर पास में खड़ी हो गई। कार चलाने वाला युवक उतर आया, उत्तर के युवकों जैसा दिखता था।

पहले चिदम्बरम् का परिचय देकर, "ये मेरे गुजराती मित्र हैं; बंबई के एक बड़े मालिक के पुत्र हैं। नाम है कन्हैया लाल। दक्षिण की बिक्री मद्रास में रहकर देखते हैं।" बोली।

दोनों युवकों ने हाथ मिलाया। पीछे कार में भुवना के बैठते ही कार रवाना हो गई। भुवना पीछे मुड़कर उसे देखती हाथ हिलाकर विदा लिया। चिदम्बरम् कार को देखता मूर्तिवत् खड़ा था।

१३. भारती का भाई

भारती महिला गृह में पार्ट टाइम काम पर जाने लगी थी। वहाँ, उसके स्कूल समय की सहेली मीनाक्षी मिल गई। महिला गृह से संबंधित स्कूल में मीनाक्षी शिक्षिका थी। मीनाक्षी आगे पढ़ने के लिए कालेज न जा, दो वर्ष का प्रशिक्षण लेकर वहाँ शिक्षिका हो गई थी। दोनों एक साथ पढ़ी थीं, एक दूसरे के निकट थी इसलिए उनकी मित्रता जल्दी ही घनिष्ट हो गई। काम का समय छोड़कर, दोनों साथ-साथ दिखाई पड़ती थीं। दोनों अपने-अपने घर से खाना ले आया करती थीं लेकिन खाते समय मिल बाँटकर खाती थीं। मीना के घर का 'मोरसादम्'— मट्ठा-भात और अचार भारती को पसंद था; भारती के घर का 'साँभर भात' और सब्जी मीना को पसंद थी। विद्यार्थी जीवन में भी इसी प्रकार मिल बाँट-कर खाती थीं। इस समय भी उसी आदत में आ गई थीं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मीना बड़ी परिश्रमी थी। स्कूल में छात्राओं को चाहे पढ़ाने का काम हो चाहे गृहकार्य देने का काम हो, सबमें बड़ी नियमित थी। बड़ी लगन से छात्राओं की कापियों को देखकर उन्हें उनकी त्रुटियाँ समझाया करती थी। भारती के आ जाने से दोनों मिलकर कापियाँ देखा करती थीं।

भारती, डॉ० राजन् को न भुला सकी थी, हर समय उसकी याद उसके मन को कुरेदती रहती थी, ऐसी स्थिति में उसके मन को बदलने के लिए, उसे मीना मिल गई थी। यद्यपि मीनाक्षी की उम्र भारती से दो-एक साल अधिक रही होगी, फिर भी उसमें, अपने विवाह की चिंता न दिखाई पड़ती थी। वह स्कूल के बच्चों, अपनी माँ और भाई के विषय में ही बातें किया करती थी। यद्यपि वह वेतन के लिए ही काम करती थी, किन्तु उसके लिए अपने वेतन से भी अधिक एक दूसरा लगाव था। उस आश्रम में पढ़नेवाली छात्राओं में कुछ उसकी उम्र की और कुछ उससे भी अधिक उम्र की थीं।

अनाथ, युवा विधवायें, पतियों द्वारा परित्यक्ता, पाँव फिसल जाने के कारण समाज द्वारा वहिष्कृत, अधिकांश ऐसी ही औरतें वहाँ थीं। फिर भी मीना ने उन्हें एक बंधन से बाँध रखा था।

एक बार, भारती द्वारा मीना से उसके विवाह के विषय में बात चलाने पर, वह अपनी छात्राओं की स्थिति के विषय में बताने लगी थी।

"इस आश्रम में रहनेवाली बहुत-सी स्त्रियों ने कोई अपराध नहीं किया है। कुछ ऐसी हैं जो परिस्थिति की बलि बनी थीं। समझबूझ कर दुष्कर्म करने वाले पुरुषों के लिये हमारे देश में कहीं भी इस प्रकार के कोई आश्रम नहीं है। अपनी छात्राओं में, बहुतों के व्यक्तिगत जीवन के विषय में मैं जानती हूँ। इनकी जिन्दगी बिगाड़ने वाले पुरुष, आज भी निर्भय, सिर ऊँचा कर समाज में रह रहे हैं। दूसरी औरतों को भी इस आश्रम में भेजने के काम में लगे हैं" बोली।

उस समय भारती को डा० राजन् की याद आये बिना न रही। सम्पन्न घर का लड़का, अच्छी शिक्षा, सभ्य जीवन; उसकी केवल एक ही बात से भारती इस समय कँप गई। वह न जाने कितनी बार, उस संबंध में उससे गिड़गिड़ाया था। पश्चिमी देशों में युवक-युवतियाँ प्रेम-विवाह कर लेते हैं, अपने पर किसी प्रकार का बंधन नहीं रखते; वे अकेले बाहर चले जाते हैं, अपने नगरों में ही, होटलों में रह कर खुशियाँ मनाते हैं, तमिलनाड में भी, 'संघ काल' की परंपरा, 'एकान्त मिलन' पर विश्वास करते हैं; अब प्रेमिका और प्रेमी एक दूसरे के होकर भी, इस प्रकार अपना प्यार-व्यवहार नहीं चला सकते, इस प्रकार की बातें वह उससे कहा करता और निराश होता।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"केवल इस संवंध में मुझ से 'संघ काल' की वातें न कीजियेगा" भारती ने उसी समय उसे झिड़क दिया था। "दो हजार वर्ष पुरानी संस्कृति ही हमारे जीवन का आधार है; डाक्टरी पढ़ने वाले आप, संघ काल का नाम लेकर, पत्थर युग के आदमी बनने के लिये न सोचिये", भारती ने कड़े शब्दों में कहा था।

"इस स्थिति में अगर भारती उसको मौका दे देती तो··· ····" ऐसा सोचते ही उसे घृणा हो गई। फिसल जाने वाले स्त्रियों के साथ, वह भी ऐसी स्थिति में हो जाती कि कोई उसे राह दिखाये। उस कीचड़ में गिरने से बच जाने के कारण उसके मन में विशेष गर्व का भाव था।

मीना के दवाव देने पर एक दिन भारती उस के घर गई। दो सड़कों के पार मीना का घर था; उस घर में पाँच-छः परिवार रहते थे; मीना का परिवार ऊपर की मंजिल में रहता था। उसके घर में एक कमरा और एक रसोई ही थी। कमरे को बीच से लकड़ी का पार्टीशन लगा कर दो भागों में कर दिया गया था। रसोई की ओर उस कमरे में एक लंबी बेंच रखी थी, उसके नीचे चटाइयाँ और तकिये रखे थे। टूटी हुई एक आलमारी; टीन की दो पेटियाँ, ऊपर दीवाल में लगे एक लकड़ी के तख्ते में कितावें रखी थीं, लगता था कि मीना का कमरा यही है।

रसोई में वैठी अपनी माँ से भारती का परिचय करा, मीना ने उसे वेंच पर वैठा दिया, स्वयं रसोई में घुस गई। तीन आदमियों के लिये वहाँ जगह न थी, इसीलिये भारती को वेंच पर वैठे रहने की नौवत आ गई थी।

वह कमरा, भीड़भाड़ वाले तीसरे दर्जे के रेल के डिब्बे के समान था, फिर भी सभी चीजें साफ सुथरी और व्यवस्थित थीं। दीवाल पर टँगे पलखे पर भारती की नजर चली गई। तख्ते के एक किनारे पत्रिकायें, दूसरी ओर कितावें रखी थीं। दीवाल पर टँगे शीशे की बगल में केवल एक चित्र लगा था। विखरे वाल, लंबी दाढ़ी और मूँछें, कोट पहने, वह चित्र विचारक कार्ल मार्क्स का था। भारती ने भयभीत हो उस चित्र को एक क्षण देखा। वह मानो, अनजाने में एक भयंकर गुफा के भीतर ले आई गई हो, भारती को ऐसा भ्रम हो गया। उसका सोचना भी गलत न था। उस समय, बहुतों को कार्ल मार्क्स का नाम ही सिंह स्वप्न के समान था। पश्चिम की पत्रिकायें और उनका अनुसरण करने वाली देशी पत्रिकायें भी उन्हें इस प्रकार प्रदर्शित करती थीं जैसे बच्चों को डराने के लिये लोग भयावह पुतला दिखाते हैं। उस पुतले को भूत, पिशाच, राक्षस आदि नाम से पुकारते हैं; उसी प्रकार कुछ लोग मार्क्स को भी इन्हीं नामों से सम्बोधित करते थे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भारती ने डरते-डरते दुबारा उस चित्र को देखा। पहली नजर में डरावने पुतले की तरह दिखनेवाला मार्क्स, दूसरी नजर में बंग कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर जैसा लगा। न जाने क्यों उस आदमी के जीवन के विषय में जानकारी प्राप्त करने की इच्छा भारती को हो आई।

इसी बीच, लकड़ी के पलखे की दूसरी ओर से बातों की आवाज सुनाई पड़ जाने से भारती का ध्यान भंग हो गया। दो पलखों के बीच की संधि से उसने झांक कर देखा। वहाँ जमीन पर बिछी, एक फटी चटाई पर पाँच-छः युवक बैठे थे। उनमें जो सबसे बड़ा था, दीवाल पर टिके कुछ कह रहा था। उसके सामने एक मुनीमजी वाला ढलुआ डेस्क रखा था, उसके ऊपर एक किताब, कापी और पेंसिल रखी थी। भारती जान गई कि वह युवक कौन था। वह गणेशन् था—मीना का बड़ा भाई। वह दुबला-पतला, गोरे रंग का, आधी बाँह की शर्ट और लुंगी पहने था। उसने अपने बाल भी ठीक न किये थे; चौड़ा माथा, तेज नजरें, गंभीर आवाज में उसके शब्द निकल रहे थे।

भारती ध्यान से, कान लगा सुनने लगी।

"सुभाष ने जो प्रश्न किया है, उसके संबंध में, एक तुरैसामी और एक पोन्नइया को दोष देने से कोई अर्थ नहीं। हमारी सामाजिक व्यवस्था की जड़ में ही गड़बड़ी है। जमींदारी और स्वामित्व वर्ग के लोग तथा इनकी चाटुकारिता करने वाला 'बुर्जुआ' वर्ग ही इस व्यवस्था से पैदा होगा। मेरा मतलब है कि हमारी बुनियाद ही ठीक नहीं है।'

सुभाष का नाम सुनते ही भारती चकित हो हक्काबक्का रह गई। उसकी नजरें उस कमरे को टटोलने लगीं। एक क्षण के लिये भारती की साँस ही रुक गई। गणेशन् से बिलकुल सट कर सुभाष बैठा था। केवल उसे छोड़ कर, दूसरे सभी लोग अधिक उमर के, कालेज के छात्र थे।

"आपका कहना मैं समझा नहीं," सुभाष बोला।

"इस समय देश में हम कितने करोड़ लोग हैं। तीन चौथाई से अधिक लोगों के पास अपना घर, अपनी जमीन, रोजगार अथवा जीवन यापन की सुविधायें नहीं हैं। ऐसी परिस्थिति में भी एक अकेला आदमी, जहाँ कभी चाहे, चाहे जितने घर खरीद ले, बनवा ले। चाहे जितनी जमीन खरीद ले, बेंच ले; अकेले सैकड़ों उद्योग सैकड़ों जगहों में चला सकता है, करोड़ों की संपत्ति कमा कर ढेर लगा सकता है। सात पीढ़ियों के लिये धन एकत्रित कर सकता है। इस सामाजिक व्यवस्था में, पोन्नइया को काला धन कमाने वाले कॉण्ट्रक्टर की आवश्यकता हैं;

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गांधीवादी रामलिंगम् की सहायता, उनके लिये पाँव की धूल के समान है। पैसे वाले का एजेण्ट बनने से ही उनका उद्योग चल सकता है। गणतंत्र के नाम पर चलाया जाने वाला यह अमेरिका का पूंजीवादी पैसावाद है !"

अपने पिता का नाम सुनते ही, भारती की आँखों से झर-झर आँसू झरने लगे। कुछ महीनों पहले, वे जिस स्थिति में थे और आज जिस स्थिति में हैं, भारती दोनों स्थितियों पर विचार मग्न हो गई। एक गांधीवादी की गांधी के देश में यह हालत ! एस्टेट का मकान, वगीचा, कार, उनसे मिलने वालों का कारों में आना सब कहाँ चला गया !

इससे आगे भारती से वहाँ रहा नहीं गया। आँखें पोछ कर वह उठने वाली थी कि मीना काफी लेकर आ गई। भारती की आँखें मीना पर और कान दूसरी ओर थे।

गणेशन् की आवाज फिर सुनाई पड़ी, "यहाँ भेड़ों के खेड़ को भी स्वतंत्रता है ! बाघ, भेड़िया और लोमड़ियों को भी स्वतंत्रता है ! सब धान बाइस पसेरी ! ऐसा होना औचित्यपूर्ण है ? क्रांति ही एक मात्र रास्ता है !"

भारती थरथरा गई। मीना ने उसके कंधे पर हाथ रख कर, "भइया, पाँच आदमियों के सामने बात करते हुए भी ऐसे बात करते हैं मानों हजारों की भीड़ के सामने बोल रहे हो; तुम घबड़ाओ नहीं" बोली।

कुछ उत्तर न दे, भारती काफी पीने लगी। किसी ने इमली के दाने पीस कर काफी में मिला कर, इनके हाथ बेच दिया था। 'गाँधी के देश में काफी के पावडर में भी मिलावट ?' भारती जल उठी। उसे लगा कै हो जायगी, किसी प्रकार गले के नीचे उतार गई।

"कहीं कोई किराये का मकान हो तो बताओ, भारती !" मीना ने कहा।

"हाँ, यह घर बहुत छोटा है ही" भारती ने कहा।

"इसके लिये चालीस रुपये महीना दे रहे हैं, इतने पर भी खाली करने के लिये परेशान किये हैं। मैं भी तीन महीनों से खोज रही हूँ।"

उसका भाई वहाँ कैसे आया, क्यों आया, भारती ने मीना से नहीं पूछा। उसे लग रहा था कि किसी प्रकार यहाँ से अपने घर चले। मीना और उसकी माँ से कहकर वह वहाँ से चल पड़ी। गणेशन् के अंदर की छटपटाहट, दूसरा मकान खोजने के लिये मीना की बातें और सुभाष का गणेशन् के साथ देखना, ये सब भारती का पीछा करते चल रहे थे। मिलावटी काफ़ी ऊपर से, उसके पेट में हलचल मचाये थी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्री मुमुक्षु भवन
वेदवेदाङ्ग महाविद्यालय
काशी. वाराणसी

१४. चिंतन की चिंता

कुछ नव युगीन लेखकों से मिलकर उनके सामने अपने विचार प्रकट करने के लिए पंजू ने 'होटल उर्वशी' में प्रवंध कर लिया था। 'विडिवेल्ली' के सोलह पृष्ठ उनके हाथों में आ गये थे, नई मशीन भी विदेश से आ उतर गई थी; पंजू अपने विचार लेखकों के सामने रख, उनकी सहमति लेना चाहते थे।

'होटल उर्वशी' मद्रास का एक वहुत वड़ा होटल था। विदेशी, पूंजीपति, हिसाव चुराकर पैसा एकत्रित करनेवाले देशी पूंजीपति और दूसरे के पैसे से संसार के सभी सुख भोग लेने के इच्छुक लोग ही उसके अंदर जा सकते थे। पंजू ने जानवूझ कर उस होटल में प्रवंध किया था। उनके प्रभाव को नये लेखक और 'मैनेजमेण्ट' दोनों जान सकें, यह थी इनकी इच्छा।

संपादक चिदम्वरम् का इससे कोई मतलव न था, इसीलिए पंजू ने उनसे वताया भी नहीं था। उन्हें मीटिंग में बुलाया भी न था। केवल राघवन् से, पहले होटल पहुँच कर स्वागत करने के लिए कह दिया था।

पंजू की चालढाल राघवन् को थोड़ा भी पसंद न थी, फिर भी उससे टकराने का साहस उनमें न था। पंजू, इस समय, मालिक के वड़े चहेते थे, इसीलिए एकाएक इस स्थिति में पहुँच गये थे। मैनेजमेण्ट भी पंजू की योजनाओं में मीन-मेख न निकालता था। राघवन् को कोई दूसरा रास्ता भी न सूझता था। वे दस-पन्द्रह वर्षों से सम्मान और प्रतिष्ठा के साथ काम करते आ रहे थे। उनका परिवार भी वड़ा था। ऐसी स्थिति में पंजू से शत्रुता करने से क्या होता ?

पाँच वजे मीटिंग थी, इसीलिए, राघवन् साढ़े-तीन वजे ही होटल उर्वशी पहुँच गये थे। तीसरी मंजिल में एक 'एयरकंडीशण्ड' कमरा, उनके लिए रक्षित था। एक लंवी मेज पर गुलदस्ते सजे रखे थे। चन्द्रमा के प्रकाश की तरह मंद-मंद प्रकाश था। उस कमरे में, दिन में ही, रात का वातावरण वना दिया गया था।

राघवन् को, न जाने क्यों यह सव नाटक जैसा लगा। उनको लगा, मानो एक आडंवरपूर्ण नाटक का पहला अशोभनीय दृश्य देख रहे हों। 'विडिवेल्ली' का स्तर के लेखकों से संपर्क था, इसे राघवन् जानते थे। वे लोग कार्यालय में ही चिदम्वरम् से मिलते थे अथवा समुद्र के किनारे वलुआर मैदान में एकत्रित होते थे।

बीस साल पहले, समुद्र के किनारे होनेवाली मीटिंग में ही, उस दिन संपादक गोपालन् के साथ उनका परिचय हुआ था। वहीं वह वढ़ता गया था। बाद में वे गोपालन् के साथ ही काम करने लगे थे।

वे दिन, जव पाँच-छः लोग शाम को समुद्र के किनारे एकत्रित होते थे,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राघवन् को याद आ गये। बड़े-बड़े लेखक, विचारक और संपादक वहाँ आते थे। विश्व की राजनीति, साहित्य और अर्थशास्त्र पर विचार करते थे। एक नये समाज रचना का उनमें आत्मविश्वास था जैसे, इस प्रकार वे अपने विचारों का आदान-प्रदान करते थे।

अपनी शिक्षा ऊँची कीमत पर बेंचकर पैसा कमाने का अवसर भी बहुतों के पास था, किन्तु उसे छोड़कर वे लोग लेखक बने थे। उनके खद्दर के कुर्ते फटे होते थे, उनके कुर्ते के जेब में मोमफली खरीदकर खाने के लिए भी पैसा न होता था; बस अथवा ट्राम के लिए पास में पैसा न होने से पैदल चलकर ही समुद्र के किनारे आते थे। इन तमाम कठिनाइयों को भी वे कुछ न मानते थे, उनमें आत्मसम्मान था। दूसरों को राह दिखाने का कर्तव्य, उसके प्रति जिम्मेदारी की भावना और मन की दृढ़ता थी उन लोगों में। बालू में बैठे-बैठे अपने चिंतन और भावनाओं के बल पर उन लोगों के ऊपर और ऊपर जाने के साहस को देखकर राघवन् चकित थे। समाज के नेता और दूसरे लोग उनको पूजते थे।

राघवन् होटल की उस मीटिंग को छोड़कर बाहर खुली छत में आ गये। छत के चारों ओर अमीरी की बाहरी तड़क-भड़क दिखाई पड़ती थी। शानशौकत और विलासिता में पले लोग, ऐसा लगता था, अपने को इस धरती का आदमी नहीं समझते थे, बिल्कुल अलग-अलग, अपने को विशेष प्रकार का समझते थे। तीसरी मंजिल से देखने पर 'मरीना बीच' दूर दिखाई पड़ता था। राघवन् उस 'बीच' को कभी न भुला सके थे। एक दिन, उसी 'बीच' में बैठे, मोमफली खाने के बाद संपादक गोपालन् ने गर्जना की थी। उनकी वह गर्जन आज भी राघवन् के कानों में गूंजती है '

"हमें इस बात का गर्व होना चाहिये कि हम बुद्धिजीवी हैं, विचारक हैं। शारीरिक सुख में लिप्त पशुओं और पैसे के लिए अपने ज्ञान को बेंचनेवाले पैसे के नशे में चूर लोगों के साथ हमें कोई समझौता नहीं करना है। पहाड़ पर जलते दीपक के समान अपने ज्ञान-प्रकाश को बिखेरते हुए, हमें दूसरों को राह दिखाना चाहिए। ज्ञानवान का अर्थ है, कपूर के समान स्वयं पिघलकर परोपकारी बनना। उसके परोपकार के बदले में उसे जो भी भीख मिले, उसे ही उसको खाना चाहिए। बुद्धिजीवी को इस बात की चिंता न करनी चाहिए कि कल के लिए उसके पास भोजन है कि नहीं। लोभी व्यक्ति कायर बन जाता है। इस देश में जहाँ शिक्षा और विवेक का अभाव है, हमारे ऊपर ही उत्तरदायित्व है।" अपने लाभ के लिए यदि कोई बुद्धिजीवी गलत काम करता था, गोपालन् उसे बरदाश्त न कर सकते थे।

राघवन् की नजरें, होटल के बगल से बहनेवाले 'बकिंघम् नाले के किनारे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की मछुआरों की बस्ती की ओर घूम गईं। सैंकड़ों झुग्गी-झोपड़ियाँ थीं। पशुओं के रहने की जगह से भी अधिक बुरी जगह में, अर्धनग्न, चिथड़े पहने लोग। चमड़े से ढँके हड्डी के ढाँचे, चिपके पेटवाले बच्चे, यहाँ-वहाँ धूल में लोटते-पोटते दिख रहे थे। वहाँ छिपने के लिए कोई जगह न होने के कारण लोग, यहाँ-वहाँ, जहाँ पाते वहीं मल त्याग करते थे। इस शोकपूर्ण दृश्य को देखकर राघवन् का दिल पसीज गया।

इस प्रकार की ऊँची मंजिल से, झुग्गी-झोपड़ीवासी लोगों को एक ही जगह देखने का अवसर, राघवन् को इसके पूर्व न मिला था। गरीबी हर जगह है लेकिन यहाँ, उसके साथ अज्ञान भी मिलकर आदमी को पशु-जीवन के किनारे ला दिया था। ऐसी स्थिति के बीच, तमिलनाड के शीर्षस्थ नेता, संपादक, आर्थिक विशेषज्ञ, विचारक, कलाकार, लेखक सभी मद्रास में ही रहते हैं। स्वतंत्रता मिलने के दस वर्ष के भीतर ही यह हालत ?

स्वयं को शिक्षित और बुद्धिजीवी माननेवाले राघवन् इस प्रश्न पर सोचने लगे। देश अपना लक्ष्य भूल गया है ! केवल राजनीतिक स्वतंत्रता को लक्ष्य मानने वाले, उसके मिल जाने पर, जैसे सब कुछ मिल गया हो, ऐसे निश्चिंत हो, लंबी चादर तानकर सो गये हैं।

सदियों से सामाजिक क्रूरता और आर्थिक शोषण से कुचले, चूसे गये लोगों की चिंता करनेवाला कोई दिखाई नहीं पड़ता। दूर, फ़िज़ी द्वीप के गन्ने के बगीचों में गुलाम कुली के रूप में पिसते तमिल परिवारों के कष्टों को, उन दिनों, भारती ने अपने गीतों में गाकर, लाखों लोगों के हृदय को द्रवित कर दिया था।

सामने लक्ष्य होने पर भी, इस देश के बुद्धिजीवी न देखनेवाले अंधे बन गये हैं। पत्रिकाओं का भी कोई लक्ष्य नहीं। बुद्धिजीवी लाखों कमानेवाले लोगों के सुर में ताल मिलानेवाले कुली बन गये हैं।

एक विदेशी, राघवन् के पास आ, सामने दिख रही बस्ती का फोटो ले लिया। चार-पाँच कोणों से वह जल्दी-जल्दी फोटो ले रहा था। राघवन् ने नाराज हो उसकी ओर देखा। उसकी उम्र पचास के ऊपर रही होगी। ऊँचा कद, दुबला-पतला शरीर, चाल में फुर्ती; वह किस देश का था, राघवन् न जान सके।

राघवन् को नाराजगी से अपनी ओर देखते हुए देखकर, वह आदमी स्वयं उनके पास आ अपना हाथ बढ़ाकर उनसे हाथ मिलाया। उसने अपना नाम विक्टर बताया। वह अमेरिकन था, वहाँ वह 'यूनिवर्सिटी' में समाज शास्त्र में प्रोफेसर था, यह भी बताया। कुछ महीने उत्तर में रहकर, मद्रास आया था।

"आपके चेहरे में झलकते क्रोध के कारण ही आपके प्रति मेरी दिलचस्पी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हुई। आपकी नाराजगी का मैं स्वागत करता हूँ। एक विदेशी, यहाँ आकर वैभवशाली स्थानों को छोड़कर इन झोपड़ियों का फोटो ले रहा है, लगता है आपको इसी बात की नाराजगी है !"

राघवन् उस आदमी की जानकारी की वारीकी देखकर दंग रह गये। उन्होंने अपना नाम और 'विडिवेल्ली' के सहायक संपादक होना बताकर अपना परिचय दिया। फिर "किस विचार से भारत आये हैं" पूछा।

"आपके देश की सामाजिक व्यवस्था पास से देखकर रिसर्च करनेवाला हूँ। यहाँ इतना बड़ा, तड़क-मड़क वाला होटल भी है, इसी के साथ-साथ सैकड़ों झुग्गी-झोपड़ियाँ भी हैं। इस होटल में आनेवाले लोग हमारी आदतें और दूसरी बुराइयों की नकल करते हैं, यह देख रहा हूँ मैं। कल सुबह ही, मैं इन झोपड़ियों के लिए कुछ खर्च करने की सोच रहा हूँ। सामान्य लोगों को प्रतिबिंबित करने वाला असली भारत इसी हालत में है, ऐसा मेरा विचार है" बस्ती की ओर देखते हुये विक्टर ने कहा।

"मिस्टर विक्टर !" भावनावश, राघवन् ने उनके दोनों हाथों को पकड़ लिया। "कुछ देर पहले जिस बात पर मैं चिंतित था, आप भी वही कह रहे हैं।"

"ओ !" परिहास करता हुआ-सा विक्टर हँसा। "मेरी साफ-साफ बातों के लिए मुझे माफ कर दीजिए; इस देश के आप जैसे बुद्धिजीवी, संपादक और पढ़े-लिखे लोग दूसरे लोगो के कष्टों को जानने की कोशिश करते हैं क्या ? क्या इन लोगों के लिए चिंतित है ?"

"कुछ अंश तक आपका कहना सच है" सिर झुकाये राघवन् ने स्वीकार किया।

"बुनियादी सच्चाई यही है, ऐसा मैं सोचता हूँ", विक्टर ने कहा, "किसी भी देश में, जनतंत्र और स्वतंत्रता के विकास के लिए, सबसे बड़ी जिम्मेदारी, उस देश के बुद्धिजीवियों के विवेक-शक्ति पर ही रहती है; आप अब भी इसकी सूक्ष्मता नहीं समझे हैं !"

"कौन सी सूक्ष्मता ?"

"इस देश के बुद्धिजीवी और विचारक अब भी अपने को भारतीय नहीं मानते। अपनी विवेकशक्ति का उपयोग भारत के लिए नहीं करते।"

"इसका कारण आप क्या मानते हैं ?" राघवन् ने पूछा।

विक्टर ने सोचा। उत्तर के कई प्रान्तों में जाकर देख चुके थे वे। मद्रास आये हुए पन्द्रह दिन से अधिक हो चुके थे; बहुत लोगों से मिल चुके थे; घूमकर बहुत-सी जगहें देख चुके थे, उनके पास ढेर सारी जानकारी थी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एकाएक, "आप किस जाति के हैं ?" राघवन् से उलटा प्रश्न किया। राघवन् सकपका गये; अपनी जाति का नाम बता दिया।

"भारत में कहीं भी मैं भारतीय को न देख सका; यह जाति-भावना बीच में आ जाती है। इस जाति-भावना के कारण आप चालीस करोड़ लोग एक होकर नहीं रह सकते। जन्म लेते ही, यह आपकी चिंतनशक्ति को कुंठित कर देती है। जाति ही आप लोगों का प्रथम मनोरोग है। यह, आपकी विवेकक्षमता को कुतरने वाला दीमक है।"

"मि. विक्टर मैं इसे नहीं मानूंगा; आपके यहाँ भी बहुत-से भेदभाव हैं, नीग्रो, एँगलो इण्डियन, भूरे रंग के लोग आदि इन भेदभावों की आप प्रशंसा करते हैं ?"

"अपनी कमजोरियों को हम छिपाते नहीं, मैं स्वीकार करता हूँ। लेकिन हमारे देश के गोरे अमेरिकन बुद्धिजीवी, काले लोगों की समस्याओं के लिए पत्र-पत्रिकाओं में कितना कठिन संघर्ष कर रहे हैं, जानते हैं आप ? हमारे देश में, गुलाम बनकर आये नीग्रो लोग, आपके धर्म और देश के लोग जिन झोपड़ियों में जीवन व्यतीत करते हैं, उनसे कहीं अच्छी हालत में रहते हैं। चुनावों के लिए वोट माँगने के लिए जानेवाले कुछ राजनीतिक लोगों को छोड़कर दूसरे बुद्धिजीवी या पत्रकार उनकी ओर फिरकर देखते भी नहीं। सामान्य लोगों की समस्याओं पर यहाँ के बुद्धिजीवियों को कोई परवाह ही नहीं। इसे मैं अच्छी तरह जानने के बाद ही कह रहा हूँ।"

कहीं से, कोई एक विदेशी आकर, जाने अनजाने, इस देश की समस्याओं को जानने की कोशिश में हैं, 'हमसे क्यों नहीं होता ?' राघवन् के भीतर यह प्रश्न पैदा हो गया। अधिकांश तमिल पत्र-पत्रिकाएँ, गरीबों के प्रति थोड़ा भी चिंतित नहीं हैं, इस तथ्य से राघवन् खिन्न हो गये।

"परिस्थिति शोचनीय है··· ····" राघवन्।

"आपके पास भरपूर प्राकृतिक सम्पदा है; श्रम के लिये जन-शक्ति है। आप के बीच में बुद्धिजीवियों की भी कोई कमी नहीं है। विश्व में सबसे अधिक सम्पन्नता और शक्ति आपके देश में हैं। यह जानते हुए भी उसका उपयोग न करना, आपकी कमी है।"

"यह कमी क्यों है ?"

"मैं सोचता हूँ, आपकी 'क्लानिश मेण्टालिटी' ही इसका कारण है" विक्टर बोले।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"जाति को आप 'क्लानिश मेण्टालिटी' कह रहे हैं ?"

"दूसरा समुचित शब्द मुझे नहीं मिला। मार्गदर्शन कराने वाले बुद्धिजीवियों में भी ऐसी भावना पैदा नहीं हुई है कि वे स्वयं को भारत के विशाल परिवार का अंग मान सकें। आप लोग, 'मैं, मेरा परिवार और मेरी जाति' ऐसी सीमा बाँध रखी है। 'माइनारिटी ग्रुप' में बँट कर एक दूसरे से टकरा रहे हैं और अपनी शक्ति व्यर्थ में गँवा रहे हैं।"

"अब जाति-भावना बहुत कम हो गई है, अभी और कम होती जा रही है" राघवन् ने कहा।

"नहीं; यह छिपे तौर से बढ़ने के प्रयत्न में हैं। भारत के हर भाग में, अलग-अलग तरह के जातीय झगड़े अथवा धार्मिक झगड़े दिख रहे हैं। आने वाले चुनावों के लिये किये गये प्रबंधों को मैंने देखा है। एक 'क्लानिश मेण्टालिटी' वाला दूसरे 'क्लानिश मेण्टालिटी' वाले के विरुद्ध अपनी घृणा का प्रचार करके, राजनीतिक शक्ति पाने की कोशिश में दिखाई पड़ता है।"

फिर, विक्टर ने अपनी बातों के प्रमाणों को राघवन् से ब्योरेवार बताया। हर प्रान्त में, प्रत्येक भाषा-भाषी में अलग-अलग तरह के जातीय झगड़े हैं। मार्ग दर्शन देने वाले बुद्धिजीवी भी, पैसे के लिये अपने ज्ञान को वेंचने की स्पर्धा में एक दूसरे से टकरा रहे हैं, वे अपने पेट के अलावा दूसरे काम में, अपने ज्ञान का उपयोग नहीं करना चाहते।

"मैं इस देश और इस नगर के लिये अजनबी हूँ। देखिये, अभी तक मैं इन झुग्गी-झोपड़ियों के पास गया भी नहीं। बिना पास गये ही कह रहा हूँ; आप चाहें तो जाकर उनसे पूछ लीजिये, वहाँ रहने वाले प्रायः सभी लोग एक ही जाति के होंगे।"

राघवन् चकित रह गये। उनकी आँखों के सामने ही, एक विदेशी ने जिस सत्य का उद्घाटन किया था, वह उनके सीने में चाबुक जैसा लगा। वहाँ बसनेवाले अधिकांश लोग एक ही जाति, मछुआरे जाति के थे। उनके धंधे के सामानों को देख कर ही राघवन् जान गये थे।

"आपका क़यास सही ही है" राघवन् बोले।

"मुझ अमेरिका निवासी की अभिलाषा है कि आपका गणतंत्र सफल हो। अगर झुग्गी-झोपड़ियाँ इस प्रकार बढ़ती चली गईं, तो निश्चय ही गणतंत्र सफल न हो सकेगा। पत्रिकाओं में काम करने वाले, आप जैसे बुद्धिजीवियों को समाज की बुराइयों को देखना चाहिए, और साहस के साथ उनका प्रकाशन भी करना चाहिये।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

समय हो गया था, राघवन् को अपने काम की याद आ गई थी। उन्होंने घड़ी देखी, साढ़े चार बज गये थे।

"यहाँ लेखकों की मीटिंग होने वाली है, उसी के प्रबंध के लिये मैं आया हूँ" राघवन् ने कहा।

"ओ ! यहाँ मीटिंग होने का मतलब है कि तमिल लेखक बड़े पैसे वाले हैं" कह कर विक्टर हँसने लगा। "जो बिल ये लोग चुकायेंगे उसे मैं नहीं चुका सकता ?"

राघवन् ने उत्तर नहीं दिया। 'अचानक पैसे वाला बने मालिक की कृपा से एकाएक पैसे वाला बनने के लिये उत्सुक सहायक संपादक का प्रबंध है यह' इस बात को राघवन् उससे कैसे बतायें ? "हो सका तो मीटिंग के बाद फिर मिलेंगे" कहकर विक्टर ने उन्हें विदा दी।

अप्रत्याशित रूप से, एक ज्ञानपिपासु और विचारक एवं भले आदमी से भेंट हो जाने से राघवन् संतुष्ट थे।

१५. रोशनी में अँधेरा

निश्चित समय से पन्द्रह मिनट पूर्व ही लेखकगण 'होटल उर्वशी' में आने लगे थे। पंजू ने पन्द्रह लेखकों को ही आमंत्रित किया था। कुछ युवतियाँ कार से आ गई थीं। पुरुष स्कूटर, बस, सायकलों आदि में आये थे। अट्टहास करते, ठाठ से चलते, अनामंत्रित लेखक नरसिम्मन् को देख कर पंजू चौंक गये। उन्हें देखते ही उन्हें एक बड़ी गलती का पता चला। नरसिम्मन् नाम के एक दूसरे लेखक को दिया जाने वाला कार्ड, दफ्तर के चपरासी की गलती से इनके पास पहुँच गया था।

एक दूसरे लेखक, सुब्रमणियन् अकेले न आकर, अपने एक सिनेमा लेखक मित्र वलनाडन को भी साथ लेते आये थे।

पन्द्रह लोगों में चार-पाँच औरतें थीं; उन में सबसे मुख्य थी उषा कुमारी। वह काफी पढ़ी लिखी, बड़े घर की थी।

राघवन् के लिये ये सब नये चेहरे थे। नरसिम्मन् को छोड़कर, दूसरों का नाम भी उन्होंने नहीं सुना था। वे लेखक, किन-किन पत्रिकाओं के लिए लिखते थे, यह बात पंजू ने राघवन् के कान में बता दी थी। वे सभी पत्रिकायें छिपा कर पढ़ी जाने वाली पत्रिकायें थीं।

हाँ, उस समय पर, छिप कर पढ़ी जाने वाली, केवल युवाओं के लिए, अनेक पत्रिकायें प्रकाशित की जाती थीं। लोग, उनके मुखपृष्ठ को फाड़कर पढ़ते

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

थे। इन्हीं पत्रिकाओं में लिखने वाले कुछ लेखकों का पता लगा कर पंजू ने उन्हें बुलाया था। उन औरतों का पता भी, उन्हें तभी मिला था।

बरसात में पैदा होकर गायब हो जाने वाले खरपतवार की तरह, वे पत्रिकायें, गृह उद्योग की तरह सीमित संख्या में निकल रही थीं। 'गौरा अवलेह', मदन काम वटी 'गुप्तरोगों का रसायन' ये कुछ उनके प्रमुख विज्ञापन होते थे। उनमें लिखी जानेवाली कहानियाँ, लेख, गुदगुदी पैदा करनेवाली शारीरिक भोग-क्रीड़ाओं तथा उनसे संबंधित, छूरेवाजी, चाकूबाजी और मुकदमों के संबंध की होती हैं। अपने अगल-बगल की सड़कों और घरों में होनेवाले अशोभनीय कृत्यों को सुनकर, लोग आपस में फुसफुसा कर बातें करते हैं, है न? इन बातों के आधार पर पैसा कमानेवाले कुछ व्यापारिक प्रवृत्ति के लोग इन पत्रिकाओं का प्रकाशन करने लगे थे।

ऐसी ही घटिया पत्रिकायें, तथा विदेशों में प्रकाशित, कुछ कामुक भावना पूर्ण पत्रिकायें, पंजू के लिए आदर्श बनी हुई थीं। बड़ी मछली छोटी मछली को खाती है; बड़े उद्योग छोटे उद्योगों का सत्यानाश करते हैं; इसी सिद्धान्त पर 'विडिवेल्ली' में उनको मिले सोलह पृष्ठों की पूँजी से दूसरी पत्रिकाओं को नष्ट कर सकेंगे, ऐसी योजना थी पंजू की।

इन्हें छिपाने की क्या आवश्यकता है? जब तक चार अथवा चार सौ आदमी छिपकर पढ़ते हैं तब तक रहस्य है, जब चार लाख लोग पढ़ने लगेंगे तब रहस्य कहाँ रह जायगा? औद्योगिक क्रान्ति के फलस्वरूप, हजारों रुपये लगाकर मशीन खरीदने के बाद, यदि इतना भी नहीं किया जा सका, तो इतना अनुभव रखने का क्या लाभ?

पंजू दौड़-दौड़कर लेखकों का स्वागत कर रहे थे। नरसिम्मन् और बलनाडन् के प्रति जान बूझकर उपेक्षा दिखा रहे थे। स्त्रियों के प्रति विशेष आदरभाव दिखा रहे थे, इसे राघवन् समझ रहे थे।

आहार का प्रबंध बहुत ऊँचा था। भोजन के बाद ही मीटिंग थी।

"जिसके पास 'परमिट' नहीं है, उसको कुछ न मिलेगा क्या? एक सज्जन ने कहा।"

"पेरिस और अमेरिका में ऐसा कोई होटल ही नहीं जहाँ 'डांस' और 'म्यूजिक' न हो।" ऐसा कहकर, उषा कुमारी ने यह जता दिया कि वह सब जगह हो आई है।

"हमारे हाथ में एक शक्तिशाली पत्रिका है। उन चीजों को हम यहाँ भी जल्दी ही मँगा लेंगे" पंजू ने हाँ में हाँ मिलाया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पंजू की बातें सुनते ही राघवन् का जी मिचलाने लगा। पंजू नियमधर्म के बड़े पक्के थे। पूजा अर्चना और दूसरे धार्मिक संस्कारों को कभी छोड़ते न थे। समय भले चूक जाय लेकिन विभूति लगाना न भूलते थे। ऐसे आदमी की बातें हैं ये ?

पंजू ने मीटिंग प्रारंभ किया।

"आपका लिखना मैं पढ़ चुका हूँ, मुझे पसंद है। जिसे सदाचरण कहा जाता है, दुनियाँ में, उसकी सही व्याख्या कोई भी नहीं दे पाया। यह प्रत्येक व्यक्ति के व्यक्तिगत विचारों का विषय है।

"करेक्ट, करेक्ट !" एक ने अनुमोदन किया।

"धत् तेरे की !" राघवन् मन ही मन बुदबुदाये।

"आपका लेखन, इस समय, घड़े के अन्दर रखे दीपक के समान है। आप शारीरिक, मानसिक और सामाजिक 'दर्शन' की बातें बिना किसी छिपाव-दुराव के साफ-साफ लिख रहे हैं। खासकर उषा कुमारी का लिखना तो मुझे बहुत ही पसंद है। बड़े साहस से लिखती हैं···! मैं पूछता हूँ, इसमें छिपाने की बात ही क्या है।"

बड़े उत्साह से तालियाँ पिटने लगीं। सबकी नजरें उषा कुमारी को जैसे निगल जाना चाहती हों। वे गर्व से फूल गईं।

"पहाड़ पर जलते हुए दीपक के समान, आपके लेखन का प्रकाश पूरी दुनिया में फैले, ऐसी मेरी इच्छा है। एक घंटे में, चार रंगों में लाखों प्रतियाँ छाप लेने के लिए हमारे पास बहुत बड़ी मशीन आ चुकी है। 'विडिवेल्ली' को इस हद तक बढ़ा दें कि कोई भी पत्रिका इसका मुकाबला न कर सके। अब यह आपकी पत्रिका है !"

"इस चाल में चलने से 'विडिवेल्ली' लड़खड़ाती हुई पीछे ही जायगी" एक ने कहा।

"ये देखिए !" एक लेखक ने उस समय बहुत अधिक प्रचलित एक पत्रिका का एक पुराना और एक नया अंक हाथ में ले ऊपर उठाकर दिखाया। "दस वर्ष पूर्व प्रारंभ की गई इस पत्रिका में उस समय के पुराने घिसे-पिटे लोग ही लिखा करते थे। "ऊँचा नाम पाने से प्रयोजन ? अब देखिए कैसे चल रही है। क्यों चल रही है ?"

उषा कुमारी ने, उस पत्रिका के पुराने और नये अंक को तुलनात्मक दृष्टि से देखकर बोली :

" 'वह अच्छा है', 'यह बुरा है' ऐसा कहने वालों के लिए अब कोई स्थान नहीं है। अब लेखकों ने 'जेनरेशन गैप' को समझ लिया है। सिनमा नक्षत्रों के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विषय में अब पत्रिकाओं में बेहिचक छाप रहे हैं। बाहर भी और भीतर भी आकर्षक चित्र होते हैं। अमेरिका से आनेवाली पत्रिकाओं, 'प्लेगर्ल', 'जाली बॉय', आदि की नकल करते हैं। वहाँ की 'जनरल इण्डस्ट्री' के विकास को देखकर न जाने हमें क्यों···जिसे हम 'नेकेडनेस' कहते हैं, वहाँ उसकी 'आर्ट' मानकर पूजा करते हैं।"

"इसके नमूने के तौर पर मैं आपके लिए कई पत्रिकायें ले आया हूँ। स्वयं अपना सिर फोड़ने के लिए कोई कल्पना भी नहीं कर सकता है। हमारे लिये, तीस वर्षों का 'मैटर' 'मूर मार्केट' में मिल जायगा।"

प्रत्येक व्यक्ति को, पश्चिम की पत्रिकाओं की दो-दो, तीन-तीन प्रतियाँ पंजू ने बाँट दी। यह भी बता दिया कि आ जाने पर और भी दी जायगी।

"समय की चाल के अदुसार हमें भी चलना चाहिए" उषा ने कहा। "हमारा शरीर अगर सत्य है तो, उसका 'व्यापार' भी सत्य है। जो सत्य है उसे कहने में डरना, कायरता है!"

"ओहो!" अब तक चुप बैठे नरसिम्मन् ने कहा।" यदि शरीर ही सत्य है तो उसको ढँकने के लिए हम कपड़ा क्यों पहनते हैं? कपड़े का खर्च ही बच जायगा!"

"आप मेरी 'इंसल्ट' कर रहे हैं" उषा चींखी।

"मिस उषा!" राघवन् भी बीच में ही बोल उठे। "मैं, अमरीका से आये, इसी होटल में ठहरे, मि० विक्टर से अभी-अभी मिल चुका हूँ। उन्होंने, हमारे देश की सच्चाई—हमारे देश के विकास के संबंध की सच्चाई—जिन्हें हम ही नहीं जानते, उन्होंने भलीभाँति जानकर हम से बताया है। हम वहाँ जाकर, 'टीन एज', 'डेटिंग, 'नाइट क्लब', 'बाल डांस' जैसी चीजों का आयात करना चाह रहे हैं।"

"मि० राघवन्!" पंजू ने दपट कर राघवन् को चुप कर दिया।

नरसिम्मन्, नरसिंह मूर्ति बन गये। वे बायें बाजू के प्रबल लेखक थे।

"क्यों देवी जी! जगमगाते देश से लौटकर आप जैसी जगमगाती महिला ऐसी बात बता रही है! उनकी समस्या है 'प्लंटी', हमारी समस्या है 'पावर्टी'! थोड़ा जाकर, बगल में खड़ी झोपड़ियों को देख कर बात कीजिये मि० पंजू! इस समय आप तमिलनाड में तमिल जनता के लिए पत्रिका चला रहे हैं? अथवा अमरीका से आने वाली, तीसरे स्तर की पत्रिकाओं में तमिल की मोहर लगाने जा रहे हैं?"

पंजू के चेहरे से माछी न उड़ती थी।

"अभी-अभी इस देश में चार लोगों ने, सिर उठा कर पढ़ना शुरू किया है, उन्हें आप लेखन के साथ गांजा देकर, उनका 'ब्रेनवाश' करना चाहते हैं?"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"कामरेड नरसिम्मन् ! लेखक जम्बू तेज आवाज में बोले, 'ब्रेनवाश' आपके रूस का सिद्धान्त हो सकता है ! हमारे देश में लेखन की स्वतंत्रता है, इसे आप मत भूलिये।"

"यहाँ, लिखने की स्वतंत्रता किसको है ? ऐसा कहने में आपको शर्म नहीं आती ? लिखने की स्वतंत्रता होती तो इस मीटिंग में 'विडिवेल्ली' के संपादक चिदम्बरम् क्यों नहीं आये ? आप रूस को दोष देते हैं, यहाँ क्या हो रहा है ?"

पंजू की समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करें। वे पसीना-पसीना हो रहे थे। इसी समय, मूंछों पर ताव देते हुए, तौलिया झाड़ कर, कंधे पर रख, वलनाडन् उठ कर गंभीर मुद्रा में खड़े हो गये। उपेक्षा भाव से उषा कुमारी पर एक नजर डाल कर, "उषा देवी, अमरीका हो आई हैं, कामरेड नरसिम्मन् रूस जा रहे हैं, हम तो तमिलनाड में ही हैं" उन्होंने अपनी बात प्रारंभ की।

"असलियत आपने समझा हैं !" एक आवाज सुनाई पड़ी।

वलनाडन् झेंपे नहीं, "पत्थर काटने के बाद, मिट्टी खोदने के बहुत पहले, दुनियाँ में, सबसे पहले पैदा होने वाला वंश तमिल वंश है। तमिल संस्कृति प्रतिष्ठा और प्रेम की संस्कृति है। यह वह राज्य है जिसे वल्लवंट[1] ने 'कुरल'[2] दिया है; इलंगो[3] ने 'पाजेब'[4] की झंकार दिया है। तीन संघों की स्थापना कर तमिल साहित्य, संगीत और शिल्प को विकसित करने वाला राज्य है। उस तमिल संस्कृति की, हमें लक्ष्मी की तरह पूजा कर, रक्षा करनी चाहिये !"

"वलनाडन् महोदय ! 'वेल्लितिरै'[5] के लिए लिखते समय, ये सब बातें आपको याद आती है ? अथवा, केवल चाँदी का पैसा ही याद आता है ?" एक ने प्रश्न किया।

तालियाँ बजने लगीं, 'हा, हू' होने लगा। पंजू, स्थिति सँभाले नहीं पा रहे थे। बड़ी मुश्किल से वलनाडन् को बैठा सके।

नरसिम्मन् पुनः खड़े हो गये :

"पंजू हों या वलनाडन्, दोनों बड़ी-बड़ी मशीनों के सहारे, जनता को धोखा देने वाले, पूँजीवाद के लाड़ले बेटे हैं। पंजू पाठकों को धोखा देने की कोशिश में हैं; वलनाडन् अपढ़ जनता को धोखा देने की सोच रहे हैं। आप दोनों आदमी मिलकर एक सड़े-गले समाज का निर्माण करेंगे, जल्दी कर डालिये ! उसके बाद ही, हमारे

---

१. प्राचीन संत कवि, २. महान तमिल ग्रंथ, ३. प्राचीन महाकाव्य के रचयिता, ४. इलंगो रचित महाकाव्य का संकेत। ५. चाँदी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लिए काम होगा। हम, आप लोगों को माछी की तरह मसल कर, एक नये समाज की रचना करते हैं कि नहीं देख लीजिएगा !"

नरसिम्मन् देखने में भी, कुछ-कुछ नरसिंह जैसे ही थे। हाँथ-पाँव फटकारते हुए, वे आग उगल रहे थे। सबसे पहले उषा कुमारी और दूसरी स्त्रियाँ खिसक गईं। वाद में दूसरे लोग भी, कुछ पंजू से कह कर, कुछ विना कहे ही, रवाना हो गये। अंत में, पंजू और उनके कार्यालय के कुछ लोग ही वचे।

"मि० नरसिम्मन् ! आप से अकेले में मिलना चाहता था, लेकिन भूल से आपको यहाँ वुला लिया था" पंजू सफेद झूठ वोल गये। किसी दूसरे के पास जाने वाले आमंत्रण, गलती से उनके पास पहुँच गया था, इस वात की नरसिम्मन् नहीं जानते थे।

"गरीबों और झुग्गी-झोपड़ियों में रहनेवाले लोगों के जीवन के विषय में आपके लेखन को मैं पढ़ता हूं। मैं आपका नियमित पाठक हूं, आपका सम्मान करता हूँ। आप इस पर विश्वास रखें……"

पंजू अनेक प्रकार से नरसिम्मन् को सांत्वना देने लगे। 'आपको को माछी की तरह मसल देंगें' नरसिम्मन् की इस गर्जना के कारण, पंजू सचमुच काँप गये थे। उन्हें यह बात मालूम थी कि नरसिम्मन् के पीछे पाठकों का एक वड़ा समूह है। वे जाने-माने, वामपंथी लेखक थे।

"देखिये, 'विडिवेल्ली' में तीन-चार पृष्ठ आपके लिये सुरक्षित हैं। आप कहानी, उपन्यास, लेख, चाहे जो लिख सकते हैं। दूसरों को जो दिया जायगा, उसका दूना आपको, सम्मानार्थ दे रहा हूँ, कृपया इंकार न कीजिये !"

"गरीवों की हालत पर लिखना ही तो आपको पसंद नहीं है न ? आपको कार, वँगला और चिकने लफलफाते हुये जंफर-जाकेट ही पसंद हैं आपको ?"

"मैंने कह दिया ना, आप जो चाहें लिखिये !"

नरसिम्मन् का क्रोध शांत हो गया। वे भी, बेचारे आदमी ही तो थे ? पंजू ने उन्हें अपनी आफिस कार में वैठाकर, फटाक से दरवाजा वंद कर दिया। ड्राइवर से, नरसिम्मन् जहाँ कहें, उन्हें उतार देने के लिये कह दिया।

जैसे ही कार होटल से रवाना हुई, पंजू, राघवन् के सामने खिलखिला कर हँसने लगे। उनका हँसना राघवन् की समझ में नहीं आया।

"इस उछल कूद को देखकर, आप घवड़ा रहे हैं, छः महीने धैर्य रखिये। इस गरीबों के हिमायती को, ज्ञान-स्नान कराकर पूंजीवादी साहित्यकार वनाये देता हूँ कि नहीं, देख लीजियेगा। ये ही, हमारे लिये, कार, वँगला, जंफर, जाकेट के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विषय में ही खुशी-खुशी से लिखेंगे, देखियेगा। इस देश में हरेक आदमी की अलग-अलग 'कीमत' है। वह कीमत क्या है, उसे देना कैसे चाहिये, केवल इतना हमें समझना है!"

राघवन् को लगा जैसे एक भयंकर स्वप्न देखकर जगे हों। वह मीटिंग उन्हें, बुद्धिजीवियों और कलाकारों की मीटिंग जैसी न लगी थी। यदि वह विदेशी, विक्टर उन्हें मिल जाता तो, इन 'विचारकों' की मीटिंग के संबंध में उससे पूछते, ऐसा सोचते थे। पंजू से कह कर, राघवन् तेजी से होटल से बाहर चले गये।

१६. आदमी और आदर्श

तुरैसामी के कार्यालय के टेलिफोन की घंटी बज उठी। बोलने वाला कौन था, इसे जान कर, उनके सचिव ने 'टेलिफोन' तुरैसामी की ओर बढ़ा दिया। बोलने वाले पोन्नइया थे :

"कुशल से हैं आप? बहुत दिनों से भेंट नहीं हुई। पत्रकार वार्ता के लिये पत्रकारों को बुलाया है मैंने, मालूम है आपको कि नहीं? भूलियेगा नहीं, अवश्य आइयेगा। चुनाव खतम होने तक, आपका पहला काम चुनाव ही होना चाहिये।"

"अहा, अवश्य आऊँगा, अवश्य आऊँगा।"

"चिदम्बरम् को भी साथ लेते आइयेगा; जैसे भी हो, देशभक्त लड़का है। पुरानी बातें भुला दे, ऐसा कह दीजियेगा।"

"लेता आऊँगा, आप भी, अकेले में, थोड़ा कह दीजियेगा। लड़का अच्छा है, फिर भी थोड़ा जिद्दी है।"

"आप उस से कह दीजियेगा कि मैं उससे बात करना चाहता हूँ, सब कुछ ठीक ठाक कर लेंगे हम।"

टेलिफोन पर बातें खतम हो गईं। तुरैसामी तनकर सीधे बैठ गये। यह सच था कि कई महीनों से, तुरैसामी चाहते हुए भी, पोन्नइया से न तो टेलिफोन पर बात कर पाये थे और न जाने से भेंट कर पाये थे। तुरैसामी के विचार से, पोन्नइया, अपनी क्षमता से अधिक राजनीतिक अधिकार में डूब गये थे। तुरैसामी को इस बात की बड़ी शिकायत थी। 'पास में इतना पैसा होने पर भी, अपना उतना प्रभाव नहीं है जितना एक राजनीतिक व्यक्ति का है' इस बात की कचोट थी उनके मन में। अच्छा हुआ चुनाव आ गया था।

'केवल चुनाव आने का कारण ही न था, उन्हें हमारा पैसा और पत्रिका

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भी चाहिये, इसीलिए, आज, जिन्हें मैं खोजता फिरता था और वे नहीं मिलते थे, वही स्वयं, मुझे खोज रहे हैं' तुरैसामी ने मन ही मन कहा।

कुछ दिन पहले जब पोन्नइया उनकी पकड़ में थे और जिसके फलस्वरूप उन्होंने लाभ उठाया था तथा बाद में पोन्नइया का उनकी पकड़ से दूर हो जाने पर भी तुरैसामी ने विचार किया। उन्हें लगा पोन्नइया में एक दूसरे के विपरीत दो विचित्र गुण थे। पोन्नइया लोगों को पूँजीपति बनाते और उनके पैसे का उपयोग खुलकर करते थे, साथ ही उन लोगों से बड़े सजग और सतर्क होकर रहते थे।

बहुत लोग पोन्नइया से, कार, बँगला, बाग-बगीचे, कंपनियों का शेयर, बच्चों के नाम पर बड़े-बड़े उद्योग आदि पाने के लिए कोशिश कर रहे थे। पाँच साल में एक बार राजनीति में उछलकूद करनेवाले बहती गंगा में हाथ धो लेने का उपदेश दे रहे थे। इतना कर लेने पर, पार्टी के नेता को पैसों की गठरी में बाँधकर, बाकी छोटे से छोटे पार्टी स्वयंसेवकों को पैसे के लिये जीभ दिखाने के लिए मजबूर किया जा सकता है, है न ?

तुरैसामी, इस चुनाव के समय, पोन्नइया से कई काम साध लेना चाहते ते। चुनाव में जो भी पैसा लगाया जायगा, वह बाद में किसी दूसरे रूप में, कई गुना तुरैसामी के पास वापस आ जाएगा। पोन्नइया, पैसे की अपेक्षा, चिदम्बरम् के लेखन को अधिक महत्व देते थे, यह जानकर तुरैसामी को अपने पत्रिका व्यवसाय की महत्ता का बोध हो गया था। चिदम्बरम् के प्रति उनका सम्मान भी एकाएक बढ़ गया था।

" 'विडिवेल्लि' को फोनकर उन्होंने चिदम्बरम् से बात की, "आज सुना है, पोन्नइया ने पत्रकारवार्ता का आयोजन किया है; हमें भी बुलावा आया है ?"

"सोचता हूँ, राघवन् को भेज दिया जाय ?" चिदम्बरम् ने कहा।

"अरे ! यह क्या अच्छा होगा ? आप कुछ ऐसा ही करेंगे, पोन्नइया ने यही सोचकर मुझे फोन किया है। निश्चय ही आपको भेजने के लिए कहा है।"

चिदम्बरम् सोचने लगा।

"हम दोनों आदमी चलेंगे; तैयार रहियेगा। मैं जल्दी ही आता हूँ, साथ लेता चलूँगा।"

"ठीक है" चिदम्बरम् ने कहा।

उस समय चिदम्बरम् के सामने पंजू बैठा था। उसका मुँह एकदम सिकुड़ गया। तुरैसामी का चिदम्बरम् के साथ बात करना भी उससे न सहा गया।

उस समय पंजू एक मुख्य बात पर चिदम्बरम् से सीधे बहस कर रहा था।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लेखन और चित्रों के द्वारा, 'विडिवेल्ली' के सोलह पृष्ठों को बरबाद करने के बाद भी उसको संतोष न था। उसको पत्रिका के मुखपृष्ठ की आवश्यकता थी। मुखपृष्ठ पर, चिदम्बरम्, नारी-चित्र छापने के लिए स्वीकार करें तथा इसकी जिम्मेदारी उसे दे दें, इस बात पर वह विवाद कर रहा था।

उन दोनों के बीच में, पाँच-छः रंगीन चित्र पड़े थे। वे सभी युवतियों के सीने के ऊपरी भाग के चित्र थे। प्रत्येक चित्र अपनी माँसलता, विभिन्न कोणों से प्रदर्शित कर रहा था। उनमें केवल वस्त्रों की कमी में एकता थी। चेहरे के सौन्दर्य और उसके आकर्षण मात्र से पंजू को संतोष न था। मादकता उकसानेवाले भागों में पंजू ने अधिक उभार दिखाया था।

चिदम्बरम् को बड़ी घृणा हो गई। चित्र देखनेवाली आँखों को धो ले ऐसा लगा उसे।

"सिग्मण्ड फ्रायड के मनोविज्ञान के अनुसार दुनिया में 'सेक्स' ही प्रधान चीज है। हमारे शास्त्र भी उसी की बातें करते हैं। मुखपृष्ठ पर हम जो छापना चाहते हैं, क्या वह हमारे मंदिरों में नहीं है?" इस प्रकार अनेक तरह की बातें पंजू कहे जा रहा था।

चिदम्बरम् को लग रहा था जैसे शैतान वेद पाठ कर रहा हो, उससे सहा न जा रहा था।

"पंजू ! यह ऐसा समय नहीं है कि हम नारी को धार्मिक मठ के कमरे में दासी बनाकर रखें। अब उनका ज्ञान, कुशलता, श्रम आदि घर और देश के लिए आवश्यक हैं। मातृकुल को हमें इस प्रकार अपमानित न करना चाहिये।"

"अमरीका में....." पंजू बीच में बोल उठा।

"वहाँ ठण्ड बहुत होती है; ऐसी प्रवृत्ति को बढ़ावा देने के लिए वहाँ ऐसी चीजें आवश्यक हो सकती हैं। यहाँ ऐसी स्थिति नहीं है।"

"यह व्यापारिक विषय की बात है; पाँच महीनों के भीतर ही, पचास हजार प्रतियाँ अधिक निकाल सकेंगे। हमारे मालिक ने लाखों रुपये खर्च करके, दुनियाँ के पुनरुद्धार के लिए, इतनी बड़ी मशीन नहीं खरीदी है। यह व्यापार है।" पंजू ने गुस्से से कहा।

कुछ महीनों पहले जो आदमी चिदम्बरम् से दुबकता भागता था, आज वही उस पर, झपटने का साहस करने लगा था। कौआ गरुड़ बन गया था।

चिदम्बरम् क्रोध से उठकर खड़ा हो गया, "व्यापार का अर्थ है कि जो आदमी पैसा लगाकर चीज खरीदे, उसकी भलाई करते हुए हम भी जियें। आप जिसे व्यापार कह रहे हैं वह व्यभिचार से भी तुच्छ है।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"चिदम्बरम् ! जो भी हो, आपको मेरी उम्र का सम्मान करना चाहिए ।"

"उम्र, शिक्षा, ज्ञान, अनुभव आदि सबको पैसे से मिलाकर यह देश उम्र और ज्ञान दोनों से हीन हो गया है, अब वह पुरुष और नारी को सड़क का कुत्ता बना रहा है; मुझे इस पर विश्वास नहीं है ।"

"क्या है ! क्या बात है" पूछते हुए तुरैसामी आ गये । उन्हें पूरी बातें न मालूम हो सकीं, फिर भी इतना अवश्य मालूम हो गया कि दोनों के बीच गरमा-गरम वाक्युद्ध चल रहा था ।

पचास हजार प्रतियाँ अधिक निकालने की बात से तुरैसामी उसका पक्ष लेंगे इस साहस से पंजू मुखपृष्ठ का उत्तरदायित्व उसको देने के लिए अड़ा हुआ था । चिदम्बरम् दोनों पर उत्तरदायित्व छोड़कर वहाँ से भाग जाना चाहता था । फिर भी संघर्ष किये बिना वह अपनी हार मान लेना न चाहता था ।

"सह सम्पादक का कहना तो सुन लिया, संपादक का क्या कहना है ?" तुरैसामी चिदम्बरम् की ओर देखने लगे । उनके इस भाव को देखते ही पंजू का आधा उत्साह ठण्डा पड़ गया ।

चिदम्बरम् ने, अपनी मेज की दराज से मलयालम की पत्रिका 'मातृभूमि' की कुछ प्रतियाँ निकालकर ऊपर रख दिया । उसके बाहर और भीतर मलय धरती की माटी की बास भरी थी । उनके मुखपृष्ठों पर, वहाँ का प्राकृतिक सौन्दर्य और किसानों का जीवन चित्रित था; उनमें, उस माटी के नृत्य, उत्सव-त्योहार, जन-जीवन के संघर्ष दिखाई पड़ते थे ।

"इन पत्रिकाओं को चलानेवाले और संपादकों में, 'हम मलयवासी हैं' की भावना भरी हुई है, भारतीयता की भावना प्रत्यक्ष दिखाई पड़ती है । उनकी नसों में, वहाँ की धरती का रक्त दौड़ रहा है, इस बात को ये पत्रिकायें बता रही हैं । दूर देशों में जाकर, वहाँ की नकल करने के बदले, कम से कम उन्हें देखकर, हम अपनी नष्टप्राय सांस्कृतिक भावना पा सकते हैं" चिदम्बरम् ने कहा ।

उन पत्रिकाओं को पलटने के समय पंजू की उँगलियाँ कँपने लगीं । संस्कृति के संबंध में हम मलय लोगों की अपेक्षा अधिक श्रेष्ठ हैं, ऐसा कहा करते थे पंजू । सम्मेलन, सभाओं का आयोजन कर, दूसरे वक्ता भी ऐसी ही बातें जोश खरोश से कहा करते थे । लेकिन वास्तविकता कुछ और ही थी !

"छोड़िये इन बातों को ! मुखपृष्ठ को अभी ऐसा ही रहने दीजिये" तुरैसामी ने कहा । इसे सुनते ही पंजू का मुँह सिकुड़ गया । सभी चित्रों को समेट कर वे झटके से अपने कमरे में चले गये ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उस समय, तुरैसामी को पंजू के सहयोग की अधिक आवश्यकता थी। वह चुनाव का समय था। पंजू को रास्ते में लाया जा सकता था किन्तु चिदम्बरम् के साथ वैसा सम्भव न था।

"आइये, चला जाय" चिदम्बरम् से बोले।

दोनों आदमी कार से, पोन्नइया के पार्टी कार्यालय में पहुँच गये। वहां पोन्नइया की कार खड़ी करने के लिए जगह न थी, एकदम कारें ही कारें खड़ी थीं। चूनाव के प्रत्याशी, उनके समर्थकों तथा पत्रकारों की भीड़ लगी थी।

वीच में, मसनद से टिके पोन्नइया वैठे थे। तुरैसामी को देखते ही, उन्हें और चिदम्बरम् को अपने पास वैठने का इशारा कर दिया। प्रत्याशियों की सूची पत्रकारों को दे दी गई।

पोन्नइया ने वैठे-वैठे कुछ वातें कहीं :

"पिछले चुनाव में कुछ असावधानी के कारण हमें कुछ संकट का सामना करना पड़ा था। जनता ने, जनतंत्र में विश्वास न रखने वालों को समर्थन दे दिया, फिर भी हम जनता की भलाई के लिये कई काम करते रहे हैं। अव भी वहुत-सी योजनायें पूरी करनी हैं। जनता को, शिक्षा और रोजगार की सुविधायें जुटाना है; हमें ध्यान रखना है कि कोई भी आदमी भूखा न रहे। इस चुनाव में आप सवकी सहायता आवश्यक है।"

पोन्नइया ने, देशभक्ति, त्याग, गांधी, ग्रामीण विकास, निःशुल्क शिक्षा आदि वातों पर वोलते रहे। विरोधी पार्टियों की वुराइयाँ वताईं। पत्रकारों के सवालों के जवाव दिये। चिदम्बरम् ने उनसे कोई प्रश्न नहीं किया। उसने केवल प्रत्याशियों की सूची को चार वार पलट कर ध्यान से देखा।

मीटिंग समाप्त होने पर पोन्नइया ने अकेले चिदम्बरम् को कुछ देर तक अपने पास रोक लिया, उन्होंने तुरैसामी को भी बिदा कर दिया था। पोन्नइया, चिदम्बरम् को अपने साथ अपने कार्यालय ले गये। चिदम्बरम् के पिता और परिवार के विषय में वड़ी सहानुभूति से बातें करते रहे।

अंत में, "इस चुनाव के विषय में तुम क्या सोचते हो ? अपने मन की बातें वता दो", वोले।

"विजय, निश्चय ही आपकी होगी; आप की पार्टी में जो ताकत है विरोधी पार्टियों में नहीं हैं।"

"यह तो ठीक है, तुम किस दल को वोट दोगे यह बताओ" उन्होंने यह बात मजाक के लहजे में कही, किन्तु उसके विचार गहराई तक जान लेने की इच्छा थी उनकी। उसके वोट की उन्हें चिन्ता न थी, उन्हें चिन्ता थी कि वह लिखेगा क्या।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"बोलो बेटे ! तुम्हारा वोट किसे मिलेगा ?"

"मैं दो बातों का ध्यान रखूंगा; पहला पार्टी के सिद्धान्त, दूसरे उन सिद्धान्तों के नाम पर खड़े होने वाले प्रत्याशियों की योग्यता !"

"हमारे सिद्धान्त तुम जानते हो—सब के लिये समान अवसर, सबों की सुख-सुविधा का ध्यान रखते हुए जनतंत्र की स्थापना, ये हैं हमारे सिद्धान्त। प्रत्याशियों की सूची तुम्हारे हाथ में हैं, अब बोलो ?"

चिदम्बरम् ने सूची को फिर से देखा, उसे देख कर; उनके चेहरे को देखा कुछ कहने में वह झिझक रहा था।

"चुप क्यों हो ?"

"यदि कुछ कहूँगा तो आप नाराज हो जायेंगे।"

"मैं जानता हूँ कि तुम्हें मेरी नाराजगी का डर नहीं है, बोलो।"

"चार सौ रु० वेतन वाले काम के लिये यदि कोई आदमी अर्जी देता है तो उसकी शिक्षा, अनुभव, चरित्र आदि के प्रमाण-पत्र देखे जाते हैं; पहले वह क्या करता था इस बात के लिये पुलिस की रिपोर्ट ली जाती है। शासन के छोटे-मोटे काम के लिये उसे इतना सब करना पड़ता है। देश का शासन सँभालने वाले लोगों के लिये भी कुछ योग्यता और कुशलता का मापदंड रखना चाहिए—इस सूची में आपके सिद्धान्तों के विरोधियों के नाम हैं !"

"सच है", पोन्नइया ने स्वीकार किया।

"शिक्षित और सिद्धान्तों से लगाव रखनेवाले युवकों को खोजकर आप उन्हें खड़ा कर सकते थे। जमीदार, जागीरदार और पैसे वालों को जबरन न खड़ा करना चाहिए।"

"क्या करने को कहते हो ? बिना पैसे वाले को अगर खड़ा कर दिया गया तो वह अपने लिए पैसा बटोरने लगता है न ?"

चिदम्बरम् को उनकी ये बातें सही नहीं लगीं। वहाँ ऐसे बहुतेरे लोग थे जो सिद्धान्तों के सामने पैसे को तुच्छ मानते थे। ऐसे लोगों पर किसी का ध्यान न था। जो लोग स्वयं पोन्नइया के पास आये थे, उन लोगों में किसके पास अधिक पैसा है, किसके पीछे अधिक जाति-समर्थन है केवल इतना देखकर उन्हीं को खड़ा कर दिया था। जानेमाने कालाबाजारिये भी उस सूची में थे।

"जनतंत्र समुचित रूप से चल सके, इसकी जिम्मेदारी आप लोगों पर है। आप सच्चा नेतृत्व और मार्गदर्शन दे सकेंगे, इस सूची को देखने से, मुझे इस बात पर सन्तोष नहीं हो रहा।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"क्या कहते हो ?" पोन्नइया जैसे घबड़ा गये हों, ऐसे, उसकी ओर देखा।

"राजनीतिज्ञ के नाम से राजनीतिक व्याधि के रूप में, लोग इस सूची में हैं। दूसरे दलों में भी फैली यह संक्रामक व्याधि है।"

"चाहे जो हो, हमारे सिद्धान्त तो हैं न ?" कहकर स्थिति को सँभालने की कोशिश की पोन्नइया ने, लेकिन उसे पकड़ में न आता हुआ देखकर "तुम्हारा वोट किसे मिलेगा, इसे नहीं बताया ना ?" पूछा।

"चुनाव में खड़े होनेवाला, राजनीतिक है या राजनीतिक व्यापारी है अथवा राजनीतिक व्याधि है, इसे अच्छी तरह समझने के बाद जो राजनीतिक होगा उसी को वोट दूँगा, केवल सिद्धान्तों की चकाचौंध में पड़कर धोखा न खाऊँगा। प्रत्याशियों के 'करेक्टर सर्टिफिकेट', 'कण्डक्ट सर्टिफिकेट', राजनीतिक ज्ञान और कुशलता आदि पर विचार करूँगा।"

"पत्रिका में ऐसा ही सब लिखोगे ?"

"आपके सिद्धान्तों का मैं बहुत बड़ा समर्थक हूँ। प्रत्याशियों की योग्यतानुसार योग्य व्यक्ति को अवश्य वोट देने के लिये पाठकों से कहूँगा। अयोग्य व्यक्ति किसी न किसी प्रकार विजय प्राप्त ही कर लेंगे। चाहे जैसे देखें विजय आप की ही होगी।"

अयोग्य व्यक्ति 'किसी न किसी प्रकार' जीत ही जायेंगे, योग्य व्यक्तियों को जीत के लिये अधिक प्रयत्न करना पड़ेगा, चिदम्बरम् की इस 'चुटकी लेने' को देखकर पोन्नइया मन ही मन हँसने लगे। जिन लोगों के पास पैसा और जाति का बल था; उन लोगों को खद्दर का कुर्ता पहनाकर खड़ा कर दिया गया था। ऐसा करने से, उनको लाभ न हुआ हो, ऐसी बात न थी; चुनाव का समय पैसा बटोरने का समय होता है।

"जिस तरह भी हो, तुम्हारा समर्थन यदि मिलता है तो ठीक है" पोन्नइया बोले। चाहे जैसे हो, पार्टी को जीतना ही चाहिये, ऐसा चाहते थे वे। मूल झंझट इसी 'चाहे जैसे हो' से ही शुरू हुई थी।

चिदम्बरम् के साथ उनके वैचारिक विरोध चाहे जितने हों, लेकिन चुनाव के समय वह उनसे अलग न होगा, पोन्नइया को ऐसा विश्वास था; उन्हें इसी की आशा भी थी।

१७. भुवना का आना

चिदम्बरम्, दिल्ली जाने वाले विमान की प्रतीक्षा में, मद्रास एयरपोर्ट में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

था। उसको विदा करने के लिये सह-सम्पादक राघवन् आये थे। दिल्ली में होने-वाले, 'भारतीय भाषाओं' के पत्रकारों के सम्मेलन में तुरैसामी उसे ही भेजेंगे, ऐसी आशा थी पंजू की, लेकिन उन्होंने चिदम्बरम् को जबरन भेज दिया था।

सम्मेलन तीन दिन चलने वाला था। उसके बाद भी, यदि आवश्यकता हो, तो वह दिल्ली में रुक सकता था, तुरैसामी ने उसको इस बात की छूट दे दी थी। दिल्ली में तुरैसामी के कुछ आवश्यक कार्य थे, उन्हें भी देखकर चिदम्बरम् को वापस आना था।

दिल्ली जाने वाले यात्री विमान में आ जायँ, ऐसी घोषणा की गई। चिद-म्बरम् राघवन् से विदा ले, हवाई पट्टी पर उतर कर चलने लगा। साथ के यात्रियों पर उसने कोई ध्यान नहीं दिया। गेट पर खड़ी विमान परिचारिका को टिकट दिखाकर, एक किनारे की सीट पर जा बैठ गया। उस जगह से खिड़की के रास्ते बाहर का दृश्य देखा जा सकता था। उसकी बगल में केवल एक सीट खाली थी। पूरे दिन चलने वाला, वह पुरानी किस्म का विमान था। चिदम्बरम् की वह प्रथम विमान-यात्रा थी।

उसके बैठने के थोड़ी देर बाद ही, एक युवती जल्दी-जल्दी आकर, उसकी बगल में बैठ गई। चिदम्बरम् ने उसकी ओर देखा तक नहीं, वह धर्मसंकट में पड़ गया। उस युवती के साथ और कोई हो सकता है, इस विचार से, उसके लिये जगह छोड़ देने के लिये, वह उठकर खड़ा हो गया। खिड़की से, बाहरी दृश्य देखने की सुविधा का त्याग करने की स्थिति उसके सामने आ गई थी। सामने की पंक्ति में एक सीट खाली थी, उस ओर जाने के लिए वह घूमा।

उस युवती के पाँव बीच रास्ते में फैले थे।

"थोड़ा सा.........."

"क्यों मि० चिदम्बरम् मेरी बगल में बैठने से डर लगता है?" केवल वही सुन सके, वह इस प्रकार फुसफुसाई। सिर उठाकर उसके चेहरे को देखती हुई, धीरे से मुसकरा दी।

"भुवना?"

"बैठकर बात कीजिये" धीरे से उसका हाथ पकड़कर, भुवना ने उसे बैठा दिया। उसके मुलायम हाथों के स्पर्श से चिदम्बरम् के पूरे शरीर में झुरझुरी दौड़ गई। अगल-बगल के लोग देख रहे होंगे, इस विचार से वह शर्मिन्दा हो गया। लेकिन भुवना पर जैसे कोई असर न हो ऐसी दिख रही थी।

एक क्षण तक, क्या कहे उसे कुछ सूझा ही नहीं। उसके जीवन की यह अवि-स्मरणीय यात्रा होगी; ऐसी सुखमय अनुभूति उसके अन्दर उमड़ पड़ी। उसी समय,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जैसे कुछ सन्देह में पड़ गया हो, "आपके साथ कोई और.... ?" अपना प्रश्न बीच में ही रोककर, उत्तर के लिये उसके चेहरे को देखने लगा।

"मेरे साथ केवल एक मित्र हैं।"

"चिदम्बरम् का मुँह सिकुड़ गया। इसे देखकर भुवना की नजरें शैतानी से हँसने लगीं।

परिचारिका ने एक 'ट्रे' लाकर उनके सामने कर दिया। उसमें लौंग, इलायची, मिठाई, चाकलेट आदि चीजें थीं। स्वयं, दोनों आदमियों के लिये लेकर भुवना ने सिर हिलाकर परिचारिका को इशारा कर दिया। परिचारिका के चले जाने पर, उसको लौंग और मिठाई देकर, "मेरे साथ चलने वाले मित्र का नाम आपने नहीं पूछा ?" भुवना ने उसे पुन: उकसाया।

उसने कोई जवाब नहीं दिया, उसके चेहरे में उदासी वैसे ही थी।

"उनका नाम है, चिदम्बरम्, 'विडिवेल्ली' के सम्पादक।"

चिदम्बरम् हँसा। भुवना, जैसे उस हँसी को ज्यों का त्यों अपने हृदय में भर लेना चाहती हो, इस प्रकार प्यार से उसके चेहरे को देख रही थी।

लालवत्ती जल उठी, मानो 'वेल्ट' बाँध लेने के लिये कह रही हो। "आपकी यह पहली विमान-यात्रा है ?" कहती हुई, भुवना ने वेल्ट बाँधने में उसकी मदद की। "मुँह में लौंग डाल लीजिये, कुछ नये यात्रियों का सिर घूमने लगता है" बोली।

तेजी से घरघराता हुआ विमान खिसकने लगा। फिर 'झम्म' से हवा में उठकर ऊपर चलने लगा। चिदम्बरम् के मुँह के पास भुवना एक चाकलेट ले गई, उसने उसे स्वीकार कर लिया।

"आपका प्यार ही, इस समय मेरा सिर घुमा रहा है," बोला।

"वेल्ट खोल दीजिये, अब इसकी जरूरत नहीं।" चिदम्बरम् ने वेल्ट खोल दिया। खिड़की से, छोटे-छोटे आकार में नीचे दिखने वाले मद्रास के मुख्य-मुख्य स्थानों को भुवना उसे दिखाती जा रही थी। बाद में, समुद्र के ऊपर से विमान के उड़ने के समय, नीचे एकदम नीले रंग का बिछा परदा दिख रहा था। एकाएक विमान मेघखंडों के ऊपर उड़ने लगा। नीचे तैरते हुए मेघखंडों की ओर इशारा कर भुवना दिखा रही थी। उनकी नजरें, दूर, बहुत दूर दिखने वाले अंतरिक्ष को टटोल रही थीं।

"यह पहला अनुभव आपको कैसा लग रहा है ?" भुवना ने पूछा।

"आपका यह···· ··· ?"

"दस-बारह बार जा चुकी हूँ।" दिल्ली की रात्रि-यात्रा ही मुझे पसंद है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कंबल लपेट कर आराम से सोते चले जाते हैं। सुबह होते ही जगा देते हैं। यह दिन की यात्रा मुझे 'बोर' लगेगी।

"मुझे वैसा नहीं लगता।"

"पहला अनुभव है न ?"

"वो बात नहीं। पहले अनुभव में ही मुझे यह सौभाग्य मिल गया। अंतरिक्ष में आपके साथ उड़ने का सौभाग्य जो मिला था।

"एयरपोर्ट में आपके साथ राघवन् को देखकर, मुझे संदेह हो गया था कि वे भी आपके साथ चलेंगे। यह जानकर कि केवल आप ही चल रहे हैं, मैं इस सौभाग्य को खोना न चाहती थी।"

"आप भी ऐसा ही सोचती हैं क्या ?"

"बड़े लोगों का साहचर्य पाने के लिये, रेल का प्रथम श्रेणी का डिब्बा और विमान बड़े सहायक होते हैं। अब सुना है विमानों में भी उच्च और निम्न-श्रेणियाँ बनने वाली हैं। सचमुच, आज मुझे बहुत प्रिय साथ मिला है—एक बड़े आदमी का साहचर्य !"

"मजाक न कीजिये; मैं आपका पुराना मित्र हूँ, आप केवल इतना मानें तो यही पर्याप्त है।"

"पर्याप्त है ? वैसा मानना पर्याप्त है ?" अपनी आकर्षक आँखों को फैला कर भुवना ने उसकी ओर देखा। चिदम्बरम् इतने नजदीक से, उसकी पलकों की छटपटाहट, उसके कपोलों का भराव और उसके अधरों की लालिमा को, इसके पहले कभी न देख सका था। कालेज की भुवना की अपेक्षा यह भुवना कितनी सुन्दर हो गई थी !

चिदम्बरम् ने झिझकते हुए सिर झुका लिया। फिर सिर उठाकर क्रोध और प्यार से उसकी ओर देखा।

"पर्याप्त है, ऐसा मेरा मतलब न था। पहले कभी दिया गया आमंत्रण, जहाँ तक मेरा संबंध है, आज भी वैसा ही है। इन्कार करने वाली और भुला देने वाली आप हैं, मैं नहीं," एकाएक चिदम्बरम् के चेहरे में वेदना छा गई। सीट से टिककर, विमान के सामने देखते हुए, उसने लंबी साँस ली। उसकी आँखों से लुढ़कती हुई एक नीर-मुक्ता को भुवना ने देख लिया। भुवना का मन द्रवित हो गया। वह यह भी भूल गई कि वह इतने यात्रियों के बीच में हैं। धीरे से चिदम्बरम् का हाथ लेकर, अपनी गोद में रख लिया।

"मैंने मजाक में कह दिया था, मुझे क्षमा कर दीजिए। मैं ऐसी हूँ जिसे दिल खोलकर बात करने, हँसी-मजाक करने के लिये कोई मिला ही नहीं। आपको

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देखते ही मैं वही पुरानी भुवना बन गई हूँ। इस यात्रा में आपकी अपेक्षा मुझे कितना अधिक आनन्द मिल रहा है आप इसे नहीं जान सकते।"

"यदि ऐसा है तो मुझे अपना पता क्यों नहीं दिया था? मुझसे टेलीफोन पर भी बात नहीं किया था? अनायास मिल जाने पर ही···· ····"

"न मिलने पर भी आप मेरे ऊपर कितना अधिक अधिकार जता रहे हैं! मेरे साथ कोई दूसरा है इस विचार मात्र को भी आप न सह सके। जिस आदमी के मन में मेरे लिए इतना गहरा स्थान है उसके साथ पड़ जाने पर मेरी क्या गति होगी?" भुवना खिलखिला कर हँस पड़ी।

चिदम्बरम् भी हँसा, उसे यह बात समझ में आ गई कि भुवना उसे अच्छी तरह समझ चुकी है।

भुवना उसके लिये एक पहेली थी, लेकिन वह उसके साथ न तो घनिष्ठता जैसा व्यवहार कर रही थी और न बनावटी भावना से ही मिल रही थी, वह इसे समझ रहा था। उसकी हँसी में बनावट न थी; झूठ भी न था, उसकी आँखों में निष्कपट प्रेम छलक रहा था।

बातों से भी वह अपने हृदय की गहराई खोलकर रख देना चाहती थी फिर भी न जाने क्यों वह खुले मन से कुछ करने में झिझक रही थी। उन दोनों के बीच में कोई एक रहस्य छिपा था।

"जीवन में कुछ समय तक के लिये मिलने का और फिर बिछुड़ जाने का अवसर हमें मिला है। इस अवसर को हम जितनी अधिक खुशी से हो सके उतनी अधिक खुशी से बिता लें", भुवना ने कहा। उसकी इन बातों में एक तरह की वेदना ही झलकती थी, प्रसन्नता नहीं।

"आप प्रायः किस काम से दिल्ली जाया करती हैं?" चिदम्बरम् ने पूछा।

"बिजनेस है, जा रही हूँ" भुवनेश्वरी ने कहा। "बहुत से बिजनेसमैन प्रायः जाया करते हैं, आपको नहीं मालूम? वे लोग बिजनेसमैन हैं और मैं बिजनेस वूमन, बस इतना अन्तर है" कहकर हँसने लगी।

"कौन-सा बिजनेस?"

"कितने ही बिजनेस हैं? क्या एक, दो हैं? अगर ऐसा न होता तो क्या बार-बार दिल्ली की उड़ान भरना संभव होता?"

ऐसी बात न थी कि चिदम्बरम् कुछ जानता न रहा हो। एक दिन पहले एक बहुत बड़े मिल-मालिक का लड़का उसको लेने के लिये कार से आया था। उस कार की कीमत पचास हजार से कम न रही होगी। आज उसने भुवना को हवाई-जहाज में पाया था।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"सुविधानुसार ...."

"मुझे देखने से ही मालूम हो जाना चाहिए ! मैं एक दिन में पाँच हजार के अपने लक्ष्य को पाने जा रही हूँ।"

"मेरी पहुँच के बाहर की बात है .... आपके इन्कार का भी कारण है।"

"चिदम्बरम्, यदि आप ऐसा कहेंगे तो मैं नाराज हो जाऊँगी।" कुछ नाराज-सी होकर वह उसके और पास खिसक गई। "हमारे बीच में थोड़ी भी सन्धि नहीं है; आपकी पहुँच के बाहर होने पर भी आप मुझे पकड़ सकते हैं। यदि सच कहूँ तो इस समय मैं ही आपको पकड़े हुए हूँ" वह शैतानी भरी हँसी हँसने लगी।

"इस पकड़ को आप छोड़ देंगी !"

"संसार में कौन-सी चीज है जो शाश्वत हो ? आप इस सिद्धान्त पर विश्वास नहीं करते क्या ?"

"कम से कम जीवन रहने तक तो रह ही सकता है !"

"इस युग में ऐसा भी नहीं होता, यह पुराना सिद्धान्त है।"

विमान नागपुर विमान-तल पर उतर गया। दोनों ने नीचे उतर कर विमान-तल पर मिलने वाली ब्रेड बड़ी रुचि से खाया। चिदम्बरम् की ब्रेड में मक्खन लगा कर उसे दे दिया। भुवना विमान-सेवकों से कुछ हद तक परिचित थी। चिदम्बरम् के साथ उसके व्यवहार को देखकर दूसरे लोग उसे चिदम्बरम् की पत्नी समझते थे। भुवना को देखने से ऐसा लगता था कि उसे किसी से भी कोई भय या लज्जा न थी।

"दिल्ली में आप कहाँ ठहरेंगे ?" भुवना दाँतों से ब्रेड काटती हुई बोली।

"एक होटल को लिख दिया है ! वहाँ मेरे लिए कमरा सुरक्षित होगा।"

"आपको और कहीं नहीं जाना है; मद्रास वापस जाने तक आप मेरे मेहमान रहेंगे।"

चिदम्बरम् को अपने कानों पर विश्वास न हुआ।

१८. प्यार ऐसा भी ?

दिल्ली हवाई अड्डे पर भुवना को लेने के लिये एक बिल्कुल नई सवर्लेट कार आई थी। शाम की मन्द धूप में नीले रंग की चमचमाती हुई वह कार भुवना के पास आकर खड़ी हो गई। ड्राइवर नीचे उतर कर बड़ी नम्रता से भुवना के हाथ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की पेटी लेने के लिए बढ़ा। भुवना ने, पहले चिदम्बरम् के हाथ का सामान लेने के लिए उसको इशारा कर दिया। ड्राइवर के साथ आया हुआ एक उत्तरी भारतीय नवयुवक, "यात्रा अच्छी रही?" बड़ी अदब से पूछा। रामकिशन नाम के उस नवयुवक का परिचय भुवना ने चिदम्बरम् से कराया। तमिल पत्रिका के सम्पादक और अपने नजदीकी सम्बन्धी बताकर चिदम्बरम् का परिचय दिया।

"कन्हैयालाल नाम के आदमी से आप मद्रास में मिले थे, है न? उन्हीं के दिल्ली कार्यालय के ये मैंनेजर हैं।" उसने चिदम्बरम् से कहा।

ड्राइवर ने कार के पीछे का दरवाजा खोल दिया। पहले चिदम्बरम् को बैठने के लिए कहकर स्वयं भी उससे सटकर बैठ गई। ड्राइवर की बगल में रामकिशन के बैठ जाने पर कार चल पड़ी।

जिस होटल में उसके लिए कमरा रिजर्व था उस होटल के सामने अपने को उतार देने के लिए चिदम्बरम् ने कहा। समय मिलने पर वह भुवना के घर आकर उससे मिल लेगा ऐसा भी कह दिया।

भुवना ने मुँह सिकोड़ कर नाराजगी से उसकी ओर देखा। 'आप मुँह बन्द किए चुप न रहेंगे?' मानो उसकी नजरें ऐसा कह रही थीं। फिर रामकिशन से, चिदम्बरम् के बताए हुए होटल के पास रुक कर, अब कमरे की आवश्यकता नहीं हैं ऐसा होटल वाले से कह पैसा दे आने के लिए, कह दिया। वह काम भी हो गया। होटल के सामने कार रोककर रामकिशन होटल में जा पाँच मिनट में ही वापस आ गया।

सड़क के दोनों ओर छायादार वृक्ष और जहाँ-तहाँ पार्क दिखाई पड़ते थे। नयी दिल्ली के बाहरी मार्गों को पार करती हुई कार चली जा रही थी, फिर एक अहाते के अन्दर घुस कर खड़ी हो गई। अन्दर एक छोटा-सा बँगला था; उसके चारों ओर फूलों की झाड़ियाँ भरी हुई थीं, गेट पर खड़े गुरखा ने तनकर भुवना को सैल्यूट किया। चिदम्बरम् को यह सब नया लगा रहा था। कालेज के दिनों में खाने के लिए भी जिसका ठिकाना न था, पाँच-दस रुपये के लिए भी जो परेशान रहा करती थी, क्या वही भुवना है यह?

कार से उतर कर सामने दिखने वाले कार्यालय के कमरे में भुवना चिदम्बरम् के साथ चली गई। वहाँ रामकिशन की मेज पर कुछ फाइलें और दो फोन रखे थे। पास में ही एक पंजाबी लड़की कुछ टाइप कर रही थी, वह खड़ी होकर मुस्कराती हुई भुवना का स्वागत कर पुनः अपने काम में लग गई।

दो कपों में गुलाबी सुगन्ध वाली गरम-गरम चाय आ गई। एक कप चिदम्बरम् की ओर बढ़ाकर दूसरा स्वयं ले भुवना 'सिप' करने लगी। बाद में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक छोटा-सा 'चिट' सामने रख कर उस पर लिखे नम्बरों में उसने फोन किया। उसने छः-सात लोगों को फोन लगाया, किन्तु मिले केवल चार लोग। एक से अँग्रेजी में, एक से तमिल में, एक से हिन्दी में और एक से तीनों भाषाओं में, आदमी के अनुसार, उसने बात की। वह बड़ी घनिष्ठता से प्यारी-प्यारी बातें कर रही थीं, ऐसा चिदम्बरम् को लगा। लेकिन जो बातें ये सब की सब बिजनेस सम्बन्धी थीं। 'लाइसेन्स,' 'परमिट', 'कोटा', 'एक्सपोर्ट', 'इम्पोर्ट' आदि शब्द बीच बीच में आ जाते थे। 'इतनी दूर तक इतनी बड़ी आदमी हो गई है यह?' ऐसा सोचकर चिदम्बरम् चकित रह गया।

बात समाप्त करने पर पंजाबी लड़की की ओर घूमकर 'बंबई में कन्हैयालाल से फोन मिलाकर, मिल जाने पर मुझे ऊपर बता देना' ऐसा कह भुवना उठ गई। "मिस्टर चिदम्बरम् के लिए ऊपर एक अलग कमरे का प्रबन्ध कर दिया है न?" रामकिशन से उसने पूछा। कमरा तैयार है ऐसा जवाब मिल गया। चिदम्बरम् को साथ ले भुवना ऊपर चली गई।

अगल-बगल दो कमरे थे; पहला भुवना के लिए दूसरा चिदम्बरम् के लिए। भुवना ने सीधे चिदम्बरम् के कमरे में जाकर देखा कि वहाँ उसकी सुविधा के लिए सब चीजें हैं कि नहीं। पश्चिम का प्रथम श्रेणी का होटल भी उस कमरे की बराबरी न कर सकता था। 'एयर-कन्डीशनिंग', 'कूलर', गरम और ठण्डे पानी की सुविधा वाला बाथरूम, चायनीज़ 'टब', कश्मीरी शालें, रबर के गद्दे, तकिया, आदमकद शीशा, टी० वी० और न जाने कितनी चीजें उस कमरे में थीं।

"सर्दी अब भी खतम नहीं हुई है, ठण्डा पानी हाथ से भी न छुइयेगा। सफर की थकान मिटाने के लिए गरम पानी से नहाकर ऊनी कपड़े पहन लीजिएगा। तब तक मैं भी आती हूँ" कहकर भुवना ने अपने कमरे में जा दरवाजा बन्द कर लिया।

गांधीवादी का पुत्र, सादी जिन्दगी का अभ्यस्त चिदम्बरम् को लगा मानो वह किसी जंगल में फँस गया है। वहाँ चारों ओर आँखों को चकाचौंध करने वाली कीमती चीजें देखकर उसे लगा मानो वह किसी पुरानी रियासत के राजा के अन्तःपुर में घुस गया हो। रियासतों को खतम हुए दस वर्ष हो चुके थे। उसे लगा, उन राजाओं की जगह पर बिना ताज के नए राजा पैदा हो गये थे!

दीवाल पर लगे चित्र कोणार्क, खजुराहों की मूर्तियों के प्रतिबिम्ब थे; कुछ संगमरमर और कुछ चायनीज़ पत्थर की मूर्तियाँ भी श्रृंगार-रस-क्रीड़ा प्रदर्शित कर रही थीं। मन्दिरों में रखी हुई मूर्तियों की नकल कर, मन्दिर के अन्दर की भावनाओं को एकदम परिवर्तित करने वाली नवीनता चिदम्बरम् ने वहाँ देखी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह जगह अपने रहने की नहीं है ऐसी भावना उसके अन्दर उठी, फिर भी वह भुवना के प्रेम को ठुकरा न सकता था। उसके साथ सम्बन्ध तोड़ने का साहस उसमें न था। उसके हृदय में सबसे पहले सौंदर्य भावना को प्रकट करने का कारण भुवना ही थी। उसने उसकी वजह से ही दुनिया को एक वर्ष तक प्यार भरी नजरों से देखा था। बीच में वह सुनहरे स्वप्न की तरह खतम हो जाने पर भी दुवारा उससे मिलने पर अथवा उसके प्रति विचार करने पर वह फिर से पुराना विद्यार्थी वन गया था।

चिदम्बरम् ने, नहा-धोकर, कपड़े वदल, बाल ठीक किया। पूरी बाँह के कुर्ते के ऊपर जैकेट मात्र पर्याप्त रहेगी, उसने सोचा। बाहर निकलने पर, सर्दी से बचने के लिये उसने एक कश्मीरी शाल कंधे पर डाल लिया।

'भोजन कीजियेगा ?" कहती हुई भुवना कमरे में आ गई, वह उसे अपलक देखती एक क्षण तक चकित-सी खड़ी रही। "आपके सामने दूल्हा भी फीका पड़ेगा !" उसके अनजाने में ही उसके मन की वात उसके मुँह से निकल गई।

"आपके कथनानुसार, मुझे वह सौभाग्य नहीं मिलेगा", चिदम्बरम् ने तपाक से जवाव दिया।

वह जैसे कुछ समझ ही न पाई हो, "आपकी सादगीपूर्ण पोशाक का आनंद ले रही थी", बोली।

"हमेशा की तरह वही मोटा खद्दर ही तो है।"

"कुछ लोगों को खद्दर पहने देखकर, मेरा जी करता है कि उनकी गर्दन मरोड़ दूँ, कुछ लोगों को देखकर किसी प्रकार का भाव नहीं पैदा होता, कुछ ही लोगों को खद्दर में देखकर उन्हें हाथ जोड़कर प्रणाम करने को जी चाहता है।"

चिदम्बरम् हँसते हुए, "मेरी गर्दन तो न मरोड़ दीजियेगा ?" बोला।

"कौन देखता है ?" उसने, मानो नाराज हो, तिरछी नजरों से उसको देखा। चिदम्बरम् एक क्षण के लिये विना झिझके न रह सका।

ऊपर के हाल में, उन लोगों के लिये, मेज पर खाना लगा था। परोसने के लिये एक आदमी प्रतीक्षा में था। "तुम्हें कष्ट करने की कोई जरूरत नहीं, मैं कर लूँगी" कहकर उसे नीचे भेज कर, भुवना ने पहले चिदम्बरम् के लिये परोसा। दूध, घी, चीनी से बने मीठे व्यंजनों के साथ-साथ, चपाती, चावल, साग, साम्भर, पापड़, दही सभी कुछ था।

"यह गुजराती, मारवाड़ी और मद्रासी भोजन है !" कहकर भुवना हँसने लगी। "दिल्ली में एक तरह की मिलावटी सभ्यता आ गई है, यहाँ मिलावटी महक भी है, मिलावटी भोजन भी है।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भुवना ने, चिदम्बरम् की थाली के चारों ओर फल और व्यंजनों को करीने से सजा कर रख दिया। एक चपाती उठाकर रख दिया, उसके पास ही सब्जी भी रख दिया। "खाइये; इसके बाद चावल रख दूँगी" बोली। उसके प्रत्येक काम को देख-देखकर, चिदम्बरम् चकित था; उसका कार्य, बहुत दिनों से साथ में रहने वाली, प्यार-भरी पत्नी के कार्य जैसा था।

"आपने नहीं खाया ? यह क्या ? इतने व्यंजन ! शादी-व्याह में भी मैंने इतने तरह के व्यंजन नहीं देखे" चिदम्बरम् ने कहा।

"आपकी भुवना द्वारा चलाये जाने वाले होटल का भोजन है यह; शर्माइये नहीं, खाइये। ये लीजिये, पहले मीठा !" कहकर भुवना ने एक रसगुल्ला उसके मुँह में डाल दिया।

"यह क्या भुवना !" चिदम्बरम् चकित हो गया।

"किसी समय आपने जिससे शादी करना चाहा था, वही आज आपको भोजन करा रही है, ऐसा मान लीजिये न।"

वह उठाये हुए ग्रास को थाली में रखकर, नम आँखों से भुवना को देखते हुए, "जिस बात को मैंने किसी समय सोचा था, उसे आज भी नहीं भूला हूँ," बोला।

"वाह री आपकी आशा ! शादी हो जाने पर, रोज-रोज इसी प्रकार का भोजन मिलेगा, आप ऐसा सोच रहे हैं क्या ? ···· ···· हूम् ! खा रहे हैं आप कि—नहीं ? अथवा मैं स्वयं खिला दूँ ?" उस समय भुवना का परिहास, मजाक सीमा से अधिक बढ़ता जा रहा था।

भुवना के सत्कार-प्रेम के कारण, चिदम्बरम् ने अपने पेट की सीमा से कुछ अधिक ही खा लिया था। भुवना ने नाम मात्र को ही खाया। उसका आहार मात्र एक चपाती थी।

"क्यों भूख नहीं है क्या ?" चिदम्बरम् ने पूछा।

"आप, पहले, कभी-कभी अपने पैसे से खरीद कर होटल में हलवा दिया करते थे, है न ? उस समय उसका स्वाद ही कुछ और होता था ! वह भूख में खाने का समय था।"

"अब ?"

"चाटते, चाटते अब मेरी जिन्दगी ही मिठास से भर गई है, मिठास अधिक हो जाने पर वह भी कड़ुवी हो जाती है।"

चिदम्बरम् को लगा, जैसे वह किन्हीं विचारों में खोई, कुछ अर्थभरी बातें कह रही थी। एकाएक उसकी खिलखिलाहट बदल गई। उसकी आँखों में नमी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देखकर, चिदम्बरम् ने, "ये लीजिये; मुझे देकर, आप स्वयं क्या मीठा न खायेंगी ?" कहते हुए, हलवे का एक टुकड़ा लेकर, उसकी ओर बढ़ा दिया।

अपने गुलाबी अधरों को खोलकर भुवना ने उसे बड़े चाव से स्वीकार कर, "यह सचमुच मुझे अमृत जैसा लग रहा है", बोली; फिर जैसे स्वयं से कह रही हो, "जिसकी मुझे आशा न थी, वह मुझे मिल गया; लेकिन सच्चाई और प्यार से मैं वंचित रह गई। इस जन्म में मुझे ये दोनों ···· ····"

अपनी बात पूरी न कर, दोनों ओंठ दाँतों तले दबा, वह झटके से उठ गई। नौकर को बुलाकर, वहाँ से सब चीजें ले जाने के लिये कहा। उसी समय उसके कमरे में टेलीफोन की घंटी लगातार बजने लगी।

"ओ ! बंबई से बात करना है, इसे तो मैं भूल ही गई थी।" वह टेलीफोन के पास दौड़ गई। "कौन ? कन्हैयालाल ? मैं जिस काम से आई थी, वे सभी तेजी से हो रहे हैं। उन्हीं के साथ-साथ, अपने एक संपादक मित्र के लिये, तुरैसामी का भी एक काम ले लिया है। मि० चिदम्बरम् ही, उन्हें आप जानते हैं ···· ····हाँ वही, वही। वे चार दिन यहीं रहेंगे। आप कब आयेंगे ? एक हफ्ता लगेगा ? आ जाइये, तब तक आपका आधे से अधिक काम पूरा हो जायगा। जो काम आपके यहाँ आने के बाद देखना है, उन्हें तभी देखेंगे ? ···· ···· हँस क्यों रहे हैं ? आप चाहे जैसा समझें, ठीक है। काम और मनबहलाव हमारे लिये दोनों एक ही हैं।" अपनी खिलखिलाहट को टेलीफोन द्वारा बंबई भेजती हुई, "अच्छा तो टेलीफोन रख दूँ ?" 'गुड नाइट' कह कर उसने बात समाप्त किया।

चिदम्बरम् जैसे एक नये लोक में आ गया हो, इस भावना से अपने कमरे में बड़े सोफे पर टिक गया। इस अंतराल में, भुवना में हुए परिवर्तन को वह न समझ सका। उस जगह में वह एक मालकिन जैसी दिखती थी, ऐसा न लगता था कि वह वेतन के लिये किसी का काम करती हो। जिस किसी से बात करती थी बराबरी की स्थिति में बात करती थी। वह केवल इतना ही समझ सका था कि भुवना सीमा से अधिक समर्थशाली बन गई थी।

"गहरे विचारों में खोये हैं लगता है ?" हाथ में पान की तश्तरी लिये आकर, उसके सामने रखे सोफे पर टिक गई भुवना। आते समय वह उस कमरे का दरवाजा बंद करना नहीं भूली।

"आप ही के विचारों में खोया था।"

जैसे उसने सुना ही न हो, मुसकराती हुई, "पान का पत्ता लीजियेगा, अथवा बीड़ा खाइयेगा ?" बोली, "बीड़ा में, यहाँ न जाने क्या-क्या लपेट देते हैं; उसे खा लेने से हम लोगों का सिर चकराने लगता है।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"पान ही खा लूंगा।" झिझकते हुए चिदम्बरम् ने कहा।

"खाना आता है ?"

"मेरी आदत नहीं है।"

भुवना हँसी। "आदत न डालिये, केवल मेरा वनाया खा लीजिये।"

"क्या हमेशा देंगी आप ?"

"देखा, देखा ? आपकी जिद को देखकर ही, आपको देखकर मुझे छिप जाना पड़ता है। अप्रत्याशित रूप से मिलकर हम यहाँ हैं। दूसरे सप्ताह कहाँ आप और कहाँ मैं रहूँगी ! अपना-अपना काम अपना-अपना धंधा !"

"भुवना ! आपको मैं नहीं समझ सका", चिंतित हो चिदम्बरम् ने कहा।

"किस लिये आप मुझे समझना चाहते हैं ?"

चिदम्बरम् के भाल में वल पड़ गया; भौंहें तन गईं, उसने अपने होंठ पोछ लिये।

"मैं होटल में ठहरने जा रहा था, आप मुझे यहाँ क्यों ले आई हैं ? अपने जीवन में मैंने जिसका अनुभव नहीं किया .... जो मुझे और कहीं नहीं मिला .... मेरा इतना आतिथ्य आपने क्यों किया ? इस सवका क्या मतलव ? आप जो प्यार दिखा रही हैं उसका क्या नाम है ?"

"व्यर्थ में इन सवकी खोज करना क्या आपको उचित है ?" भुवना ने प्यार से पूछा। "देश की राजनीति, आर्थिक स्थिति, संस्कृति आदि वातों पर खोज करने वाला एक संपादक.... ...."

"आप मुझे धोखा न दीजिये।"

"मि० चिदम्बरम् !" वनावटी नाराजगी से भुवना बोली।

"आपके प्यार का नाम क्या है ? केवल इतना बता दीजिये वस" हठ के भाव से चिदम्बरम् ने कहा।

"एक लड़की से, सीधे ऐसा कोई पूछता है क्या ? लगता है मेरे अलावा और किसी लड़की से आपका संवंध नहीं रहा। ऐसी उजड्डता से पूछने पर कौन लड़की आपको जवाव देगी ? मन की हर बात को बताया जा सकता है क्या ?"

"और किसी लड़की से न तो मेरा कोई संवंध रहा, और न मैं आगे किसी और से संवंध बनाना ही चाहता हूँ" चिदम्बरम् ने कहा। उसकी आवाज में दृढ़ता झलक रही थी।

चिदम्बरम् के इस उत्तर से, भुवना की आँखों से आँसू झरने लगे। भुवना ने उसका दायाँ हाथ लेकर अपनी आँखों से लगा लिया। उसके हाथ में गिर रहे उसके गरम आँसुओं ने चिदम्बरम् को और अधिक अधीर वना दिया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"इधर देखिये, मेरे प्यार का क्या नाम है, इसे जानने की आपकी इच्छा है। अब उसे बता देने की मेरी भी इच्छा है। कालेज में पढ़ते समय, जब आपने मुझसे पूछा था, उस समय मेरे मन में सुन्दरेसन् था। हमारा विवाह हो जायगा इस विश्वास से मैं उसके साथ पत्नी की तरह रही थी। इतने पर भी, बाद में उसने मुझसे पाँच हजार दक्षिणा चाहा था। उसके अलावा भी और न जाने क्या-क्या हो गया। मैं काम की तलाश में भटकती फिरी; मेरी सहायता करने वाले, उस सहायता के बदले मेरी माँग करते थे। 'मेरी' कहने से मेरा मतलब है मेरी इस देह को माँगते थे। ऐसी स्थिति में आप जिस प्यार के विषय में कहते हैं, मैं उस पर विचार करने के योग्य भी नहीं हूँ।"

"आप अब तक चाहे जैसी भी रही हों, मुझे उसकी कोई चिंता नहीं। यदि आप सचमुच मुझ से प्यार करती हैं तो मैं आप से शादी करने के लिये तैयार हूँ।"

"इतने सब के बाद भी आप की ऐसी इच्छा है? क्या आप सोचते हैं कि आपके परिवार में आकर मैं आपके माता-पिता की बहू बन सकती हूँ? कल तक जो मेरा जीवन था उसे भुला कर मैं आपकी गृहिणी कैसे बन सकती हूँ? इसके लिये मेरी अंतरात्मा की स्वीकृति न होनी चाहिये क्या?"

भुवना की आँखों से आँसू झर रहे थे। उसने चिदम्बरम् का हाथ नहीं छोड़ा। और अधिक मजबूती से पकड़ लिया। इस समय वह केवल एक नारी थी; सामर्थ्यशाली नहीं।

"यदि मैं आपकी जिन्दगी लेना चाहता हूँ तो इसके लिये मुझे अपनी जिन्दगी देना ही न्यायपूर्ण है।" चिदम्बरम् ने कहा। "इस समय तक चाहे जिसने आपके साथ चाहे जैसा गलत व्यवहार किया हो, मैं अब भी आपका वही पुराना चिदम्बरम् हूँ। जो भी कष्ट, चाहे जहाँ से आये, मैं पूर्णरूपेण अपने आपको, आपको सौंप देना चाहता हूँ।"

तेजी से उसका हाथ झटक कर भुवना उठ कर खड़ी हो गई "बड़े आये आप और आपका ऊटपटांग लक्ष्य!" कड़ुवाहट से कह, "आपका निश्चय यही है?" उसने तपाक से पूछा।

"हाँ"

"मुझ से विवाह करने के बाद कोई भी आपका सम्मान नहीं करेगा।"

"इतना सब होते हुए भी मैं आपके नारीत्व का सम्मान करता हूँ", चिदम्बरम् ने क्रोध में जवाब दिया।

"चिदम्बरम्! अब हमें मिलना ही न चाहिये।"

ऐसा कहकर भुवना तेजी से उस कमरे के बाहर चली गई। अपने कमरे में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

घुसकर 'फटाक्' से दरवाजा बंद कर लिया । लाइट भी बुझ गई । बिस्तर में भुवना के गिरने की आवाज चिदम्बरम् ने सुनी । कमरे से सिसकने, रोने की आवाज आ रही थी ।

चार-पाँच बार उस कमरे के पास जा, चिदम्बरम् ने दरवाजा खटखटाना चाहा, लेकिन कोई चीज उसे ऐसा करने से रोक रही थी । उसने अपने कमरे का दरवाजा न बंद कर वह बिस्तर में लुढ़क कर लेटा रहा । उसे लगता था कि उठकर आधी रात में ही कहीं भाग जाय; लेकिन जगह बिलकुल अनजानी थी ।

आधी रात के बाद, दो मुलायम हाथों ने उसके पाँवों को पकड़ लिया । भुवना अपना चेहरा उसके पाँवों के बीच डालकर चुपचाप सिसकती रहीं ।

१९. विष-अमृत

आँसुओं से धुले अपने पाँवों को चिदम्बरम् ने भुवना से छुड़ा लेने का प्रयत्न किया । उसने नहीं छोड़ा । लगता था जैसे वह अपने आँसुओं की अन्तिम बूँद तक उसके पाँवों में गिरा देने के लिये तुली थी । उस अन्धकार में आहिस्ते से उठकर पहले उसके हाथों को फिर कन्धों को और अन्त में उसकी ठुड्डी पकड़कर चिदम्बरम् ने ऊपर उठा लिया । "भुवना ! भुवना ! भुवना !" भर्राई हुई आवाज में बोला । फिर उसके कानों में धीरे-धीरे कहने लगा :

"यदि मैंने कोई वैसी बात कह दी हो तो मुझे क्षमा कर दीजिए भुवना । यह सब स्वप्न है अथवा सच, यह मुझे अब तक समझ में नहीं आ रहा है । मैं सोचता था कि आप मुझ से बहुत दूर, मेरे विचारों से भी बहुत दूर निकल चुकी हैं; मैं अपना विश्वास ही खो बैठा था ।"

उसका कन्धा पकड़ कर चिदम्बरम् ने उसे और अपने निकट खींच लिया । धीरे, धीरे, धीरे उसके पास आ भुवना ने अपना चेहरा उसके चौड़े सीने में छिपा लिया । फिर उसकी गोदी में अपना सिर रखकर अपने दोनों हाथ उसकी गर्दन में डाल बहुत देर तक उसके चेहरे को ध्यान से देखती रही । चार नजरें उस अंधकार को चीरती हुई अपलक प्रकाश बिखेर रही थीं ।

"भोजन करते समय, गर्दन मरोड़ देने को जी चाहता है, ऐसा आपने कहा था, वह इसी प्रकार है क्या ?"

अपने आँसू बिना पोंछे ही भुवना खिलखिलाकर हँसने लगी । दूसरे ही क्षण उसके हँसते हुए अधर ने चिदम्बरम् को कुछ कहने से रोक दिया । बहुत देर तक दोनों उसी तरह ओठ से ओठ मिलाए एक दूसरे से बँधे रहे ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एकाएक गहरी साँस छोड़कर, "मुझे लगता है कि इसी प्रकार आपकी गोद में सिर रखे मैं प्राण त्याग दूँ; जब से मैंने होश सँभाला है इस तरह का आनन्द, भीतर-बाहर यहाँ तक कि मेरी नस-नस में उमड़ने वाले आनन्द का अनुभव मैंने कभी नहीं किया", बोली।

उस समय भुवना चिदम्बरम् को बहुत विचित्र लग रही थी। जिस आनन्द की बात उसने कह दी थी उसी आनन्द-प्रवाह में वह स्वयं भी डूबा हुआ था। यद्यपि दो शरीर पास-पास थे फिर भी दो हृदय, दो प्राण और दो आत्माएँ एक दूसरे में विलीन होकर एक बन जाने के लिये छटपटा रही थीं।

उन्हें समय का व्यतीत होना भी नहीं मालूम हुआ। लगता था कि स्वयं समय ही उस कमरे के अन्दर बन्द हो छटपटा रहा था। जहाँ तक चिदम्बरम् का सम्बन्ध था, भुवना का और उसका विवाह उसी दिन, विमान में बैठे अन्तरिक्ष में उड़ते समय ही हो गया था। इसके पश्चात् विवाह के समय का भोजन लड़की के घर में ही हो चुका था। अब रात प्यार के रहस्य की रंगीन विचित्रताएँ दिखाकर चिदम्बरम् को अमृत-प्रवाह में डुबकी लगवा रही थीं।

चिदम्बरम् को लज्जा, तमाशा और नवीनता का अनुभव हो रहा था।

पास में थकी हुई पड़ी भुवना से कुछ कहने के लिए सोचकर, "भुवना आप वो........" उसने बात आरंभ की।

भुवना ने झट से अपने हाथ से उसका मुँह बन्द कर दिया।

"अब आप मुझे केवल 'तुम' कहकर ही सम्बोधित कीजिए। मुझे इस प्रकार सम्बोधित करने के लिये, मेरे पिता के अलावा केवल आपको ही अधिकार है। इसके पहिले यदि किसी ने मुझे 'तुम' शब्द से सम्बोधित किया है तो, वह चाहे जो भी रहा हो मैंने उसे फटकार दिया है। लेकिन केवल आप अब किसी के भी सामने इसी प्रकार सम्बोधित कर सकते हैं।"

"कारण ?" चिदम्बरम् के इस प्रश्न में शरारत झलक रही थी।

"आप मुझे पाने के बाद उसके बदले में पाँच हजार की माँग न करेंगे; अथवा उसके लिए मुझे वेश्यावृत्ति अपनाने के लिए आप मजबूर न करेंगे। मुझे पाकर आपने, स्वयं को पूर्णरूपेण मुझे सौंप देने की बात कही थी, है न ? सचमुच में जिसे मर्द कहा जा सकता है वह आप ही हैं। सचमुच आप मेरी अपेक्षा बहुत-बहुत ऊपर हैं।"

"आप वो....वो...."

"यदि आप मुझे इस प्रकार पुकारेंगे तो मैं नाराज हो जाऊँगी !"

"तुम, तुम, तुम, बस ?"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"ऊँहूँ; अभी नहीं हुआ !"

"तुम बड़ी शरीर लड़की हो।"

"भविष्य में कभी भी मेरे सामने यह दिखावटी आदर-भाव न दिखाइयेगा। मेरे जीवन का कभी न भुलायी जा सकने वाला दिन यही दिन है। अपने जीवन की सम्पूर्णता का अनुभव मैंने आज कर लिया है।" उसके चेहरे के सामने अपना चेहरा किए, आनन्द-व्यामोह में वह न जाने क्या-क्या कहे जा रही थी।

चिदम्बरम् को यह सब स्वप्न जैसा लग रहा था।

"मैं एक बात कह सकती हूँ ?" भुवना ने बड़ी मधुरता से पूछा।

"कहो।"

"शरीर, प्राण और आत्मा के बाहर भी कोई चीज है, अब तक मुझे इस पर विश्वास न था। जिसे आत्मा कहा जाता है वह आत्मा क्या है, इस पर मैंने खूब विचार किया है लेकिन इस पर विश्वास मुझे आज हुआ। इसे भी मुझे आपने ही दिया है।"

जैसे कोई छोटे बच्चे को थपथपाता है उसी प्रकार उसे थपथपाते हुए चिदम्बरम् ने उसके भाल को चूम लिया। अपने अन्दर उमड़ते आनन्द-प्रवाह को भुवना अपने शब्दों से उसके सामने बहाने लगी।

"सुन्दरेशन् के कारण जो आश्चर्य मुझे हुआ था उसके बाद भी न जाने क्या-क्या हो गया। मैं स्वयं अपने को ही गलत समझकर उस समय न जाने कहाँ-कहाँ भटकती फिरी। उस समय भी मैं यही सोचती थी कि मैं आपके सामने न पड़ूँ। गहरे झरने में कूदने के बाद भी मैंने आपको भुला देना चाहा। भुला न सकी।"

"तुम्हारी शादी हो गई होगी इस विश्वास से मैं भी तुम्हें भूल जाना चाहती थी। उस दिन विश्वविद्यालय में तुम्हें देखने के बाद मेरा पिशाच फिर से भुनगे के पेड़ में चढ़ गया। तुम कम से कम टेलीफोन पर ही बात करोगी, ऐसी प्रतीक्षा करते-करते मैं निराश हो गया था। यदि पता मालूम होता तो मैं स्वयं आ गया होता।"

"आपकी निराशा आज दूर हो गई होगी। अब मुझे भूल जाइयेगा, कि नहीं ?"

"भुवना !" चिदम्बरम् ने उसे झिड़क दिया।

"आपको भूलना ही होगा," भुवना ने हँसते हुए कहा।

"इतने पर भी भुला देना संभव होगा ?"

"इतने पर ही, पुरुषों की भुला देने की आदत होती है।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"मुझ से यह न हो सकेगा।"

"इसी समय आपको अपने दिमाग को कुछ काम देने की जरूरत है। जब तक आप दिल्ली में हैं, मैं आपके साथ रहूँगी; इसके बाद आपको मुझे अपनी चाल में उड़ने की स्वतंत्रता देनी होगी।"

"भुवना !"

"बच्चों जैसे बेकार की जिद न कीजिये ? आपके लक्ष्य और स्वप्नों के अनुरूप मैं बिलकुल नहीं हूँ।"

"इतना हो जाने पर भी तुम ऐसा कहती हो ? यह न्याय है क्या ?"

"इतना सब होने तक ही पुरुष न्याय की बात करता है; धर्म की बात करता है। बाद में पैसे की बात करता है। इस संसार में पैसा ही उनके लिये न्याय है; यही धर्म है। आप दुनिया को न समझने वाले, भोले हैं !" भर्राई आवाज से कहती हुई, आँसू बहाते अपने अधरों को भुवना चिदम्बरम् के ओठों के पास ले गई।

सीमा से अधिक चतुर और साहसी दिखने वाली भुवना, उसके सामने बच्चे से भी बच्चा बन गई थी। लगता था, उसके प्यार के अक्खड़पन के पहले ही उसके हृदय के सभी कपाट खुल गये थे।

"जो गलती हो गई है, उस पर मैं ध्यान न दूँगा" चिदम्बरम् ने कहा; "साम्प्रदायिक झगड़ों के समय, नीच लोगों द्वारा बिगाड़ दी गई स्त्रियों के साथ, हमारे देश के पुरुषों को विवाह करना चाहिये, ऐसा गांधी जी ने कहा था, कि नहीं ?"

"मेरे संबंध में इसका कोई औचित्य नहीं; मैंने जानबूझ कर अपना विनाश किया है। ऊँहुम्, केवल शादी की बात मुझसे न कीजिये।"

"जब मैं तैयार हूँ तब तुम क्यों चिंता करती हो ?"

"देखिये; लगता है, आज भी गांधी आपके दिमाग को गड़बड़ा रहे हैं। उन्हें भुला कर ही, इस देश में, आपका भविष्य अच्छा बनेगा। पहले, कम से कम, हम दोनों के बीच में तो उन्हें आना ही न चाहिये।"

"उनके ऊपर इतना क्रोध ?" चिदम्बरम् नें हँसते हुए पूछा।

"हँसिये नहीं आप।" नाराज होती हुई भुवना ने कहा; "आदमी की सच्चाई पर विश्वास कर, धोखा खाने वाले पर विश्वास कर, आप धोखा न खाइये। पढ़े-लिखे और पैसे वाले लोगों में कितने लोग ईमानदार हैं, इसे मैं, आपकी अपेक्षा अधिक जानती हूँ; मैं बड़े लोगों से परिचित हूँ; राजनीतिक बड़े लोग, उद्योगपति, अधिकारी वर्ग; विवेकी ...."

"बड़े लोगों की सूची में मुझे भी तो न शामिल कर लोगी ?"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"तुच्छ प्राणी, दो पाँव वाले जानवर" भुवना घृणा से कुरमुरा गई। "स्वतंत्रता के लिये संघर्ष करने वाले गांधी केवल 'धर्म मार्ग' पर ही विश्वास करने वाले थे; धर्मकर्ता लोगों की रँगरेलियाँ आप होटलों में, बँगलों में, कारों में देखकर ही जान सकेंगे। ब्राण्डी की बोतलें, जवान औरतें और नोटों के बंडल अगर हों तो आधे लोगों को यहाँ खरीदा जा सकता है।"

"सामान्य रूप से की जाने वाली तुम्हारी बुराई पर मैं विश्वास नहीं कर सकता" चिदम्बरम् बोला। अब भी कुछ लोग पूर्ण जिम्मेदार, योग्य और कुशल हैं, ऐसा मेरा विश्वास है।"

"भ्रष्टाचार करने वालों को अपना आदमी मानकर, जो व्यक्ति उन्हें न तो निंदित करता और न दंडित करता, ऐसे आदमी को आप कैसे योग्य मान सकते हैं?"

"पुरुष वर्ग से ही तुम्हें घृणा हो गई है भुवना!" चिदम्बरम् ने कहा।

"यदि ऐसा होता तो आज आपको अपने जाल में कैसे फँसा लेती?"

"मेरी इच्छा के प्रतिकूल मुझे कोई नहीं पकड़ सकता। मैं पूरे मन से—अभिलाषा से—तुम्हारे प्यार में बँधा हूँ। इस विषय में हम दोनों बराबरी के अपराधी हैं।"

"सच?"

"निस्सन्देह!"

"बाप रे!" एक लंबी साँस छोड़कर भुवना ने उसका हाथ अपने हाथों में ले लिया। "पैसे की लालच में चक्कर काटने वाले नीच लोगों के हाथों की पुतली बनी मैं, आपको देखते ही फिर से मनुष्य बन गई हूँ; वही पुरानी भुवना बन गई हूँ। इस एक दिन के जीवन में कितनी अपूर्वता है, आप नहीं जानते। इस भीषण गर्मी से झुलसी हुई, मैं ही, आपके प्यार की शीतल छाया की दुर्लभता को जानती हूँ। मैंने पूरा जीवन जी लिया है, इस बात की प्रसन्नता है मुझे।"

"मेरे साथ ऐसा नहीं हैं; यह मेरी पूरी जिन्दगी का पहला दिन है। तुम स्वयं आकर मेरी पकड़ में फँस गई हो, अब मैं तुम्हें छोड़ने वाला नहीं। हम दोनों में से किसी एक के मृत्यु होने तक ···· ···· ····"

झट से उसके मुँह पर हाथ रख कर, भुवना उठकर चारपाई पर बैठ गई। फिर दोनों हाथ जोड़कर उसे प्रणाम किया। "कृपा कीजिये; कृपा कीजिये, केवल यह बात हरगिज न उठाइये।"

"अब भी ···· ···· ···· अब भी ···· ···· ····"

थोड़ी देर के लिये उसका गला रुँध गया, फिर "कहीं मैंने आपको इतने से ही, कलंकित तो नहीं कर दिया, इस विचार से मैं दुःखी हूँ; आप उस महान

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

व्यक्ति के वेटे हैं; जिनका मैं सम्मान करती हूँ। आप महान हैं; अविवाहित हैं। वो···· ···· वो ···· ···· मैंने आपकी ···· ···· ····''

"मूर्ख !" चिदम्बरम् ने आवेश में कहा। "मैं कोई नादान बच्चा नहीं हूँ। मैं तुम्हें अपनी बना सकता हूँ, इस बात का विश्वास मुझे अब भी है। इस बात के लिये तुम मेरा विश्वास रखो, बस। मेरी पत्नी तुम्ही हो" कहकर उसने भुवना के दोनों हाथ मजबूती से पकड़ लिये।

उसकी पकड़ से छूटने के लिये भुवना छटपटा रही थी। "यदि दुवारा इस बात को आपने कहा तो अभी आपकी आँख के सामने यहाँ से नीचे कूद कर मैं प्राण त्याग दूँगी। यह केवल बात ही नहीं है, सचमुच कहती हूँ।"

भुवना की आँखें आग बरसा रही थीं। उसकी वातों से ज्वाला निकल रही थी। चिदम्बरम् थरथरा गया। उसकी पकड़ आहिस्ते से ढीली पड़ गई।

विना कुछ कहे, विस्तर पर औंधा हो, वह आँसू वहाने लगा। वह भी कुछ देर तक आवेश से वँधी रही, फिर अपने आँचल से उसके आँसू पोंछती हुई, 'आराम से कुछ देर सो लीजिये; कल आपका सम्मेलन समाप्त हो जाने पर, हमलोग घूमने चलेंगे" बोली।

उसको अच्छी तरह ओढ़ाकर, "आज हमें झगड़ा न करना चाहिये; मेरे लिये एक वार, केवल एक बार मुस्करा दीजिये" भुवना गिड़गिड़ाई।

"विलकुल नहीं" कह कर चिदम्बरम् खिलखिला कर हँस दिया। दुबारा उसके चरण स्पर्श कर, अपनी आँखों से लगा, बहुत से मधुर स्वप्न देखिये" कह कर, दरवाजा वंद कर, भुवना अपने कमरे में चली गई।

२०. खिचड़ी संस्कृति

भारतीय संपादक सम्मेलन का वह प्रथम दिन था; उस दिन चिदम्बरम् को सुवह साढ़े आठ बजे, विज्ञान भवन पहुँचने के लिये निमंत्रण मिला था। दूसरे दिनों में, दस बजे से तीन बजे तक विचार गोष्ठियाँ होनी थीं। भुवना, उसको निश्चित समय पर वहाँ पहुँचा कर, शाम को पुनः आने के लिये कह दिया था।

"शाम को घूमने चलेंगे, मैं आ जाऊँगी।"

इसके बाद भुवना की कार, नई दिल्ली के अगल-बगल वन रही एक नयी 'कालनी' की ओर चल पड़ी। अधिकांश मकान उसी समय बन कर तैयार हुए थे। कुछ ही मकान ऐसे थे, जो अधूरे दिखाई पड़ते थे। एक वर्गाकार मैदान को पार कर, उसकी कार, एक अहाते के भीतर घुस गई।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

" 'सर', नमस्कारम्" कहती हुई भुवना सामने के बरामदे के बगल के कमरे में घुस गई।

"नमस्कारम्, नमस्कारम् ! राजी, आकर देखो न, कौन आया है। साक्षात् श्रीदेवी भुवनेश्वरी, आज हमें दर्शन देने के लिये आ गई हैं। कहाँ हो, 'कॉफी' ले आओ न !"

तिरुवेंकटम् के पीछे, दीवाल पर, तिरुपति के वेंकटाचलपति का चित्र, दीवाल पर लगा था। चित्र में, दिल्ली में मिलने वाले, सुगंधहीन गुलाब के फूलों की माला पड़ी थी। धूपवत्ती की महक कमरे में फैलकर, बता रही थी कि यह पूजागृह है।

भुवना का स्वागत करने वाले तिरुवेंकटम् की उमर पचास से ऊपर रही होगी। भभूती और तिलक लगाये वे भी, साक्षात्, तिरुपति के विष्णु ही दिख रहे थे। बड़े-बड़े बाल, चौकोर चेहरा, मुंडा बनिआइन और धोती पहने, पत्रिका पलटते बैठे थे।

"अभी-अभी पूजा समाप्त हुई है; पहले प्रभु दर्शन; बाद में लक्ष्मी दर्शन। हाँ, बहुत दिनों से इस तरफ आप दिखाई ही नहीं पड़ीं ? राजी, आती हो ?"

"नमस्कारम्, विराजिये !" स्वागत करते हुए, राजी ने लाकर, गरमागरम कॉफी रख दिया।

"लगता है, मामी की 'कॉफी' के लिये रोज-रोज आना पड़ेगा !" कॉफी पीने के बाद भुवना ने प्रशंसा की।

"बिलकुल आइये ! हर रोज काफी के दाने भून कर, पीसने की मेरी आदत है, नहीं तो इनको गुस्सा आ जाता है। रुकिये, भोजन करके ही जाइयेगा। मैं रसोई में हूँ। मुझसे मिले बिना चली न जाइयेगा।"

जैसे उन दोनों की आपसी बात के बीच में न रहना चाहती हो, राजी कप लेकर अंदर चली गई। अंदर की ओर खोंस कर, पुराने ढंग पर धोती पहने, उसी रूप में थी राजी। उमर पैंतालिस से ऊपर थी फिर भी देह की गठन वैसी ही थी।

बगल के कमरे से 'पाप् म्यूजिक' की आवाज आ रही थी। खिड़की से झाँक कर भुवना ने देखा। रेडियो की बगल में खड़ी उनकी बेटी गीता, अपनी कमर और हाथ-पांव मटका रही थी। उसकी उमर अट्ठारह की रही होगी, मांसल देह, पंजाबी लड़कियों जैसे वस्त्र, सिर के बालों को 'पाप्' कर रखा था।

"कौन, गीता ,डांस' कर रही है क्या ? भुवना ने पूछा। "उसका हमेशा 'पाप्' और 'डांस' ही लगा रहता है।" वे बोले।

"बच्ची है न !" उन से कहकर, 'शादी हो गई होती तो अब तक दो बच्चे हो गये होते' भुवना ने मन में सोचा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"कर्नाटक संगीत का नाम लेते ही, उसे कर्णकटु कह कर कान में हाथ रख लेती है। भरतनाटचम् सिखाने का प्रवंध कर देने के लिये कहा, तो कहती है कि नहीं सीख सकती। 'पाप्' म्यूजिक सीखने के लिये, होटल जाकर सीख लेगी ऐसा कहती है। क्या किया जाय ? 'जेनरेशन गैप' है। कहती है, अपनी-अपनी इच्छानुसार लोगों को जीने की स्वतंत्रता होनी चाहिये ! मेरी जानकारी में, अभी तक सिगरेट पीना नहीं सीखा है; 'वॉय फ्रण्ड' के साथ सिनमा नहीं जाती।"

"शादी के वाद सब ठीक हो जायगा," भुवना ने कहा।

"होने वाले दूल्हे पर निर्भर करता है, यह। एक मकान की माँग करता है; दूसरा कार की।"

"दे दीजिये, सब ठीक हो जायगा।"

"कैसे दे दूँ ? रिटायर होने के बाद ही मैं यह घर वना सका हूँ। अभी तक इसे ही ठीक से 'फरनिश' नहीं कर पाया हूँ। ऊपर से राजी की दूसरी रोज-रोज की शिकायतें।"

"आप मन भर कर लें, क्या नहीं हो सकता ?" कहकर भुवना हँसी। उसकी मोहिनी वातों और नजरों पर, तिरुवेंकटम् एक क्षण के लिये कुलवुला गये। उन्हें इस बात का दुःख था कि उनकी उमर कुछ अधिक हो गई थी।

सरकारी कार्यालयों में वहुत से सहायक कर्मचारियों में से वे भी एक थे। उनका वेतन भी कोई वहुत अधिक न था। ऐसा भी नहीं कहा जा सकता कि वे काम में फुर्तीले थे। कार्यालय समय के आधे समय तक भी वे अपनी कुर्सी पर नहीं रहा करते थे। फिर भी उन्हीं के समान दूसरे लोगों की अपेक्षा उनका अधिक सम्मान और प्रभाव था। इसका कारण था, दस वर्ष पहले पुरानी पुस्तकों की दुकान से एक रुपये में खरीदी हुई एक हस्त-रेखा की पुस्तक। एक रुपये की पूंजी से प्रारंभ किया गया उनका वह व्यापार आज उन्हें पाँच-छः लाख का मालिक वना चुका था। उन्हें रेखा देखने के वदले में हाथ फैलाने की भी आवश्यकता न थी। इसके लिये वे चाहे जिसका भी हाथ देखते भी न थे। बड़े-बड़े उद्योगपति, राजनीतिज्ञ, अधिकारी, फिलम वाले आदि जैसे लोग सिफारिशें लेकर उनके पास आया करते थे। कुछ लोग उन्हें अपने वँगलों में भी लिवा ले जाते थे। "तिरुवेंकटम् जैसा कह देते हैं वैसा ही होता है"; ऐसा नाम पाया था, उन्होंने। इसलिए वे दूसरे लोगों से जो कुछ भी करने के लिए कहते थे वह विना किसी बाधा के पूरा हो जाता था। इसीलिए भुवना ने सबसे पहले तिरुवेंकटम् को ही पकड़ लिया था। केवल उसने अभी तक उन्हें अपना हाथ नहीं दिखाया था।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"क्यों सर, मेरा हाथ आपने अभी तक नहीं देखा ?" पूछकर भुवना हँसी।

"मजाक कर रही हैं ?" उन्होंने भी पूछ कर जवाब में हँस दिया; "आपका, मुँह देख लेना ही पर्याप्त है; उसमें ऐश्वर्य भरा दिख रहा है, आप क्यों दूसरे के सामने हाथ फैलाएँ। यदि आपने 'हाँ' भर कर दिया तो आपके चरणों में क्या स्वर्ण-पुष्पों की वर्षा न होने लगेगी ? क्या बड़ों ने बिना सोचे-समझे ही आपको भुवन की ईश्वरी का नाम दिया है !"

"चलिए सर !" मानो शरमा गई हो, इस प्रकार भुवनेश्वरी ने अपना सिर नीचे झुका लिया। तिरुवेंकटम् के मन ने उसको सीने से चिपका लिया। ऐसा यदि सच हो सकता तो इसे वे अपने जीवन की सफलता मानते।

कुछ देर तक झिझकते रहने के बाद, "मैं जानता हूँ कि मेरे सामने हाथ फैलाने वाले सभी लोग भिखारी हैं !" तिरुवेंकटम् ने कहा।

"ऐसा क्यों सर ?"

"तब क्या ? लाखों क्या करोड़ों रखने वाले लोगों को क्या मेरे सामने हाथ फैलाना चाहिए ? उनमें आत्मविश्वास नहीं है; ईश्वर पर विश्वास नहीं है; दूसरे आदमी का भी विश्वास नहीं करते। दैवत्व और मनुष्यत्व पर विश्वास न करने वाले लोगों को ही इस ज्योतिष पर अधिक विश्वास होता हैं। यदि आप चाहें तो भविष्य में ध्यान देकर समझ लीजिएगा।"

"आपको विश्वास है सर ?"

"यह 'ट्रेड सीक्रेट,' धन्धे का रहस्य है; केवल इतना मत पूछिए ! मेरे होने वाले दामाद के लिए कार अथवा मकान देना मेरे वेतन से संभव नहीं है। हस्तरेखा के प्रभाव से दूसरे आदमी को प्रभावित करके आप जैसे आने वालों की सहायता करनी पड़ती है।"

यही उचित समय है ऐसा सोचकर, "मेरे आने का मतलब यह है, सर" कहकर भुवना ने एक कागज तिरुवेंकटम् की ओर बढ़ा दिया।

उसे लेकर देखने के साथ ही तिरुवेंकटम् का मुँह सिकुड़ गया; उन्होंने अपने होंठ दाँतों तले कर लिया; आहिस्ते-आहिस्ते सिर हिलाया। इतने से ही भुवना समझ गई कि उनके अन्दर कोई बड़ी चीज दबी है। प्रत्येक के लिए एक-एक हजार का हिसाब भुवना ने मन ही मन लगाया।

"वह बड़ा 'सेक्रेटरी' है न !, वो आई० ए० एस० ? वह बड़े गरम मिजाज का है। इसी 'लाइसेंस' के लिये एक बड़ी जगह से 'प्रेशर' पड़ने के बाद मालूम हुआ, मुझ से सही बात नहीं बतायेगा। आपके कन्हैयालाल के लिये यदि तीन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एम० पी० सिफारश करेंगे, तो उनके बड़े भाई, चिन्नैयालाल पाँच एम० पी० ले आयेंगे। तीन एम० पी० अधिक होंगे या पाँच ?"

भुवना खिलखिला कर हँसती हुई, तिरछी नजरों से उन्हें देखा।

"जननायक के लेखानुसार तीन से पाँच अधिक होता है; फिर भी आपके हस्तरेखा-शास्त्र के मिल जाने से तीन को विशेष शक्ति मिल जायगी।"

"जननायकत्व तो पहला है ! पैसानायकत्व कहिये न ! पैसे वाले के पैसे से 'इलक्शन में जीत कर, कुछ लोग यहाँ पैसा बटोरने के लिये ही आते हैं। मैंने इन दस वर्षों में न जाने कितनों के हाथ देखे हैं लेकिन मेरे हाथ में दस लाख भी नहीं आये।

पहले का एक भिखियारी, पाँच वर्षों में ही दो बँगले और तीन कारें खरीद चुका है। इसे क्या कहेंगी ?"

"आपने मन नहीं किया नहीं तो पूरा कर लिये होते" भुवना बोली।

इसी बीच में, भुवना कहीं चली तो नहीं गई, इस आशंका से, उनकी पत्नी राजी जल्दी-जल्दी वहाँ आ गई। करछुली उसके हाथ में ही थी।

"भुवना, आप से एक जरूरी बात कहनी है। ये अगर सोचते हैं कि मैं इनकी शिकायत करती हूँ तो सोचते रहें। आपने जो 'फ्रिज' दिया था, उसमें इन्होंने अपनी बोतलें लाकर ठूँस रखा है। 'विस्की' और 'ब्राण्डी' से भरा हुआ वह 'काकटेल फ्रिज' बन गया है। मुझे साग-भाजी रखने के लिये एक अलग 'फ्रिज' चाहिये; गर्मी आने वाली है; कम से कम 'बेडरूम' में 'एयरकंडीशन' होना चाहिये। इनसे कहते-कहते थक गई हूँ। 'ठीक है देखूंगा' ऐसा कहते-कहते महीनों हो गये।"

"आप चिंता न करें मामी; इसी हफ्ते ये दोनों चीजें आपके घर आ जायेंगी।" भुवना ने कहा।

"इसमें थोड़ी भी समझ नहीं है" तिरुवेंकटम् ने पत्नी की ओर देखकर, उसे डपट दिया।

यह दोनों के बीच पूर्वाभ्यासित नाटक था, भुवना से यह बात छिपी न थी। "मामी के ऊपर नाराज न होइये; जाने दीजिये; ये औरतों की बातें हैं" भुवना ने राजी का पक्ष लिया।

इसी समय वहाँ एक दूसरी कार आकर खड़ी हो गई। हस्तरेखा दिखाने के लिये अथवा सरकारी काम से, दाढ़ी रखे, पगड़ी बाँधे एक सरदार जी आ गये थे। आने वाला मालदार था, ऐसा दिखाई पड़ता था।

"अच्छा सर; अब खतम कीजिये" कहकर भुवना खड़ी हो गई।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"अच्छा, देखेंगे।"

"अम्मा जी को दिया जाने वाला जवाब जैसा तो नहीं है यह ?"

"फोन से बात कर लेंगे" तिरुवेंकटम् बोले।

राजी, भुवना के साथ बरामदे में आकर, भुवना को कार में बैठा दिया। "भूलियेगा नहीं" स्मरण भी दिला दिया।

छायादार वृक्षों के बीच नई दिल्ली की सड़कों से कार तेजी से चली जा रही थी। अब जहाँ जाना था, उस स्थान को ड्राइवर से बताकर, भुवना कार की गद्दी से टिक गई। तिरुवेंकटम् के कमरे में टँगी तिरुपति के वेंकटाचलपति की फोटो, तिरुवेंकटम् के भाल का तिलक, उनकी पूजा की बातें, उनकी पुत्री गीता का पंजाबी 'ड्रेस',—'पाप् म्यूजिक'—'ट्विस्ट डांस', जो 'फ्रिज उसने पहले दिया था, उसमें भरी हुई उनकी बोतलें,—दस वर्षों से हस्तरेखा देखते रहने के बाद भी दस लाख रु० न मिलने की उनकी चिंता—इन सब पर भुवना ने एक-एक कर विचार किया। इसके अलावा, मैं कौन हूँ इस बात को अच्छी तरह जानते हुए भी, मुझे श्रीदेवी और 'माता' कहकर, मुझे पूज्य कहकर, देवताओं से तुलना करना; इन बातों से उसके मन में थोड़ा कड़ुआपन आ गया।

मुझे ईश्वर पर विश्वास नहीं है, यद्यपि ऊपर से भुवना ऐसा कहती थी, फिर भी बचपन से ही उसके खून में मिली हुई उस भावना को भुवना दूर न कर सकी थी। प्राचीन काल से पीढ़ी-दर-पीढ़ी से चली आती हुई भक्ति-भावना, मंदिरों, चित्रों और मूर्तियों को देखने के समय, उसके अंदर पैदा ही हो जाती थी। लेकिन, प्रतिदिन पूजा कर स्तोत्रपाठ करने वाले के मन में, एक वेश्या की तुलना अपने आराध्यदेव से करने की बात कैसे पैदा हो गई ? पूजा करने वाले मुँह में 'बोतल' खाली कर, शाम के समय लुढ़के पड़े रहने का साहस कैसे पड़ता है ?

सोचते समय, इन सब से उसे बहुत अधिक आश्चर्य नहीं हुआ। तिरुवेंकटम् ने अपनी पुत्री का नाम, अमृतरूप, वेद-शब्द 'गीता' के नाम पर रखा था; उनके इस दोहरे जीवन की उलझन भुवना को बड़ी अशोभनीय लगती थी। 'उनके कथनानुसार यह सब 'जेनरेशन गैप्' नहीं है; मार्ग दिखाने वाली 'जेनरेशन' के फिसल जाने से उत्पन्न 'मिस हैप्' है यह, उसने सोचा।

आगे और दो लोगों से भी मिली वह। उनमें से एक कन्हैयालाल की कृपा से चुनाव में जीतने वाला एक एम० पी० था; दूसरा एक बड़ा अधिकारी था; बीच में ड्राइवर को भी खाने के लिये कहकर, भुवना ने भी खाना खाया। शाम तीन बजने के कुछ मिनट पहले ही भुवना की कार विज्ञान भवन पहुँच गई। वहाँ उसके आने की प्रतीक्षा करता, चिदम्बरम् बिलकुल तैयार था।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

२१. पहाड़ भी वहाँ

बिलकुल नई सड़क से, जिसके दोनों ओर पेड़ लगे थे, भुवना की कार धीरे-धीरे चली जा रही थी। नये-नये बने आफिस भवन, बँगले, होटल, रिहायिशी कालनी आदि, चिदम्बरम् को भुवना दिखाती जा रही थी। जगह-जगह बाग दिखाई पड़ते थे, रंग-विरंगे फूलों से भरी वाटिकायें हँस रही थीं; चाहे जिधर देखें सुन्दरता, सफाई, व्यस्तता दिखाई पड़ती थी।

नई दिल्ली को अंग्रेजों के शासनकाल से ही योजनाबद्ध तरीके से बनाया गया था, फिर भी स्वतंत्रता के बाद उसका बहुत अधिक विकास किया जा चुका था। देश के रेगिस्तानी भाग के बगल में मानो, 'यमुना' का लाभ उठाकर, उसको एक उद्यान बना देने के लिये जोरों का प्रबंध चल रहा था।

"नेहरू एक आश्चर्यजनक आदमी हैं" आत्मविभोर, चकित हो चिदम्बरम् ने कहा।

भुवना ने झट से उसकी ओर घूमकर देखा। उसकी आँखों में गुश्ताखी झलक रही थी। "स्वप्न देखने वाले एक कल्पनावादी थे वे" बोली।

"इसे मानता हूँ मैं, जब वे जेल में बंद कर दिये गये थे तभी से, जब बहुत लोगों को स्वतंत्रता मिलने पर संदेह था, उसी समय से उन्होंने नये भारत के निर्माण का स्वप्न देखा था। अच्छी कल्पना में ही समाज के विकास का बीज होता है। उन्होंने स्वप्न को प्रत्यक्ष कर दिखा दिया, देखा ?"

"आपके देखने के लिये अभी बहुत सी चीजें हैं। उसके बाद के लिये अपनी प्रशंसा बचा रखिये।"

इसके बाद वह कहाँ ले जायगी, इस पर चिदम्बरम् सोच ही रहा था कि एक बड़े होटल के अन्दर कार घुस गई। "कॉफी' पीकर चलेंगे, आइये" बोली।

वह होटल कभी गोरे साहबों ने अपने लिये बनवाया था, बाद में वह, बड़ेमन वाले काले साहबों का बन गया था। वहाँ, चमचमाती पगड़ी और सफेद वस्त्र पहने सेवकगण, मूँछें चढ़ाये, सैनिकों के समान दिखाई पड़ते थे। अहाते के भीतर पचास-साठ कारें खड़ी थीं। तिलोत्तमा, उर्वशी, मेनका आदि को मात करती हुई कुछ रम्भायें, अपने ऊपरी वस्त्रों को थोड़ा नीचे खिसकाये, अपने अगल-बगल एकत्रित पुरुषों के कंधों से टिकी आती-जाती दिख रही थीं। ओठों में 'लिपस्टिक', 'पावडर', 'वैनिटी बैग', बड़े-बड़े जूड़े—एकदम, चमक-दमक दिखती थी।

ऊपरी मंजिल में चढ़कर, भुवना ने शीशेदार दरवाजे को खोला। "थोड़ा इस जगह को देख लीजिये" बोली।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वह एक बड़ा हॉल था। जगह-जगह आदमकद शीशे लगे थे। सागौन की लकड़ी से चमचमाता फर्श। ऊपर शीशे के झाड़फानूसों का प्रकाश; एक किनारे एक 'डायस'।

"यही है 'बालरूम', थोड़ा अँधेरा हो जाने के बाद अगर आकर देखें तो आप को एक अपूर्व दृश्य दिखाई पड़ेगा। इस मंच से बैण्ड बजाया जाता है। प्रकाश इतना मंद होगा कि अँधेरा दूर न हो सके। स्त्री-पुरुष एक दूसरे की कमर में हाथ डाले, एक दूसरे का कंधा पकड़े अथवा हाथ से हाथ बाँधे 'बाल-डांस' करते हैं।"

"गोरे लोग ना ?" चिदम्बरम्, जैसे कुछ जानता न हो, पूछ बैठा।

भुवना खिलखिला उठी, "आप इतने भोले होंगे, मैं नहीं जानती थी" बोली। फिर एक 'एयरकंडीशन' कमरे में घुसकर, खाना, आइसक्रीम, कॉफी आदि का आर्डर दे सेवक को जाने के लिये कह दिया।

"पहले इस होटल में आने के लिये पुरुषों को अँग्रेजों की तरह सूट पहन-कर ही आना पड़ता था। आपकी तरह धोती, कुर्ता पहन कर आने पर, बाहर से ही वापस कर देते थे।"

"स्त्रियों को भी 'ड्रेस' की बंदिश थी ?"

"हम, चाहे जैसा चाहें, आ सकती थीं, इसलिये कि होटल वालों और आने-वालों को स्त्रियों की विशेष आवश्यकता होती थी।

"पुरुष-स्त्री एक साथ नाचते हैं, तो इसका मतलब है, पति-पत्नी एक दूसरे के साथ नाचते होंगे ?" चिदम्बरम् ने पूछा।

"यह अँग्रेजों का नाच है। इसका भी एक नियम, एक व्यवस्था है। उनकी संस्कृति में एक आदमी की पत्नी की कमर में दूसरे आदमी का हाथ डालना, बुरा नहीं माना जाता। उनकी देखादेखी, हमारे देश के काले साहब और मेम साहब, उसी समय से इसका अभ्यास करने लगे थे। 'अरुन्धती ढूंढ़ कर 'सिल' पर पाँव रखकर विवाह करने वाले भी दूसरे का कंधा पकड़े झूमते दिखाई पड़ते हैं, कितनी मजे की बात है !"

"तुम भी उसी तरह ···· ···· ···· ····" चिदम्बरम् ने अपना प्रश्न बीच में ही छोड़ दिया।

उसकी नाराजगी और उसके चेहरे में फैली लालिमा को भुवना ने गर्व से देखा। केवल एक दिन के साथ से ही वह उसके ऊपर कितना अधिक अधिकार जता रहा था, वह समझ गई। कहा जाता है कि हमारे देश के पुरुषों में पश्चिम के पुरुषों पर 'ओरियंटल जैलसी' होती है। भुवना सोचा करती थी कि यह ईर्ष्या ही इस देश की नारियों का गर्व, विजय और संरक्षक बन गई है। गाँवों में, पत्नी के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लिये भयंकर हत्या करने वाले पुरुषों के संबंध के समाचार पढ़ते समय, भुवना को इस बात की खुशी होती थी कि गाँवों में अब भी कुछ अभिमानी पुरुष हैं। पत्नी के लिये रावण के साथ युद्ध करने वाले राम और पत्नी की खातिर जान हथेली पर रखने वालों गाँवों के नौजवानों में क्या अंतर है?' वह मन ही मन पूछा करती थी।

सीधे चिदम्बरम् की आँखों में देखती हुई, "क्यों आपको इतनी जल्दी गुस्सा आ जाता है?" अपनी हँसी दबा कर भुवना ने पूछा।

"नहीं, शायद तुम भी नाचती होगी ऐसा ... ."

ऐसी बात न थी कि वह, उसके दुःख को न जानती रही हो। उसके ऊपर हजारों रुपये बरसाने वाले पुरुषों को उसके प्रति किसी प्रकार का दुःख न होता था, चिदम्बरम् का उसके कारण दुःखी होना उसको बहुत अच्छा लगा। उसके दुःख को वह और अधिक बढ़ाना न चाहती थी। "मैं कमरे के अंदर नाचने वाली हूँ, महफिल में नहीं नाचती—मैं किसी की पत्नी भी नहीं बनी हूँ न!" बोली।

"यह सब मैं न जान सकूँ यही अच्छा है" चिदम्बरम् ने वेदना से कहा।

"बिना जाने आप पत्रकार कैसे बन पायेंगे?" भुवना ने पूछा। "जिंदगी पढ़े बिना ही, केवल किताबें पढ़ कर, लिखने वाले खोखले पत्रकार बनना चाहते हैं? अपनी माटी और अपने लोगों से दूर रह कर, दुनिया के विषय में, जैसे और लोग लिखते हैं वैसे ही आप भी चाहते हैं?"

"भुवना तुम बड़ी शैंतान हो।"

"तब क्या? आपके सम्मेलन में आये हुए कितने पत्रकारों को अपने गाँव के विषय में जानकारी है। उनके गाँवों का जनजीवन कैसा है केवल यही प्रश्न कर देख लीजिये, आप की सच्चाई मालूम हो जायगी।"

भुवना को यह प्रश्न स्वयं चिदम्बरम् के लिए एक चुनौती था। पत्रिकाओं में प्रकाशित होने वाले लेखों पर उसने विचार किया। उनमें, सामान्य जनता के जीवन-संघर्ष की बातें नहीं रहतीं। वैभव, चमक-दमक और विलासिता का जीवन बिताने वाले लोगों के जीवन पर और अधिक प्रकाश फेंकने वाले थे, अधिकांश पत्रकार। विवेकशील लोगों के विचारों की एकदम उपेक्षा कर दी गई है। लाखों की संख्या में निकलनेवाली पत्रिकाओं में कोई भी ऐसी पत्रिका नहीं दिखती जो कीटाणु जैसे मूक ग्रामवासियों की आवाज सुनाती हो। "गिरे लोगों को उठाना चाहिये" गाँधी जी के इस लक्ष्य पर अच्छी तरह काला रंग पोत कर दबा दिया है।

आपके सह-सम्पादक पंजू, इस समय पत्रिका के साथ गाँजा और अफीम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मिलाकर दे रहे हैं, देश में हत्या, डकैती, व्यभिचार का प्रचार कर, 'हिप्पी' लोगों के नेता बनना चाह रहे हैं", बोली।

"मैं उसे नहीं रोक सकता, आवश्यक हुआ तो मैं ही अलग हो जाऊँगा।" चिदम्बरम् सिर झुकाये हुये बोला।

"अलग हो जाने के विचार को अभी बिलकुल भूल जाइये। वे जब अधिक बढ़ जायेंगी तब स्वयं फूटकर बिखर जायेंगीं। मुझे विश्वास है आप उस समय को जल्दी ला सकेंगे।"

खाने-पीने की चीजें आ गईं। दोनों ने ब्रेड, चपाती-साग, कॉफी, खाया-पिया। बिल भी आ गया। लगभग बीस रुपया था, चिदम्बरम् का सिर चकरा गया। भुवना ने सौ रुपए का नोट देकर बाकी ले लिया।

"इतना पैसा? इतना हमारे 'आफिस बॉय' को एक महीने में मिलता है।" चिदम्बरम् ने कहा।

"अगर आपके तुरैसामी यहाँ आयें, तो एक खाने के लिये सौ रुपया तक खर्च कर सकते हैं। हमारी भारतीय अंतरात्मा का यह एक उदाहरण है, ऐसा मान लीजिए।" इसे सुनकर चिदम्बरम् छटपटा कर रह गया।

होटल से बाहर आ, वे लोग कार में बैठ गये। एक सड़क पर आकर, भुवना ने कार धीरे-धीरे चलाने के लिए कहा। सड़क पर जगह-जगह सादी पोशाक में पुलिस वाले खड़े थे। सड़क के एक किनारे दस-पन्द्रह युवक जैसे किसी की प्रतीक्षा में खड़े थे। भुवना ने भी एक किनारे कार खड़ी कर देने के लिये कहा। "इस समय पंडित नेहरू, उस रास्ते से वापस घर जाने वाले हैं, आप भी पास से उन्हें देख लीजिये" बोली।

यद्यपि चिदम्बरम् उन्हें पहले कई बार देख चुका था, किन्तु इस अप्रत्याशित अवसर के मिल जाने से उसे बड़ी खुशी हुई। वहाँ एकत्रित युवक बँगलौर से आये विद्यार्थी थे। नेहरू से मिलने के लिये अनुमति माँगने पर, उन्होंने, इस जगह उन्हें दो मिनट का समय देने के लिये कह दिया था। दिन में अठारह घंटे परिश्रम करने वाला आदमी किस प्रकार अपने समय का सदुपयोग करता है, यह देखकर चिदम्बरम् चकित रह गया।

निश्चित समय पर, काले रंग की एक छोटी सी कार आकर युवकों के पास खड़ी हो गई। शुभ्र वस्त्र; लाल शरीर, उत्साह-स्फूर्ति-भरा चेहरा। नवयुवकों के उत्साह-घोष को शान्त होने में एक मिनट लग गया। नेहरू के चेहरे में श्रम की थकान का कोई चिह्न न था। नवयुवकों के साथ वे भी नवयुवक बन गये थे; उनसे घुल-मिल गये थे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"हम आपको अपना अभिवादन जताने के लिये आये हैं" एक छात्र ने कहा।

"हमें आप कुछ संदेश दें" दूसरा छात्र बोला।

"कहूँगा तो उसके अनुसार चलने की कोशिश कीजियेगा?" नेहरू ने हँसते हुये पूछा।

"निश्चय ही, निश्चय ही, निश्चय ही!" कई आवाजें एक साथ सुनाई पड़ीं।

"भविष्य में आप लोग चाहे जो भी काम करें, डाक्टर, विज्ञानी, श्रमिक, मैनेजर, सरकारी अधिकारी, राजनीतिज्ञ; चाहे जिस रूप में हों, अपना पूरा श्रम देश को दें। आप लोगों में देश की महान शक्ति छिपी है। उस शक्ति का प्रयोग उत्साह और प्रेम से कीजिये। उसके बदले में न्यायपूर्ण समुचित पारिश्रमिक ही लीजिये। आने वाले दस वर्षों में देश की गरीबी हटाने के लिये एक मार्ग निकल आयेगा!"

पास खड़े छात्रों की पीठ थपथपाकर, हाथ जोड़कर नेहरू कार में जा बैठ गये। कार तेजी से चली गई। छात्र आत्मविभोर हो, कार के ओझल होने तक उसकी ओर देखते खड़े रहे।

चिदम्बरम् भुवना की कार के पास वापस आ गया। उसके मन में नेहरू का सन्देश गूँज रहा था। उन्होंने एक मिनट में ही जीवन के महान् आदर्श को कितनी सरलता के साथ कह दिया था! स्वतंत्रता संघर्ष के समय नौ वर्ष तक जेल में रहकर, स्वतंत्रता के बाद करोड़ों जनों के जीवन का भार दस वर्षों से सम्भाले हुए हैं। पूरे दिन यंत्रवत् श्रम करते हैं, फिर भी उनके चेहरे पर कितना उत्साह है और कितनी फुर्ती!—अपना जीवन ही जनता के लिए समर्पित कर दिया है, क्या इसीलिए उनमें इतना उत्साह है?

"अपना श्रम खुशी-खुशी देश को देकर उसके बदले में समुचित पारिश्रमिक ही लीजिए, इस बात में कितना महान् आदर्श छिपा हुआ है?" चिदम्बरम् ने कहा।

भुवना हँस पड़ी। चिदम्बरम् उसकी ओर घूम गया।

"आदर्श तो ठीक है, किन्तु उस पर अमल करने वाले अकेले वही हैं! उनके आस-पास रहने वाले, कुछ प्रमुख लोग ही इस सिद्धान्त के विरोधी हैं। वे जनतंत्र का मुखौटा ओढ़े पैसातंत्र के प्रतिनिधि हैं" भुवना बोली।

चिदम्बरम् का मुँह फीका पड़ गया। नेहरू के प्रति उसकी ऐसी बातें उसे अच्छी न लगीं। उसने कोई जवाब नहीं दिया; केवल उसका चेहरा उतर गया। "नाराज न होइए। मुझे और मेरे समान दूसरे लोगों को उनका कृतज्ञ होना

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चाहिए। थोड़े समय में ही, मैं स्वयं देश की एकाएक पूंजीपति बन गई हूँ, इसके कारण वे ही हैं ! इस देश के दुलारे बेटों और चुट्टे बेटों के भी पिता ए ही हैं ! न जाने कहाँ-कहाँ से धन ले आकर यहाँ भर रहे हैं; हम लोग उसका मजा उठा रहे हैं; फिर भी उनको दोष देते हैं कि हमें अपनी इच्छानुसार चलने नहीं देते !"

"वे एक समधर्मवादी हैं" चिदम्बरम् ने कहा।

"समधर्म की बातें एक तरफ रहने दीजिए। पहले आप यह बताइए कि अधर्म को दूर करने के लिए, उसे छिपाने के लिए अथवा रोकने के लिए इन्होंने क्या कार्यक्रम दिया है ? तमाम दुनिया से कर्ज ले-लेकर देश का खजाना भर रहे हैं। मशीनें खरीदकर ढेर लगा रहे हैं। नए-नए पूंजीपति, नए-नए नवाब और नए-नए जमींदार पैदा कर रहे हैं। जो पानी फसल को मिलना चाहिए, उसे खरपतवार पी रहे हैं, इसके विरुद्ध अब तक क्या इन्होंने कोई रास्ता निकाला है ? जनता को मिलने वाले लाभ को छीनकर ले लेने वाले अपहरणकर्त्ताओं के लिए मृत्युदण्ड का विधान क्या न होना चाहिए ? क्या इन्होंने ऐसा किया, बोलिए !"

चिदम्बरम् सोचने लगा। स्वतंत्रता मिलने के पहले, यदि हमें अधिकार मिला तो जनता को धोखा देने वाले, चोरी से पैसा कमाने वालों को फाँसी पर लटका देने की घोषणा इन्होंने की थी। अब इनके हाथों असीमित अधिकार हैं। गाँव-गाँव में बिजली के खंभे गड़ गए हैं। काला धन इकट्ठा करने वाले, पूंजीपति, बड़े लोग, पत्रकारों द्वारा प्रशंसित व्यक्ति आदि लोग जनता का सम्मान और अभिवादन पाकर बढ़ते जा रहे हैं। नेहरू को ही 'तुम कौन होते हो ?' ऐसा कहने का साहस करने वाले भी बढ़ गए हैं।

"एक चोर, ठेकेदार के अपराध को छिपाने के लिए आपके पिता जैसे एक योग्य व्यक्ति से देश वंचित हो गया है। नेहरू के साथी कहे जाने वाले पोन्नैया ने ही ऐसा किया, इसका मूल कारण कौन है ? यदि नेता बुराइयों को भस्म कर देने वाली आग के समान हो, तभी छोटे-से-छोटा स्वयंसेवक भी सच्चा, ईमानदार बन सकता है !"

"तुम्हारा कहना भी सही है" चिदम्बरम् ने स्वीकार किया; "उनके समान जनतंत्रवादी के रहे आने पर देश में बुरे लोगों की बढ़ोत्तरी को रोका जा सकना संभव होगा।"

"दस वर्ष में देश की गरीबी हट जायगी, उन्हें ऐसा विश्वास था, है न ? हुआ वह ? देश में आर्थिक विकास होगा, लेकिन पैसे वाला और अधिक पैसे का

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ढेर लगाता जायेगा, गरीब और अधिक गरीब होता जायेगा। आप जैसे पत्रकार काले पैसे के ऊपर चमर डुलाएँगे। यही होने वाला है।"

"आदमी के लिये अपने स्वार्थ की भी एक सीमा आवश्यक है। उसके लिए विधान भी होना चाहिए और कार्यक्रम भी" चिदम्बरम् ने कहा।

"यही तो मैं भी कहती हूँ। क्यों कहती हूँ, इसे आप अभी और दिल्ली के कुछ भागों को देखकर समझ जायेंगे।

भुवना ने ड्राइवर से कुछ हिन्दी में कहा। कार चिकनी, चमचमाती राजपथ को छोड़कर एक सँकरे रास्ते में मुड़ गई। नयी दिल्ली के बाद पुरानी दिल्ली आ गई।

२२. गर्त भी वहाँ

गंधर्वलोक के आकर्षक दृश्य दूर हो गए। नरकलोक अपना भयंकर रूप दिखाने लगा। छोटी-छोटी टीन की झोपड़ियाँ, मिट्टी की दीवाल की कोठरियाँ, घास-फूस की झोपड़ियाँ, चिथड़े-लत्तों की बनी झुग्गियाँ, ऐसी अनेक प्रकार की रिहायशी झुग्गी-झोपड़ियाँ दिखाई देने लगीं। जिसके हाथ जो लग गया उसी को लेकर गरीब लोग अपनी झोपड़ियाँ बनाने में लगे थे। लबालब भरी नालियाँ, उनमें मजे से डुबकी लगाते सुअर, सूखे हाथ-पाँव और बड़े पेट वाले बच्चों की भीड़, गन्दगी, चिथड़े-लत्ते, पसीना, जी मिचलाने वाली दुर्गन्ध।

भीड़, भीड़, एकदम भीड़; उस भीड़ के बीच से उनका मोटर से आगे बढ़ना मुश्किल था।

"यहाँ तो कार से चलना मुझे पाप करना-सा लगता है। हम पैदल ही न चलें ?" चिदम्बरम् ने कहा।

भुवना को भी यह बात ठीक लगी। कार एक किनारे खड़ी कर दोनों एक किनारे उतर गए। तुम गाड़ी लेके जाओ हम टैक्सी से वापस आ जायेंगे, भुवना ने ड्राइवर से कह दिया। फिर दोनों उस भीड़ में चलने लगे, भीड़ में समा गए।

धूल से भरी पुरानी साइकिलें ही वहाँ अनेक कुटुम्बों की सवारी थीं। पति-पत्नी, बच्चे सभी एक साथ सवारी कर लेते थे।

उस ऊबड़-खाबड़ भाग से चलते हुए अगल-बगल की छोटी-छोटी दूकानों को देखते हुए चिदम्बरम् चल रहा था। बीड़ी, सिगरेट, पान, चाय, सड़े-गले खाने के सामान, सड़े केले, बासी सूखी सब्जियाँ आदि ऐसी चीजें जोर-जोर से चिल्लाकर दूकानदार बेच रहे थे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सड़क के किनारे खड़े-खड़े, बैठे-बैठे, स्वास्थ्य और स्वच्छता पर ध्यान न देते हुए बहुत से लोगों को खाते हुए देखकर चिदम्बरम् को वेदना हो रही थी। नाली के मच्छर पाँवों में काट रहे थे, उन्हें बार-बार झटकते हुए खाते जा रहे थे। कुछ लोगों के खाने की चीजों के ऊपर मक्खियाँ भिनभिना रही थीं, उन्हें हाथों से भगा-भगाकर खाये जा रहे थे। पुरुषों के पायजामा और स्त्रियों के घूँघट के पीछे छिपे आदमी को चिदम्बरम् देखता जा रहा था। गठा हुआ मजबूत शरीर, धूल से सनी हुई सोने जैसी देह, छल-कपटरहित चेहरा।

"ये लोग कठोर परिश्रम करके जीते हैं, पेट भर खाने के लिए ललाते हैं। कुछ ही लोग ऐसे हैं, जिनमें उजड्डता है, लेकिन छल-कपट से दूर हैं, दूसरों की धोखाधड़ी भी ए नहीं समझ सकते" उन लोगों के सम्बन्ध में भुवना ने कहा।

"ये लोग यहाँ बहुत दिनों से रह रहे हैं ?" चिदम्बरम् ने पूछा।

"इनमें बहुत लोग शरणार्थी हैं। इस देश को स्वतंत्रता मिलने के समय, जिस किसी चीज से वंचित न होना चाहिए था उससे वंचित हो, यहाँ आकर शरण लिया है। अपने सगे-सम्बन्धियों की जिन्दगी और मान-सम्मान को गँवाकर, अपनी सुख-सुविधा से हाथ धोकर, वर्तमान में पाकिस्तान कहे जाने वाले भाग से भगा दिए गए लोग भागकर यहाँ चले आए हैं........."

भुवना की आवाज भरभरा गई। चिदम्बरम् ने झटके से घूमकर उसकी ओर देखा। बीच सड़क में भुवना रो रही थी, इसके लिए वह शर्मिन्दा न थी। झर-झर आँसू बहाती हुई वह उन लोगों के कष्टों का वर्णन करने लगी थी। बीच में ही उसका गला रुँध गया था।

"भुवना ! भुवना !!"

इसी समय घूँघट काढ़े अधेड़ उम्र की एक पंजाबी महिला भुवना को रोक-कर उससे प्यार से कुछ कहने लगी। चिदम्बरम् की ओर देखकर उसको एक मीठी झिड़की दिया। फिर से भुवना को सान्त्वना दे चली गयीं।

अपनी आँखें पोंछकर शर्म से भुवना ने हँसते हुए चिदम्बरम् को देखा।

"क्या बात है ? उसने क्या कहा ?"

" 'यदि तुम्हारा घरवाला बीच सड़क में झगड़ा करता है तो उसके लिए तुम्हें क्या इस प्रकार रोना चाहिए ? घर जाकर उनकी ठीक से देखभाल करो !' ऐसा कहा था।"

"मुझसे भी कुछ कह रही थी ?"

" 'स्त्री और फूल एक ही तरह के होते हैं, मसलकर मजा मत लो !' ऐसा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कह रही थी। आप किसी कारण से मेरे ऊपर नाराज हो गए थे, ऐसी आशंका थी उसकी।"

चिदम्बरम् खड़े हो आश्चर्य से उसके पीछे देखने लगा। कुछ दूर खड़ी होकर इन लोगों की ओर देखकर, दोनों के मुँह में हँसी देख, उस महिला ने अपना दाहिना हाथ उठाकर हिला दिया। इन दोनों ने भी उसी तरह अपनी खुशी प्रकट की। इसके बाद ही वह उस स्थान से आगे बढ़ी।

"इस छोटी सी घटना को मैं कभी न भुला सकूँगा", चिदम्बरम् ने कहा।

"भारत का हृदय किस जगह पर किस प्रकार धड़कता है, देखा?"

"वह तुम्हारे भीतर भी धड़कता है, भुवना" चिदम्बरम् ने मन ही मन कहा।

इस घटना के बाद नाली की दुर्गन्ध उसको बहुत बुरी न लगी; गन्दगी और पसीने से उसे घृणा न हुई। उस गन्दी जगह के जन-समुदाय से अलग न हो, जैसे उसमें मिल जाना चाहता हो। चिदम्बरम् भुवना को साथ ले आगे बढ़ चला। वह उसके लिए एक नया रोमाञ्चकारी अनुभव था।

दूसरी भाषा, दूसरे तरह की चाल-ढाल, वेश-भूषा, गरीबी, चिथड़े, गन्दगी, पसीना, दुर्गन्ध और सड़क की धूल से सनी उस भीड़ के बीच से चलते समय उसको पहली बार यह अनुभव हुआ कि वह भी उन्हीं में से एक था। हट्टे-कट्टे शरीर वाली बिल्कुल अजनबी एक पंजाबी औरत की बातें—'स्त्री और फूल एक हैं' ये बातें—कावेरी के किनारे की बातें हैं, हैं न? इन्हें, यमुना के किनारे रहने वाली उसी भावना और खुशी के साथ कह गई थी!

"थोड़ा मेरे साथ आइये; सम्मेलन में आये हुये; आपकी तरह; सभी पत्रकारों के देखने लायक बगल में एक जगह है।"

पुरानी दिल्ली की भीड़भाड़ वाली जगह थी वह; चाँदनी चौक। सामने, मैदान के उस पार, हर वर्ष ध्वजारोहण की जाने वाली जगह; लाल किला दिखाई पड़ता था। उसका हाथ पकड़े हुये भुवना एक सँकरी गली में मुड़ गई। गली के नुक्कड़ से ही घटिया शराब की गंध आने लगी थी। गली के दूसरे छोर पर, एक पुलिस 'वान' खड़ी थी। पुलिस वाले, शराब के नशे में धुत्त, लड़खड़ाते चलते कुछ पुरुषों को डाट-दपटकर भगा रहे थे।

"दोनों तरफ ध्यान से देखते चलिये; कहीं भी रुकिये नहीं, चलते चलते देखते जाइए" भुवना ने उसके कानों में कहा।

वहाँ, लकड़ी की बनी छोटी-छोटी दूकानें थीं। ऊपर जाने के लिये, लकड़ी की सीढ़ियाँ थीं। जैसे आधा भाग छिपा रखा गया हो, इस प्रकार, प्रत्येक दूकान

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के सामने गंदे कपड़ों के पर्दे लटक रहे थे। अभी वत्ती जलाने का समय नहीं हुआ था। हरएक दूकान के सामने, पर्दे के बाहर, अपनी जानकारी के अनुसार, शृंगार कर एक लड़की खड़ी थी। एक दूकान के सामने, सीढ़ी के नीचे खड़े एक पंजावी को, लड़की से सौदा पटाते हुये चिदम्बरम् ने देखा। उसी समय उस गंदे परदे के भीतर भी आहट दिख रही थी। वहाँ एक चारपाई; उस पर आदमी····बाहर दूसरे के लिये सौदा हो रहा था।

चिदम्बरम् एकदम पसीने-पसीने हो गया। उसके कँपते हाथ को अपने हाथ में लिये, थोड़ा सा उससे सटी हुई भुवना चल रही थी। चिदम्बरम् के मन में 'भुवना !' कहकर चिल्लाने की इच्छा हुई। उसे लग रहा था कि अपने बाल नोचते हुये और कहीं भाग जाय। भुवना की मजबूत पकड़ के कारण ही वह चुपचाप धीरे-धीरे चल रहा था। फिर भी भुवना समझ गई कि उसका पूरा शरीर कँप रहा था।

"इस गली में, मैं नहीं चल सकता, चलो लौट चलें" चिदम्बरम् ने कहा। ऐसा कहते हुये उसकी जीभ सूख गई।

जल्दी ही, एक सड़क में मुड़कर, वे लोग तेजी से चलने लगे। कुछ दूर जाकर, चिदम्बरम् एक जगह जमीन पर बैठ गया।

"मैं औरत होकर, आपके साथ निःशंक चल रही हूँ; और आप हैं कि इसे देख भी नहीं सकते ?" भुवना वोली।

"दिन में, बीच सड़क पर; ऐसे काम के लिये भी दूकान लगा कर सौदेबाजी की जा रही हैं !——ऐसा ही न ?"

"विगाड़ दी गई उन शरणार्थी लड़कियों के सामने जीविका का कोई आधार नहीं है। परिवार, घर-द्वारविहीन, कहीं कुछ काम कर, थोड़-बहुत खाकर, 'प्लेटफार्म' पर लेटने वाले पुरुषों के सामने कोई मार्ग नहीं है। जैसे, पेट की भूख मिटाने के लिये, सड़क पर जो भी मिल गया खा लेते हैं, उसी प्रकार इस भूख को शान्त करने के लिये यहाँ आते हैं।"

"देश स्वतंत्र होने के दस वर्ष बाद भी यह हालत ! हम आदमी को, पशुओं से भी वदतर, इस स्थिति में अब भी रख रहे हैं ?"

"दस वर्ष की स्वतंत्रता में, हमने, इसी के वगल में, कितने ही दस मंजिले भवन खड़े कर लिये हैं, इसे मत भूलिये" भुवना ने कहा।

"इसका रास्ता ?"

"इस देश में, जहाँ एक आदमी, जहाँ चाहे, चाहे जितनी सम्पत्ति इकट्ठी कर ले ऐसा विधान हो, ऐसे विधान के संरक्षण में छुप कर शोषण करने वालों और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शोषण करने वालों के कल्याण के लिये पत्रिका चलाने वाले आप जैसे लोगों को, कम से कम एक वर्ष तक यहाँ जबरन बसाया जाना चाहिये। यहाँ इन लोगों के साथ मेहनत करने के लिये आप सबको छोड़ देना चाहिये। आपके शरीर के अन्दर जब यह जिंदगी समा जायगी, तभी आप को सच्चाई का पता चलेगा।"

"यह सब कहने वाली, एक नई पूंजीपति है, इसलिये मुझे तुम पर भी विश्वास नहीं है" चिदम्बरम् ने कहा।

"कभी न कभी मुझे पहचान जाइयेगा।"

वहाँ बैठे-बैठे, बड़ी देर तक बातें करने के बाद वे दोनों घर लौट चले। "टैक्सी' से आने पर पाँच मील का फासला तय करना पड़ा। इस बीच के समय में उसने दो, दूसरी दुनिया देखी थी। दोनों में कोई साम्य न था। पहाड़ और गर्त के समान, भयंकर उतार-चढ़ाव वाली दुनिया थी—वह केवल राजधानी ही न थी; वह, एक छोटा भारत भी थी।

२३. राजनीतिक दाँव

चुनाव के दाँवपेचों में पोन्नइया, पोन्नइया ही थे, उनके समान कोई दूसरा न था, ऐसा कहा जाता था। राज्य के किस-किस भाग में, किस-किस जाति की अधिकता है, किन-किन जगहों में बड़े-बड़े महारथी हैं, किस को किसके साथ भिड़ाया जा सकता है; आदि विषय, उनके लिये बायें हाथ के खेल थे। जैसे-जैसे चुनाव के दिन नजदीक आते जाते थे, पोन्नइया को साँस लेने की भी फुरसत न मिलती थी। एकदम तूफानी दौरा चल रहा था। एक दिन में नौ जगहों में सार्वजनिक सभायें; नौ स्थानों में गुप्त वार्तायें !

उन दिनों गाँधी का नाम सुनते ही अधिकांश लोग विभोर हो जाया करते थे। क्योंकि, राजनीति में, गरीबों, असहायों और पीड़ित लोगों पर ध्यान देनेवाले वही थे। राजनीति को गाँधी ने जनआन्दोलन का रूप दे दिया था, और यही कारण था कि पोन्नइया जैसे लोग भी पदाधिकारी बन सके थे।

जनसभाओं में गाँधी का नाम, मंत्र की तरह पोन्नइया की मदद करता था। उसको अपर्याप्त देखकर, पोन्नइया, दूसरी सड़क के पंचायत कार्यालय में सर्वधर्म सम्मेलन चला देते थे। उनका यह आयोजन गरीबों के उद्धार के लिये ही होता था। प्रचार के लिये, एक तरफ गाँधी का नाम होता, दूसरी ओर समधर्म का नारा, और इसके लिये बड़े-बड़े जमींदार और पूंजीपति, पोन्नइया के चरणों में पैसों की गठरी खोल देते थे। गाँधी, काला पैसा, जाति, समधर्म, जमींदारों की भीड़—इस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रकार कई तरह की खिचड़ी राजनीति पैदा कर रखा था पोन्नइया ने। उनका विरोध करने वाला कोई न था, इसके लिये भी उन्होंने एक विचित्र जनतंत्र स्थापित कर रखा था। उनकी 'हाँ' में 'हाँ' मिलाने वालों के अलावा, दूसरे लोगों को पार्टी से वाहर कर देने की परम्परा थी।

गाँव-गाँव में, गली-कूचों में तोरण, दीवालों पर चिपके पोस्टर, जनसभायें, और लाउडस्पीकरों की चीख। इनके वीच में, धरती पर पाँव रखने की जिनकी आदत ही न थी, ऐसे, जमींदार, जागीरदार और पूँजीपति, खद्दर का कुर्ता पहने, हाथ जोड़े-जुड़ा हाथ नीचे होता ही न था—गली-गली घूमते दिखाई पड़ते थे—यह दृश्य वड़ा अद्भुत दृश्य होता था।

पोन्नइया की पार्टी के विरोध में जो दल थे, उनमें दो मुख्य थे। प्रथम समाजवादी दल; इस दल के बहुत से लोगों ने संघर्ष के दिनों में, गाँधीजी के साथ संघर्ष में शामिल हो त्याग किया था; वाद में ताकत के वल पर देश का शासन सँभालने के प्रयत्न में असफल होने पर जनतंत्र के मार्ग से अलग हो गये। दूसरा दल उन लोगों का था जो अँग्रेजी शासन के समय, अँग्रेजों से मान-सम्मान पाकर स्वदेशी आंदोलन के विरोधी वन गये थे। बाद में, यह दल, जातिभेद के विरोध में, 'व्राह्मण हटाओ' का आन्दोलन चलाकर देश के विभाजन को अपना सिद्धान्त बना लिया था। इन दोनों दलों के अलावा जातिवाद के आधार पर वहुत से लोगों ने कहीं-कहीं नये दल वना लिये थे।

मद्रास पोर्ट के पास, श्रमिक बस्ती में, वामपंथी जनसभा में, का० अन्वानन्दम् चुनाव प्रचार करते आग वरसा रहे थे। मंच में, उनके पास भारती की सहेली, मीना का भाई गणेशन् वैठा था। चिदम्बरम् का भाई सुभाष भी वहाँ दिखाई पड़ता था। इस समय, सुभाष, स्कूल से निकलने के बाद सीधे घर न जाता था।

अन्वानन्दम्, हाथ फटकारते हुए गरज रहे थे, लोग 'वाह-वाह' कर रहे थे। ऊँचा कद, अच्छी मोटाई; घनी मूँछें। सभी प्राणियों के प्रति उनके मन में प्यार था, यह वात उनकी बातों से झलक रही थी। उनके पीछे एक त्यागपूर्ण इतिहास था। गाँधीजी के स्वयंसेवक दल में रहने के समय और वाद में पोन्नइया द्वारा दल से अलग कर दिये जाने के बाद भी उन्होंने अपने सिद्धान्तों के लिये बहुत कष्ट भोगे थे। वे एक त्यागी और साहित्य में रुचि रखने वाले मानवतावादी थे। अपने अथवा परिवार के लिये किसी प्रकार की सम्पत्ति न इकट्ठा करने वाले, अन्वानन्दम् एक विचित्र प्राणी थे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कई वर्षों पूर्व, जब वे पहिली बार गाँधीजी से मिले थे, गाँधीजी ने उनसे पूछा था, "आपके पास कितनी सम्पत्ति है ? आपका व्यवसाय क्या है ?"

"यह भारत ही मेरी सम्पत्ति है; इसके लिये श्रम करना ही मेरा व्यवसाय है" अपनी कथनी की करनी बनाने वाले अन्वानन्दम् ने कहा था।

"सचमुच, आप हैं भारत की सम्पत्ति" गाँधीजी ने प्यार से उनकी पीठ थपथपाई थी।

स्वतंत्रता के दस वर्ष बाद भी, एक दल के प्रमुख होकर भी, का० अन्वानन्दम् ने अपने लिये किसी सुख-सुविधा पर ध्यान न दिया था। प्रतिदिन कई मील पैदल चलते थे; सड़कों पर बस की प्रतीक्षा में खड़े रहते थे। जो कुछ, जब भी मिल गया खा लेते थे। किसी तरह परिवार चल रहा था। उनकी हर साँस, हर बात, हर काम जनता के लिये था।

अन्वानन्दम् गरज रहे थे :—

"पंचायती संबंधमें ले आने के लिये, पोन्नइया ने चुनाव में किन-किन लोगों को खड़ा किया है, जानते हैं आप ? लड़ाई के दिनों में जखीरावाजी कर, अधिक से अधिक लाभ कमाने वाले, अँग्रेजों को चमर डुलाने वाले जमींदार, बड़े-बड़े 'बैंकर', जागीरदार, पूँजीपति ! ऐसे लोग जनप्रतिनिधि बनकर गरीबों का उद्धार करने के लिये आ रहे हैं। पोन्नइया एक मिनट में सौ बार गाँधी का नाम लेते हैं, आप भी विश्वास करते हैं !"

इसके आगे उन्होंने सच्चे गाँधीवादी, शिक्षित, राजनीति और अर्थशास्त्र के विशेषज्ञ, संगठन में कुशल लोग कैसे पोन्नइया द्वारा धक्का देकर भगाये गये थे, आदि बातें बताई। "पोन्नइया की राजनीति अवसरवादी राजनीति है, उनका दिखाया रास्ता एक खतरनाक रास्ता है; अब देश अवसरवादी राजनीति का अखाड़ा बनने जा रहा है। पूँजीपतियों और जमींदारों के सहारे वे, सर्वाधिकार राजनीति चलाना चाह रहे हैं।"

अन्बानन्दम् के बाद गणेशन् बोलने लगा। "वे, हमें जनतंत्रविरोधी बताकर दबाना चाहते हैं, हम मानते हैं इसे। लेकिन यदि पोन्नइया सच्चे गाँधीवादी हैं तो तमिलनाडु में क्यों सच्चे गाँधीवादियों का सफाया कर रहे हैं। एक गाँधीवादी मुख्यमंत्री व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन में गाँधीवाद का कड़ाई से पालन करने वाले मुख्यमंत्री—उनके द्वारा अपने पद से क्यों हटा दिये गये ?"

"गाँधीवाद में आपको ही विश्वास नहीं है; क्यों ऐसी बातें करते हो ?" भीड़ से एक आदमी ने पूछा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"ठीक, ऐसा भी मान लीजिये; नेहरू समधर्मवादी हैं, इस पर हमें आज भी विश्वास है। वही नेहरू पोन्नइया जैसे लोगों का विश्वास करते हैं। राजाओं, जमींदारों, पैसावालों को चुनाव में खड़ाकर, उन्हें मंत्री बनाकर, पोन्नइया पंचायती समधर्म ही ले आने वाले हैं। मैं पूछता हूँ, नेहरू के सिद्धान्तों को पूरा करने का मार्ग क्या यही है?"

पहले सुभाष ने ताली बजायी; भीड़ भी ताली पीटने लगी।

गणेशन् आगे कहने लगा। पोन्नइया अपनी कुर्सी की रक्षा के लिये, अवसरवादियों को जगह देकर, सिद्धान्तवादियों को निकालने के लिये, कई आधार बनाकर उन पर दोषारोपण कर रहे हैं। उनकी पद-लोलुपता के बलि बने अनेक राजनीतिज्ञों का उदाहरण दिया उसने।

"देश के टुकड़े करने के सिद्धान्त पर, एक 'फासिस्ट' दल तमिलनाडु में पैदा हो गया है, इसकी जिम्मेदारी पोन्नइया पर ही है। अधिनायकवाद के एजेण्टों और कालाबाजारियों को पोन्नइया ने खद्दर के कुर्ते पहना दिये हैं, इसी बात की घृणा के कारण आज, नवयुवक और गरीब तबका विघटनकारी दल में जा रहा है। इन्होंने जनतंत्र को भ्रष्ट कर दिया है, इसी लिये एकाएक 'फासिस्ट' दल उभर आया है!"

अन्वानन्दम् ने गणेशन् को पास बुला, उसके कानों में, 'फासिज्म' शब्द लोग नहीं समझते हैं, थोड़ा समझा कर कहो" कहा।

"हिटलर की नाजी पार्टी, एक 'फासिस्ट' दल है। जर्मन जाति, आर्य जाति है, उसे यहूदियों का विनाश किसी न किसी प्रकार करना ही होगा, ऐसा कहकर हिटलर ने साम्प्रदायिक भावना को बढ़ावा दिया था। उसका धर्म ही सर्वश्रेष्ठ धर्म है, विश्व में, उस धर्म को ही शासन करना चाहिये, ऐसा प्रचार कर दिया था। धार्मिक पागलपन और अंधाधुंध प्रचार ही उसके अस्त्र थे। वहाँ उसने 'आर्यजाति' नाम दिया था, यहाँ इन लोगों ने 'द्रविड़ जाति' का नारा दिया है। ब्राह्मणों और उत्तरी भारत के लोगों को आर्य बनाकर, उनके विरुद्ध साम्प्रदायिक भावना उकसा रहे हैं। चेर, चोल पाण्ड्य, मुत्तरैयर, पल्लव, अदियमान, ये, वो न जाने क्या-क्या कह रहे हैं। हर गाँव में एक राजा का शासन, एक दूसरे से झगड़ाकर सिर-फुटौवल करने वाले उस प्राचीन काल को स्वर्णकाल बताकर लोगों को धोखा दे रहे हैं। इन सबके कारण पोन्नइया पैसे की गठरी के नेतृत्व में देश का शासन चलाना चाहते हैं। इस बीसवीं सदी में, विज्ञान युग में, जनतंत्र पद्धति में, इस प्रकार का तमाशा केवल तमिलनाडु में ही हो रहा है!"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्वानन्दम् और गणेशन् की बातों को जनता ने कितना समझा, कहा नहीं जा सकता, उन्होंने राजनीति और आर्थिक नीति पर कहा था; जवान औरतों और फिल्म का वर्णन नहीं किया था; उनके भाषण में तड़क-भड़क, चमक-दमक, उछल-कूद कुछ भी न था।

लेकिन, झुग्गी-झोपड़ियों के बीच में चल रही एक और पार्टी की सभा में ये सभी चीजें थीं। उस मीटिंग में राजनीति और आर्थिक नीति की कोई योजनायें न थीं, किन्तु लोगों के मनबहलाव की सभी दूसरी चीजें थीं। 'फासिस्ट' कहे जाने वाले उस दल की सभा में ही लोगों की अधिक भीड़ थी। लेखक वलनाडन् और दूसरे लोग भी उस सभा को सम्बोधित करने वाले थे। वलनाडन् अभी तक न आये थे, इसलिये तमिल सिनेमा के रिकार्ड बजाये जा रहे थे। झोपड़ियों में रहने वालों की भीड़ बढ़ती चली जा रही थी।

का. अन्वानन्दम् के दल के दृष्टिकोण, 'फासिस्ट' आन्दोलन चलाने वाली उस पार्टी में अनेक सिद्धान्तवादी, उत्साही युवक एकत्रित थे। पोन्नइया का दल, बड़े-बड़े व्यापारी, पूंजीपति और बुजुर्गों का दल बनकर रह गया था, इसलिये इस दल में, सिद्धान्तवादियों, लेखकों, कवियों, कलाकारों, पत्रकारों और शिक्षित युवकों के लिये कोई स्थान न था। संघर्षकाल में आवाज देकर जनजागरण और उत्साह बढ़ाने वाले लोग पूरी तरह भुला दिये गये थे। इसलिये उत्साही युवकों के सहयोग से पोन्नइया का दल वंचित हो गया था।

इसके अलावा विघटनवादी पार्टी के प्रमुख नेताओं में कुछों ने अपने जन्म-काल से ही, जातिवाद की बुराइयों का अनुभव किया था। आर्थिक विषमता के कारण उत्पन्न ऊँच-नीच की भावना से पीड़ित किये गये थे। जातिवाद के कारण उत्पन्न सामाजिक अपमान और अन्याय का विरोध करने वालों की ओर वे खिंच गये थे। वे चतुर नेता, बड़े समाज-सुधारक बन, लच्छेदार तमिल से लोगों को मुग्ध कर रहे थे, गरीबों की भलाई के लिये लिख रहे थे, उन्हें सिनेमा-मालिकों का समर्थन भी प्राप्त था, इसलिये अशिक्षित लोगों में उनका प्रचार तेजी से बढ़ रहा था। प्रचार के विषय में हिटलर भी इनसे मात खा जाता।

पोन्नइया के दल में व्याप्त बुराई और सिद्धान्तहीनता के कारण, उनका विरोध करने वाले, यही विघटनवादी राजनीतिज्ञ, शक्तिशाली बन गये थे। स्वतंत्रता के दस वर्ष बाद ही, अँग्रेजों के साथ मिलकर स्वदेशी आन्दोलन का विरोध करने वालों की, तमिलनाडु में जो ताकत मिली थी, उसका कारण, पोन्नइया की सिद्धान्त-विहीन अवसरवादी राजनीति ही थी।

विघटनवादियों ने धर्म, जाति, भाषा, बिखरे पड़े पुराने इतिहास को ही

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अपने प्रचार का साधन वना लिया था। इनके साथ रहने वाले वहुत से युवक राष्ट्रीयता के विरोधी न थे; 'फासिस्ट' भी न थे। इसलिये अपने उत्साह को मार्ग-दर्शन देने के लिये, इन विघटनवादियों का विश्वास कर लिया था।

वलनाडन् सभा में आ गये थे। नीचे, जमीन को छूता हुआ खद्दर का अंग-वस्त्र, खद्दर का कुर्ता-धोती। अपनी नुकीले मूँछों पर ताव देते हुये लच्छेदार तमिल में वोल रहे थे।

प्रस्तर युग से शुरू कर, वड़े-वड़े महाराजाओं और छोटे-छोटे राजाओं के शासन का शब्द-चित्र खींचने के वाद, मुगल, विजयनगर और अँग्रेजों के समय को, जानवूझ कर छोड़कर, अंत में 'आर्यों' की पार्टी—पोन्नइया का दल के शासन में द्रविड़ों के दु:खों का वर्णन करने लगे—

"सोने की गठरी के रक्षक पोन्नइया जब देखो अपने सहारे के लिए गाँधी को पुकारते रहते हैं। गाँधी, 'सर्वोदय' हैं इस तरह न जाने क्या आर्य-भाषा में कहते रहते हैं। गरीव लोगों के उद्धार की वातें कहते हैं। इसे कार्यरूप देने के लिए जिन लोगों को उन्होंने खड़ा किया है, उन्हें देखने से लगता है कि हम जैसे सामान्य और गरीव लोगों को भूखों मारकर ही हमारा उद्धार करेंगे।"

भीड़ ने वड़े उत्साह से तालियाँ बजाईं। वलनाडन् ने थोड़ा सोड़ा पीकर फिर कहना शुरू किया :

"उन्हें हमारा उद्धार करने की आवश्यकता नहीं है; उद्धार में हमारा विश्वास नहीं है। हम इसी नगर में रहेंगे, हम उनसे कहते हैं कि हमें भोजन दें। यदि वे शासन में आ गए तो एक कार वाले को और चार कार दे देंगे। एक वंगला वाले को और नौ वँगले दे देंगे। यदि हम शासन में आते हैं तो आप लोगों को काम मिलेगा, भोजन मिलेगा, कपड़ा मिलेगा! वोट के लिए यदि ये लोग पैसा दें तो 'ना' न कीजिएगा। जी भर के लीजिए। अपना वोट केवल हमें दीजिए, बस।"

इस तरह केवल शहरों में नहीं, छोटे-छोटे गाँवों में भी चुनाव-प्रचार चल रहे थे। चुनाव में विजय पाने के लिए पोन्नइया का विश्वास पैसे पर था। का० अन्वानन्दम्, जिसे जनता न समझ सकती थी, उस अपने सिद्धान्त पर विश्वास रखते थे; और वल्नाडन् अपनी वाक्पटुता, सिनेमा और लाउडस्पीकर पर विश्वास करते थे।

२४. कर्म-फल

समूचे राज्य में चुनाव की गर्मी जोरों पर थी। चुनाव के दिन भी नजदीक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आते जा रहे थे। देश की स्वतंत्रता के पहले अंग्रेजों के शासन के समय भी यहाँ एक तरह के नाटक का खेल हुआ था। गरीबों के धन को हड़पने वालों को ही वोट का अधिकार देकर, छोटे-छोटे राजाओं, जमींदारों और पूंजीपतियों को जन-प्रतिनिधि बनाकर वे शासन के नाम पर देश को नचाते थे। उस अधिनायकवाद के विरोध में गाँधीजी की पार्टी भी कूद पड़ी थी और लोगों में एक नया उत्साह पैदा हो गया था।

"गाँधी की पार्टी में चाहे जो भी खड़ा हो हमारा वोट उसी को मिलेगा" ऐसा कहते हुए, चुनाव में कौन खड़ा है इसे बिना देखे जन-समूह अपना वोट उसको दे देते थे। अंग्रेजों के गुलामों ने पैसे की गठरी खोल दी थी फिर भी कोई फल न मिला; उनके द्वारा भयभीत किए जाने पर भी जनता पर कोई असर न हुआ था। क्योंकि उस समय अनेक गाँधीवादी इन अधिनायकवादी एजेण्टों के समान जनता की पीठ पर सवारी न कर, जनता के सुख-दुःखों को समझने वाले स्वयं-सेवक होते थे।

लेकिन ये सब उस समय की बातें थीं।

"अपने व्यक्तिगत जीवन में गाँधीवाद को पूर्णरूपेण अपनाने वाले पोन्नइया, चुनाव में उम्मीदवार खड़ा करने के विषय में गाँधीवाद को पूरी तरह भूल गये थे, केवल पैसे के बल पर चुनाव में कूदने की भावना न जाने क्यों उनमें पैदा हो गई थी। राजनीति को व्यक्तिगत प्रतिष्ठा और लाभ पाने का साधन मानने वालों को पोन्नइया ने अच्छा अवसर दिया था।

"जीतना है; चाहे जैसे हो जीतना अवश्य है। गरीबों के लिए हम जो कुछ करना चाहते हैं उसे जीतने पर ही करेंगे !" पोन्नइया कहा करते थे।

उनकी चुनाव-पद्धति की जड़ में ही बुराई घुस गई थी। राजनीति केवल फायदा उठाने वालों के लिए ही है ऐसी भावना बन चली थी।

लाखों सिद्धान्तवादी और उत्साही नवयुवक बिना दाना-पानी के रात-दिन अथक परिश्रम करते घूमते रहते थे, वे दिन न जाने कहाँ चले गए। 'हम इस देश की जनता के कल्याण के लिए अच्छे सेवक देंगे' यह भावना एकाएक गायब हो गई थी। हर जगह पैसा, हर बात में पैसा, तुच्छ व्यापारिक प्रवृत्ति बढ़ गई थी। पैसे के बल पर राजनीति में जब कुछ लोगों का राजनीति में आधिपत्य हो जाता है तब परिश्रम करने वालों का मन कैसा होगा ? ये पूंजीपति, किसके लिए और क्यों चुनाव में जीतने के लिए छटपटा रहे हैं, वे ऐसा सोचने लगते हैं, हैं न ?

जिलों में, देश के अन्य भागों में जगह-जगह पोन्नइया के कुछ लोगों के लिए चुनाव का समय, अच्छी फसल का समय बन गया था। उम्मीदवारों के रूप में फंस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गए कुछ बड़े लोग, चुनाव के दस-पन्द्रह दिन पहले ही खर्चे को देखकर हक्के-बक्के रह गए थे। उनके सामने दफ्ती में अपना खून बहाने की स्थिति आ गई थी।

कुछ लोग एक ही दिन में नव दिनों का हलवा और विरियानी की माँग करते थे। कुछ लोग कहते कि कार बनाने वाली एक कम्पनी ही खड़ी कर स्वयं-सेवकों को कारें दीं जानी चाहिए। कारों का पेट्रोल पानी बन गया था। कार पेट्रोल पीती थी अथवा सम्बन्धी लोग मिलकर पीते थे, कहा नहीं जा सकता था। "वहाँ पाँच हजार वोट हैं; निकालिए पाँच हजार !" एक कहता; "यहाँ एक हजार आदमी हैं; लाइए दस हजार !" दूसरा कहता।

एक अनुभवविहीन जमींदार चुनाव-जाल में फँसकर ऐसी स्थिति में पड़ गया था मानो बीच कुएँ में फँस गया हो। वह न आगे जा सकता था न पीछे। हाथ का सारा पैसा खतम हो चुका था। जमीन रेहन कर खर्च किया, पूरा नहीं पड़ा। चुनाव के पहले ही सड़क पर निकल जाने की स्थिति उसके सामने आ गई थी।

"मालिक, गाँधी-भक्तो ! अब मुझे छोड़ दीजिए; मैं हार भी जाऊँगा तो कोई परवाह नहीं" इस प्रकार गिड़गिड़ाते हुए उस जमींदार ने हाथ जोड़ लिया।

"आप एक लाख वोट से जीतेंगे। अब केवल इस 'प्रोनोट' पर एक दस्तखत कर दीजिए !" ऐसा कहकर किसी से कर्ज लेने के लिए उस जमींदार के सामने पच्चीस हजार का 'प्रोनोट' बढ़ा दिया, उन्हें चुनाव में खींचने वाले एक चतुर राजनीतिज्ञ ने। उम्मीदवार जान गया कि अब मुँह में पर्दा डालकर कोर्ट के सामने हाजिर होने की नौवत आ गई है। पहली बार पहना गया खद्दर का कुर्त्ता उसको काँटे की तरह लग रहा था।

"यह सब क्या अत्याचार है ? लोग कहते हैं कि वेश्या के घर जाने पर ही ऐसी नौबत आती है। आप तो उससे भी अधिक बुरी........" कहकर उम्मीदवार बचना चाहा।

"कीजिए दस्तख़त ! कल आप ही मंत्री बन जायेंगें तो क्या मेरी ओर ध्यान देंगे ? पोन्नइया से कहकर आपको निश्चय ही मंत्री बनवा दूँगा।"

मंत्री पद की लालसा से अपने सूखे होठों को जीभ से चाटते हुए जमींदार ने कँपते हाथ से दस्तखत कर दिया। चुनाव भी समाप्त हो गया। जमींदार नहीं जीता। पच्चीस हजार के उस प्रोनोट के लिए अपनी बची-खुची सम्पत्ति भी उस देश-भक्त के हाथों गँवा कोर्ट वारण्ट से बचने के लिए भूमिगत हो भटकने लगा।

चुनाव के नतीजे से पोन्नइया को बड़ा आश्चर्य हुआ। सरकार बनाने के लिए उन्हें पूर्ण बहुमत न मिला था। कुछ समाजवादी जीत गए थे। अलगाववाद का प्रचार करने वाले दल के भी कुछ लोग आ गए थे। किसी भी एक दल को पूर्ण

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वहुमत नहीं मिला था। निर्दलीय के रूप में विजयी हुए कुछ लोगों को मिलाकर पोन्नइया सरकार बनाने के प्रयत्न में लगे थे।

चुनाव के नतीजों को सुनकर चिदम्बरम् के घर के सभी लोग उदासीन थे। तीस वर्षों से भी अधिक समय तक राजनीति में अपना जीवन लगाकर कितने ही त्याग किया था उस परिवार के मालिक ने। उन्होंने बहुत चाहा कि राजनीतिक विचारों से दूर रहें, किन्तु न हो सका। उनके अथक परिश्रम से बढ़ा हुआ दल था वह; वाद में उस दल ने उन्हें ही फकीर वना दिया था। फिर भी उनका लगाव नहीं छूटा था। वे गाँधी के चित्र के सामने कहीं शून्य में देखते हुए वैठे थे। दूसरे पहर का समय था, चिदम्बरम् अब भी दफ्तर से नहीं लौटा था। भीतर सुभाष अपनी माँ और वहन को उत्साह से मिठाइयाँ बाँट रहा था। उसका नेता गणेशन् चुनाव में जीत गया था। इस बात की खुशी थी उसे। पिता के सामने आने का साहस उसे न हो रहा था।

"क्या सोच रहे हैं?" ऐसा पूछते हुए रामलिंगम् के मित्र अब्दुल सलीम आ गए।

"आइए"—रामलिंगम् की आवाज जैसे कुएँ के अन्दर से आ रही हो, ऐसी थी।

"अब यह देश कहाँ जा रहा है?" सलीम ने उदासीनता से पूछा।

"यह गाँधीजी के पास नहीं जायेगा, इतना निश्चय है।"

"एकदम ऐसा न कर दीजिए। देश गाँधीजी के नाम पर ही इस तरह चल रहा है, गाँधीजी बड़े चालाक हैं, उन्हें धोखा नहीं दिया जा सकता; इसीलिए हम लोगों को चुनाव में धूल चाटनी पड़ी है।"

'हम लोगों को', अब्दुल सलीम के इन शब्दों में अपने को भी सम्मिलित जानकार रामलिंगम् विचार करने लगे। जब गाँधीजी को गोली मारी गई थी तब अब्दुल सलीम ने दो दिन तक एक घूँट पानी न पिया था। गाँधीजी मुसलमानों के पक्षधर थे, इसी बात से क्रोधित होकर एक हिन्दू धर्म का पागल, गोडसे ने उन्हें गोली मार दिया था। सलीम इसे कभी न भूल पाये थे। उनका जितना लगाव धर्म से था उतना ही गाँधी और इस देश की माटी से भी था!

"विजयी होने वाले दोनों विरोधी दल गाँधीवाद के बिलकुल विरोधी हैं।" रामलिंगम् ने कहा।

"मैं सोचता हूँ, समाजवादी दल के आर्थिक सिद्धान्तों और गाँधीजी के आर्थिक सिद्धान्तों में अनेक मूलभूत समानताएँ हैं। अगर सचमुच उनमें जनतंत्र के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रति विश्वास हो जाय तो यहाँ ताक़त के सिद्धान्त की आवश्यकता न होगी। कल तक वे हमारे ही साथ थे न ?"

"पहली बार राजनीति में सिर उठाने वाला विघटनकारी दल ?" सलीम के चेहरे पर आँखें लगाए रामलिंगम् ने पूछा।

"इस दल का सबसे बड़ा नेता भी शुरू-शुरू में हमारे ही साथ था न ? कंधे पर गठरी उठाए सड़क में खद्दर बेचनेवाला यही है न ? उत्तर में जिन्ना को पाकिस्तान की माँग करते हुए देखकर, दक्षिण में इसने भी द्राविस्तान की माँग उठा दी। फूट डालो और शासन करो के सिद्धान्त पर चलने वाले अँग्रेजों का लाड़ला बेटा बनकर अन्त में राष्ट्रीय आंदोलन का विरोधी बन गया। उन्हीं से अलग होकर ये लोग राजनीति में कूद पड़े हैं। लोगों को मुग्ध करने के लिए अच्छा बोल भी लेते हैं।"

"आपने हिटलर की लिखी 'मेरे संघर्ष' नामक किताब पढ़ी है ? नाजी जर्मनी में उत्पन्न 'फासिस्ट' आन्दोलन के विषय में जानते हैं ?"—यह रामलिंगम् का दूसरा प्रश्न था।

"बताइए", जिज्ञासा से अब्दुल सलीम ने पूछा। 'फासिज्म' कहे जाने वाले हिटलर के सिद्धान्त के विषय में कुछ सुन रखा था इन्होंने।

रामलिंगम् के भाल पर बल पड़ गया। अपनी आलमारी से 'मेनकाम्प' नाम की अँग्रेजी किताब को हाथ में लेकर वे कहने लगे :

"धर्म-विशेष के मानने वालों के विरुद्ध जनता की तीव्र घृणा को उकसाकर, अहिंसा के सहारे सर्वाधिकार की स्थापना 'फासिज्म' का मूल सिद्धान्त है। सामान्य जनता स्वाभाविक रूप से 'विवेकहीन, मूर्ख' होती हैं; वे समझ सकें इस-प्रकार के चमत्कार के बल पर उन्हें नचाया जा सकता है, 'फासिज्म' का ऐसा विश्वास है। घृणापूर्ण झूठा प्रचार ही हिटलर का मार्ग था। इसके लिए अधनंगे, नासमझ लोगों की भीड़ इकट्ठी कर उन्हें समझाता था। जर्मन जाति, आर्य जाति है। यहूदी उसके विकास में बाधक हैं ऐसा कहकर वह जनता के मन में यहूदियों के प्रति घृणा पैदा करता था। बदले हुये विचारों के सहारे आदमी और पत्रों को अहिंसा की ओर मोड़ दिया था। बड़े-बड़े पत्रों के मालिक उसके पक्ष में जनता के सामने उसको बहुत बड़ा नेता बताते थे। हिटलर के इसी 'फासिस्टवादी' ढंग पर आर्य, द्रविड़ का प्रश्न—उत्तर और दक्षिण का प्रश्न पैदा हो गया है। इस चुनाव में इन नवयुवकों को मिली विजय मात्र घृणा की भावना उकसाकर प्रचारतंत्र के सहारे मिली विजय है। तमिलनाडु में गांधीवाद के पतन के कारण उन्हें यह विजय

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पुरस्कारस्वरूप मिली है 'फासिज्म' एक भयंकर राजनीतिक तत्व है यह बात अभी बहुतों को नहीं मालूम है।"

अब्दुल सलीम बहुत देर तक चिन्ता में डूबे रहे। फासिज्म का अधिकार बहुत बढ़ जाने के समय असुरक्षित जनता के ऊपर होनेवाले अत्याचार और दूसरे विश्वयुद्ध के सम्बन्ध की बातें उन्होंने सुना था। विघटनवादियों को तमिलनाडु में प्रचार साधन पर अधिक विश्वास हैं, वे लोग उसका चतुराई से उपयोग कर जनता के बीच में घृणा की भावना फैला रहे हैं, इस बात पर वे विचार कर रहे थे। 'कल यदि ये प्रचार के बल पर शासन में आ गए तो जन-समूह धर्मान्धता में एक दूसरे को मार न डालेंगे इस बात का क्या निश्चय है?'

"साम्प्रदायिक भावना से भरा हिटलर का देश जर्मनी युद्ध में जंगल की तरह जलाकर भस्म कर दिया गया था; हिटलर ने भी आत्महत्या कर ली थी; उसकी जन्मभूमि में फासिज्म पैदा होते ही राक्षसी नृत्य करके मर गया था। लेकिन इस तमिल भूमि में यह कहीं विकसित न हो जाय इस बात की मुझे चिन्ता है" रामलिंगम् ने कहा।

"राजनीतिज्ञ में दूरदर्शिता होनी चाहिए। पोन्नइया की नजर दूसरे चुनाव के समय में खुलेगी। कर्म करके ही फल की आशा करनी चाहिए न?" सलीम ने कहा।

"पूरे भारत को मार्गदर्शन देने योग्य था तमिलनाडु; अब भारत की एकता को भंग करने वाला, अपमान का भागी बन गया है।"

"मैं सीधे पोन्नइया के पास जाकर कहूँगा," सलीम ने कहा।

ओठों को दाँतों तले दबा रामलिंगम् ने सिर हिला दिया। "इस समय पोन्नइया के सामने शासन की जिम्मेवारी का प्रश्न सबसे अधिक है; इसके लिए वे यदि इन विघटनकारियों को भी साथ में ले लें तो कोई आश्चर्य नहीं।"

कुछ ही महीनों में रामलिंगम् ने जो कहा था वही हुआ। विघटनकारियों के समर्थन पर चुनाव लड़, विजयी होकर वे पद पर आ गए। तमिलनाडु में, गांधीवाद की पीठ पर भोंका गया यह पहला चाकू था।

२५. कलम देवता है

चिदम्बरम् के घर से 'विडिविल्ली' कार्यालय के बीच तीन मील का फासला था। बस से जाने पर बहुत देर तक प्रतीक्षा में खड़े रहना पड़ता था। धक्का-मुक्की कर भीड़ के भीतर से घुस, बस में जगह पाने के चमत्कार से वह अनभिज्ञ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

था। टैक्सी में जाने का मतलब था अधिक पैसा खर्च करना। उसके सामने यह परिस्थिति थी कि वह समय और पैसा दो में से किसी एक का दुरुपयोग करे। काल के चक्कर में फँसे परिश्रम करने वाले सभी गरीब और मध्यवर्ग के लोगों को नगर निवास द्वारा दिया गया यह सामान्य पुरस्कार था।

हमेशा की तरह चिदम्बरम् बसस्टाप में बस की प्रतीक्षा कर रहा था। वहाँ पहले से ही औरतों और बच्चों की भीड़ थी इसलिए उसे लगा दो बसों के बाद ही प्रयत्न करना ठीक होगा। शहरी जीवन की हड़बड़ी, होड़ा-होड़ी आदि उसे स्वार्थवादी बनाने का प्रयत्न करती थीं, किन्तु वह इन भावनाओं से यथाशक्ति संघर्ष के सामने एक चुनौती दे दिया था।

उसके वहाँ पहुँचने के बाद जल्दी-जल्दी दो बसें निकल गई थीं। भीड़ कम न हुई थी। टैक्सी से जाने के लिए सोचता हुआ चिदम्बरम् सड़क में यहाँ-वहाँ देखते खड़ा था। उस समय वहाँ टैक्सी का मिलना भी मुश्किल था।

दायें तरफ से तेजी से आती हुई कारों के बीच जहाज के समान एक नीले रंग की कार दिखाई पड़ी। उसे लगा पहले कभी उस कार को देखा था। उसने ध्यान से देखा। पलक गिरने के समय के भीतर उसकी बगल से वह कार निकल गई। उस कार के पीछे की सीट पर भुवनेश्वरी की शक्ल दिखाई पड़ी। वह अकेले ही जा रही थी। साथ में कोई न था। भुवना ने उस पर ध्यान न दिया था। उसे बिना देखे ही उसका चला जाना अच्छा था ऐसा सोचकर भी, चिदम्बरम् का हृदय 'फट्फट' पंख चलाते हुये उसके पीछे उड़ा चला जा रहा था। एकदम फूट पड़े अपनी भावना-प्रवाह को वह न रोक सका।

"क्यों, बेटा चिदम्बरम् !" इस आवाज के साथ एक मजबूत हाथ उसके कंधे पर पड़ा। अचकचा कर चिदम्बरम् ने घूम कर देखा। एक हाथ में चमड़े का बैग लिये, दूसरा हाथ उसके ऊपर रखे, का० अन्बानन्दम् खड़े थे।

"सर, आप !" चिदम्बरम् ने अभिवादन किया। अन्बानन्दम् जैसा महान व्यक्ति—समाज के लिये निःस्वार्थ सेवा में, आयु में और विवेक में महान—उसी की तरह, बस की प्रतीक्षा में खड़े थे, इसे देखकर उसे न जाने कैसा लगा !

"कम से कम एक पुरानी कार ही खरीद लेते सर ?" मन में उठे प्रश्न को उसने शब्दों से भी प्रकट कर दिया।

"थोड़ी देर पहले एक लड़की कार से गई न, उसके समान और उनको पालने वाले बड़े लोगों को ही, इस सामाजिक व्यवस्था में बड़ी-बड़ी कारें मिलती हैं। समाज के लिये मरने वाले वर्ग को 'सिटी बस' भी समय पर नहीं मिलती।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उनको जहाँ जाना था, उस जगह को उनसे पूछकर, एक टैक्सी को रोक, उनको भी बैठ जाने के लिये चिदम्बरम् ने बार-बार प्रार्थना की। रास्ते में वह, उनके साथ कोई बात न कर सका। उसके मन में भुवना भरी थी। कामरेड अन्बानन्द की बातों की सच्चाई उसके दूसरी ओर खींच रही थी, किन्तु वह उस ओर ध्यान देने की स्थिति में न था। उसके अन्दर सुखकर और दुखःमय, दोनों प्रकार की भावनाओं का द्वन्द्व चल रहा था।

अन्बानन्द को उतार कर वह 'विडिवेल्ली' कार्यालय पहुँच गया। सामने काम का ढेर लगा था लेकिन उसका मन उनमें न लगा। भुवना उसके मन के भीतर हर क्षण विश्वरूपी लेती जा रही थी। दिल्ली से लौटने के बाद वह कई दिन तक उन्मत्त बना रहा था। फिर धीरे-धीरे मन ठीक होने लगा था।

स्थिर होते जा रहे मन में फिर से एक आकुलता; चपलता; एक तूफान मच गया था।

मूर्तिवत् कुर्सी पर बैठा, शून्य में कहीं देख रहा था। दिल्ली में जो कुछ हुआ था, क्या वह सच है? अथवा खाली स्वप्न था? उसके शरीर, मन, प्राण, आत्मा, सबमें वह बसा था, भुवना ने खुलकर कहा था। मद्रास वापस आने के बाद वही भुवना टेलिफोन पर भी बात न कर सकी? इतनी कठोर, पत्थर-दिल बनकर, सब कुछ, जैसे उसी समय भूल गई हो, ऐसी बन गई थी।

उसका मन भुवना को ही पूरा दोष देने के लिये तैयार न था। वहाँ से उसके चलने के पहले उसी ने साफ-साफ कह दिया था : "मिलने के लिये आना, पत्र लिखना अथवा टेलिफोन से बात करने की कोशिश करने की आवश्यकता नहीं है।" उसने अपने घर का पता देने से भी इंकार कर दिया था। उसके नाम पर कोई टेलिफोन है भी नहीं। वह, कई तरह के रहस्य अपने अंदर छिपाये थी; उसकी बाहरी जिन्दगी को देखकर वह एक क्षण के लिये कँप गया। पचास हजार की कार से वह कितनी गंभीरता से चलती थी! क्या कन्हैयालाल ने वह कार उसको ही दे दिया था?

सह-संपादक राघवन् आकर बैठ गये, उसके साथ ही उसका ध्यान काम पर चला गया।

"तुरैसामी ने आपको फोन किया था, आते ही आप उनसे बात कर लें, ऐसा कहा था उन्होंने। कोई जरूरी बात करना चाहते हैं।"

चिदम्बरम् ने राघवन् का चेहरा ध्यान से देखा। उसे लगा, उस जरूरी बात के संबंध में, वे भी कुछ हद तक जानते थे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"बात क्या है ?" उसने पूछा ।

"लगता है, लेखक रत्नम् का उपन्यास इस महीने न प्रकाशित किया जा सकेगा........"

"क्या !" चिदम्बरम् चौंक गया । "दूसरे महीने से धारावाहिक प्रकाशन के लिये, लेखक पर दवाव देकर लिखाया है वह उपन्यास । अगले अंक में उसकी घोषणा भी की जाती है ।"

"पंजू को और आठ पृष्ठों की आवश्यकता है, ऐसा कहना है उनका । वे, अभिनेत्री श्यामला का जीवन चरित, धारावाहिक रूप से प्रकाशित करेंगे । मैं सोचता हूँ, उन्होंने तुरैसामी से बात कर, ठीक कर लिया है । श्यामला का चरित समाप्त हो जाने पर, कोमला का जीवनचरित प्रकाशित करेंगे । उनको और आठ पृष्ठों की आवश्यकता है ।"

"हमने आज ही रत्नम् को यहाँ बुलाया है; उनको रुपया देने का प्रबंध भी कर लिया है !"

"जैसा भी हो, मालिक से टेलिफोन पर बात कर लीजिये ।"

चिदम्बरम् के हृदय से 'फक्' से ज्वाला फूट पड़ी । वह, राघवन् की बातों पर ज्यों-का-त्यों विश्वास भी न कर सका । फोन हाथ से उठा, उसने नम्बर मिलाया । दूसरी ओर से तुरैसामी की आवाज सुनाई पड़ी ।

"कौन, चिदम्बरम् ? आपके फोन की प्रतीक्षा में, बगल में ही बैठा हूँ । वो, अभिनेत्री श्यामला, मेरे मित्र की बहुत खास आदमी हैं । यदि उनके संबंध के समाचार रहेंगे तो पत्रिका बहुत अधिक चलेगी । इस समय, सिनेमा में उनका अच्छा बाजार है; उसके साथ हम अपना बाजार भी शामिल कर लें, ऐसा सोचता हूँ । उनका जीवन चरित लेकर, छापने के लिये पंजू से कह दिया है । आपको यह सब पसंद न आयेगा, जानता हूँ, फिर भी........"

"एक साल से कहते-कहते रत्नम् से एक उपन्यास लिखवाया है ?"

"और एक साल बीत जाने पर देखा जायगा । इस समय 'सीरियस मैटर' पढ़ता कौन है ? तमिल सिनेमा की तरह, तमिल पत्रिकाओं को भी चलना चाहिये, पाठक ऐसी आशा करता है ।"

"मैंने रत्नम् को वचन दे दिया है; वे पैसा लेने के लिये आने वाले हैं ।"

"नाममात्र के लिये कुछ एडवांस देकर, अगले वर्ष छापने के लिये कह दीजिये । यदि वे न मानें तो वापस कर दीजिये ।"

चिदम्बरम् की आँखें क्रोध से लाल हो गईं । "यह मुझे ठीक नहीं दिखता;

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यदि आवश्यक ही हो तो उपन्यास के बाद उसे प्रकाशित कर सकते हैं" चिदम्बरम् ने कहा।

तुरैसामी हंसने लगे। "कृपा कर, मेरी खातिर, इसे जाने दीजिये; उपन्यास समाप्त होने के पहले ही यदि उन देवीजी का बाजार बंद हो गया तो हमारी पत्रिका भी बंद हो जायगी। यह सब 'सीज़नल बिजनेस' है। मेरे मित्र की खातिर, रहने दीजिये।"

उस समय, उनके सच्चे मित्र पंजू ही थे, यह बात चिदम्बरम् से छिपी न थी। इसके अलावा, सिनेमा संबंधी बातों पर, तुरैसामी का विशेष लगाव हो गया था, चिदम्बरम् इसे भी जानता था। कुछ देर तक तुरैसामी ने कुछ बातें करने के बाद, चिदम्बरम् को जवाब देने का मौका न दे, टेलिफोन रख दिया।

राघवन् ने, वेदना से तड़पते उसके चेहरे को, सहानुभूति के साथ देखा।

"इतने पर भी, यदि मैं इस काम में रहा आता हूँ, तो मैं कायर हूँ" चिदम्बरम् ने कहा।

राघवन् ने चट् से चिदम्बरम् का हाथ मजबूती से पकड़ लिया।

"आपको पैदाकर, लालन-पालन करने वालों और आपके परिवार के प्रति आपका कुछ कर्त्तव्य है। इस समय आपका दूसरा काम खोजना और दूसरा काम मिलना, दोनों बातें सरल नहीं हैं। आदमी में ज्ञान, कुशलता और श्रमक्षमता चाहे जितनी भी हो, पैसे के बिना वह इस देश में कुछ भी नहीं कर सकता। कृपा कर जल्दबाजी में कोई निर्णय न लीजिये। चुनौतियों का सामना करने का साहस रखना चाहिये।"

राघवन् ने, अपने जीवन के कई कटु अनुभव सुना दिये। इतना सब सुनने के बाद भी उसको संतोष नहीं हुआ।

"मैं कौन-सा मुंह लेकर रत्नम् से बात करूँगा ?"

"मैं उनसे बात कर लूंगा; इसे मेरे ऊपर छोड़ दीजिये" राघवन् बोले।

"रहने दीजिये; मैं अपनी जिम्मेदारी टालना नहीं चाहता। लेकिन मैं जो करने वाला हूँ वह उनके लिये, मेरे काम के लिये और देश के साहित्य के लिये खुला द्रोह होगा! उनका लिखा उपन्यास प्रथम स्तर का उपन्यास है! उन्होंने लगभग सात-आठ महीने रात-दिन, घोर परिश्रम करके लिखा है। एक श्रेष्ठ साहित्यकार के साथ किया गया हमारा विश्वासघात, इस देश के साहित्यिक विकास के साथ पाप करने के समान है।"

राघवन् चुपचाप उठकर, अपने कमरे में, काम में लगने की कोशिश करने लगे। उनका मन भी ठीक न था।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लगभग एक घंटे में, बिखरे बाल, दुबला-पतला शरीर, ढीला-ढाला कुर्ता लिये जैसे 'काँसे' की दूकान में हाथी घुस जाय, इस प्रकार, बोलते-हँसते लेखक रत्नम् आ गये। दबा हुआ मोटे शीशे का चश्मा; अधपके बाल, धँसी आँखें, चिपके गाल। इतने पर भी, 'कलम के सहारे दुनिया का भाग्य ही बदल देंगे' ऐसा आत्मविश्वास और गर्व, उनमें झलक रहा था।

अँग्रेजों के समय में भी, जब लिखने के अधिकार पर हथकड़ियाँ पड़ी हुई थीं, वे निर्भय हो, अपने अन्दर उठने वाले सत्य-उद्‌गारों को लिखा करते थे। पैसे की लालच से पेट के लिये अथवा किसी के कहने के अनुसार वे न लिखते थे। इसके कारण उत्पन्न अपनी गरीबी की उन्हें चिंता न थी, दुनिया के ओछेपन को देखकर वे उबल पड़ते थे।

"यह क्या चिदम्बरम्, अशोकवन की सीता बने बैठे हो?" शोकपूर्ण संपादकीय के लिये विचार कर रहे हो क्या?"—लेखक उत्साह से प्रश्न पर प्रश्न पूछे जा रहे थे।

राघवन् दौड़कर आ गये। चिदम्बरम् हाथ में मुँह रखे, लेखक को खाली आँखों से देखता बैठा था। उसकी लाल आँखें उदास थीं, उससे बोला न जा रहा था।

राघवन् पत्थर-दिल से, जो कुछ हुआ था, जल्दी-जल्दी बता गये। राघवन् का एक-एक शब्द, बंदूक की गोली की तरह लेखक के हृदय को छलनी कर रहा था। बच्चों जैसा मन और उत्साही स्वभाव वाले लेखक से ही वे बातें न सुनी जा रही थीं। बाँयें हाथ से कलेजा थामे, वे एक क्षण के लिये कुर्सी से टिक गये। उनके महीनों के रात-दिन के परिश्रम के व्यर्थ जाने की अथवा अगले छः महीनों तक, उनके घर के चूल्हे में बिल्ली लेटकर न सोयेगी, उनके इस विश्वास के टूट जाने की बात उन्हें बहुत बड़ी न लगी थी। हर सप्ताह जनता के हृदय के साथ अपना हृदय मिला सकेंगे, अपने अन्दर की छटपटाहट, देश के कोने-कोने में रहने वालों के साथ बाँट सकेंगे, उनका यह मानसिक किला ढहकर मिट्टी में मिल गया था।

रत्नम् की भरभराई आवाज सुनाई पड़ी—

"इस देश में बहुत लोग मेरी तरह गरीब हैं। पैसा खर्च कर, वे किताबें नहीं पढ़ सकते। देश की जनता अच्छी पुस्तकें न पढ़ सके, इसके लिये कुछ पत्रिका-मालिक और सिनेमा वाले, विवेक-विकास के विरुद्ध, संघर्ष चला रहे हैं। राजनीतिज्ञ केवल स्कूल बढ़ाते जा रहे हैं लेकिन इस बात को नहीं देख रहे हैं कि पढ़े-लिखे लोग, विवेक-विनाश के षड्‌यंत्र के शिकार बन रहे हैं। मेरे समान, दो-चार

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आदमी, आधे पेट खाकर संघर्ष करने का साहस करते हैं, उन्हें भी भगाने की कोशिश कर रहे हैं। कीजिये, कीजिये! ....हमारे मुँह में ताला लगाकर 'भारती' के भजन गाइये, वल्लुवर का उत्सव मनाइये!"

"इसी प्रश्न को लेकर चिदम्बरम् अपना काम छोड़ देने के लिये छटपटा रहे हैं" राघवन् ने कहा।

लेखक, रत्नम् झटके से सीधे बैठ गये। वेदना से विदीर्ण चिदम्बरम् के चेहरे को प्यार से देखा। तेजी से उसके पास जा, उसे उठाकर, जैसे प्यार से पागल हो गये हों, कस कर सीने से चिपका लिया। चिदम्बरम् की आँखें झरझर आँसू गिराये जा रही थीं। वह, इसके बाद भी, अपने को न रोक पा सका था। दोनों आदमी छोटा बच्चा बन गये थे। चिदम्बरम् फूट-फूटकर रो पड़ा।

"चिदम्बरम्! चिदम्बरम्! यह क्या? आपका एक बूंद आंसू मेरे लिये लाखों पाठकों के समान है! लाख रुपयों के बराबर है, छोड़िये जाने दीजिये। तीर फेंकने वाले का तीर क्या कर लेगा? मेरे लिये आप कुछ न करें, हाँ, सत्य का विनाश कोई गवारा नहीं कर सकता। यह अस्त्र है न, यह सत्य का तीर है, सत्य का अस्त्र!"

झटके से अपनी जेब से कलम निकालकर, उन्होंने ऊपर उठा लिया। चिदम्बरम् को छोड़, 'सरं' से बाहर निकल गये। कलम ऊँची किये, वे तूफान की तरह पंजू के कमरे में घुस गये।

"क्यों, पंजू!"—उनकी आँखों से चिनगारी फूट रही थी।

"आइये, आइये, सयाने आदमी को खड़े रहना चाहिये क्या? बैठिये!" पंजू ने जल्दी-जल्दी एक कुर्सी खींचकर रख दिया।

"क्यों रे, हाथ में कलम रखने वाले को अपने अस्त्र का तो कुछ सम्मान करना चाहिये? गाँव का एक अपढ़ श्रमिक भी अपने अस्त्र का सम्मान करता है, क्या हमें इतना भी न करना चाहिये? तुम्हारी जिन्दगी भी कोई जिन्दगी है, बोलो? लिखकर जीना जिन्दगी हैं अथवा धोखा देकर जीना?"

पंजू घबड़ा गया।

"क्या! क्या बात है? बैठकर बताइये!"

"तुम्हारे सामने, तुम्हारी बराबरी में बैठकर बात करना मेरे पेशे का अपमान है। तुम श्यामला का चरित्र लिखो; इससे पूरा न पड़े तो कुन्तला का चरित्र लिखो। कम से कम इसी विषय में, सच्चाई लिखने का दम है तुममें, बोलो?"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"आपके उपन्यास का पैसा अभी दिये देता हूँ। इसी के साथ बात खतम कर दीजिये। आधे घंटे में पैसा मिल जायगा, बैठिये।"

"अपना पैसा ले जाकर कूड़े में फेंक दो। यदि पैसे की लालच हो, तो उसके लिये, तुम जैसे लोगों ने कितने ही सरल रास्ते खोज रखे हैं। तुम सोचते हो, बाघ भूखा होगा तो घास खायेगा?"

"और मैं क्या कर सकता हूँ, बोलिये। थोड़ा शान्ति से बोलिये।"

"मैं जो कहूँ केवल उतना ही कर लो, पर्याप्त होगा। सच्चाई बताने के लिये देश में पत्रिका चलाना चाहिये। कलम पकड़ने वाला इसीलिये होता है। तुम्हारी श्यामला ने किस-किस तरह से पैसा कमाया है? कितना-कितना कमाया है? एक फिल्म के लिये उसने कितना सफेद पैसा लिया, कितना काला? यह सब सम्पत्ति किसके-किसके नाम पर है?—यदि तुम एक पत्रकार हो, यदि सच्चे मर्द हो तो यह सब उससे लिखवाना चाहिये। 'सत्य, सत्य' चिल्लाते हुये मरने वाले गाँधी की धरती पर तुम पत्रिका चलाते हो? बड़े पत्रिका वाले!—तुम सत्य का नाश करोगे, तो इस देश में खूनी क्रान्ति होगी, देख लेना! तुम्हारे पैसे की कितनी महत्ता है, तभी तुम्हें यह बात मालूम होगी!"

कोपवेश से उबलते रत्नम् 'पट्-पट्' करते उस कमरे से बाहर चले गये। चिदम्बरम् के पास आ, "लाइये वह उपन्यास!" उन्होंने दपट कर कहा। अपनी आँखों से गिरते आँसू पोछते हुये, "'गरीब के आँसू तेज तलवार होते हैं' मेरे बाबा का यह वाक्य पूर्णतया सत्य है, बेटा, सत्य वाक्य! सत्य और आँसू को देख न डरने वाला, तेज तलवार को देखते ही डर जाता है, ऐसा प्रतीत होता है। चलाइये, चलाइये, कितने समय तक यह अत्याचार चलेगा, देखूँगा!" बोले!

जैसे कोई बच्चे को सीने से लगा लेता है, उसी प्रकार अपने उपन्यास की पाण्डुलिपि को सीने से लगाये, लेखक रत्नम् गर्वीली चाल से, 'विडिवेल्ली' कार्यालय से बाहर निकल गये। वे पैसा लेकर वापस आयेंगे, इस आशा से घर में प्रतीक्षा करती अपनी पत्नी और बच्चों की याद उन्हें न आई हो, ऐसी बात न थी। इस देश में, निराश होने वाले लाखों परिवारों में उनका भी एक परिवार था, इस विचार के गर्व से वे चले जा रहे थे। उनके पाँवों की उष्णता न सह सके, आँसू गिराने वाली, धरती माता ही थी वहाँ!

२७. पैसावाद

दक्षिणी मद्रास में, माम्बलम् से लगे हुए विकासशील भाग में भुवना का

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बंगला था । बंगला नया था; महीने का किराया एक हजार रुपये मात्र था । बंगला किसी और के नाम पर था । लेकिन उसका सही मालिक कोई और ही था । वह सही मालिक, नगर के किसी और भाग में और कुछ 'बेनामी' नामों पर मकान बना रहा था; खरीद रहा था ।

रामनाथपुरम् जिले का रहने वाला एक 'स्मगलर' ही भुवना के बंगले का मालिक था । सारा फर्श, पूरी दीवालें एकदम संगमर्मरी थीं । जितनी लकड़ी लगी थी, सबकी सब रंगून के सागौन की थी; पूरे घर में आधुनिक सभ्यता की सब सुविधाएँ भरी पड़ीं थीं; पैसे का क्या किया जाय, यह बात न समझते हुए, जैसे उसने पूरे मकान में पानी की तरह पैसा बहा दिया था ।

स्मगलिंग, विदेशों से छुपकर पैसे का लेना-देना जैसे कामों के लिए लाइसेन्स अथवा परमिट की आवश्यकता नहीं पड़ती । सेलटैक्स वालों को अथवा इनकम-टैक्स वालों को झूठा हिसाब भी नहीं दिखाना पड़ता ! जब कभी इक्साइज विभाग के अधिकारियों के हाथों में उसके आदमी फँस भी जाते उसका भेद कभी न खोलते । यदि जुर्माना भी कर दिया जाता तो स्वयं चुका देते । यदि किसी कारणवश जेल भेज दिए जाते तो आराम से रहकर वापस आ जाया करते थे । उस बड़े आदमी के विषय में और उसके धन्धे के विषय में साँस भी न लेते । इसीलिए सिंगापुर, मलेशिया, जापान, हाँगकाँग आदि देशों में उसका काला झण्डा, फहराता रहता था । अपने देश के विदेशी मुद्रा-अधिकारियों की आँखों में मिर्च झोंककर कानून को धोखा देकर वह लाखों की सम्पत्ति का मजा ले रहा था । इस तरह वह अपना एक अलग विदेश विभाग चलाने के लिए शासक दल के कुछ प्रमुख लोगों को अपनी जेब में रखता था । देखकर भी अनदेखी करने के लिए कुछ शासकीय अधिकारियों को भी न्यौछावर दिया करता था ।

वह कभी-कभी भुवना के बंगले में आया करता था । उस बंगले का मालिक बनकर; कन्हैयालाल के मित्र के रूप में आया करता था । जब कभी आता, "मकान में और कुछ सुविधा चाहिए तो बताइए; जल्दी ही पूरा कर दूंगा," कहा करता । जब से भुवना बंगले में आई है तब से बंगले में एक नयी रोशनी आ गई ऐसा प्रायः कहकर गर्व महसूस करता ।

भुवना ने उस मकान को अपनी 'सरकार' के लिए किला बना रखा था । बाहरी हॉल, स्वागत-कक्ष, बीच का हॉल, पुस्तकालय, कार्यालय, सोने का कमरा, रसोई इस प्रकार सब अलग-अलग भाग बँटे थे । प्रत्येक भाग में उसी भाग के अनुसार बदल जाने की उसकी आदत थी । पुस्तकालय के अन्दर जाने पर वह शोध-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

छात्रा बन जाती थी; कार्यालय के अन्दर मैनेजमेण्ट के काम धड़ाधड़ चलते थे। शयनकक्ष दो थे। एक में उसके अलावा किसी दूसरे के जाने की अनुमति न थी। दूसरा सार्वजनिक था। घर के काम, भोजन बनाने का काम, बगीचे का काम, व्यक्तिगत काम इन सबके लिए अलग-अलग नौकर थे।

सुबह दस बजे से लगभग एक बजे तक उसको ऑफिस का काम रहता था। कन्हैयालाल की कम्पनी की वह 'बिजनेस एक्ज्यूटिव' थी। वह स्वयं कम्पनी नहीं जाती थी। पत्रों और टेलिफोन से काम कर लेती थी। कंपनी से उसको पन्द्रह सौ रुपये वेतन, मकान, नौकर-चाकर, मोटर आदि की सुविधायें थीं।

इन सब सुविधाओं के बावजूद, वह पूर्ण स्वतंत्र थी। उसके व्यक्तिगत जीवन में कन्हैयालाल दखल नहीं दे सकता था। वह किसी दूसरी कम्पनी से भी सम्बन्ध रख सकती थी, दोनों के बीच ऐसी शर्त थी।

भुवना के आफिस के टेलिफोन की घंटी बज उठी। उसकी आशा के अनुकूल कन्हैयालाल ही बोल रहा था।

"कौन भुवना ?"

"हाँ, मैं ही हूँ, बोलिये।"

"आपकी मदद चाहिये !" कन्हैयालाल ने कहा।

"खुशी से, बोलिये।"

"तीन दोस्तों को खाने के लिये बुलाया है। किसी होटल में प्रबंध करने का विचार था। यदि आपको सुविधा हो तो आपके घर में ही रख लिया जाय, नहीं तो होटल में ही ठीक रहेगा।"

"लंच है अथवा डिनर ?"

"डिनर। रात में सात बजे से नौ, साढ़े नौ बजे तक लगेगा, ऐसा मान लीजिये।"

"केवल खाना ही न ?"

कन्हैयालाल ने हँसकर कहा, "हाँ, खाना और पीना भी बस।"

"आयेगा कौन-कौन, यह तो बताया ही नहीं ?"

"तुरैसामी, खादर बाबा, और आपका प्रिय, कुमरेशन्।"

"मि० कन्हैया ?" भुवना ने नाराज हो कहा।

"कुमरेशन् की फिल्में आपको पसन्द हैं, इसलिये मजाक में कह दिया था।"

"ठहरिये," कह कर भुवना ने अपनी डायरी देखी। "ठीक है, रख सकते हैं," बोली।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"यदि आपकी अनुमति होगी, तो केवल मैं, और एक घंटे रुक लूँगा।"

"आइए, इसे उसी समय देख लेंगे।"

"धन्यवाद, धन्यवाद, धन्यवाद !" कन्हैयालाल ने फोन रख दिया।

कन्हैयालाल, यद्यपि भुवना से, उमर, सम्पत्ति, उद्योग आदि में बहुत बड़ा था किन्तु उसके सामने पिल्ले जैसा था। उसमें शिक्षा, संस्कार, विवेक कुछ भी न था। वह, भुवना के शारीरिक सौन्दर्य के कारण ही नहीं उसकी चतुराई के कारण भी उसका गुलाम बना था। उसके कारण कन्हैया को लाभ भी था।

भुवना, खाने का प्रबंध करने के लिये कह कर, ऊपर तीसरी मंजिल में चली गई। उसको कुछ दूरी पर, छोटे-बड़े कुछ छप्पर के घर दिखाई पड़े। उन घरों में लगभग छः-सात सौ लड़के पढ़ते थे। उनमें लड़कों के लिये पर्याप्त जगह न थी। एक दूसरे से सटे बैठे लड़कों को देखकर लगता था कि वह स्कूल तीसरे दर्जे का रेल का डिब्बा था।

थोड़ा सोकर भुवना दूसरे पहर उठी। कुछ देर तक पुस्तकालय में बैठी रहने के बाद, शाम को, वह शृंगार करने लगी। पूरा शृंगार करने के बाद, शीशे के सामने खड़ी भुवना को लगा कि वह भी मंच पर अच्छा नृत्य कर सकती है।

ठीक सात बजे, कन्हैयालाल तीनों मित्रों सहित आ गया। भुवना ने उनका स्वागत कर, 'एयर कंडीशन' कमरे में ले जाकर बिठाया। एक किनारे कन्हैयालाल के पास स्वयं भी बैठ गई।

तुरैसामी और खादर बाबा को वह पहले से ही जानती थी। दोनों अधेड़ उमर के थे। अभिनेता कुमरेशन् की उमर चालीस के लगभग थी। कन्हैया ने उसका भुवना से परिच्चय कराया।

भुवना पर आँखें गड़ाये, "लगता है आपको पहले कभी देखा है" अभिनेता ने कहा।

"कालेज में पढ़ते समय मैंने आपको नाटकों में काम करते, बाद में सिनेमा में भी देखा था। मैं कभी-कभी कन्हैयालाल के साथ, कभी अकेले भी, कार्यवश बाहर निकलती हूँ, बस।"

"आपका चेहरा जाना-पहचाना लगता है।"

"पहले-पहल मुझे भी ऐसा ही लगा था," कन्हैयालाल ने हँसते हुये कहा।

"लगता है इसीलिये, इन्होंने मुझे जल्दी ही काम दे दिया था" भुवना बोली।

"आपको काम देने से मुझे लाभ ही है," कन्हैया ने कहा।

"अच्छा, क्या चाहिये; 'विस्की', 'ब्रांडी' या 'रम' " भुवना ने कहा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"'काकटेल' तैयार करने में मिस भुवना की बराबरी कोई नहीं कर सकता" कन्हैयालाल ने कहा।

"तब सभी के लिये काकटेल" अभिनेता ने कहा।

भुवना काकटेल बनाने के लिये चली गई। कुमरेशन् कन्हैयालाल को अपने हाथों में ले, "कन्हैयालाल तुम बड़े भाग्यशाली हो; बिजनेस का बिजनेस, चिड़िया की चिड़िया अच्छा पकड़े हो" बोला।

"तुम ही क्या कम हो? अपने पसंद की हिरोइन रखने के लिये, निर्माता पर दबाव डालते हो। मैं तो अपना पैसा खर्च करता हूँ, तुम तो निर्माता से दिलवाते हो।"

इसी समय भुवना काकटेल बनाकर ले आई। छोटी-छोटी प्लेटों में, आलू 'चिप्स' और काजू थे। सभी लोग खाते-पीते बात में लगे थे। कुमरेशन् के दबाव से भुवना ने नाममात्र के लिये पी लिया, उसमें उसकी कोई रुचि न थी।

दूसरे लोगों की अपेक्षा कुमरेशन् ने ही ज्यादा पिया। बाकी सभी लोग उसको अधिक पिलाकर अपना काम ठीक करने के लिये आये ही थे। कुमरेशन् से यह बात छिपी न थी। लेकिन भुवना द्वारा दी गई सुरा का उसे विशेष स्वाद मिला था। जल्दी ही उसकी आँखें सुर्ख हो गईं।

"क्या विचार है कुमरेशन्?" खादर ने बात आरंभ की।

"ये देवीजी जो भी कहेंगी, वही ठीक रहेगा' क्यों मिस, मैं अभी तीस फिल्मों का अनुबन्ध स्वीकार कर चुका हूँ। ये लोग एक और लेने के लिये कह रहे हैं—"

"जब तीस हैं तो एक और सही" कह कर भुवना ने फीकी हँसी के साथ अपनी नजरें अभिनेता की नजरों से भिड़ा दीं। कुमरेशन् फूलकर हिक्-हिक् कर हँसने लगा।

"ठीक है, ठीक है, अपील न हो सकेगी, स्वीकार करता हूँ।"

"इसके बाद आता है पैसे का प्रश्न—" खादर बोले।

"अच्छा आप लोग 'बिजनेस' की बातें कीजिये मैं जाती हूँ, खाने का प्रबंध देख आऊँ" कहकर भुवना वहाँ से जाने लगी।

"ठहरिये मि. भुवना! हमारे बीच में कोई छिपाव-दुराव नहीं है। हम चारों आदमी 'फ्राड' कर पैसा कमाते हैं, बाहर उसी को बिजनेस कहते हैं। आप भी साथ हो जायेंगी तो पाँच आदमी हो जायेंगे। भुवना का रास्ता रोककर कुमरेशन् ने कहा।

"मैं?"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"हाँ, कन्हैयालाल पाँच रु. में एक गज के हिसाब से कपड़े का उत्पादन कर उसे पचीस रु. की दर से ग्राहक के सिर पर बाँध देते हैं। तुरैसामी यदि राजनीतिक नेता होते तो इनकी पार्टी के लिये पैसा बरसा देते। पत्रिका के मालिक हैं, इसलिये, 'हमारी मिल का कपड़ा पहन कर बुढ़िया भी कुमारी बन जायगी' ऐसा विज्ञापन छापने के लिये पैसा देते हैं। मेरी तरह नाममात्र के लिये, एक के जगह पर चौथाई, चौथाई का भी आधा टैक्स देते हैं।"

कन्हैयालाल हँसने लगा, "तुरैसामी को क्यों इसमें खींच रहे हैं?"

"सफेद कागज पर झूठ और शृंगार की चीजें लिखवाते हैं। जिस राजनीतिज्ञ से काम होना है उसे इन्द्र, चन्द्र बताते हैं, नहीं तो एक ही धक्का काफी होगा। सफ़ेद कागज को छापकर, काले कागज को सफ़ेद में वेंचना एक व्यापार है; सफेद कागज को काले में वेचना दूसरा व्यापार है।"

इस बार दूसरे के साथ तुरैसामी भी हँसे। 'आदमी बड़ा चालाक है। अपने काले पैंसे को न्यायपूर्ण बताने के लिये, दूसरे के काले पैंसे की जानकारी समेट कर रखता है' सोचकर वे चकित रह गये। उन्हें याद आ गया कि कुमरेशन् पार्टी से संबंध रखता है।

"पार्टी की राजनीति की आपको कितनी जानकारी है?" उन्होंने पूछा।

"क्या पार्टी, क्या राजनीति! सिनेमा में अभिनय करने के बाद, पार्टी के मंच पर भी अभिनय करता हूँ। कानून कहीं हमारे काले पैसे पर हाथ न रख दे, इसलिये हम सबको राजनीतिक बनना होगा।"

कुमरेशन् के पेट में गई काकटेल और सामने बैठी भुवना, कुमरेशन् को बड़े उत्साह से बोलने के लिये प्रेरित कर रही थी। झूठ-सच खुलकर बोले जा रहा था।

"बिजनेस की बात खतम कर खाने के लिये चलें?" कन्हैयालाल बोला।

"खादर बाबा का बिजनेस 'इण्टरनेशनल' है। इनकी 'फ़िल्म' लेने के लिये मेरी एक शर्त है। चित्र में अगर, प्यार का दृश्य है तो, उसका फिल्मांकन स्विटजरलैंड में होगा। इसी बहाने सबकी एक अच्छी यात्रा हो जायगी।" भुवना की ओर देखते हुये अभिनेता ने कहा।

खादर बाबा हकपका गये। 'विदेशी बैंकों में मेरा रुपया रखना, इस आदमी को कैसे मालूम हुआ?'

"एक गाने के लिये दो लाख?"

"हाँ कीजिये खादर, नहीं तो अपने हीरो, सीधे चंद्रमण्डल में जाकर फिल्मांकन के लिये जिद करेंगे।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दो लाख में, एक अच्छा सामाजिक चित्र मलयालम में बना लेते हैं, ऐसा भुवना ने सुना था। उसको यह दुनिया ही विचित्र लगी।

"पूरी फिल्म के लिये कितना चाहते हैं ?"

"दो लाख में हो जायगा। श्यामला को एक दे दीजियेगा। चौथाई सफेद में बाकी काले में।"

"फिल्म कितने दिन में पूरी होगी ?"

"इतना भर न पूछिये, तीस फिल्म हाथ में हैं !"

"एक फिल्म में कितना समय लगता है ? नहीं जानती इसलिये पूछ रही हूँ" भुवना ने कहा।

"कथा, वार्ता, पैसा, सब कुछ तैयार हो तो एक माह लगता है। यदि केवल वही काम हो तो आराम से एक माह में पूरा हो जायगा।"

"आप मुझे एक साल में पूरा कर दे दीजिये, बस," खादर बोले।

"ऐसा मत कहिये; तीस आदमी लाइन में हैं।"

"मि० कुमरेशन् !" बड़े प्यार से अभिनेता को आवाज दे, "एक फिल्म आप एक माह में पूरी कर लेते हैं, इसका मतलब है आपकी आमदनी महीने में दो लाख से कम नहीं है ?" भुवना ने पूछा।

कुमरेशन घबड़ा गया।

"अरे रे ! इन्कमटैक्स अधिकारी के समान प्रश्न कर रही हैं ? क्यों भाई कन्हैयालाल ! आपने इन्हें अपनी कम्पनी में कैसे रख लिया है ?"

"वैसे ही पूछा था।" हँसते हुये भुवना ने कहा।

खादर बाबा और तुरैसामी एक दूसरे के कान में कुछ फुसफुसाये, फिर खादर अभिनेता के पास खिसक कर, "एक बात........" बोले।

"क्या ?"

"आपकी माँग से एक लाख अधिक देंगे; ठीक एक साल में पूरा कर दीजिये।"

अप्रत्याशित मौका था अभिनेता के लिये। "इन तीस आदमियों को क्या जवाब दूँगा ?" उसने कहा, उधर जो मिल रहा था उसे छोड़ने का मन भी न था।

"कह दीजियेगा, फ्रांस में एक 'डुयेट्' लेना है। आधे लोग फिल्म बंद कर कर्ज के लिये आदमी की तलाश में लग जायेंगे, इसी बीच में पूरा कर लीजियेगा।"

"आपको इन्हें बताने की जरूरत नहीं है। अब अगली फिल्म का रेट, दो से तीन नहीं कर देंगे ?" कन्हैयालाल ने कहा।

सभी लोग खुशी से, ऊपर, खुली छत में खाने के लिये चले गये।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

२८. श्रमिकों की दुनिया में

भोजन समाप्त होने पर, वहाँ से चलने के समय, कुमरेशन् ने, कन्हैयालाल और भुवना को अपने बँगला आने का निमंत्र०. दया। साथ ही किसी अच्छी 'फिल्म' की 'सूटिंग' दिखाने के लिये, स्वयं ले जाने के लिये भी कहा।

उन लोगों के साथ कन्हैयालाल भी चला गया था; लेकिन कुछ दूर जा, कम्पनी जाने का बहाना बता, वह पुनः लौट आयेगा, यह बात भुवना जानती थी।

ऊपर की मंजिल इस समय बिलकुल खाली थी। सभी नौकर अपने-अपने घर चले गये थे। रात में केवल एक बूढ़ी नौकरानी और भोजन बनाने वाली रहती थी। बागवान, चेल्लइया का परिवार, आहाते के भीतर, एक किनारे रहा करता था।

दूध बरसाती हुई चाँदनी में भुवना ऊपर खड़े-खड़े नगर का दृश्य देख रही थी। कुछ दूरी पर, एक खुले स्थान पर, इस समय झोपड़ियाँ दिखाई पड़ती थीं। उसे देख कर उसको न जाने कैसा लगता था।

भुवना को अपने पिता, रामनाथन् की याद आ गई। वे और भुवना की माँ इस समय, तंजौर जिला में अपने गाँव में रहते थे। वे भूखों न मरते थे, लेकिन सुख-सुविधा से रह रहे थे, ऐसा नहीं कहा जा सकता। उनकी जीविका के लिये, भुवना ने थोड़ी-सी खेती वाली जमीन खरीद दी थी। कभी-कभी वह भी जाकर आठ-दस दिन उनके साथ रह लिया करती थी। अपने सगे-संबंधियों को वह, न जाने क्यों, अपने पास न रखना चाहती थी।

उसके पिता, एक बड़े जमींदार घर में पैदा हुये थे; वे युवावस्था से ही एक क्रांतिकारी व्यक्ति थे। घर के लोगों की बातें न सुनते थे। तिरुनेलवेली और पाण्डिचेरी में रहने वाले स्वतन्त्रता संग्राम सेनानियों के सेवक बन, रहा करते थे। वे पुलिस की आँखों में धूल झोंक कर, गुप्त संदेश ले आने-ले-जाने का काम करते थे। अपनी रक्षा के लिये एक पिस्तौल अपने पास रखते थे।

जब पुलिस ने उनके घर की तलाशी ली, तभी घरवालों को मालूम हुआ कि वे किस प्रकार के थे। विदेशी शासन, विदेशी पुलिस और कानून ने जितना कठोर दण्ड उन्हें नहीं दिया, उतना कठोर दंड उनके परिवार ने दिया था।

बड़े-छोटे भाई, पिता, सबने मिलकर, उस घर में उनका कोई हक नहीं है, इस बात का शर्तनामा उनसे लिखवा कर उनसे छुट्टी पा ली थी। उनकी और उनकी युवा पत्नी को घर से निकाल कर, सड़क पर खड़ा कर दिया था।

वंजीनाथन् के पकड़े जाने के बाद, अंग्रेजी शासन ने क्रांतिकारियों को छिन्न-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भिन्न कर दिया था। वागडोर संभालने वाले, सिंह, चिदम्बरम् जेल से छूट कर, टूटे मन से मद्रास में रहने लगे थे। कारावास के पुरस्कारस्वरूप रुग्ण हो, सुब्रह्मण्य शिवा, अपने साथियों के साथ छिपे भाग रहे थे। व. वे. सु. ऐयर भी ने 'पापनाशम्' नदी में डूबकर अपनी जीवनलीला समाप्त कर दी थी।

ऐसी स्थिति में रामनाथन्, पत्नी के साथ मद्रास आ गये थे। जीविका चलाने के लिये उन्हें कुछ न सूझ रहा था। 'क्रांतिकारी' नाम उनके सामने सबसे बड़ी बाधा थी। कोई भी उन्हें काम देने का साहस न करता था। भुवना जब गोदी में थी, सन् १९३२ में, कानून भंग करने के जुर्म में उन्हें पुनः गिरफ्तार कर वेल्लारी जेल में बंद कर दिया गया था।

ऊपरी मंजिल पर खड़ी भुवना को अपने पिता का महान रूप दिखाई पड़ा। 'वे कितने महान थे ?' उसने सोचा। मद्रास में परिवार के भरण-पोषण के लिये उन्होंने कितना कष्ट उठाया था, उसे वह भूली न थी। उसके घर में प्रायः एक ही समय के लिये भोजन होता था।

"भुवना, आदमी को, अच्छा शरीर, पवित्रपन और सद्ज्ञान की आवश्यकता होती है। अच्छे शरीर के लिये अच्छा भोजन चाहिये, उसे, मैं तुम्हें भले न दे सकूँ' किन्तु तुम को शिक्षा और ज्ञान देने के लिये यथाशक्ति कोशिश करूँगा। पवित्र मन का जहाँ तक प्रश्न है, उसे स्वयं तुम्हें बनाना है। यदि तुम गाँधी को नहीं समझ सकती हो, तो विवेकानन्द को पढ़ो। मुझे क्रांतिकारी बनाने वाले विवेकानंद ही हैं।"

वे बार-बार ऐसा कहा करते थे। विवेकानन्द का कर्मयोग पढ़कर सुनाया करते थे। विवेकानंद को पढ़ने के बाद जीवन के प्रति, उसके अंदर का भय, पूर्णरूपेण दूर हो गया था। शौर्य, शक्ति और साहस का पाठ उसने उनसे ही पाया था। इसके बाद ही भुवना का ध्यान कार्लमार्क्स की ओर गया था।

भुवना सोफा पर टिक कर बैठ गई। स्वतन्त्रता संग्राम के साथ ही, सिद्धांत-वादियों की पीढ़ी भी समाप्त हो गई थी, इस बात का उसे दुःख था। 'पिताजी ! आप के कथनानुसार मैं अपने शरीर को अच्छा शरीर न रख सकी। यथाशक्ति, मन और विवेक की रक्षा करने की कोशिश कर रही हूँ। इसीलिये, पिताजी, आप को दूर रखना चाहती हूँ।'

शरीर का ध्यान आते ही भुवना को कड़ुवाहट का अनुभव हुआ। शरीर को ही संसार समझने वाले, शरीर के सुख के लिये ही जीने वाले लोगों के साथ बात करना ही उसका धंधा बन गया था। एक क्षण के लिये उसको अपने शरीर से ही घृणा हो गई। थोड़ी देर पहले गये चारों आदमियों के विषय में भुवना ने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विचार किया। उसे लगा उन लोगों में संस्कृति, संस्कार, साहित्यिक ज्ञान, कला, प्रेम कुछ भी न था। पैसे को ही भगवान मानकर, उसे पाने के लिये, अधिक से अधिक लोगों को धोखा देना ही उनका धंधा है। खाना, पीना, सोना, जुआ, दैहिक भूख मिटाने के लिये साथी की तलाश करना ही उनका काम है।

मेहनतकशों को आधे पेट माँड़ के लिए पैसा देकर, पाँच रुपये के कपड़े को पच्चीस रुपये में वेंचना एक का काम है। वंजू जैसे लोगों को साथ लेकर शिक्षित नवयुवकों के ज्ञान को नष्ट कर वेकार वनाने का धन्धा दूसरे का है। जीवन से विल्कुल असम्बद्ध, कलाविहीन फिल्मों में अभिनय करने के लिए हजारों आदमियों के लिए पर्याप्त वेतन को अकेले ही गटक जाने का धन्धा तीसरे का है। स्मगलिंग के द्वारा देश की आर्थिक स्थिति को रसातल में ले जाने का धन्धा चौथे का है।

भुवना को लगा कि वह फूट-फूटकर रो ले। जहाँ कुछ लोग खाने-पीने में मस्त हो रंगरेलियाँ मनाते हैं वहीं भूखे, नंगे, वेघरवार लाखों लोग तड़प रहे हैं।

सीढ़ियों में किसी के आने की आहट सुनाई पड़ी। भुवनेश्वरी ने घूमकर देखा—पूँछ हिलाते हुए स्वामिभक्त कुत्ते की तरह उसके सामने कन्हैयालाल खड़ा था।

"आपको वहुत देर प्रतीक्षा करनी पड़ी" वह वोला।

"वैठिए"

"लगता है किन्हीं विचारों में खोई हुई थीं!"

"हाँ, वहुत गहरा विचार था" भुवना ने कहा। "मशीनों और पूंजी के कारण उत्पन्न हुए जनता के सुख-दुःखों के सम्वन्ध में सोच रही थी। सिनेमा की मशीनें, पत्रिका की मशीनें और मिल की मशीनें इन सबने ही मिलकर हमें कई मंजिले भवनों का मालिक वना दिया है।"

"सच्ची वात कह दूँ भुवना? आपका विवेक, आपके सोचने की सुन्दरता यह सब मुझे बहुत ही पसन्द है।"

"मेरी देह की सुन्दरता आपको पसन्द है, ऐसा कहिए न; सच्चाई यही है।"

"केवल इतना ही नहीं; मुख्य वात यह है कि आप बुद्धिमान हैं" कन्हैया ने कहा।

"विवेक।" कहकर भुवना ने लम्वी साँस खींची। "यदि यह विवेक देश की जनता को मिल गया तो कहीं वह जग न उठें इस भय से हम अपने चारों ओर की जनता का 'ब्रेन वाश' करते आ रहे हैं।"

"आपका कहना न्यायसंगत नहीं है।"

"हो सकता है आप न जानते हों। हमारे विज्ञापन, लाउडस्पीकरों द्वारा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रचारित राजनीतिक झूठे प्रचार, फिल्मों की लुभावनी बातें, पत्रिकाओं में भरी हुई 'सेन्शुवल' हिप्पी सभ्यता—क्या ये सब 'ब्रेन वाश' नहीं है ?"

"यह सब बिजनेस है" कन्हैया ने कहा।

"धोखा देना ही बिजनेस है, यह पूंजीवाद का तीसरे दर्जे का सिद्धान्त है। अच्छे किस्म का माल उत्पन्न कर समुचित कीमत पर, जो सबको मिल सके, बेचना ही बिजनेस कहा जाता है।"

कुछ समयों में भुवना खरी-खोटी बातें कह दिया करती थी लेकिन धन्धे में अनेक रास्ते ढूंढ़कर भरपूर मदद भी करती थी। उसके इस स्वभाव को कन्हैया जानता था। इस चांदनी रात में, ऊपरी मंजिल की एकान्त में वह भुवना के ज्ञान-सौंदर्य का रस लेने नहीं आया था। अभिनेता का अनुबन्ध भी लाभकारी रहा, उसके दूसरे मित्रों और स्वयं उसके लिए भी फायदेमन्द रहा। जिस फिल्म में कुमरेशन् काम करेगा उसके सभी अभिनेता, अभिनेत्रियों के लिए कपड़ा उसी की दूकान से जायेगा। साल में लगभग एक लाख का व्यापार कुमरेशन् के कारण हो जाया करता था।

घड़ी देखकर, "बारह बजने जा रहे हैं ?" कहकर कन्हैया ने भुवना के चेहरे पर आँखें गड़ा दी। कुर्सी उसके नजदीक खींचकर धीरे से उसका दाहिना हाथ पकड़ लिया।

"आज आपको निराश करने के लिए सचमुच मुझे बहुत दुःख है" भुवना ने कहा।

"क्या बात है ?"

"दो दिन और रुक लीजिए, मेरी तबीयत ठीक नहीं है।" जानबूझकर भुवना ने एक झूठ कह दिया।

"सच ?" इसे पहले आपने नहीं बताया।

"इसके लिए समय ही न था। धीरज रखिए केवल दो दिन तो हैं ही ?" भुवना हँसी।

कन्हैया उसके चेहरे के पास अपना चेहरा ले जाने लगा।

"कृपा कीजिए, आज बिल्कुल कुछ नहीं" वह झटके से अलग हो गई।

कन्हैयालाल को बड़ी निराशा हुई लेकिन कोई चारा ही नहीं था।

"अच्छा, गुडनाइट !"

वह खड़ा हो गया।

"सचमुच मुझे बहुत दुःख है; गुडनाइट !" भुवना ने कहा।

कन्हैयालाल चल पड़ा। उसे पहुँचाने के लिए दरवाजे तक आकर, "मेरे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ऊपर नाराज तो नहीं हैं ?" कहकर उसने कार का दरवाजा खोल दिया; कार चली जाने के बाद अन्दर जा भुवना ने दरवाजा बन्द कर लिया।

दो-एक जलती बत्तियों को बुझाकर भुवना अपने सोने के कमरे में चली गई। उस कमरे के अन्दर कन्हैयालाल भी न जाता था। उसके न रहने पर उस कमरे में ताला बन्द रहता था। बिस्तर के बगल में उसके माता-पिता का एक चित्र, कुछ किताबें और एक डायरी रखी थी। यह उसकी व्यक्तिगत डायरी थी। उसमें वह प्रमुख अन्तरंग बातें लिखा करती थी। थोड़ा सोचने के बाद वह धड़ाधड़ लिखने लगी।

"पिताजी की याद के साथ-साथ मुझे उनकी भी याद आ गई। दिल्ली में उनसे मिलने के बाद मैं प्राय: उनके विषय में सोचे बिना रह नहीं सकती। चिदम्बरम् ! इसी शहर में रहकर के भी आप मुझसे कितनी दूर हैं ! कम-से-कम आज के दिन इस शरीर को अशुद्ध न कर, आपके विषय में स्वप्न देखना चाहती हूँ इसीलिए आज कन्हैयालाल को वापस करने के लिए मुझे झूठ बोलना पड़ा। देह की भूख को मिटाने के लिए जिन्हें देह की आवश्यकता है ऐसे दो पाँव वाले प्राणियों के बीच, पवित्र मन और विवेकशील आप ही मर्द हैं। दूसरों को धोखा न दें। दूसरे की भलाई करने के लिए जो छटपटा रहा हो ऐसे आपके विचारों में खोई मैं आज की रात व्यतीत करने जा रही हूँ। आपके प्यार के लिए यह मेरा छोटा-सा प्रायश्चित्त है !"

डायरी बन्द कर, बिस्तर के बगल में रखे चमड़े के बैग को उठा लिया। उस बैग से चिदम्बरम् का एक चित्र निकाला। उस चित्र को उसने स्वयं, अपने कैमरे से, चिदम्बरम् को एक पार्क में बैठाकर खींचा था। बहुत देर तक उसी चित्र को अपलक देखती रही। फिर अपनी आँखों से लगा सीने से चिपका लिया। भुवना के हृदय की धड़कन का अनुभव उसे हो जाय, उसकी इस छटपटाहट ने उस चित्र को ही थोड़ा-सा कँपा दिया।

चित्र को बैग में रखकर, बत्ती बुझा भुवना बिस्तर में चली गई। हमेशा जलने वाले नीले रंग के बल्ब को भी बुझा दिया था। बाहर घना अन्धकार छाया हुआ था किन्तु उसके हृदय में एक नया प्रकाश जगमगा रहा था। एक अवर्णनीय आनन्द उस प्रकाश से उसे मिल रहा था। जिन्हें केवल शारीरिक भूख की छटपटाहट थी ऐसे लोगों के साथ शारीरिक सम्बन्ध रखने में जिसे कोई झिझक न होती थी उस भुवना को उस दिन एक बिल्कुल नया अनुभव हुआ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

२९. नया रिश्ता

मद्रास के एक कॉलेज के छात्रसंघ के उद्घाटन समारोह में चिदम्बरम् और गणेशन् एक दूसरे से मिले। उस समारोह में बोलने के लिए उनके अलावा सिनेमा के लिए लिखने वाले वलनाडन् भी बुलाए गए थे।

सभा प्रारंभ हो चुकी थी। वलनाडन् के बाद इन दोनों का भाषण भी खतम हो चुका था। मंच में चिदम्बरम् के पास बैठा गणेशन्, "आप से अकेले में कुछ बात करनी है; मीटिंग के बाद आपको समय मिलेगा ?" बोला।

घर जाने के अलावा उस दिन चिदम्बरम् को कोई काम न था। "कोई काम नहीं, खुशी से बात कर सकते हैं" चिदम्बरम् ने कहा।

गणेशन् ने चिदम्बरम् से कभी भी व्यक्तिगत बातें न की थीं। इसलिए उसे कुछ आश्चर्य हुआ। कभी-कभार मिल जाने पर दोनों के बीच सामान्य बातें ही हुआ करती थीं। उसका छोटा भाई सुभाष गणेशन् का पक्का चेला था। इसे चिदम्बरम् जानता था। सुभाष का राजनीतिक पार्टी से लगाव उसकी पढ़ाई में कोई व्यवधान न डालता था इसलिए चिदम्बरम् कभी भी सुभाष के काम में अड़ंगा न लगाता था। सभा समाप्त हो जाने के पश्चात् कुछ छात्र उन्हें घेरे रहे। बाद में दोनों एक टैक्सी में चल पड़े।

मइलापुर राजमार्ग के बगल के एक पार्क में दोनों चले गए। घास के मैदान में बैठ गए। यहाँ-वहाँ कुछ लोग दिख रहे थे। फिर भी उन्हें पर्याप्त एकान्त मिल गया था। चिदम्बरम् ने सोचा—गणेशन् कुछ व्यक्तिगत बात करेगा, किन्तु गणेशन्, "कालेज के छात्रों का व्यवहार देखा। छात्रवर्ग किस दिशा में जा रहा है देखा आपने ?" इस प्रकार बातारंभ की।

"नवयुवकों को दोष देना उचित नहीं है; वे अभी पूर्ण समझदार नहीं हैं" चिदम्बरम् ने थोड़ा चिन्तित हो कहा; "गुलाम भारत का इतिहास, राष्ट्रीय-संघर्ष का इतिहास और महात्मा गाँधी का त्याग, तमिलनाडु के नवयुवक अच्छी तरह नहीं जानते। अँग्रेजों ने विभाजित करो और शासन करो की नीति से हमारे ऊपर शासन कर जगह-जगह बिलगाव की जड़ें गहरी कर गए हैं, यह बात इन लोगों को किसी ने नहीं बताई।"

"तमिलनाडु में अँग्रेजों द्वारा बोया गया विघटन का बीज लगता है उनके चहेते बेटों के द्वारा बढ़ाकर एक विशाल पेड़ बना दिया जायेगा" गणेशन् ने कहा; "यदि वह बढ़ गया तो उसे काटने की जिम्मेवारी हमारे ऊपर ही होगी।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"यह कष्ट आपको न करना पड़ेगा। शासन करने वाले पांच सौ से अधिक रियासतों को मिलाने के लिए केवल एक विधान में ताकत है, है न ?"

"अरे चलिए !" गणेशन् ने उपेक्षा से हँस दिया; "आपका बुर्जुआ जनतंत्र; उसका विधान, राजनीति और राजनीतिज्ञ...."

"आपने यह कैसे कह दिया ?"

"अपने तमिलनाडु की राजनीति ही देख लीजिए। आपके गाँधी और हमारे कार्लमार्क्स यदि चुनाव में खड़े हों और उनके विरोध में कोई फिल्म ऐक्टर खड़ा हो तो निश्चय ही फिल्म अभिनेता जीत जायगा। जनता का टैक्स, उसके पेट का भोजन, संस्कृति और सभ्यता का जो आदमी जितना अधिक शोषण कर सकता है, यहाँ उसको ही अधिक राजनीतिक महत्व मिलता है। आपका जनतंत्र कैसा है इसे समझने के लिए तमिल सिनेमा और राजनीति का सम्बन्ध केवल एक ही उदाहरण पर्याप्त है।"

चिदम्बरम् चकित रह गया। वह सोचने लगा। गणेशन् के कहे हुए कठोर सत्य ने उसको विचलित कर दिया। तीस साल से भी अधिक समय तक राजनीति में रहने वाले महान् त्यागी का पुत्र था वह। बचपन से ही राजनीतिक वातावरण में पला था। इसके अलावा कालेज में विश्व राजनीति और अर्थशास्त्र में उपाधि भी प्राप्त कर चुका था। गणेशन् ने जिस सत्य का उद्घाटन किया था उससे उसके अन्दर कसक होने लगी थी। अँग्रेजों को चँवर डुलाने वाले....काला पैसा बटोरने वाले, मिलावट करने वाले, चोर-बाजारिए और जखीरेबाजों को ही इस देश में राजनीतिक महत्व ? गाँधी के त्याग के कारण स्वतंत्रता प्राप्त करने वाले इस देश की यह अधोगति ?

"चिदम्बरम्, एक दिन आप भी हमारी पार्टी में आ जायेंगे" गणेशन् ने कहा; "इन तमाम अत्याचारों को लगाम लगाकर सबको श्रम और जीविका देने वाला केवल एक ही मार्ग, हमारा मार्ग है। इसे आपको महसूस करना ही होगा।"

"बुराइयों को भस्म करने की क्षमता और सबको जीविका प्रदान करने की दुर्लभ औषधि गाँधीवाद में ही है। जिस तरह से रूस में कार्लमार्क्स को शस्त्र बनाकर लेनिन संघर्ष में कूद पड़ा था, उसी तरह यहाँ भी एक नेतृत्व गाँधीवाद को शस्त्र-बनाकर मैदान में कूद पड़ेगा, ऐसा दिन यहाँ बिना आये रहेगा क्या ?"

"देखेंगे ?"

"देख लीजिएगा।"

दोनों के बीच कुछ देर तक मौन छाया रहा। पार्क की भी भीड़ छँटने लगी थी। मधुर पवन चल रहा था उनको अधिक एकान्त भी मिल गया था।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"आपने एकान्त में कुछ बात करने के लिए कहा था न ?" चिदम्बरम् ने कहा।

"वो ? हाँ, जरूरी बात है…"

चिदम्बरम् ने गणेशन् को ऊपर से नीचे तक देखा। चुनाव में जीतकर विधानसभा का सदस्य बन जाने पर भी उसमें कोई अंतर नहीं आया था। वही आधी बाँह की शर्ट, लुंगी, बिखरे बाल और दुबला-पतला शरीर।

"मेरी बहिन मीना और आपकी बहिन भारती, स्कूल की सहपाठिनी हैं; आज भी महिला आश्रम में साथ-साथ काम करती हैं। भारती कभी-कभी हमारे घर भी आया करती है।" गणेशन् ने बात आरंभ की।

चिदम्बरम्, थोड़ा गणेशन् के पास खिसक गया। गणेशन् शान्तिपूर्वक कहे जा रहा था—

"हमारी बातें राजनीतिक झगड़ों से शुरू हुई थीं। उसने अपने भाई सुभाष को मुझसे अलग कर लेना चाहा। मुझे भी गांधीयता का पाठ पढ़ाना चाहा। इनमें उसे सफलता न मिल सकी। एक तरह से, मैं ही उससे हार गया हूँ।"

"ऐसा !" चिदम्बरम् के लिये सभी बातें नई थीं।

"हाँ, मेरा और विवाह का कोई संबंध नहीं, मैं ऐसा सोचा करता था। मैंने जो जीवन अपनाया है, वह राजनीतिक संघर्ष का जीवन है। परिवार, बाल-बच्चों के कारण स्वार्थ ऊपर आ जायेगा। देश को देखा जाय अथवा घर, ऐसी समस्या आ जायेगी। लेकिन मेरे निश्चय को आपकी बहन ने डिगा दिया है…" बीच में चुप रहकर, "आपकी क्या राय है ?" पूछा।

चिदम्बरम् मौन हो गया; उसके लिये यह अप्रत्याशित बात थी। उसे वह जल्दी न तो स्वीकार ही कर सका और न इंकार ही। इधर कुछ दिनों से घर में भारती की सादगी और किफायती का राज उसकी समझ में अब आया। भारती ने इस विषय में उससे कुछ भी न कहा था।

"भारती ने स्वयं आपके द्वारा, आपके पिता और माता से कहने के लिये कहा था," गणेशन् ने कहा।

"मैं कहूँगा।"

"अपना विचार नहीं बताया न ?"

"पहले ही निश्चित हुआ उसका विवाह टूट चुका है, यह बात जानते हैं आप ? डा० राजन नाम के एक लड़के से…"

"उसी ने बताया था। इसी को आधार बनाकर, मैं उसे, व्यक्तिवादियों के इस देश में मानवता का कोई सम्मान नहीं है, यह बात समझा सका था। उसे मैं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अपनी पार्टी में खींच सका इसका यही मूल कारण है। वह भाग्यशाली है जो इससे बच गई। लेकिन इस बात के कारण अपने परिवार के अपमान को वह नहीं सह सकी।"

गणेशन् के मुंह से भारती की अभिलाषा सुनकर चिदम्बरम् विचलित हो गया। इस देश में विवाह ईश्वरविधीत नहीं होता; माता-पिता अथवा दूसरों के द्वारा भी निश्चित नहीं किया जा सकता; सम्बन्धी लड़की-लड़के के निश्चय पर भी नहीं होता; केवल पैसे से तय किया जाता है, इस सत्य से चिदम्बरम् तिलमिला गया। पाँच हजार के लिये ही, सुन्दरेशन् ने भुवनेश्वरी की उपेक्षा कर दी थी, इस बात को भी उसने सोचा। कीमत देकर, बेटी के बेचने के इस व्यापार का नाम ही विवाह है!

"क्या कहते हैं आप?" गणेशन् ने पुनः पूछा।

"पिताजी से पूछकर बताऊंगा। भारती भी आगा-पीछा समझने योग्य है। बिना सोचे-विचारे वह आपके निकट न आई होगी। पिताजी भी सोच-समझ कर निर्णय लेंगे।"

"मेरे हाथ में पैसा नहीं है। कोई नियमित आमदनी भी नहीं है। विधान-सभा का सदस्य होने के नाते कुछ मिलता है, जो टैक्सी के खर्च के लिये भी पूरा नहीं होता। बहिन की आमदनी से गुजर कर रहा हूँ; भारती के आ जाने से उसकी आमदनी से परिवार चलाना पड़ेगा। यह सब बता दीजियेगा। मेरा साला बनने की आपकी इच्छा है या नहीं, पहले यह बता दीजिये। मैं आपकी इच्छा जानना चाहता हूँ।"

"भारती की इच्छा में मैं बाधक न बनूंगा।"

"धन्यवाद चिदम्बरम्; बहुत-बहुत धन्यवाद!" गणेशन् ने चिदम्बरम् का दायाँ हाथ मजबूती से पकड़ लिया।

२९. राजनीतिक कल्याण

गणेशन् से विदा ले, जब चिदम्बरम् ने यह बात अपने पिता से बताई तो वे स्तब्ध रह गये। उसके पास पैसा न था, या वह दूसरी जाति और कुल का था इस बात की चिंता उन्हें न थी।

उनको गणेशन् के विषय में कुछ-कुछ पहले से ही मालूम था। जब वे अधिकारी थे, तब उसके विरुद्ध पुलिस ने जो रिपोर्ट दी थी उसे उन्होंने देखा था। वह भयंकर क्रान्तिकारी था; किसी भी नतीजे की चिंता न करने वाला एक तीव्रवादी था। यह सब पुलिस ने लिख रखा था। उसे खतरनाक साम्यवादी बताकर पुलिस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उसके पीछे लगी रहती थी। पोन्नइया की भी उस पर आँखें लगी थीं। यह सब सोचकर रामलिंगम् चिंतित हो गये थे।

"क्या सोच रहे हैं ?" चिदम्बरम् ने पूछा।

रामलिंगम् सीधे बैठ गये, बोले नहीं।

"आपको यह पसंद नहीं है क्या ?" उसने दुबारा पूछा।

"मैं एक बेटी का बाप हूँ; अंत तक गाँधी के सिद्धान्तों पर विश्वास करता हूँ, इसलिये सोचना पड़ता है।"

"भारती भी सयानी है; उन लोगों में इस विषय की बात हो चुकी होगी, ऐसा सोचता हूँ।"

रामलिंगम् ने लम्बी साँस ली। जब तक वे अधिकारी थे, तब तक बड़े-बड़े लोग उनकी बेटी अपने लड़के के लिये, माँगने के लिये आया करते थे। किन्तु अब वैसा न था।

"आप गणेशन् को जानते हैं ? उनके विषय में आपके क्या विचार हैं ?" चिदम्बरम् ने कहा।

"उस लड़के के विषय में थोड़ा-बहुत जानता हूँ। हमेशा संघर्ष, जेल, यहाँ-वहाँ भागे फिरना, झंझटें, ऐसे लड़के के साथ कोई लड़की सुख से कैसे रह सकती है ? रुपये-पैसे की मुझे बहुत चिंता नहीं है, लेकिन बाल-बच्चे हो जाने पर उनके लिये खाने-कपड़े के लिये परेशान होने की स्थिति भारती के ऊपर न आनी चाहिये, हैं न ? गणेशन् में परिवार का भार उठाने की जिम्मेदारी नहीं है, ऐसा सोचता हूँ।"

"उसके सिद्धान्त भी विरोधी हैं, ऐसा भी सोचते हैं ?"

"वैसा क्यों न सोचूं ? लेकिन इस विषय में, दूसरी पीढ़ी के कामों में दखल देने का अधिकार मुझे नहीं है।"

लक्ष्मी अम्मा दूध लेकर उस कमरे में आगई। "भारती अगर खाली हो तो बुला ले आओ; एक बात करनी है" रामलिंगम् ने कहा।

माँ-बेटी आकर जमीन पर बैठ गई। चिदम्बरम् ने जो बातें बताई थी, सब बताकर, "यह सब सच है, भारती ?" रामलिंगम् ने पूछा।

भारती ने सिर नीचा किये ही 'हाँ' के भाव में सिर हिला दिया। उसकी आँखें लाज से लाल थीं। भारती ने सिर उठा कर चिदम्बरम् की ओर देखा, मानो वह भाई को, अपने पक्ष में, पिताजी से प्रार्थना करने के लिये कह रही हो।

"पुलिस हमेशा छाया की तरह उस लड़के के पीछे लगी रहती है, यह मालूम है तुम्हें ?" रामलिंगम् ने पूछा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"उन्होंने ही बताया था।"

"इतने पर भी, तुम उससे शादी करना चाहती हो, बेटी ?"

भारती जवाब देने में झिझक रही थी; उसने चिंतित नजरों से पिता को देखा।

"बोलो भारती !"

"उन दिनों आप के पीछे भी तो पुलिस लगी रहती थी; अम्मा अब तक नहीं भूली हैं !"

रामलिंगम् खुल कर हँसने लगे।

"मुझ से शादी कर लेने के बाद, तुम्हारी माँ के सामने वह स्थिति आई थी। उन दिनो मैं रेवेन्यू इंस्पेक्टर था, डिप्टी कलेक्टर हो जाऊँगा इस आशा से इन्होंने मुझसे शादी कर ली थी; बिचारी को बहुत कुछ भोगना पड़ा था।"

"छोड़िये अपनी ये बातें ! इस समय उनकी क्या जरूरत आ पड़ी ? भगवान ! वैसा कष्ट किसी भी लड़की को न मिले !" लक्ष्मी अम्मा का गला भर आया।

"तुम्हारी बेटी को तो वही जिन्दगी पसंद है !"

लक्ष्मी अम्मा पूर्ण विवरण जान कर कसमसा गई। रोते हुये, बेटी को गले से लगा, उससे, उस बात को भूल जाने के लिये आग्रह करने लगीं।

"लक्ष्मी !" रामलिंगम् ने उन्हें डपट दिया। "रोओ-गाओ नहीं, तुम अपने विचार शान्तिपूर्वक बता दो; भारती क्या कहती है, उसे भी सुन लें।"

"अप्पा ! जो भी विपत्ति आयेगी, मैं झेल लूंगी, ऐसा सोचने के बाद ही मैं इस निर्णय पर पहुँची हूँ।" भारती ने कहा।

"तुम नहीं समझती हो, बेटी; अभी छोटी हो।" लक्ष्मी ने दपट कर कहा। लक्ष्मी अम्मा को चुप रहने का इशारा कर रामलिंगम् कहने लगे—

"मैं शादी करने के बाद राजनीति में कूदा था। इस लड़के की स्थिति दूसरी हैं। हमेशा पार्टी के काम में लगा रहता है; फकीर बना रहता है। वह एक त्यागी आदमी है; अन्वानन्द का चेला है। उसको उसकी चाल में छोड़ देने से उसके लिये भी अच्छा है, देश के लिये भी अच्छा है।"

इतना सुनकर भारती के आँसू झर-झर गिरने लगे।

"रोती क्यों हो, अपने विचार बताओ, भारती !" चिदम्बरम् बोला।

बहुत-सी लड़कियाँ भी बिना विवाह किये रही आती हैं, है न ? अप्पा के कहने के अनुसार मैं भी वैसे ही रह लूंगी।"

रामलिंगम् घबड़ा गये।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"तुम्हारी भावनायें मैं समझ रहा हूँ भारती !" थरथराई आवाज से रामलिंगम् बोले।

गरम कड़ाही से चूल्हे में कूद जाना बुद्धिमानी नहीं है बेटी ! क्रान्तिकारी आदमी की जिन्दगी हमेशा खतरे में रहती है। बाप हूँ, इसलिये मुझे चिंता है !"

"जिन्दगी के खतरे की न उन्हें चिंता है, न मुझे !" भारती ने कहा। "हिंसा का अर्थ केवल यही नहीं है कि शरीर का खून बहे। लोगों को धोखा देना, कालाबाजारी, जखीरेबाजी, गरीबों का भोजन चूसना उनका खून चूसने के बराबर है। मैं गांधीजी के विचारों के अनुसार ही कहती हूँ। गांधीजी ने कहा था, सत्य से ही अहिंसा रह सकेगी, इस समय सत्य कहाँ है ?"

"जैसा तुम सोचती हो, यदि साम्यवाद आ भी गया, तो भी एकाएक आदमी न बदल जायगा। हम रामराज्य की कल्पना करते हैं, उसी प्रकार तुम भी एक कल्पनालोक में हो।"

"पिताजी, भारती के विवाह के संबंध में आप के क्या विचार हैं ?" चिदम्बरम् ने पूछा।

"तुम क्या कहते हो ?"

"दोनों जीवन के सुख-दुःख पर विचार करने के बाद ही निर्णय पर पहुँचे होंगे; इन्हें संन्यासी न बनाना चाहिये !"

"तुम क्या कहती हो लक्ष्मी ?"

"मेरे कहने के लिये अब है ही क्या ? मेरी किस्मत में जो लिखा था, मेरी बेटी के भाग्य में भी ईश्वर ने वही लिखा होगा तो क्या मेरी बातें सुनेगी यह !"

रामलिंगम् मुस्कराते हुये बोले, "ठीक है भारती ! एक हफ्ता और सोच लो उसके बाद जैसी तुम्हारी इच्छा होगी वैसा ही करेंगे। यदि तुमको यही ठीक लगता है तो तुम खुशी से इस लड़के से शादी कर सकती हो।

३०. प्रथम प्रेमी

उद्योगपति, सामी ने, एक सप्ताह पहले ही तारीख निश्चित कर, अपने एक मित्र के साथ, एक शाम बिताने के लिये भुवना से तय कर लिया था। भुवना की सहानुभूति के पात्र, सामी भी उसके 'सम्मानित' ग्राहकों में थे।

सामी के तीन-तीन बड़े उद्योग थे। अपने उद्योग की बढ़ोत्तरी के लिये सामी कुछ बड़े राजनीतिज्ञों, शासकीय अधिकारियों और व्यापारियों को अपने हाथ में रखते थे। इन तमाम मित्रों के मनबहलाव के प्रबंध का कुल खर्च कम्पनी के खाते में डाला जाता था।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सामी को एक ही बात की चिंता थी, वह यह कि उनकी युवावस्था में उनकी मुलाकात भुवना से न हो सकी थी। उनकी पत्नी उनको कोई सम्मान न देती थी। उसी ने इनको रुपया देकर इनसे शादी की थी; उन्हीं रुपयों के बल पर उनका उद्योग इतना बढ़ा था, वह यह बात न भूली थी। बच्चे भी माँ के साथ ही इनको कुछ न समझते थे। घर की घृणा से सामी भुवना की शरण में आ गये थे। एक औरत की उपेक्षा के कारण दूसरी औरत के मधुर स्पर्श की आवश्यकता आ पड़ी थी। भुवना को भी उनके कारण कोई झंझट न होती थी। उनका आना एक सयाने बच्चे के समान था।

अपने नगर में दूसरे लोगों के अलावा पत्नी के कानों में भी बात पड़ जाने का भय था, इसलिये पहले जहाज में भुवना को भेजकर, दूसरे जहाज से स्वयं, कभी बंबई, कभी पूना, कभी हैदराबाद नगरों को चले जाया करते थे। वहाँ भुवना के लिये कार, बंगला, टेलिफोन आदि सबकी सुविधा जुटा देते थे। सभी खर्च, कंपनी पर डाला जाता। टैक्स अधिकारी यदि कहते कि आपकी कंपनी में खर्च बहुत है तो वे, चीजों की अधिक कीमत बढ़ जाना, श्रमिकों का वेतन बढ़ जाना, ये-वो बता देते थे।

उस दिन दूसरे पहर तीन बजे आने के लिये भुवना से तय था। आते-जाते किसी की आँख पड़ न जाय इसके लिये वही उपयुक्त समय था। भुवना से केवल इतना ही बताया था कि एक शासकीय अधिकारी उनके साथ आयेगा, उसका नाम, पता कुछ भी न बताया था। "अच्छा आदमी है; सुन्दर युवक है, उसे देखकर आप स्वयं उसे पसंद करेंगी," ऐसा कह दिया था।

सामी के साथ उस आदमी को देखते ही भुवना सिर से पाँव तक जल उठी। उसी समय दोनों को दरवाजे से ही वापस भगा दे, ऐसा लगा उसे। किन्तु भुवना क्षणभर में ही स्वयं को बदल लेने की कला में प्रवीण थी, "आइये, आइये।" कहती हुई दोनों को अंदर ले जाकर बिठाया।

"मेरे अभिन्न मित्र, सुन्दरेशन्; उद्योग-विभाग में बड़े अधिकारी हैं," सामी ने उसका परिचय दिया।

"ओ! ऐसा!" जैसे बिलकुल जानती ही न हो, भुवना ने कहा। "सामी के कारण मुझे बड़े लोगों से मिलने का सौभाग्य मिला है। खड़े क्यों हैं? बैठिये मिस्टर सुन्दरेशन्" भुवना बोली।

सुन्दरेशन् पसीने-पसीने था। सिर झुकाये, सोफा पर गिर पड़ा। उसके झुके सिर को देख, 'यह आदमी इस काम में नया है' सामी ने सोचा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"कॉफी मंगाइएगा ? मुझे कुछ जरूरी काम है, कॉफी पी लूँ और फिर चलूँ। आप दोनों आदमी आराम से बात कीजिए।" सामी ने सोचा शायद उन्हीं की वजह से सुन्दरेशन् शरमा रहा था।

कॉफी ले आने के लिए वहाँ से चली गई। सामी भी जल्दी-जल्दी उसके पीछे चले गए। बगल के कमरे में भुवना से फुसफुसाकर कहा, "नया आदमी है, एक महीने से आप से परिचय कराने के लिए मेरे प्राण लिए ले रहा था। थोड़ा अच्छी तरह देख लीजिएगा।"

अन्दर जाने पर भुवना जल्दी कॉफी लेकर न आ सकी। उसका सिर चकराने लगा था, जी मचलाने लगा था। वह सिर पकड़कर कुर्सी पर बैठ गई। एक बोतल से निकालकर कुछ दवा पी ली। उसकी परीक्षा का दिन आज ही था। उससे शादी करने वाला 'प्रथम प्रेमी' आज उसे खोजते हुए आ गया था। अप्रत्याशित नहीं, पूर्व योजनानुसार बहुत बड़ी सिफारिश लेकर आया था। भुवना ने दर्पण में अपने को देखा। वह फिर दृढ़ हो गई। उसमें खुशी, मुस्कराहट फिर लौट आई।

ट्रे में कॉफी लेकर भुवना आ गई। दूल्हे की तरह सिल्क का कुर्त्ता और जड़ाऊ धोती पहने, बैठे सुन्दरेशन् को पहले दिया। फिर सामी को देकर खुद भी पीने लगी।

"क्यों मिस्टर सुन्दरेशन् ! कॉफी पीने में भी शरमा रहे हैं ?" भुवना खिलखिलाकर हँस पड़ी।

"यदि कॉफी पसन्द न हो तो कोई ड्रिंक्स····" सामी ने कहा।

"नहीं-नहीं, कॉफी बहुत बढ़िया है।" सुन्दरेशन् ने कहा।

"आपके लिए मैं स्वयं बनाकर ले आई हूँ" कहकर भुवना ने सुन्दरेशन् की आँखों से अपनी आँखें मिलानी चाहीं। न जाने क्यों सुन्दरेशन् को अब भी साहस न हो रहा था। लगता था वह भुवना का चेहरा देखने से ही घबड़ा रहा था।

"अच्छा मैं चलता हूँ; खुशी से समय बिताकर आ जाइएगा !" कहकर सुन्दरेशन् की पीठ थपथपाकर सामी चले गए।

अब कमरे में उन दोनों के अलावा कोई न था। भुवना ने अन्दर से अच्छी तरह किवाड़ बन्द कर दिया। सुन्दरेशन् सोफा से उठकर उसका हाथ पकड़ना चाहा। उसके किवाड़ बन्द कर देने पर उसमें एक प्रकार की सुरसुराहट पैदा हो गई थी।

"ठहरिए; उधर बैठिए !" जैसे डपट रही हो ऐसा कहकर, "बहुत जल्दी कर रहे हैं !" भुवना हँसने लगी।

जैसे तमाचा लग गया हो वह फिर सोफा पर बैठ गया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"लगता है ऐसे घरों में आने का आपका पहला मौका है। मैं कितना लेती हूँ, मालूम है आपको ? यदि नहीं तो इसे भी सामी के खाते में डालना चाहते हैं क्या ?

"साथ में यहाँ लाने के अलावा उनकी और सहायता........" कहते हुए अपनी जेब से बिल्कुल नये नोटों का बंडल निकाल लिया। वे सभी सौ-सौ रुपये के नोट थे। हाथ में लेकर भुवना ने उनका शुरू का और अन्त का नम्बर देखा पक्के पचास नोट थे; पाँच हजार रुपये।

नोटों का बंडल बगल में रखकर, "इस समय लगता है खूब कमाई कर रहे हैं; बड़ी खुशी हुई" भुवना ने कहा।

"ऐसी कोई बात नहीं; बड़ी मुश्किल से इकट्ठा कर पाया हूँ। किसी भी तरह तुमसे मिलकर........"

"पाँच मिनट के लिए पाँच हजार देने के लिए आए हैं।" उसने कोई उत्तर नहीं दिया।

"मि० सुन्दरेशन् ! एक प्रार्थना है; मैं नहीं चाहती कि कोई भी आदमी मर्यादाविहीन 'तुम' कहकर मुझे सम्बोधित करे। आप अपने स्वार्थ के लिए पैसा दे रहे हैं; इस पैसे के बदले मैं अपना सम्मान नहीं देना चाहती।"

"भुवना !" सुन्दरेशन् ने भर्राई आवाज से कहा।

"कहिए"

"मुझे माफ कर दो"

"फिर मर्यादाविहीन बोल रहे हैं ?"

"माफ....माफ कर दीजिए भुवना।"

"माफ करने के लिए है ही क्या ? आपने जो मार्ग दिखाया था वह अपूर्व मार्ग है ! कार, बंगला, पैसा, बड़े लोगों का साथ यह सब पाकर मैं खुशी से जी रही हूँ। इसके लिए मुझे आपका कृतज्ञ होना चाहिए। उस समय यदि मैं पाँच हजार दे सकती और आप मुझ से शादी कर लेते तो क्या इस समय पाँच मिनट के लिए पाँच हजार देने के लिए आप आते ? फिसलकर गिर जाने के लिए मुझे राह दिखाने वाले समर्थ व्यक्ति हैं आप, मेरे गुरु।"

"अपने माता-पिता के हठ के कारण...." सुन्दरेशन् ने कुछ कहना चाहा।

"माता-पिता से पूछकर ही आपको मेरे साथ सम्बन्ध बनाना था। होटल के कमरे में ही आपका और मेरा शान्ति-मुहूर्त पूरा हो गया था, यह बात भी उनसे बता देनी चाहिए थी। आपने जब भी मुझ से जो भी माँगा वह मैंने आपको दिया। आपने मुझसे चिकनी-चुपड़ी बातें की, विलास किया, क्या इन सब के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लिए मैंने पैसा माँगा था....? आपसे विवाह करने के पश्चात् मैं कमाकर आपको पूरा का पूरा पैसा दे दूंगी। याद है आपको ?"

सुन्दरेशन् इन वाक्बाणों को सह न सका। झट से उसके पाँवों में गिर पड़ा। उसके पाँव पकड़ लिये। भुवना पाँव झटककर अलग हो गई। उसके पाँवों में लिपटे सुन्दरेशन् के हाथ नाग जैसे लग रहे थे।

"भुवना मुझे क्षमा कर....."

"क्षमा कर ?"

"केवल आज एक बार....."

"भुवना को लगा कि उसके मुँह में थूक दे। वह एक औरत का पति था केवल इस विचार से वह ऐसा न कर सकी।

"आप जा सकते हैं !" भुवना ने शान्तिपूर्वक किन्तु दृढ़ता से कहकर उसे दरवाजे का रास्ता दिखा दिया।

"क्या !" सुन्दरेशन् घबड़ा गया। उसे इस बात की बिल्कुल आशा न थी। हाथ पसारकर पैसा लेने वाली का इतना साहस ! क्रोध से उसका चेहरा लाल हो गया।

भुवना ने उपेक्षा से नोटों का बंडल उठाकर फ़र्श पर छितरा दिया। "अपना पैसा लेकर आप जा सकते हैं" फिर बोली।

सुन्दरेशन् में एकाएक यह भाव आ गया कि वह एक मर्द है। वह हार मानने के लिए नहीं आया था। वह उसके ऊपर झपटने के लिए तैयार था। जो माँगने से नहीं मिला था उसे छीनकर ले लेना चाहता था।

भुवना के हाथ ने मेज पर रखे फूल के गुलदस्ते को मज़बूती से पकड़ लिया, "यहाँ एक हत्या होगी; वह भी जल्दी ही !" गुर्राती हुई आवाज़ में भुवना ने कहा। "यदि आपने मुझे छुआ तो छूने वाले आपके हाथ को तोड़ देने के लिए यहाँ आदमी हैं। तब भी मेरा हाथ आपको नहीं छुएगा।"

दीवाल में लगी एक स्विच को भुवना ने दबा दिया। तेजी से घण्टी घन-घना उठी। सुन्दरेशन् की सभी नाड़ियाँ बन्द हो गईं। भुवना ने तेजी से जा दरवाजा खोल दिया। दरवाजे के बाहर एक नौकर खड़ा था।

"वो, इन रुपयों को समेटकर इन्हें दे दो। इन्हें ले जाकर इनकी कार में बैठा कर भेज दो।"

रुपया लेकर जेब में रख क्रोध और अपमान के साथ सुन्दरेशन् बाहर चला गया। दरवाजा बन्द कर भुवना सोफ़े पर औंधी लेट गई। उसका पूरा शरीर जल रहा था।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

३१. अविस्मरणीय वेदना

बहुत देर तक भुवना छटपटाती हुई सोफा पर पड़ी रही। अपने मन का भार उतारने के लिए वह जितना भी प्रयत्न करती भार हजारों गुना अधिक बढ़ता जाता।

'वह नीच न जाने कहाँ से फिर एकाएक आ गया? उसने जितनी क्रूरता की थी वह शायद अपर्याप्त थी। इसलिए पाँच हजार लेकर फिर आ गया था!'

अपने जीवन के वसन्तकाल में मन में किसी को बसाकर, अपना शरीर, अपनी आत्मा, काम, बातें उसी को सौंपकर, उसके सम्बन्ध में अपनी सहेलियों से बात करने के समय उसे गर्व होता था। पापी! वह काल बनकर उसके जीवन में आया था। कितने गर्व से फिर मिलने के लिए आ गया था! पैसे के घमण्ड ने उसकी आँखों पर पर्दा डाल दिया था।

उस दिन सुन्दरेशन् को भगाने के बाद भुवना ने पैसे के प्रति अपने प्रेम-पागलपन के विषय में विचार किया। जब वह काम के लिए यहाँ-वहाँ भटकती थी उस समय उसे काम देने के लिए कहने वाले, दो-एक महीने के लिए काम पर रखकर बाद में और अच्छा काम देने के लिए कहने वाले, सब लोगों को, केवल उसके शरीर की आवश्यकता होती थी।

चिकनी चट्टान पर उसे खड़ी कर, उपेक्षा भाव से एक धक्का दे सुन्दरेशन् ने उसे बाढ़ में धकेल दिया था। उस बाढ़ में लुढ़कती, बहती भुवना जिस किसी चट्टान को पकड़ने की कोशिश करती वही चट्टान चिकनी निकलती, उसे किनारे खींचने के लिए जो भी हाथ बढ़ाता, वह पुनः उसे सिर के बल उसी बाढ़ में ढकेल देता। भुवना हर प्रकार के आदमियों के व्यवहार को देखकर विरक्त हो गई थी। जो बाढ़ घुटने तक है वह अगर कमर तक पहुँच गई, तो क्या अन्तर आता है? कमर से गले तक पहुँच गई तब भी क्या? गले से सिर के ऊपर से बहने लगी तो क्या हो गया? वह डूबती ही चली गई।

रोना बन्द कर भुवना भीतर ही भीतर हँसने लगी। उसकी शिक्षा, उसका ज्ञान ठीक समय पर उसकी मदद करता था। उसकी पूंजी क्या थी, इसे वह जानती थी। उस पूंजी का अधिक से अधिक और कम से कम महत्व, उसका कैसे उपयोग किया जाना चाहिए इस पर उसने विचार किया। राजनीति और अर्थशास्त्र का जो अध्ययन उसने किया था वह व्यर्थ नहीं गया। देश की राजनीतिक और आर्थिक स्थिति का अध्ययन उसने किया। इस वातावरण में अपनी पूंजी से वह कितना

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कमा सकती है इसका भी हिसाब लगाया—'विनाश के लिए अब है ही क्या ?' वह साहस के साथ उस बाढ़ में कूदकर पूरी तरह डूब गई।

औषध, विज्ञान, अर्थशास्त्र, राजनीति, संस्कार इन सब के सम्बन्ध का ज्ञान उसे आवश्यक था। 'अगर यह ज्ञान न मिल सका तो झोपड़ियों में रहकर बुरी बीमारियों का शिकार बन आधे पेट खा प्रतिदिन मरकर जीने की नौबत आ जायेगी' भुवना ने सोचा था। इस विचार से उसका साहस और बढ़ गया।

उठकर भुवना अपने कमरे में गई। वहाँ रखी आलमारी को खोला। उसमें उसके जीवन के भयकर मोड़ की गाथा रखी थी। उसने उसे लेकर खोला। उसमें लिखे हुए शब्द जैसे किसी पागल की बातें हो :

'हे ईश्वर, हे भगवान् ! मैंने तुम्हारा कभी विश्वास नहीं किया भगवन् ! आज तुम पर विश्वास करने के अलावा मेरे सामने कोई रास्ता नहीं है। मेरी इस वेदना से क्या तुम मुझे छुड़ा सकोगे ? नहीं छुड़ा सकोगे ? मेरे ऊपर जैसे कोई पिशाच चढ़ा है और मुझे नचा रहा है, तुममें यदि शक्ति हैं तो क्या तुम इसे रोक सकते हो ? लगता है मैं पागल हो जाऊँगी क्या तुम मेरी रक्षा न करोगे ? सुन्दरेशन् ने मुझे जो नाच नचाया हैं वह मैं अपनी माँ से कैसे बताऊँगी ? अपने पिता से कैसे कहूँगी ?'

वह नोट, उस भुवना के हृदय की टीस थी, जो दुनिया से अनभिज्ञ थी, दुनिया को समझने वाली भुवना का सिर, उसे देखकर चकराने लगा। उसने दस-बारहं पन्ने पलटे, एक जगह उसे चिदम्बरम् का नाम दिख गया। उसकी आँखें उस पर लग गईं। उसने उसे पढ़ा :

"चिदम्बरम् ! कई महीनों तक आपका साथ रहा; आपने मेरी कितनी मदद की थी, लेकिन, बदले में मुझसे, कभी भी कुछ भी नहीं चाहा; एक दिन आकर, मुझसे बड़ी सरलता से पूछा था, "मुझसे शादी करना चाहती हो ?" आप कितने महान् हैं····अब मैं कौन-सा मुंह लेकर आपके सामने आऊँगी ? उस दिन जो प्रश्न आपने मुझसे किया था, आज यदि मैं वही प्रश्न आप से करूं तो आप क्या उत्तर देंगे ?···आपसे सत्य छिपाकर, आपको धोखा दे, आपके साथ जिन्दगी बिताने की मेरी अभिलाषा है ऐसा सोचेंगे आप ?····केवल आपसे सभी बातें साफ-साफ बताने के लिये मैं तड़प रही हूँ। नहीं, नहीं, कभी नहीं ! आप से न मैं सही बातें बताऊँगी न झूठ बोलूंगी। मैं आपके सामने ही न आऊँगी। मैं उस लायक नहीं हूँ। हे ईश्वर ! इसी का नाम विधि है ? अथवा मेरी मति ही भ्रष्ट हो गई थी, जिसका फल भोग रही हूँ ?"

नोट बुक बंद कर, आँखें मूंदे कुर्सी पर टिक गई। उसकी आँखों से आँसू

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गिर रहे थे। वह जल्दी से जल्दी चिदम्बरम् से मिलने के लिये विह्वल थी। कार्यालय में जाकर चिदम्बरम् को फोन किया, "हेलो, संपादक चिदम्बरम् हैं?" पूछा।

"मैं ही बोल रहा हूँ।"

"इसका मतलब है कि मैं भाग्यशाली हूँ।"

उसने कोई जवाब नहीं दिया।

"क्यों संपादक जी! कौन बोल रहा है, इसे नहीं जान पाये क्या? मेरी आवाज भी आपको भूल गई क्या?"

"भुवना?" उस आवाज के माध्यम से चिदम्बरम् का हृदय, भुवना के कानों में मानो शहद डाल दिया था।

"अभी तक आप घर नहीं गये?"

"बस जाने का समय ही है।"

"आज आपके दर्शन इस गरीबिन को मिल सकेंगे?"

"मेरे जैसे गरीब का दर्शन सबको किसी भी समय मिल सकता है। ऐसे लोगों के पास, छिपने के लिये, कार, बँगला नहीं होता। वे छिपकर रह भी नहीं सकते" चिदम्बरम् ने कहा।

"झिड़क लीजिये, जी भर कर, झिड़क लीजिये! मैं स्वयं आपको लेने के लिये आ जाऊँ अथवा केवल ड्राइवर को भेज देना पर्याप्त होगा?' भुवना ने पूछा।

"पता बता दो मैं स्वयं आ जाऊँगा।"

"आपको कष्ट करने की जरूरत नहीं है। पन्द्रह मिनट में मेरी कार आपके पास पहुँच जायगी।"

कार भेजकर, भुवना उसकी प्रतीक्षा में बँगले के दरवाजे पर खड़ी थी। कार चिदम्बरम् को लेकर, आधे घंटे में वापस आ गई। इतना साधारण आदमी उस कार में पहले कभी न बैठा था।

कार से उतर कर, चिदम्बरम् ने, भुवना को अपलक अपनी ओर देखते हुये देखा। उस बँगले के वातावरण में भुवना को देखकर, चिदम्बरम् को दोनों के बीच जमीन-आसमान का अंतर लगा। भुवना उस को 'ड्राइंग रूम' में नहीं ले गई। सीधे ऊपर, अपने व्यक्तिगत कमरे में ले गई। वहाँ केवल एक छोटी कुर्सी, मेज और चारपाई थी। कमरे में घुसने के समय वह थोड़ा-सा झिझका।

"इस कमरे के अंदर घुसने वाले, पहले मर्द आप ही हैं; बेझिझक चलिये। यह मेरा व्यक्तिगत कमरा है," भुवना ने कहा।

चिदम्बरम् को चारपाई पर बैठने के लिये कह कर, अपने लिये कुर्सी खींच लिया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"लगता है, तुम सचमुच पूँजीपति हो ! इस मकान में तुम्हारे साथ और कोई..."

"मैं अकेले रहती हूँ; बड़े-बड़े लोग आते हैं; चले जाते हैं" कह कर भुवना ने इस बात पर ध्यान दिया कि क्या उसके चेहरे में कोई परिवर्तन आता है ? परिवर्तन था ही। जैसे कड़वी दवा पी ली हो, ऐसा था वह परिवर्तन।

"अचानक मेरी याद आ गई ?"

भुवना दुःख से, मुस्कराती हुई "याद तो दिन में नौ बार आती थी; साहस न पड़ता था," बोली।

चिदम्बरम् के चेहरे से स्पष्ट था कि उसका गुस्सा अब भी शान्त न हुआ था। दिल्ली से लौटने के बाद, भुवना की उपेक्षा करना, और उसे पूरी तरह भूल जाने का उसे पूरा अधिकार था।

भुवना, उसके नजदीक जा, दायें हाथ से उसका मुँह ऊपर कर, "सच सच बताइये, मेरे ऊपर नाराज हैं न आप ?"

चिदम्बरम् ने कोई जवाब नहीं दिया; उसकी आँखें नम हो गई।

"मेरे इस कलंकित जीवन को देखकर आप को घृणा होगी, इसीलिये आप से छिप कर रहना चाहती थी। आप के प्यार को खोना भी नहीं चाहती। मेरे इस, दो पाटों के बीच फँसे जीवन की वेदना को समझते हैं आप ?"

उसकी बात में न तिरिया-चरित्र है, न झूठ है और न धोखा, चिदम्बरम् ने ऐसा अनुभव किया। वह फिर बोली—

"पहले सोचा था कि आपको इस घर में न बुलाऊँ; कहीं बाहर प्रबंध कर आप से मिलूँ। आपको यहाँ का वातावरण पसंद न होगा, इस बात को जानती हूँ। फिर भी इस समय मैं और कुछ न कर सकी। इस घर में, यह कमरा मेरे शरण लेने का कमरा है। आप इस में जब भी चाहें, फोन कर, आ सकते हैं। लेकिन केवल एक विनती है....."

"क्या ?"

"मैं तुलसी की झाड़ी नहीं हूँ, जिसे कोई अपने घर में लगा सके। मुझे अपनी गृहिणी बनाने की इच्छा आपको कभी न करनी चाहिये। मैं सार्वजनिक औरत हूँ; वेश्या हूँ; दासी....."

आँसू की बूँदें ढरकाती, विचलित भुवना के शब्द फूट रहे थे। उसके मुँह को हाथ से बंद कर, चिदम्बरम् ने उसे अपने सीने से चिपका लिया। भुवना, उसकी गोदी में गिर कर, बड़ी देर तक फूट-फूट कर रोती रही।

मुझे सब से पहले दासी बनाने वाला अभी-अभी यहाँ से वापस गया है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उन विचारों को मैं सह न सकी; इसीलिये अपनी प्रतिज्ञा तोड़कर आपको यहाँ बुलाया है। मुझे क्षमा कर दीजिये!"

चिदम्बरम्, जैसे बच्चे को समझाया जाता है, इस प्रकार भुवना को धीरज बँधाता रहा। फिर विदा ले वहाँ से चलना चाहा। भुवना ने उसे जाने न दिया; हठ कर उसे अपने साथ खाना खिलाया।

चिदम्बरम् के हठ के कारण भुवना ने उसे जाने दिया; उस दिन उसको छोड़ने का उसका मन न था। चिदम्बरम् अपना हृदय वहीं छोड़कर, केवल शरीर लेकर वहाँ से चल पड़ा।

३२. सुभाष की बौखलाहट

शाम के भोजन की तैयारी पूरी कर लक्ष्मी अम्मा किताब पलटती हुई कुर्सी पर बैठी थीं। किताब में उनका मन न लग रहा था। उनकी बेटी, विवाह कर, जब से घर छोड़ कर गई थी, उन्हें घर सूना-सूना लगता था। भारती का ब्याह उन्हें ब्याह जैसा न लगता था। लाड़-प्यार से पली लड़की; एकाएक किसी के साथ भाग जाय, तो उस लड़की के माँ-बाप की जो स्थिति होगी, लक्ष्मी की भी वही स्थिति थी।

लग्न, मुहूर्त, निमंत्रण-पत्र, रिश्तेदारों की भीड़, बाजा-गाजा, संस्कार, भोज आदि कुछ भी न था। गणेशन् और भारती रजिस्ट्रार के दफ्तर में शादी कर आ गये थे। दूसरे दिन कुछ मित्रों, रिश्तेवालों को भोजन दिया गया था, बस! वर-वधू केवल एक दिन ठहर कर, दूसरे दिन लड़की ससुराल चली गई थी। उसके पीछे एक गाड़ी में सामान भेज दिया गया था। एक-एक पैसा बचाकर; लक्ष्मी अम्मा ने बेटी के लिये, कपड़े, गहने, बर्तन आदि का प्रबंध किया था।

कुछ दिन के बाद भारती अपने मायके आई, तो उसकी देह में आधे से भी कम जेवर थे। पूछने पर बताया कि उसने अपनी ननद मीना को दे दिया था। मीना लेती न थी पर उसने हठ कर दे दिया था। लक्ष्मी अम्मा सोचतीं; यदि ऐसा जानती तो कुछ चीजें अपनी पुत्रवधू के लिये रख लेतीं।

"अपनी बेटी ने क्या किया है, जानते हैं आप?" आँसू गिराते हुये लक्ष्मी अम्मा ने पति से सब कुछ बता दिया।

"जैसा तुम बताती हो, यदि भारती ने वैसा किया है तो मुझे गर्व है। उसके जीवन में अब किसी प्रकार की कठिनाई न आएगी। जीवन की सफलता का रहस्य वह जान गई है।" रामलिंगम् ने कहा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रामलिंगम् की बातों ने आग में घी का काम किया। लक्ष्मी का रोना और अधिक बढ़ गया।

"देखो ! हज़ारों में एक ही आदमी ऐसा मिलेगा जो आवश्यकता से अधिक पास होने पर दूसरों को देना चाहे। सभी लोग और अधिक पाने की लालसा रखते है; इसीलिये समाज में झंझटें बढ़ती हैं। तुम्हारी बेटी ने दूसरे के साथ बाँट लिया है, इससे तुम्हें गर्व होना चाहिये।"

लक्ष्मी अम्मा सोचते हुये किताब पलट रही थीं।

उसी समय सुभाष ने स्कूल से आ, साथ ले आई एक पत्रिका को माँ की गोद में झटके से फेंक दिया। वह, उसी दिन निकला 'विडिवेल्ली' का अंक था।

"क्या है, सुभाष ?"

"खोल कर देखो न ! इस को देखने पर आँखें साफ़ करनी पड़ेंगी, पढ़ने पर मुँह साफ करना होगा। इसे देख कर मेरे साथी मेरा मजाक उड़ाते हैं !" लाल आँखें किये सुभाष ने कहा।

लक्ष्मी अम्मा की समझ में कुछ न आया। उन्होंने पत्रिका पलट कर देखी। अर्धनग्न, तीन चौथाई नग्न, विभिन्न कोणों में रंग-बिरंगे चित्र थे। सभी चित्र औरतों के थे। सिनेमा स्टारों के चित्र थे। पुरुष-स्त्रियों के चित्र, एक दूसरे के साथ भद्दे तरीके से मिले हुये थे। अभिनेत्री, श्यामला का सचित्र, धारावाहिक जीवन परिचय; विदेशी स्त्री-पुरुषों के नग्न चित्र, वासनात्मक क्रीड़ाओं में लिप्त; यही सब उस पत्रिका में था।—सह-संपादक पंजू, शिक्षा, संस्कृति, संस्कार, सभ्यता, आदि को जड़ से उखाड़ कर फेंक देने के लिये जैसे तुल गया था। लक्ष्मी अम्मा का मुँह घृणा से भर गया।

"तुम यह सब क्यों पढ़ते हो ?" डपटते हुये बोलीं।

"अपनी; माँ, बहिन, पत्नी का इस प्रकार चित्र छाप कर उसे ऐसा व्यापार करना चाहिये ?"

"क्यों रे ! अपनी उमर को देखो; तुम्हें ऐसी बातें करनी चाहिये क्या ?"

"मेरे साथी मेरा मजाक उड़ाते हैं ! कहते हैं, "इस पत्रिका का संपादक तुम्हारा भाई इस पत्रिका में रह कर, पेट पालन...."

चटाक से एक तमाचा उसके गाल में पड़ा। स्वतंत्रता संग्राम में शामिल होकर, रामलिंगम् को अपनी नौकरी छोड़नी पड़ी थी; बाद में फिर से धर्मरक्षा के लिये उन्हें नौकरी छोड़ देनी पड़ी। परिवार का पेट चलाने के लिये चिदम्बरम् ही कमाने वाला है, यह बात भी उसके भाई को ही पसंद नहीं ! लक्ष्मी अम्मा के विचार उठ रहे थे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"सुभाष ! हमारा पेट भरने के लिये तुम्हारे भाई का कमाना तुम्हें अच्छा नहीं लगता ? तुम चाहते हो कि हम लोग बिना खाना, कपड़ा और मकान के सड़क पर खड़े हों ?"

चिदम्बरम् आकर दोनों की बातें चुपचाप सुन रहा था; उस पर किसी का ध्यान न गया था। चिदम्बरम् सुभाष के गले में हाथ डाल कर उसको अपने कमरे में ले गया।

"अपने मन की बातें खुल कर मुझ से कहो", चिदम्बरम् ने कहा।

"आपका 'बुर्जुवा' मालिक पत्रिका से लाभ कमाने के लिये, जनता के संस्कार, संस्कृति, सभ्यता, विवेक का विनाश कर उनके अंदर विष घोल रहा है। इसके कारण पंजू को आप ठीक रास्ते पर नहीं ला सकते !"

चिदम्बरम् समझ गया कि सुभाष के मुँह से गणेशन् बोल रहा था, फिर भी उसके कटु सत्य की उपेक्षा वह न कर सका।

"तुम क्या चाहते हो, मैं क्या करूँ ?"

"इस प्रकार लिखने वाले पंजू को आप निकाल दीजिए; अथवा आप ही अलग हो जाइये।"

"उसको अलग करना संभव नहीं है; चाहूँ तो मैं अलग हो सकता हूँ।"

"आप मेरी पार्टी में शामिल हो, हमारी पत्रिका में लिखिये। यहाँ चाहे उतना पैसा भले ही न मिले जो भी मिलेगा, उसी से काम चला लेंगे।"

"गणेशन् ने तुमसे इस विषय में कहा है ?"

"हाँ।"

चिदम्बरम् सोच में पड़ गया। इस लड़के को कैसे समझायें; सुभाष समझ सके, इस प्रकार चिदम्बरम् उसे समझाने लगा।

"पत्रिका-उद्योग विवेक और संस्कार बढ़ाने वाला उद्योग है; पैसा कमाने वालों के हाथ में इस उद्योग को न होना चाहिये, इसे मैं स्वीकार करता हूँ। यह सिद्धान्तवादियों का काम है; लाख से कई लाख बनाने की इच्छा रखने वालों का नहीं, तुम्हारी इन बातों पर मैं सहमत हूँ।"

"तब आप इसे छोड़कर हमारी पार्टी की पत्रिका में क्यों नहीं लिखते सुभाष ?"

"तुम्हारी पार्टी के शासन वालों से कई देशों में लिखने और बोलने की स्वतंत्रता छिन गई है। लिखने की स्वतंत्रता चाहे पैसे की ताकत से छीनी जाय चाहे पद की ताकत से छीनी जाय, दोनों एक ही हैं। विचार और भावनाओं का विकास ही समाज की मुख्य जड़ है। हमें पैसे की ताकत का विनाश करना है, उसी प्रकार, पद और पार्टी के आधिपत्य को भी बढ़ावा नहीं देना है। इस देश की जनता को जैसे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भोजन की आवश्यकता है, उसी प्रकार स्वतंत्रता की भी। भोजन चाहने वाला, स्वतंत्रता की कीमत नहीं समझता; स्वतंत्रता की बात करने वाला, भूखे आदमी की परवाह नहीं करता। हमें भोजन और स्वतंत्रता दोनों की आवश्यकता है, गाँधीजी ने ऐसा कहा था, इसीलिये मैं उनके पक्ष में हूँ।"

सुभाष कितना समझ सका, कहा नहीं जा सकता, किन्तु उसे सन्तोष न हुआ था। "तीसरे दर्जे की पत्रिकायें, तीसरे दर्जे के सिनेमा और तीसरे दर्जे के राजनीतिज्ञ इस देश को नष्ट करने में तुले हैं। इनका विरोध करने के लिये आप हमारे साथ शामिल होने से कतरा रहे हैं।" सुभाष ने कहा।

"मैं अपनी शक्ति भर अकेले संघर्ष कर रहा हूँ। जब तक लेखन में कोई बाधा नहीं आती तब तक वहाँ हूँ। जीविका के लिये मैं अपनी इच्छा के प्रतिकूल कोई काम न करूँगा। साथ ही इस परिवार के भरण-पोषण का भार भी मेरे ऊपर है। मैं धर्मसंकट में पड़ा हूँ, इस पर भी विचार करना है, सुभाष !"

सुभाष फटी आँखों से भाई का मुँह देखता रहा। इसकी आँखों से आँसू गिर रहे थे।

"मुझे क्षमा कर दीजिये; मेरे साथी मेरा मजाक उड़ाते थे इसलिये……"
चिदम्बरम् ने प्यार से उसे गले लगा लिया।

"कोई क्या कहता है चुपचाप सह लो। हमें विश्वास है, हम इस परिस्थिति को बदल सकेंगे, तब तक धीरज धरे रहो। तुम मुझे गलत न समझो बस !"

"आपको अपमानित करने वाले पंजू को क्या मजा चखाता हूँ, देखियेगा" सुभाष की आँखें भयंकर थीं।

"सुभाष !" चिदम्बरम् चीखा। उसके अंदर एक भय समा गया।

सुभाष भाई की पकड़ से छूटने के लिये तड़फड़ा रहा था। "इस देश की करोड़ों जनता का विनाश करने वाले, कोटीश्वरों का चरण धोने वाले पंजू को भूसा जैसा उड़ा दूँगा कि नहीं देख लीजियेगा", सुभाष ने जोश-खरोश से कहा।

"मूर्ख !" दपट कर, चिदम्बरम् उसे समझाने लगा। उसे शान्त करने में चिदम्बरम् को बहुत प्रयत्न करना पड़ा।

३३. एक घंटा

भुवना के मकान के ड्राइंग रूम में विडिवेल्ली का सहसम्पादक पंजू उससे मिलने की प्रतीक्षा में बैठा था। पंजू और तुरैस्वामी ने सलाह कर भुवना का इन्टरव्यू प्रकाशित करने का निश्चय किया था। बहुत दिनों से तुरैस्वामी का मन भुवना पर था; वह कभी-कभी दिल्ली जाकर उनके काम-धाम भी देख लिया करती

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

थी, इसे मन में रखकर तुरैस्वामी ने भुवना से भेंट करने के लिए पंजू को भेजा था। "एक घण्टे के लिए पाँच हजार लेने वाली औरत है; थोड़ा सँभलकर रहियेगा" सचेत कर दिया था।

दुनिया में कौन ऐसा आदमी है जिसे अपना प्रचार पसन्द न हो, तुरैस्वामी और पंजू का ऐसा विश्वास था। सिनेमावालों और राजनीतिज्ञों को अपना साधन बनाकर पैसा बटोरने में लगे थे। पंजू को भी इस समय पैसों की तंगी न थी। कई रास्तों से उनके पास पैसा आ रहा था। घर में तड़क-भड़क की चीजें, चाँदी के बर्तन; सिल्कन-साड़ियाँ, गहने, जेवर धीरे-धीरे आकर इकट्ठा हो रहे थे। कामिनी और कांचन की उनकी प्यास इतनी अधिक बढ़ चुकी थी कि वे अघा ही नहीं रहे थे; शायद आज वह समय उनको मिल गया था।

दरवाजे पर पंजू को कुछ छाया-सी दिखी, उन्होंने घूमकर देखा। उनका हृदय धक्-धक् करने लगा। इसके पहले उन्होंने इतनी सुन्दर औरत कभी न देखी थी।

"आपसे कुछ बातें करने के लिए मेरी पत्रिका के सम्पादक आयेंगे, तुरैस्वामी ने मुझसे कहा था" भुवना बोली।

"मैं ही वह सम्पादक हूँ; नाम है पंजाबकेशन।" पंजू ने हाथ जोड़ लिया; भुवना ने भी जवाब में हाथ जोड़ लिया।

"!आप ही सम्पादक हैं ?" जैसे कुछ जानती न हो, भुवना ने पूछा।

"हाँ।"

"मुझे याद आता है कि मैंने कोई दूसरा नाम...."

"चिदम्बरम् के विषय में कह रही हैं ? वे केवल सम्पादकीय लिखते हैं। बाकी मैं ही लिखता हूँ।"

"ओ हो !"

"आपका इन्टरव्यू लेने के लिए बहुत दिनों से मेरी इच्छा थी। आज जाकर समय........"

"आपके लिए एक घण्टे का समय दे रखा है मैंने" भुवना ने कहा।

"पर्याप्त है !" पंजू ने कहा। उनके मालिक ने एक घण्टे का पाँच हजार बताकर भेजा था; पंजू घबड़ा गया कि कहीं उनसे भी तो पैसा नहीं माँगेगी।

"चलियेगा, ऊपर चलें ?"

पंजू उसके पीछे-पीछे चल पड़े। उसके केशों में चमेली का एक फूल लगा था। पंजू उसके देह की गठन और उसके केशों को नजर गड़ाए देख रहा था। किसी कुशल शिल्पी द्वारा बनाई गई मूर्ति जैसी थी वह। अंग-अंग में लोच और सुकुमारता झलक रही थी। पंजू की लम्बी साँस निकल गई।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ऊपर चढ़ते समय एक जगह बायें तरफ एक बड़ा कमरा दिखाई पड़ा। उसके अन्दर आलमारियाँ और उनमें भरी हुई पुस्तकें। गाँधीजी का एक चित्र टँगा था।

'इसके धन्धे के लिए भी गाँधी का चित्र ?' पंजू ने मन ही मन सोचा, 'ऊपर से इतनी किताबें भी पढ़ती है, लगता है !'

ऊपर भुवना के ऑफिस में दोनों चले गए। भुवना ने कॉफी मँगाकर दिया।

"किस उद्देश्य से आए हैं ?" भुवना ने पूछा।

"विडिवेल्ली पढ़ने के लिए आपको समय मिल जाता है ?"

"पढ़ना ही मेरी हॉबी है। अच्छा-बुरा, कूड़ा-कचरा सब कुछ पढ़ती हूँ।"

"विडवेल्ली ?"

"सम्पादक गोपालन् के समय से ही पढ़ती आ रही हूँ। अब भी पढ़ने लायक पृष्ठों को पढ़ती हूँ, उलट देने लायक पृष्ठों को उलट देती हूँ।"

उसके पृष्ठों को भुवना पढ़ने लायक पृष्ठ मानती है अथवा उलट देने लायक, इसे जानने के लिए पंजू बेचैन हो गया। उससे पूछे कैसे ? नहीं समझ पा रहा था।

"हाल ही में हमारी पत्रिका में किए गए कुछ नए परिवर्तनों को देखा है आपने ?"

"ऐसा ?"

"सत्य कथाएँ, जीवन के अन्तरंग रहस्य, सिनेमा, आकर्षक चित्र, निबंध...."

"ओ हो !"

"ये सब परिवर्तन मेरे द्वारा किये गए हैं, पुरानी पत्रिकाएँ इस समय पीछे जा रही हैं। दो लाख से भी अधिक प्रतियाँ निकलेंगी, आप देख लीजिएगा !"

"ओह ! यह सब आप ही का काम है ?" मानो बड़ी उत्सुक हो, भुवना ने पूछा।

पंजू फूला नहीं समा रहा था। "हर सप्ताह आपका जीवन-परिचय प्रकाशित करने की इच्छा है। फोन करके फोटोग्राफर को बुलवा लूँ ?"

"क्या केवल मेरी फोटो छापना पर्याप्त होगा ?"

"मिस भुवना ! मुझे गलत न समझियेगा। मुख-पृष्ठ पर आपका फोटो छापने से एक लाख प्रतियाँ अधिक बिकेंगी।"

"क्या मेरी फोटो ही अलग छापियेगा ?"

इस प्रश्न का अर्थ पंजू न समझ सका; आँखें फाड़े देखता रहा।

"जिस प्रकार अभिनेत्री श्यामला का चित्र उसके अभिनेता के साथ छापते हैं उसी प्रकार मेरा चित्र भी....?"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पंजू का मुंह फटा रह गया। वह मजाक कर रही थी अथवा सचमुच कह रही थी, वह न समझ सका।

"मैं जानबूझकर ही पूछ रही हूँ। उसकी अपेक्षा मेरे हीरो बहुत अधिक हैं।" हँसते हुए भुवना ने बड़ी मधुरता से कहा। "सत्यकथायें और असली चित्र ही छापना चाहते हैं आप ?"

"हाँ," इस समय पाठक काल्पनिक कथाएँ पसन्द नहीं करता।"

"कोरा सत्य; यानी कि रंग चढ़ाकर न छिपाया गया सत्य; बिना धोती-साड़ी का नग्न-सत्य ही सत्य है, गाँधीजी ने कहा था उस सत्य को ?" मुस्कराती हुई भुवना ने कहा।

"मिस भुवना !" पंजू घबड़ा गया।

"मिसेज भुवना कहिए ! 'अनेक मर्दों की मिसेज' ऐसा शीर्षक लिखिए।"

'मिसेज भुवना की सत्य-परीक्षा !'—ऐसा लिख लीजिए।

भुवना का कहना आदेश जैसा था, फिर भी उसे लिख लेने के अलावा कोई चारा न था।

बाद में भुवना अपनी कहानी की कुछ बातें बताने लगी। जन्म, लालन-पालन, शिक्षा, सुन्दरेशन् का प्यार, उसकी विलास-क्रीड़ायें, शादी की बातें, और तब पाँच हजार रुपयों के लिये उसका हठ, यह सब बताने के बाद, वह अभी-अभी पाँच हजार रुपये लेकर उसके पाँवों में गिर पड़ा था, यहाँ तक बता गई।

"अरे बाप रे ? काल्पनिक कथाओं में भी इतनी अद्‌भुत घटनाएँ नहीं होतीं। यदि आप इन्हें लिखें तो एक बड़ा 'सेंसेशनल हिट' होगा।"

जैसे गीध भैंसे के गले के घाव को नोंच-नोंच कर आनन्दित होता है उसी प्रकार पंजू खुश था। उसकी कहानी का एक-एक शब्द कलेजे के खून जैसा टपक रहा था, जीवनरूपी बाघ के द्वारा मार कर गिरा दी गई गाय के कलेजे का खून फक-फक कर बह रहा था। चीखते-चिल्लाते गीदड़ों की तरह पंजू उस खून को पी रहा था।

"अहा ! हमारे समाज की बुराइयाँ, आर्थिक बुराइयाँ, आचरण भ्रष्टता, दहेजरूपी राक्षस, औरतों का पिछड़ापन, सभी कुछ तो है आपकी कहानी में ?" पंजू खुशी से उछल पड़ा।

"मि० पंजू !" भुवना ने डाँटा। इसके आगे वह अपने को न संभाल सकी; "आप कितने दिनों से यह पत्रिका-कार्य कर रहे हैं ?"

"बीस-पच्चीस वर्ष हुए होंगे।"

"इस दहेज के विरोध में आपने अब तक क्या कोई वार्ता, कोई कहानी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अथवा निबन्ध लिखा है ? अपनी बहिनों के समान दूसरों की भावनाओं को समझकर क्या आप चिंतित हुए हैं ? दुनिया को सुधारने का काम एक वगल छोड़ दीजिये।"

पंजू हक्का-बक्का रह गया।

"आप किसलिये मेरी जीवनगाथा प्रकाशित करना चाहते हैं ? सीने पर हाथ रखकर सही-सही बताइये; जैसी बातें इस समय कह रहे हैं, सामाजिक बुराइयों को सामने लाकर, संसार के पुनरुद्धार करने के लिये लिखना चाहते हैं आप ?"

पंजू न जाने क्या-क्या सोच रहा था; वह समझ नहीं पा रहा था कि क्या करे !

"बोलिये !" भुवना बोली।

वह कहता क्या, दयनीय नजरों से देख रहा था।

"आदमी के अंदर छिपे, माँ और पत्नी को न देखने वाले, पशु का, मुझे शिकार बनाने के लिये, योजना बनाकर आये हैं आप। आप केवल इसलिये यहाँ आये हैं कि आपके लाखों पाठक, मेरी आवश्यकता अनुभव करें। ऐसी दलाली का काम ही क्या आप का पत्रकार-धर्म है ? अथवा आपका अपना धर्म है ?"

'अपना धर्म' भुवना के ये शब्द पजू के सिर पर एक बड़ा प्रहार जैसे पड़े। अपने व्यक्तिगत जीवन में पंजू किसी भी आचार, अनुष्ठान को न छोड़ता था। वह भभूति लगाता था, मंत्र जाप करता था, मंदिर जाता था, वेद और गीता से भी उसका लगाव था।

"आदमी को राह दिखाकर जीविका चलाना ही आपका धर्म है, है न ? नारियल के पेड़ पर चढ़कर रस की हंडी उतारना, सूद लेकर पैसे का ढेर लगाना आप का धर्म नहीं है न ? समाज के लिये अथवा आपके व्यक्तिगत जीवन के लिये, आप जो कुछ कर रहे हैं क्या उचित है ? आदमी को चिकनी चट्टान पर खड़ा कर, उसे रसातल में झोंक देना ही आप के धंधे का धर्म है क्या ?"

"आप के जीवन की कटुता आप से ऐसा कहलवा रही है, मिस भुवना !" पंजू बोला।

"दिशा न बदलिये। आप का काम मार्गदर्शन का काम है। आप मार्ग-दर्शन देते हैं ? आप का दिखाया मार्ग कौन-सा मार्ग है ? जनसमूह जा कहाँ रहा है, यदि इसे देखना है, तो सब से पहले मार्गदर्शक को ही देखना होगा। पहले उसे अपनी योग्यता को ही मापना चाहिये।

पंजू को लगा, चुपचाप वहाँ से खिसक जाय। इधर-उधर देख कर, "इस समय आपका मन ठीक नहीं है, और किसी दिन आऊँगा," कह कर, उठने लगा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खिलखिला कर, हँसते हुये, "बैठिये, मि० पंजू ! आपने जो पूछा है, उसे बताये बिना आपको न जाने दूँगी" भुवना ने कहा।

पंजू फिर बैठ गया। उसकी उत्सुकता फिर बढ़ गई।

"लीजिये; मेरे जीवन के धंधे का सार इस डायरी में है। मेरी जानकारी में, इसमें किसी प्रकार का छिपाव-दुराव नहीं है। पढ़ लीजिये। इसमें आये हुये महान व्यक्तियों के फोटो भी, मेरी फोटो के साथ छाप सकते हैं।"

जैसे सोने और हीरे की खदान मिल गई हो, इस प्रकार शीघ्रता से उस डायरी को खोलकर पंजू पढ़ने लगा। क्षण-क्षण उसकी साँस घुटती जा रही थी। वह पसीने से तर हो गया। एक जगह तो लगा जैसे उसकी साँस ही बंद हो गई। आगे वह पढ़ न सका।

उद्योग, व्यापार, राजनीति, निर्वहन, शिक्षा-संस्कृति, इन सब क्षेत्रों में मार्गदर्शक माने जाने वाले, पत्रिकाओं में जिनकी प्रशंसा की जाती थी, कुछ बड़े लोग भी उस डायरी में थे। हार और प्रचार पाने वाले कुछ श्रीमान भी उस में छिपे थे। अनेक मार्गदर्शकों की फिसलन वाली जमीन थी, भुवना की वह डायरी। बहुत से नेता भी अपने सिर में कपड़ा डाले उस में दिखाई पड़ते थे। मार्गदर्शकों ने उस के साथ जैसी करतूतें की थी, उन को भुवना ने अक्षरशः लिख रखा था।

"इन सत्यकथाओं को आप शौक से प्रकाशित कर सकते हैं, मुझे कोई आपत्ति न होगी।" बोली।

"ऐसा लिखूँ... ?"

"क्यों नहीं लिख सकते ? भद्दा और नग्न सत्य आप को बहुत पसंद है न ?" उस डायरी के कोरे, भद्दे, घृणास्पद और अश्लील सत्य से वह डर गया था।

"मि० पंजू ! झिझकिये नहीं; सत्य की परीक्षा से, आप जैसे गांधी-भक्त को घबड़ाना चाहिये क्या ?"

"ज्यों-का-त्यों प्रकाशित करने के लिये मुझे तुरैसामी से पूछना पड़ेगा।"

"सत्य लिखने की बात कर रहे थे न आप ? जैसा अमरीका और ब्रिटेन में लिखते हैं वैसा ही लिखने की बात कर रहे थे; वहाँ विज्ञान, औषधि, उद्योग के सत्यों को प्रकाशित किया जाता है, उन्हें छोड़कर इस गंदी नाली के सत्य का आयात कर यहाँ उतारना चाहते हैं। अपने शहर के सत्य को देख कर क्यों कँप रहे हैं ?"

"मिस भुवना ! मैं चलता हूँ" उत्तर की प्रतीक्षा किये बगैर पंजू सर्र से खड़ा हो गया।

"मि० पंजू ! यदि आप गांधी के सत्य की गर्दन पर छूरी रखना चाहते

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हैं, तो कार्लमार्क्स का सत्य आप की गर्दन में फंदा कस देगा। थोड़ा सोच कर चलिये। अपने धर्म को अधर्म बनाकर देश को धोखा देने की कोशिश न कीजिये।"

इस के पहले ही, पंजू 'धम् धम्' सीढ़ियाँ उतर कर चला जा रहा था। भुवना के पुस्तकालय में टँगे, गांधीजी के चित्र को देखने का साहस उस में न था; नैतिकता न थी।

३४. पिता का प्रश्न

रात में, भोजन के बाद, चिदम्बरम् अपने कमरे में, अगले सप्ताह प्रकाशित होने वाले 'विडिवेल्ली' के अंक के लिये लिखे गये संपादकीय को पढ़कर त्रुटियों का सुधार कर रहा था। पोन्नइया के नेतृत्व में, तमिलनाडु में किये गये आर्थिक परिवर्तनों के सम्बन्ध में था वह संपादकीय। शासन के कहने पर वह, और कुछ दूसरे पत्रकार, तमिलनाडु के दौरे पर जाकर अध्ययन कर लौटे थे। चिदम्बरम् ने जगह-जगह का, लोगों की स्थिति अपनी आँखों से देखी थी। लोगों से पूछ कर तथ्य एकत्रित किया था। संपादकीय के प्रथम दो अंश निकल चुके थे, यह तीसरा अंश था।

"लगता है काम में लगे हो?"

चिदम्बरम् ने घूम कर देखा। दरवाजे पर रामलिंगम् खड़े थे।

"काम खतम हो गया है, आ जाइये।"

आकर कुर्सी पर बैठ गये। गला साफ कर, कहना शुरू किया।

"तुम्हारी माँ ने भेजा है; तुम उनकी बात का कोई जवाब ही नहीं देते हो।"

चिदम्बरम् जैसे समझ गया हो, मुस्करा दिया। स्वयं कहते-कहते थक जाने पर अम्मा ने दूत भेजा था। भारती के घर से चले जाने पर, सभी लोग उसके ऊपर शादी के लिये दबाव डालने लगे थे। वह एम० ए० पास था, वह भी प्रथम श्रेणी में। सुन्दर शरीर, सम्माननीय संपादक का पद, पर्याप्त वेतन, गौरवशाली परिवार—इन सब के कारण लड़की देने वालों में होड़ मच गई थी। एक लड़की के नाम पर मकान देने की बात करता, तो दूसरा मकान के साथ लड़के के लिये कार की बात करता।

"जिस काम को किसी न किसी दिन करना ही है उसे अभी क्यों न कर लिया जाय! तुम्हारी उमर भी तीस से ऊपर हो रही है।" रामलिंगम् बोले।

वह समझ गया कि पिता कुछ निश्चय कर के आये हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"परिवार की झंझटों से दूर रह, मैं इस पत्रिका कार्य में ही अपना पूरा समय लगाना चाहता हूँ।"

"विडिवेल्ली' में रह कर ही करना चाहते हो ?"

"इस समय वह असंभव दिखता है। लगता है मेरा जीवन भी, आपकी तरह, संघर्षों में बीतेगा। इस में एक लड़की के जीवन को भी फँसा कर क्यों झंझट में डाला जाय ?"

रामलिंगम् की आँखों में उनका आश्चर्य झलक रहा था।

"तुम्हारे जीवन का लक्ष्य क्या है ? किस के लिये संघर्ष करना चाहते हो ?" रामलिंगम् ने पूछा।

"गांधीजी केवल विदेशी शासन को हटाने के लिये प्रयत्न कर रहे थे, ऐसा विश्वास करने वाले, देश में, जनतन्त्र के पर्दे के पीछे पैसावाद और जातिवाद स्थापित करना चाहते हैं। इस धरती में जनतन्त्र की जड़ें मजबूत करने के लिये मेरा संघर्ष होगा।"

रामलिंगम् को एक ओर गर्व और खुशी का अनुभव हुआ, वहीं दूसरी ओर अपने बेटे के भविष्य पर सोचकर डर गये।

वे उस के अंदर की भावना को पूरी तरह जान लेना चाहते थे।

"इस के लिये क्या करना चाहते हो ? किस तरह संघर्ष चलाओगे ?"

"देश के शिक्षित और विवेकशील लोगों का प्रमुख कर्तव्य, जैसा मैं समझता हूँ, जनसमुदाय को, विशेषकर, वोट देने वाले जनसमुदाय को, उनके अधिकारों और कर्तव्यों का बोध करा कर; उन्हें सच्चाई बताना है। इस समय सर्वप्रथम, यथा-शीघ्र, जनता में राजनीतिक शिक्षा का प्रसार करना चाहिये। गांधीजी ने, राजनीति और धर्म के सम्बन्ध पर जोर दिया था, उसे पोन्नइया जैसे लोगों ने छिन्न-भिन्न कर दिया है। जिनका न्याय और सत्य पर थोड़ा भी विश्वास नहीं हैं, ऐसे लोग राजनीति में घुस गये हैं। ऐसे लोगों से सावधान रहने के लिये जनता को सचेत करना ही मेरे संघर्ष का प्रथम अंश होगा।"

"तुम राजनीतिक जीवन अपनाना चाहते हो ?"

"नहीं।"

"तब ?"

"राजनीति, आर्थिक स्थिति का ज्ञान, न्याय पर विश्वास और सुसंस्कृत जीवन बिताने वाले लोगों को ही राजनीति में आना चाहिये, ऐसा वातावरण देश में बनना चाहिये; इस के विरुद्ध बातें, पोन्नइया जैसे लोगों ने राज्य में फैला रखी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हैं। भारत को मार्ग दिखाने वाले तमिलनाडु को ऐसी स्थिति में ला दिया है कि लोग हमें देख कर हँसते हैं। मैं अपनी क्षमता के अनुसार जनता को सच्चाई से परिचित कराने का प्रयास करूँगा। चिंतनशील व्यक्ति विचार कर अगला मार्ग प्रशस्त करेंगे।"

रामलिंगम् सोचने लगे। फिर, "तुम्हारे इस संघर्ष के लिये, तुम्हें एक शक्तिशाली साधन की आवश्यकता होगी। यदि तुम्हारी स्वयं की पत्रिका हो तो तुम उस में लिख सकते हो, अपने विचार प्रकट कर सकते हो, इसके लिए बड़ी रकम की आवश्यकता होगी।"

इसे सुन कर चिदंम्बरम् सोच में पड़ गया। उसके हाथ में एक कौड़ी भी न थी। निर्वहन का भी उसे अनुभव न था।

"चिंता मत करो, निर्वहन का मुझे कुछ अनुभव है, उसमें तुम्हारी मदद कर दूँगा, लेकिन पैसे के लिये ही तुम्हें शादी करने के लिये कहता हूँ।"

शादी से इसका क्या सम्बन्ध ? चिदम्बरम् न समझ सका।

"पैसे वाले लोग, तुम्हें अपनी बेटी और पैसा दोनों, देने की पेशकश कर रहे हैं। पैसे का उपयोग कैसे करना है, इसे मैं देख लूँगा। तुम अपने लक्ष्य के अनुसार काम कर सकोगे। हम व्यवसाय और सेवा भाव से काम कर सकेंगे।"

"पैसे से होने वाली शादी, निश्चय ही मेरे जीवन को प्रभावित करेगी। फिर, पैसेवाली लड़की को संतुष्ट करने के लिये मेरे सामने समस्यायें आ जायेंगी।"

पैसे के प्रति उस की विरक्ति को रामलिंगम् जानते थे। उनकी नजरों में एक गरीब लड़की भी थी।

"भारती ने ही बताया था कि, गणेशन् की बहिन, मीना तुम से शादी करने की इच्छुक है। लेकिन गरीब घर की होने के कारण तुम्हारी माँ को वह पसंद नहीं है। वह गरीब भले ही हो, किन्तु तुम्हें समझ कर तुम्हारे दुःख-सुखों में हाथ बँटाने की योग्यता उस में है; अच्छी लड़की है।"

भारती के विवाह के बाद से मीना प्रायः उसके घर आया-जाया करती थी। उसके व्यवहार में चिदम्बरम् ने कुछ परिवर्तन भी देखा था किन्तु चिदम्बरम् के मन में मीना के प्रति कभी भी वैसा विचार पैदा न हुआ था। वह मौन बैठा रहा।

"क्या कहते हो ?" रामलिंगम् ने उस का मौन भंग करना चाहा।

"मैं शादी ही नहीं करना चाहता।"

"तुम से एक बात पूछ सकता हूँ ?"

झिझकते हुये सिर उठा कर, उसने पिता को देखा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"सच-सच बताओगे ?"

चिदम्बरम् को लगा वहाँ से और कहीं चला जाय।

"बोलो चिदम्बरम् ! सच बात स्वीकार करोगे ?" उनकी नजरें उसके कलेजे को चीर रही थीं।

"…. …. …."

"किसी लड़की को चाहते हो क्या ? किसी और से विवाह करने की अभिलाषा है तुम्हारी ?"

"हाँ" चिदम्बरम् की आँखें उदास थीं।

रामलिंगम् को जैसे करेंट लग गया हो। दूसरे ही क्षण सँभल कर बोले—

"जिस लड़की को तुम ने पसंद किया हैं, वह निश्चय ही अच्छी लड़की होगी। वह चाहे जो हो, तुम उस से शादी कर लो। तुम्हारी माँ को मना लेने की जिम्मेदारी मेरी है।"

चिदम्बरम् का सिर चकराने लगा। "यह असंभव है, अप्पा !" बोला।

"क्यों ?"

"लड़की अच्छी है; लेकिन पारिवारिक लड़की नहीं है !"

"क्या !"

"हमारे परिवार में उसका रहना असंभव है। पारिवारिक जीवन से बहुत दूर जा चुकी है। अब उसका वहाँ से लौटना असंभव है !"

रामलिंगम् पत्थर बन गये। उन के अंदर एक असीम वेदना भर गई। अपनी भावनाओं को दबाने के लिये उन्होंने आँखें बंद कर लीं। उनका शरीर कँप रहा था।

"चिदम्बरम् ! यह बात हमारे-तुम्हारे बीच ही रहे, तुम्हारी माँ न जान पाये; वह इसे सहन न कर सकेगी, कभी सहन न कर सकेगी।"

वह बात रामलिंगम् से ही न सही जा रही थी। धीर से उठ कर कमरे से बाहर चले गये। उनके पाँव लड़खड़ा रहे थे; दीवाल पकड़ कर आगे बढ़ गये।

३५. पूँजीवाद का पुरस्कार

चिदम्बरम् से मिलने के लिए विडिवेल्ली कार्यालय में लेखक रत्नम् आए हुए थे। चिदम्बरम् ने उनकी एक कहानी के लिए कई पत्र लिखा था। वे पत्र का उत्तर न दे आज स्वयं खाली हाथ आ गए थे।

रत्नम् के बिखरे बाल और अधिक सफेद पड़ गए थे। ढीले-ढाले कुर्त्ते के अन्दर उनका दुबला-पतला शरीर अब अस्थि-पंजर मात्र जैसा दिखता था। उनकी आँखें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बुरी तरह धँस गईं थीं। उनका गर्व, आत्म-विश्वास और हाथी-जैसी मस्तानी चाल न जाने कहाँ गायब हो गईं थी।

"कहानी ले आए हैं ?" चिदम्बरम् ने पूछा।

"कहानी क्या बगीचे का बैंगन है कि जब चाहे तब तोड़ लो ? उसको भी जब पानी मिलेगा तभी न फल देगा। भूख के मारे सब कुछ चला गया, कल्पना कहाँ से उठेगी ?"

सरसों कम भले हो जाय, लेकिन उसका कड़ुआपन कहीं नहीं जाता, गरम तेल में जैसे सरसों फूटती है वैसे ही लेखक फूट पड़े।

"चेर, चोल, पाण्ड्य आदि राजाओं के जमाने से ही हम तमिल साहित्य और संस्कृति का विकास करते आ रहे हैं। साहित्यकारों को पुरस्कार देते-देते वे सभी राजा फकीर होकर चले गए। अब के ये छोटे-मोटे राजागण हमारी जाति—साहित्यकार—से बदला लेने के लिए तुले हुए हैं।"

"अपने उस उपन्यास को ही पुस्तकाकार रूप में प्रकाशित करवा लेते ?" चिदम्बरम् ने, जैसे अपराधी हो, पूछा। पूर्व में लौटाया गया उपन्यास उसे याद आ गया।

"मेरे प्रकाशक ने उसे प्रकाशित कर लिया था। पुस्तक बेंचकर 'रायल्टी' देगा, इस आशा में था। अब लगता है पुस्तक न बिकने के कारण मुझसे ही नुकसान की माँग करेगा।"

"आपकी किताब नहीं बिकी ?"

"मेरी किताब क्या, मेरे बाप वल्लुवर्, कम्बन् और भारती भी आकर इस युग में अगर लिखना चाहें तो लोग उन्हें भूखों मार डालेंगे। मेरा प्रकाशक धर्मसंकट में पड़ा है। पुस्तक बेंचने के लिए घूस देनी पड़ती है। इसलिए मुझे 'रायल्टी' देने में असमर्थ है। मुझे 'रायल्टी' देकर और घूस देकर पुस्तक बेंचना मुश्किल है। अब प्रकाशकों ने यह निश्चय कर लिया है कि 'रायल्टी' लेने वाले लेखकों की पुस्तकें ही न प्रकाशित करेंगे, क्योंकि घूस देना वे बन्द नहीं कर सकते !"

तमिलनाडु के उच्चस्तर के पुस्तकालयों में अच्छे लेखकों की किताबें न दिखाई पड़ने का कारण चिदम्बरम् की समझ में आ गया। तमिलनाडु का समाज बहुत तेजी से सांस्कृतिक पतन की ओर जा रहा है ?

"सभी लेखक मिलकर पोन्नइया से मिलिए न !" चिदम्बरम् ने कहा।

"चुनाव में जीतकर आए हुये इन दुष्टों के राज्य में सौ-पचास लोग जी जायँ या मर जायँ तो क्या फर्क पड़ता है ? केवल सौ-पचास वोट ही न कमेंगी ? यदि हमारे पास जाति-बल और पैसे की तिजोरी होती तो वे हमारी बातें सुनते ?"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"तमिल-संस्कार का ही विनाश हो रहा है, ऐसा कहिए न ?" चिदम्बरम् ने हँसते हुए कहा।

रत्नम् को क्रोध आ गया।

"भीतर भले-ही-गली-सड़ी चीजें भरी रहें। ऊपर चमड़ा चमचमाता रहे। यही मतलब है आपका ? 'शुद्ध तमिल', तनि-तमिल',[1] 'पवित्र-तमिल' इस प्रकार तमिल-भाषा का मतलब साबुन मलकर नहला देने से क्या काम पूरा हो जायेगा क्या आप सोचते हैं ? संस्कृति की जड़ें मजबूत करने के नाम पर 'पोंगल' के समय गाँव-गाँव, गली-गली में 'शुद्ध तमिल' का उत्सव मनाया जाता है, शुद्ध तमिल के हिमायती ऐसे कितने लोग हैं जो सिनेमा के शृंगार-लीला के चित्रों वाले बधाई-पत्र भेजते हैं, जानते हैं आप ? आपकी पत्रिका में शुद्ध-तमिल के नाम पर पंजू जिस हिप्पी-संस्कृति को स्थान दे रहा है आप उसकी प्रशंसा करेंगे क्या ? तमिल-वासियों को शुद्ध होना चाहिए इस बात की चिन्ता मुझे है। आप लोग ऊपर की चमक-दमक को ही पर्याप्त मानते हैं।"

मन ही मन हँसकर चिदम्बरम् ने कहा, "खैर छोड़िये इसे ! एक कहानी लिखकर दे दीजिए।"

"मैं नहीं लिखूंगा ! असंभव है !" आवेश में रत्नम् ने कहा। "मैं एक बिरियानी की दूकान खोलने के लिए आदमी की तलाश में हूँ। मोर के पाँव तोड़कर 'सूप', कोयल की गर्दन मरोड़कर खुरमा, तोते को मारकर पराठा !—यदि एक प्लेट दस रुपये में भी बेंचा जायेगा तो बात की बात में समाप्त हो जायेगा। कैसा रहेगा मेरा व्यापार ! लाखों रुपये इकट्ठा कर चुनाव लड़ूंगा !……जीविका के लिए और बड़ा आदमी बनने के लिए केवल यही एक मार्ग है।"

रत्नम् के हृदय में कसकने वाली उनकी भावना चिदम्बरम् को भी झुलसा रही थी। इसमें उसका भी हाथ था।

बात बन्द कर रत्नम् सर्र से उठ खड़े हो गए, "मैं चलता हूँ, मैं कहानी नहीं लिख सकूँगा, यही बताने के लिए आया था।"

"रत्नम् !" चिदम्बरम् ने आवाज दी ?

"मेरे मर जाने पर अपनी पत्रिका में चार लाइनें लिखियेगा अथवा उसे भी भुला दीजिएगा ?" रत्नम् जिस रास्ते से आए थे, उसी रास्ते से वापस चले गए।

सह-सम्पादक राघवन् तेजी से आकर खड़े हो गए। उनको देखने से ही उनके चेहरे पर घबराहट, हड़बड़ी और अकुलाहट झलकती थी।

---

१. संस्कृत शब्दों को अलग कर तमिल भाषा का शुद्ध रूप।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"क्या बात है" चिदम्बरम् ने पूछा ।

राघवन् ने उसके दोनों हाथ पकड़कर, "मेरी एक सहायता कीजिएगा ? कह दीजिए कि करूँगा ।" राघवन् ने जोर देकर कहा ।

"बताइए ।"

"आपका यह तीसरा निबन्ध अब भी मशीन में नहीं चढ़ा है । कृपाकर उसे मेरे लिए–रोक दीजिए ।"

"क्यों ? कोई दूसरी चीज छापनी है क्या ?"

"नहीं....हाँ....। उसे छपाइये ही नहीं । आपकी भलाई के लिए ही कह रहा हूँ । उसे प्रकाशित ही नहीं कीजिए ।"

"बैठ के बताइए ।"

राघवन् बैठकर बहुत धीमी आवाज में, जिसे केवल वही सुन सके, बताने लगे ।

"इसे पढ़कर पंजू एकदम उछल-कूद करने लगा । मालिक भी वहाँ नहीं हैं । वे बम्बई चले गए हैं । पंजू ने टेलीफोन पर बात करने का प्रयास किया लेकिन तुरैसामी नहीं मिले । आपके निबन्ध की एक प्रति आज ही उनके पास भेजी जा रही है ।"

"भेजने दीजिए इसमें कोई वैसी बात नहीं है ।"

"पंजू इसको आपके विरुद्ध उपयोग करना चाहता है । कृपा कर कम से कम इस समय इस निबन्ध को मत छपाइये । यदि आवश्यक हो तो अगले अंक में निकाल सकते हैं ।"

'ऐसा नहीं हो सकता' इस भाव में चिदम्बरम् ने सिर हिला दिया ।

"पंजू आपको शूट कर सके इसके लिए आप स्वयं उसके हाथ में बन्दूक दे रहे हैं" चिदम्बरम् की फीकी हँसी निकल गई ।

"कृपा कीजिए चिदम्बरम् जी मेरे लिए रोक दीजिए उसे" राघवन् ने गिड़-गिड़ाकर कहा ।

"इसमें किसी व्यक्ति-विशेष की इच्छा-अनिच्छा का, पसन्दगी-नापसन्दगी का कोई प्रश्न ही नहीं है । मैं एक पत्रकार की हैसियत से ही कह रहा हूँ; जब मैं हाथ में कलम लेकर, जिसे मैं सत्य समझता हूँ उसे लिखने लगता हूँ तब पंजू अथवा और कोई इसे पढ़कर क्या सोचेगा इसकी चिन्ता नहीं करता । भयभीत होकर एक लाइन भी लिखना असंभव है मेरे लिए । कृपा कर मुझे कायर न बनाइए । निबन्ध जैसा है वैसा ही उसे छपने दीजिए ।"

"आपका विनाश मैं नहीं देखना चाहता, चिदम्बरम् ।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"मैं इस देश का विनाश नहीं देखना चाहता। अपने पाठकों और सत्य के साथ विश्वासघात नहीं करूँगा। सत्य बात कहने में डर कर जीने की अपेक्षा मर जाना ज्यादा अच्छा समझता हूँ।"

"इस निबन्ध को तुरैस्वामी के पास भेजकर पंजू को संतोष न होगा। वह इसे ले जाकर पोन्नइया को भी दिखायेगा; आग में ऊपर से घी डाल देगा।"

"करने दीजिए" चिदम्बरम् ने कहा; "पूंजीपतियों और ऊंची पदवी वालों की चाटुकारिता करना बुद्धिजीवियों का काम नहीं है। देश में ऐसे लोगों के रहते मूक पशुवत् जनता के पक्ष में बोलने के लिए हम जैसे लोगों को न रहना चाहिए क्या?"

"चिदम्बरम्!" राघवन् कसमसा गया; "जिन लोगों की बात आप कर रहे हैं वे आपकी रक्षा न कर सकेंगे। व्यर्थ में अपनी बलि न दीजिए," राघवन् का गला भर्रा गया।

"आप मेरी चिन्ता न कीजिए, राघवन्! मैं सत्य पर विश्वास करता हूँ; उसके कारण मेरी कोई हानि नहीं होगी। अपने कर्त्तव्य से विश्वासघात करने के लिए मुझे न उकसाइये।"

राघवन् कहते-कहते थक गए। चिदम्बरम् ने उनकी बात एक न मानी। जो होना हो, हो वह इस पर तुला था।

"मुझे जो कहना था कह दिया आगे आपकी इच्छा" रुआंसी आवाज में कहकर राघवन् वहाँ से चले गए।

दूसरे दिन पत्रिका निकल गई। उसके दूसरे दिन तुरैसामी भी वापस आ गये थे। चिदम्बरम् ने सोचा था कि तुरैसामी, स्वयं आकर अथवा टेलिफोन पर, निबंध के विषय में उससे बात करेंगे। तीन दिन तक वैसा कुछ भी न हुआ। पंजू अवश्य यहाँ-वहाँ आता-जाता दिखता था।

कार्यालय का वातावरण, उस दिन खिंचावपूर्ण था। विभिन्न विभागों के कर्मचारी, दो-दो, चार-चार, मिलकर कुछ खुसफुस करते थे। वहाँ के प्रायः सभी कर्मचारी चिदम्बरम् के नियमित उत्साही पाठक थे। सबके मन में पंजू के प्रति तीव्र क्रोध की भावना थी।

चिदम्बरम् को जिस छूरी की आशंका थी वह एक सप्ताह बाद उसकी गर्दन पर पड़ी। उस दिन जैसे ही वह कार्यालय पहुँचा, उसको एक पत्र देकर उसके हस्ताक्षर ले लिये गये। पत्र बहुत लम्बा था। शासन और पत्रिका की प्रबंध व्यवस्था के साथ विद्रोह करने का दोषारोपण किया गया था। चिदम्बरम् ने अंतिम पंक्तियाँ पढ़ीं :—

"..........इसलिये आज की तारीख से, आपको पत्रिका के संपादक पद से अलग

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करने के लिए मजबूर हो गया हूँ। हिसाब करने के बाद आपको मिलने वाले पैसे का 'चेक' इसी के साथ शामिल है।" इस आदेश पर तुरैसामी ने हस्ताक्षर किया था।

कार्यालय में, चिदम्बरम् को परिवार के मुखिया जैसा सम्मान मिला था। इस आदेश के कारण वहाँ का अनुशासन भंग न हो सके, इसका प्रवंध राघवन् ने पहले से ही कर लिया था।

वहाँ से विदा लेते समय चिदम्बरम् इतना भावुक हो गया था कि वह अपने को रोक न सका। मर्राये गले से किसी प्रकार, कुछ इस प्रकार दो-चार शब्द कह सका—

"मेरा आपका इतने दिन का साथ रहा·········आप से जुदा होने के कारण मैं अपने दुःख को शब्दों से प्रकट नहीं कर सकता·······आप लोग मेरे लिये दुःखी न हों········सत्य बातें कहने के कारण सात्रटीस को विष पीना पड़ा था········यीसू को 'क्रास' पर लटकना पड़ा था········गाँधीजी को गोली मार दी गई थी·······ऐसे महापुरुषों को मिलने वाले कष्ट के सामने यह कुछ भी नहीं हैं········मुझे विदा दीजिये········"

कर्मचारियों ने एक टैक्सी वुलाकर दरवाजे पर खड़ी कर रखा था। सवों ने उसे फूलों के हार पहनाए, उसने भी, इन्हें स्वीकार कर लिया।

कर्मचारियों की भीड़ मुँह में रूमाल लगाये खड़ी थी। राघवन्, बच्चों जैसे, फूठ-फूटकर रो पड़े थे।

कार में वैठकर चिदम्बरम् ने पीछे घूमकर, हाथ जोड़ सबका अभिवादन किया। एक ने दौड़कर उसका हाथ पकड़कर, "सर ! अब आपका लेखन कव पढ़ने को मिलेगा ?" चिदम्बरम् के हाथ को अपनी आँखों से लगा लिया।

प्यार से उसकी बाजू पकड़कर, "मैं लिखूंगा, अवश्य लिखूंगा और तुम पढ़ोगे भी" चिदम्बरम् ने उसे धीरज दिया।

कार चल पड़ी। उसने पुनः पीछे घूमकर अपने हाथ जोड़ लिये। उसको मिलने वाली सबसे बड़ी संपत्ति जनसमूह की संपत्ति थी।

३६. कर्म और फल

दोपहर में एक कार घर के दरवाजे पर आ खड़ी हो गई; रामलिंगम् ने खिड़की से देखा। चरखा बंद कर वे दरवाजे पर आ गये, इस समय चिदम्बरम् के वापस आ जाने को वे न समझ सके।

हाथ में गुलाब का हार लिये चिदम्बरम् ने टैक्सी का किराया टैक्सी वाले

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की ओर बढ़ा दिया। कार्यालय के लोगों ने उसे किराया पहले ही दे दिया था, ऐसा कहकर उसने लेने से इंकार कर दिया।

"क्या हुआ चिदम्बरम् ?" रामलिंगम् ने घबड़ाहट के साथ पूछा।

"मुझे काम से छुट्टी मिल गई अप्पा !" हँसते हुए उसने बताकर, आदेश उनके सामने बढ़ा दिया।

रामलिंगम् बेटे को अपने कमरे में लिवा ले गये। वहाँ टँगी गांधीजी की फोटो पर, साथ लाये हार को चिदम्बरम् ने लगाकर, चुपचाप उन्हें ही देखता खड़ा रहा।

"चिंता न करो।" पिता ने कहा।

उसने पलटकर उनका चेहरा देखा।

"संसार बहुत बड़ा है, हमारे जीवनयापन के लिये हजारों रास्ते हैं, व्यर्थ में मन को दुःखी न करो।"

चिदम्बरम् ने पिता को कोई उत्तर नहीं दिया। जीविका छूट जाने का उसे उतना दुःख न था। उसका प्रिय काम—पत्रिका के माध्यम से लाखों लोगों के साथ अपने विचारों को बाँटना—अचानक छीन लिया गया था, इसका दुःख था उसे।

"मेरे जाने-पहचाने कुछ कालेजों में तुम्हें काम मिल जायगा, फिलहाल इसे देखते रहो, बाद में देखेंगे।"

"रहने दीजिये, अप्पा ! कालेज के काम के लिये दूसरे लोग भी मिल जायेंगे; इस पत्रिका-क्षेत्र में मैंने वर्षों से जो प्रशिक्षण प्राप्त किया है, उसका लाभ जनता को न मिल सकेगा।"

रामलिंगम् ने लंबी साँस लेकर, "तुम क्या करना चाहते हो ?" पूछा।

"एक पत्रिका चलाना चाहता हूँ" चिदम्बरम् ने स्पष्ट कहा।

रामलिंगम् ने कई लोगों को, पत्रिका का कार्य आरंभ कर दिवालिया होते देखा था। "इस समय यह काम बहुत बड़े पूँजीपतियों का काम बन गया है, चिदम्बरम् !" उन्होंने कहा।

"मुझे अपने श्रम, जनसहयोग पर विश्वास है, पिताजी ! गांधीजी ने भी जन बल के सहारे ही कई पत्रिकाओं का प्रकाशन किया था।"

"इस राज्य के लोगों का विश्वास करना, बहुत बड़ी परीक्षा होगी, चिदम्बरम् ?"

"मुझे प्रारम्भ में ही किसी बड़े सहयोग की अपेक्षा नहीं है, धीरे-धीरे, थोड़ी-थोड़ी सहायता से मैं काम चला सकूँगा।"

रामलिंगम् को बेहद उत्साह देखकर बड़ी खुशी हुई। "तुम्हारी बातों से मुझे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक नया बल मिल रहा है बेटे ! उच्च लक्ष्य और अनवरत प्रयास से हम अवश्य सफल होंगे। इसके लिये मुझे पैसों के लिये हाथ भी फैलाना पड़ा तो वैसा भी करूँगा ।"

चिदम्बरम् को असीम आनन्द हुआ। काम से अलग हो जाने का सारा दुःख दूर हो गया। वह अपना काम छूट जाने का समाचार, माँ को बताने के लिये अंदर गया। माँ दिखाई नहीं पड़ी। पता चला कि भारती को देखने के लिये गई थीं। पिता-पुत्र बैठकर बातें करते रहे। समय कितना जल्दी बीतता गया यह भी न मालूम हो सका। एकाएक घड़ी में पाँच बजने की आवाज सुनाई पड़ी। माँ, वापस आकर, घर के काम में लग गई थीं। सुभाष अब तक वापस न आया था; वह इन दिनों प्रायः देर से आया करता था।

चिदम्वरम् के कमरे में टेलिफोन की घंटी बज उठी। चिदम्बरम् ने तेजी से जा टेलिफोन उठा लिया।

"कौन, चिदम्बरम् ? मैं राघवन् बोल रहा हूँ" दूसरी ओर से आवाज आई। राघवन् की आवाज में घबड़ाहट झलकती थी। उनकी लंबी साँस को भी चिदम्बरम् सुन सका था।

"क्या बात है, राघवन् ! मैं चिदम्बरम् बोल रहा हूँ।"

"क्या बताऊँ ?" लगता था राघवन् रो देंगे।

"बताइये राघवन्; क्या बात है ?" चिदम्बरम् ने तेजी से कहा। उसकी आवाज सुनकर रामलिंगम् भी आ गये।

"वो........वो..."

"बताइये न !"

"वो....आपका भाई सुभाष........" राघवन् आगे कुछ न कह सके, रोने लगे।

"सुभाष को क्या हुआ, बताइये न ?"

"सुभाष को कुछ नहीं हुआ। पंजू के कंधे में चाकू लगी है। उसे अस्पताल ले गये हैं। चाकू सुभाष ने मारी है, इस कारण उसे पकड़ कर पुलिस के सुपुर्द कर दिया गया है।"

"मेरे काम से अलग किये जाने की बात सुभाष जानता था ?"

"उसको जानने वाले कुछ लोग इस कार्यालय में हैं, उन्होंने ही जाकर उसे स्कूल में बताया होगा। आप के जाने के बाद यहाँ बड़ी गड़बड़ी मच गई थी।"

"किस पुलिस स्टेशन में हैं, जानते हैं आप ?"

राघवन् ने बता दिया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"मैं अभी आ रहा हूँ।"

चिदम्बरम् ने पिता के चेहरे को ध्यान से देखा। आहट सुनकर लक्ष्मी अम्मा भी वहाँ आ गई थीं। अभी तक लक्ष्मी को चिदम्बरम् के काम छूटने की बात ही न मालूम थी, इससे भी बड़ी बात यह हो गई थी। जल्दी-जल्दी माँ को सभी बातें बताकर, भारती और मीना के पास भी खबर कर देने के लिये कह कर, चिदम्बरम् पिता को साथ ले, चल पड़ा।

लक्ष्मी अम्मा कपार पीट-पीट कर दहाड़ मार कर रोने लगीं।

माउण्ट रोड में एक थाने पर रामलिंगम् को छोड़कर, चिदम्बरम् अस्पताल चला गया। अस्पताल में भीड़ इकट्ठी थी। पंजू को चिदम्बरम् न देख सका। उसे आपरेशन के लिये ले जाया गया था। लोगों ने बताया कि चाकू गहरा लगा है, लेकिन उसके जीवन को कोई खतरा न था।

उसी समय कार्यालय का एक कर्मचारी उसके पास आ, "आप यहाँ क्यों आ गये सर! पंजू ने आपको भी शामिल कर पुलिस को बताया है" कहा।

इसे सुन कर चिदम्बरम् एक क्षण के लिये स्तब्ध रह गया। वहाँ से वह सीधे पुलिस स्टेशन गया, वहाँ रामलिंगम् इंस्पेक्टर के सामने बैठे दिखे। इंस्पेक्टर से अनुमति ले उसने 'लाक-अप' में जा अपने भाई को देखा। उसके चेहरे पर अभी भी आवेश झलक रहा था।

"वह पंजू अब भी जिन्दा है? नीच, दुष्ट!" सुभाष ने तिलमिलाते हुये कहा।

चिदम्बरम् अपने को न रोक सका; उसकी आँखें बहने लगीं। सुभाष ने छड़ के बीच से चिदम्बरम् का हाथ पकड़ लिया।

"आप क्यों रोते हैं भइया! उस पापी ने, पहले आपके सिद्धान्तों पर चाकू मारा; बाद में पेट में चाकू भोंककर जीवन ही ले लिया। मैंने उसकी गर्दन पर चाकू मारा तो क्या बुरा हो गया?"

हाथ अंदर कर, चिदम्बरम् ने उसके गले में डाल दिया। हाथ से सुभाष का मुँह बंद कर दिया।

"सुभाष! हमें भावावेश में आकर कुछ न करना चाहिये, यह पशुओं का काम हैं। हमें सोच-विचार कर आत्मशक्ति के बल पर संघर्ष करना चाहिये सुभाष!"

उसी समय इन्स्पेक्टर ने आकर स्वयं 'लाक-अप' का ताला खोला। "आप भी अंदर चलिये; पंजू के कथनानुसार आप भी सुभाष के साथ षड्यंत्र में शामिल हैं" चिदम्बरम् से बोला।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चिदम्बरम् को उस समय सचमुच खुशी हुई। 'लॉक अप' में वह भी अपने भाई के साथ रात में रहेगा, इस बात की खुशी थी उसे।

"भइया !" चीखकर सुभाष चिदम्बरम् से लिपट गया। उसकी चीख से सारा थाना ही हिल गया। उसी समय सुभाष को लगा कि उसके काम के कारण उसका भाई भी विपत्ति की लपेट में आ गया था।

३७. जीवन-भार

काफी दिन चढ़ जाने पर भी भुवना बिस्तर से न उठ सकी थी। उसके पूरे शरीर में असह्य दर्द था। उसका अंग-अंग टूटा जा रहा था। पिछले दिन शाम तक उसका शरीर बिलकुल भला-चंगा था। आज अचानक भयंकर दर्द होने लगा था।

आधी रात में उठकर नहाने-धोने और कपड़ा बदलने की शक्ति उसमें न थी। वह उस विशाल कमरे में, भारी-भरकम पलँग पर लेटी थी। पूरा कमरा 'यूडीकोलन' की महक से भरा था। उस कमरे में भुवना अपने मेहमानों का स्वागत करती थी। उसने और उसके मेहमानों ने जो विदेशी 'सेंट' लगाया था, उसकी महक भी कमरे में भरी थी।

उस भारी-भरकम पलँग के एक किनारे, भुवना, कूड़ेदानी से निकाल कर, फेंक दिये गये केले के पौधे के समान पड़ी थी। उस रात में उसके दो मित्र आकर चले गये थे। आने वालों में एक, बातें बनाने में कुशल, राजनीतिज्ञ था। उसी नगर में उसकी साठ रखैलें हैं, यह बात स्वयं उसने गर्व से बतायी थी। उस का पूरा खर्च, एक उद्योगपति ने भुवना को 'एडवांस' दे दिया था। जैसे मल्लयुद्ध में एक पहलवान दूसरे पहलवान को पटक कर, मीज-मीज कर भुरकुस कर, मूर्छित छोड़कर चला जाय, वैसे ही वह भुवना को छोड़, लड़खड़ाता चला गया था। दूसरा था पहाड़ी क्षेत्र के एक 'एस्टेट' का मालिक। 'एस्टेट' की अनेक मजदूरनियों से प्राप्त आतशक बीमारी का भागीदार बनाने के लिये भुवना को दस हजार रुपया देकर चला गया था।

कमरे में कीमती विदेशी 'सेंट' की गमक भरी होने पर भी एक बुरी दुर्गंध आ रही थी। भुवना उस दुर्गंध को न सह पा रही थी। उसकी इन्द्रियभोग के पागलपन की दुर्गंध थी वह। किसी प्रकार उठकर, धीरे-धीरे 'वाश बेसिन' तक गई भुवना। उसका जी मिचला रहा था; बेसिन में कै कर उसने उसे नल खोलकर-साफ किया। मुँह साफ कर वह शीशे के सामने खड़ी हो गई। एक सप्ताह पूर्व उसके चेहरे पर दिखाई पड़ी एक छोटी सी फुंसी बढ़ गई थी। चेहरे में जहाँ-तहाँ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

फुंसिया दिखाई पड़ीं। उसे संदेह न रहा; यह वही बीमारी थी। उसे लगा कि चाकू से अपना चेहरा छील डाले।

बड़े परिवारों में चिकित्सा करने वाली एक लेडी डाक्टर भुवना की भी चिकित्सक थी। वह एक सप्ताह से आकर भुवना की फुंसियों का इलाज कर रही थी। चेहरे की वह छोटी सी फुंसी बढ़ती ही जा रही थी; सिर से पाँव तक असीम वेदना हो रही थी। भुवना न समझ पा रही थी कि यह सब दवाइयों के कारण हैं अथवा, 'मेहमानों' की 'मेहमानी' करने का फल है!

बाथरूम में जा भुवना, नहा-धोकर, कपड़े बदलकर अपने व्यक्तिगत कमरे में चली गई। वहाँ मेज पर 'कॉफी' और समाचार-पत्र रखे थे। उसने कॉफी पी। पेपर देखने में मन न लगा। चुपचाप लेट गई। उसका मन भटक रहा था। एक बार उसके मन में आया कि सारी सम्पत्ति गरीबों में बाँटकर वह भिखारिन बन जाय। किसी महापुरुष की समाधि के पास पड़ी रहे; जो भी मिल जाय, खा-पीकर पड़ी रहे।

"मुझ से नहीं हो सकेगा, इतना साहस मुझ में नहीं है जैसे वह पागल हो," भुवना अकेले में ही बोल उठी। "इससे सीधा रास्ता है कि यहीं ऊपर से नीचे कूद जाऊँ।"

उसे, कमरे के दरवाजे पर छाया का आभास हुआ।

"इडली ले आऊँ?" भोजन बनाने वाली ने आकर पूछा।

"नहीं भूख नहीं है; डाक्टर को फोन कर कह दो कि जितनी जल्दी हो सके आ जाय।"

भुवना फिर बिस्तर पर गिर गई। बगल में पेपर पड़ा था, उठा कर पलटने लगी।

'पत्रिका संपादक को चाकू भोंका गया' इस शीर्षक से छपे समाचार की ओर उसका मन खिंच गया। उठकर ध्यान से पढ़ने लगी। चिदम्बरम् का काम से निकाले जाने से लेकर सुभाष का पंजू को चाकू मारने तक, व उनके गिरफ्तार होने की सभी बातें पढ़ गई।

समाचार पढ़कर भुवना अपना दर्द भूल गयी। जल्दी-जल्दी कपड़े पहनने में लग गई। उसी समय डाक्टर के आ जाने से, जल्दी में 'इंजेक्शन' लगवा लिया।

"आपको इस समय भी बुखार है; आपको एक सप्ताह आराम करना चाहिये", डाक्टर ने कहा।

"इस समय एक जरूरी काम है, इसके बाद निश्चय ही आराम करूँगी" भुवना ने डाक्टर से कहा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इसके वाद भुवना, जल्दी-जल्दी सीढ़ियाँ फाँदती-कूदती नीचे आ गई। ड्राइवर अव भी न आया था, खुद ही कार लेकर चल पड़ी। यद्यपि वह चिदम्बरम् का घर न जानती थी, लेकिन उसका पता उसको याद था।

चिदम्बरम् के घर के सामने भीड़ जमा थी। 'विडिवेल्ली' के कर्मचारी आकर जमा हो गये थे। पंजू ने चिदम्बरम् को भी फँसा दिया था, इस वात का सव में वड़ा रोष था।

भुवना सड़क के किनारे गाड़ी खड़ी कर अंदर चली गई। कमरे में, रामलिंगम्, गणेशन् भारती, सह-संपादक राघवन् आदि वैठे थे।

"मेरा नाम भुवना है, मैं आपके वेटे चिदम्बरम् को जानती हूँ। वे मेरे साथ कालेज में पढ़ते थे।" इस प्रकार अपना परिचय देकर, "पेपर में समाचार पढ़कर दौड़ती चली आई हूँ" भुवना ने कहा।

रामलिंगम् ने उसको ध्यान से देखा। चिदम्बरम्, एक लड़की के प्रति अपने मन की भावनाओं को उनसे बता चुका था। भुवना की चिंता और छटपटाहट से रामलिंगम् समझ गये कि हो न हो यह वही लड़की है।

जो कुछ हुआ, रामलिंगम् बता गये; राघवन् ने भी बताया।

"चिंता न कीजिये, जो हो गया सो हो गया; अब जो करना चाहिये उस पर ध्यान दें हम। मैं अपने वकील को वुलवा कर जमानत आदि का प्रवंध करती हूँ।" भुवना ने कहा।

"चिदम्बरम् को पंजू ने व्यर्थ में फँसा दिया है। यह वड़ा अन्याय है", राघवन् ने कहा।

पास रखे टेलिफोन पर भुवना ने नम्बर मिलाया, "कौन, तुरैसामी ? मैं भुवना वोल रही हूँ।"

"कौन, भुवना ? बोलिये, बोलिये ! क्या बात हो गई ?"

"आपके व्यक्तिगत मामले में हस्तक्षेप करने के लिये मुझे माफ कीजियेगा।" इस प्रकार वात शुरू कर भुवना, मुकदमे में चिदम्बरम् को फँसाने और उसके घर के सामने भीड़ एकत्रित होने की सभी वातें कह गई।

"अच्छा ! वो, चिदम्बरम् आपका........?"

"वे मेरे घनिष्ठ मित्र हैं। मेरे साथ कालेज में पढ़ते थे।"

"यदि यह बात पहले मालूम हो जाती तो उस पर इतनी कठोर कार्यवाही न करते हम ! आपसे कहकर हम उन्हें अपने रास्ते में ले आते। खैर—अब भी कुछ नहीं बिगड़ा........।"

"मैं उन्हें काम में वापस लेने की सिफारिश नहीं कर रही हूँ, इस समय।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पंजू ने झूठमूठ में उन्हें भी मुकदमे में फँसा दिया है। मुकदमा लड़ने में, वकील लगाना, आना-जाना सभी कार्यों के लिये मैं तैयार हूँ, लेकिन यह सब होने पर आपके ऊपर भी असर पड़ सकता है।"

पहले भुवना को देखकर, गणेशन् को उसके ऊपर क्रोध आ गया था, किन्तु उसकी बातों को सुनकर और उसकी चिंता देखकर, उसे अप्रत्याशित आया, एक सहायक मित्र मानकर वह उसकी प्रशंसा करने लगा।

तुरैसामी से बात करने के बाद भुवना ने अपने वकील से टेलिफोन पर बातें की। सुभाष और चिदम्बरम् की ज़मानत के लिये आवश्यक कागज तैयार रखने के लिये कहकर, यह भी बता दिया कि रामलिंगम् के साथ वह शीघ्र उनके पास पहुँच जायगी।

इसी समय रोती-चीखती लक्ष्मी अम्मा भी वहाँ आ गईं। उन्हें देखते ही भुवना अपने को न रोक सकी। मानो उसका लक्ष्मी अम्मा से पुराना रिश्ता हो, उनसे लिपट गई। फूट-फूटकर रोने लगी।

"चिंता न कीजिये अम्मा जी! एक भले आदमी की जीवनसंगिनी और सत्यनिष्ठ पुत्र की माँ हैं आप! आप पुण्यवती हैं, आपका कोई अमंगल न होगा। इसे मेरे ऊपर छोड़ दीजिये, मैं यथाशक्ति सब सँभाल लूंगी।" भुवना बोली।

भुवना की देह जल रही थी। लक्ष्मी अम्मा ने उसके गाल पर हाथ रख देखा। वहाँ आग जल रही थी।

"तुम्हें बुखार है बेटी! इस बुखार में तुम यहाँ आ गई हो?"

भुवना ने हँसने का प्रयत्न किया।

"यह बुखार मेरा कुछ न बिगाड़ सकेगा अम्मा! आपके परिवार के कष्टों को मैं यथाशक्ति दूर करने का प्रयत्न करूँगी, तब तक मैं जीवित रहूँगी। आपके बेटे ने मेरी कितनी सहायता की है, यह उन्हीं को ही नहीं मालूम है। मैं अपने ऋण से मुक्त हो सकूँ इसके लिये आपकी अनुमति ही मेरे लिये पर्याप्त है!"

भुवना फूट-फूटकर रोती रही। वहाँ और लोग भी थे, इस बात पर भी उसने ध्यान नहीं दिया। भारती के सांत्वना देने के बाद ही उसके मन का भार कुछ हलका हुआ।

लक्ष्मी अम्मा को भुवना की बातें समझ में नहीं आईं। इस विपत्ति के समय सहायता के लिये आयी उसको, उन्होंने देवरूप में माना।

भुवना आगे के कामों में लग गई। राघवन् को भेजकर अपने और तुरैसामी के बीच हुई बातें दरवाजे पर इकट्ठी भीड़ को बताकर लोगों को कार्यालय

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लौट जाने के लिए कहलवा दिया। सभी लोग चले गए। फिर रामलिंगम् को साथ ले, जाकर वकील से मिले; फिर वकील को भी साथ ले थाने गए।

"बड़े और छोटे दोनों भाई अगर इस तरह 'लॉक-अप' छड़ पकड़े खड़े रहेंगे तो घर कौन देखेगा?" हँसते हुए भुवना ने कहा।

चिदम्बरम् के चेहरे पर हँसी फैल गई। उठकर दरवाजे के पास आ गया; सुभाष भी पीछे-पीछे आ गया।

सुभाष की ओर देखकर, "भैया यदि तुम केवल पंजू को सजा देते तो मुझे कोई चिन्ता न होती। तुमने उनकी पत्नी-बच्चों को भी समेट लिया है, वे लोग भी दुःखी है। इस बात पर क्या तुम्हें विचार न करना चाहिए था?" भुवना ने पूछा।

"पंजू और पंजू जैसे दूसरे लोग और उनके परिवार को ही सुख से जीवित रहना चाहिए क्या?" सुभाष ने घृणा से जवाब दिया।

"तुम्हें भी दोष देना बहुत उचित नहीं; तुम्हारा नाम 'सुभाष' रखने वाले तुम्हारे पिता को दोष देना चाहिए!"

"यदि चाकू ठीक से उसकी गरदन में बैठती तो वह भैया को मुकदमे में फँसाने के लिए रहता ही नहीं। घायल होने पर भी उसकी बुद्धि किस तरह काम करती है देखा?"

"तुम बड़े वैसे लड़के हो, तुम्हें पहले स्वयं अपनी रक्षा करनी सीखनी चाहिए।"

"आप और देश का कानून हमें चाहे दबाने की भले ही कोशिश करे लेकिन जब तक तुरैसामी, पंजावकेशन इस देश में हैं और जो वातावरण उन्होंने बना रखा है वह जब तक बदले नहीं जाते तब तक हमारा संघर्ष समाप्त नहीं होगा।"

"यह क्या कम अच्छा है कि गांधी का शिष्य और कार्लमार्क्स का शिष्य 'लाक-अप' में एक दूसरे से भिड़ नहीं गए हैं। यह एक अच्छा शकुन है।"

"इस संघर्ष में गांधी के चेले के लिए कोई जगह नहीं है; उनका कोई सम्बन्ध ही नहीं है। इन्हें जल्दी से जल्दी बाहर ले जाइए। यदि साथ रहे आए तो लगता है मुझे ही बदल देंगें। सारी रात मुझे उपदेश देते रहे हैं।"

भुवना अपने सारे दुःख भूल, खिलखिलाकर हँस पड़ी।

३८. नया जीवन

आगे जाँच-पड़ताल करने पर पुलिस को यह मालूम हो गया कि चिदम्बरम् को मुकदमे में शामिल नहीं किया जा सकता। चिदम्बरम् ने सुभाष के साथ मिलकर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कोई षड्यन्त्र किया होगा इस बात पर स्वयं पुलिस को भी विश्वास नहीं हुआ। पुलिस संदेह में भी दूसरे लोगों को फँसा लेती है किन्तु इस मुकदमे में तुरैसामी भी बीच में आ गये थे इसलिए चिदम्बरम् को छोड़ देना पड़ा; उसे दूसरे ही दिन छोड़ दिया गया। मजिस्ट्रेट के आदेशानुसार सुभाष को केन्द्रीय कारागार में भेज दिया गया था। भुवना जमानत आदि कामों में तेजी से लग गई थी।

इसी बीच रामलिंगम् और चिदम्बरम् एक साप्ताहिक पत्रिका निकालने के प्रबन्ध में लग गए थे। यद्यपि चिदम्बरम् को इस काम का पर्याप्त अनुभव था, किन्तु निर्वाह का पूर्ण अनुभव न था। रामलिंगम् को विश्वास था कि वे अपने मित्रों से इस काम के लिए पचास हजार रुपये इकट्ठा कर सकेंगे। चिदम्बरम् को एक और विचार सूझा। पत्रिका बेचने वाले एजेण्टों से कुछ रुपया एडवान्स के रूप में लिया जा सकता है; काम से छुड़ाने के समय तुरैसामी ने उसे जो रुपया दिया था वह भी उसके पास था। रामलिंगम् के मित्र अब्दुल सलीम ने एक-एक पैसे जोड़कर पाँच हजार बचाए थे। उसे उन्होंने सहर्ष दे दिया।

चिदम्बरम् के घर में इस पर विचार चल रहा था। रामलिंगम्, अब्दुल सलीम और चिदम्बरम् तीनों आदमी मिलकर पत्रिका के लिए आवश्यक बातों पर विचार कर कागज पर लिखते जा रहे थे। उसी समय एक कार के रुकने की आवाज सुनाई पड़ी। चिदम्बरम् ने खिड़की से झाँककर देखा। उसके चेहरे पर खुशी छा गई। भुवना आ गई थी।

"अम्मा जी से मिलकर आती हूँ" कहकर भुवना सीधे अन्दर चली गई। सुभाष को जल्दी ही जमानत से छुड़ा लिया जायगा और वह सुभाष को जेल में देखकर आई थी, यह सब लक्ष्मी अम्मा से बता दिया।

"चिन्ता न कीजिए अम्मा जी, दो-एक सप्ताह में सुभाष जमानत से छूट जायगा। मैंने सब प्रबन्ध कर दिया है।"

"बाद में उसे क्या करेंगे ?" लक्ष्मी अम्मा ने भयभीत होकर पूछा।

"उसके ऊपर मुकदमा चलेगा, हम लोग पैरवी करेंगे। यदि फैसला उसके विरुद्ध हुआ तो हम अपील करेंगे।"

"क्या उसे भयंकर दण्ड देंगे ?" माँ का हृदय तिलमिला गया।

"घबड़ाइये नहीं। जिस तरह आपके बेटे ने पंजू का गला काटने का प्रयत्न किया था वैसा उसके साथ कुछ न होगा। अधिक से अधिक पाँच-छः साल तक उसे जेल में बन्द रखेंगे। अथवा उसकी उमर को देखकर उसे बाल-सुधार-गृह में भी भेज सकते हैं।"

बेटे के जीवन को कोई खतरा नहीं है। इस बात से लक्ष्मी अम्मा को थोड़ा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सन्तोष हुआ किन्तु उसे सजा मिलेगी इस विचार से ही उनका कलेजा दहल गया। सुभाष उनका सबसे छोटा बेटा था। उसके ऊपर उनका विशेष स्नेह था।

लक्ष्मी अम्मा की आँखों से झर-झर आँसू बह रहे थे। भुवना ने उनके आँसू पोंछे और उन्हें लिपटा लिया।

"चिन्ता न कीजिए अम्मा जी! इस समय देश में धोखेबाज, चोर और भ्रष्टाचारी लोग भर गए हैं। इसे वह सह न सका। उसका रास्ता भले गलत दिखता हो किन्तु उसका उद्देश्य ऊँचा है!" भुवना ने उन्हें धीरज बँधाया।

इसके बाद भुवना पुरुषों की बैठक में आ गई। वहाँ चल रहे काम को देखा। कागज में लिखी हुई योजनाओं को पढ़ा। चिदम्बरम् जिज्ञासा से उसके चेहरे को देख रहा था।

"आपका क्या विचार है?" रामलिंगम् ने भुवना से पूछा।

"ये योजनाएँ सिद्धान्तवादियों की हैं; मैं कर्मवादी हूँ" कहकर भुवना हँसने लगी।

"इसीलिए ना आपसे पूछते हैं?"

"अपने मन की बात कह दूँ?"

"कहिए" रामलिंगम् ने कहा।

"योजना तो अच्छी है। लेकिन गला घोंटने के चमत्कार में निपुण लोग, प्रतिस्पर्धा में आपकी पत्रिका को बढ़ने से रोकें तो आप क्या करेंगे, यह बात इसमें नहीं दिखाई पड़ती। इस समय देश में, हर क्षेत्र में दलाली चल रही है। जबरदस्त प्रतिस्पर्धा का जमाना है। पत्रिका वाले पन्ने के पन्ने अर्धनग्न रंगबिरंगे चित्रों से भरकर, कम कीमत पर बेंचते हैं। उनके पास पैसे का ढेर लगा है। पहले पानी जैसा पैसा बहाकर बाद में पैसे का गट्ठर बाँधते हैं। ऐसे लोगों के सामने आप क्या करेंगे?"

सुनकर चिदम्बरम् का मुँह सिकुड़ गया। उसने जिसकी आशा की थी, वही पाँव खींचने लगी थी।

"पाँच हजार प्रतियाँ भी निकल सकीं तो भी पर्याप्त होगा" चिदम्बरम् नाराज हो बोला।

"पचास हजार और एक लाख क्यों नहीं?" भुवना ने पूछा। "इस प्रकार पांच हजार प्रतियाँ निकाल कर आप कितने दिनों में घाटा पूरा कर सकेंगे?"

श्रीगणेश में ही घाटे की बात सुनकर चिदम्बरम् का गुस्सा बढ़ गया। शुरू-शुरू में कठिनाई हो सकती है किन्तु हमेशा वैसा ही रहेगा, इसकी आशंका उसे न थी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"पत्रिका चलाने का काम पहले की तरह कोई छोटा-मोटा धंधा नहीं रहा, अब यह एक बड़ी 'इंडस्ट्री' बन गया है। आपके गांधी भी इसके विरुद्ध न थे। उन्हें केवल इस बात की चिंता थी कि यह किस हाथ में, और किस उद्देश्य से है। खाना-कपड़ा के साथ-साथ वे जनता के ज्ञान और संस्कार के विकास के प्रति भी चिंतित थे। देश में अच्छी पत्रिका की लाखों प्रतियाँ बिकें, इस बात की अभिलाषा आपकी है न?"

"थोड़े से शुरू कर बाद में बढ़ाते जायेंगे", रामलिंगम् ने कहा।

"समुद्र में छोटी मछली को बड़ी मछली निगल जाती है। सिद्धान्तवादी जब कर्मवादी बन जायगा तब दुनिया के बाजार में, उसके सिद्धान्त की कीमत भी बढ़ जायगी। सिद्धान्त की सफलता के लिये पैसा एक सशक्त साधन है। गाँधीजी भी इस पर विश्वास करते थे।"

"तब....?" चिदम्बरम् उसके मुँह को देखता रहा।

"आज की परिस्थिति में पत्रिका चलाने के लिये कम से कम चार-पाँच लाख रुपया चाहिये। इस काम को बड़ी 'इंडस्ट्री' के रूप में चलाना होगा। कुटीर-उद्योग के रूप में चलाने का, यह गाँधी का जमाना नहीं है यह !"

इसे सुनकर सभी लोग पसीने-पसीने हो गये। पाँच लाख के लिये कहाँ जायँ?

"यदि आप मुझे गलत न समझें तो मैं एक बात कहूँ" भुवना ने कहा।

"बताइये", रामलिंगम् ने कहा।

"बुरे मार्ग से कमाया हुआ पैसा भी यदि अच्छे कार्य में लगाया जाय तो यह एक अच्छा प्रायश्चित्त होगा, गाँधीजी ने ऐसा कहा था, है न? इसलिये उन्होंने बड़े-बड़े पूँजीपतियों से पैसा लेकर, गरीबों और हरिजनों के कल्याण में लगाया था?"

"हाँ" रामलिंगम् ने कहा।

"इस समय आप भी पत्रिका का संचालन स्वार्थ के लिये नहीं करने जा रहे हैं। फिर यदि आप चाहें तो चिदम्बरम् को दूसरा काम भी मिल ही जायगा।"

"सच है!" अब्दुल सलीम ने कहा।

चिदम्बरम् उत्साह से सीधे बैठ गया। उसे लगा भुवना सहयोग की ही बात कह रही है।

"आपकी तरह, मेरे पिता भी एक क्रान्तिकारी थे। पहले हिंसावादी थे बाद में अहिंसा के पुजारी बन सन् १९३२ में आपके साथ वे भी बेल्लारी जेल में थे। इसलिये इसमें मेरा भी थोड़ा हक है।"

रामलिंगम् के चेहरे पर एक नई खुशी आ गई। रामनाथन् की याद उनके

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मन में ताजी हो गई। रामनाथन् जेल में हमेशा विवेकानन्द को पढ़ते रहते थे, संन्यासीवेश में रहते थे। अब्दुल सलीम भी रामनाथन् को जानते थे। भुवना को वे पहले से भी जानते थे किन्तु वह किसकी लड़की है, यह बात उन्हें मालूम न थी।

"रामनाथन् की बेटी हैं आप ?" रामलिंगम् ने पूछा।

"हाँ ! जैसे आपका खून आपके बेटे में हैं, वैसे ही मेरे पिता का खून मेरे अंदर बहता है।"

रामलिंगम् हँसने लगे। भुवना कहने लगी :

"आपकी पत्रिका के लिये मैं भी कुछ योगदान कर सकूँ, इसके लिये मुझे आप अनुमति दें। इसमें मेरी भागीदारी अथवा मेरा संपर्क न रहे। लगभग तीन लाख रुपये में आज ही इसके लिये दे सकने की स्थिति में हूँ।"

सुनकर सबके मुँह फटे रह गये। यह होश में ही बात कर रही है या नहीं, रामलिंगम् को सन्देह हो गया। किन्तु अब्दुल सलीम को वैसा संदेह नहीं हुआ। क्योंकि उन्होंने, समय-समय पर महिला आश्रम को हजार-हजार रुपये देते हुये उसे देखा था। इस काम में उसकी एक ही शर्त होती थी कि उसका नाम जाहिर न किया जाय।

"तुम्हें भी इसका भागीदार बनकर, प्रबंध में सहायता करनी होगी। निर्वहन कार्य में तुम कुशल हो, इसे मैं जानता हूँ" चिदम्बरम् ने कहा।

"वाह ! वाह ! क्या बात की है आपने !" बच्चों जैसी नजरों से भुवना ने उसकी ओर देखा।

"चिदम्बरम् का कहना उचित है। तब आपका पत्रिका से लगाव भी अधिक रहेगा" रामलिंगम् ने कहा।

"अब मुझे किसी प्रकार के लगाव की जरूरत नहीं है। मैं पैसे के भार से मुक्त होना चाहती हूँ, भाग्य से आप मिल गये।"

"तुम्हारे साथ हो जाने पर·······" चिदम्बरम् गिड़गिड़ाया।

"ऊँहुम् ! मैं केवल स्वर्णदान कर सकती हूँ, श्रमदान नहीं। अब मैंने सभी प्रकार के सांसारिक बंधनों से मुक्त होने का फैसला कर लिया है, लेकिन सुभाष के के केस में यथाशक्ति कोशिश कर लेना चाहती हूँ।"

सुभाष का नाम सुनकर वहाँ मौन छा गया। मौन भंग करने के लिये अब्दुल सलीम सुभाष के विषय में कुछ बातें कहने लगे।

चिदम्बरम् के मन को शान्ति की आवश्यकता थी, भुवना समझ गई।

"इस बात को छोड़िये; हाँ ! पत्रिका का नाम क्या रखा है, यह तो मुझे बताया ही नहीं" भुवना बोली।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"अभी कोई नाम तय नहीं किया है; आप ही कोई नाम बताइये, देखें क्या नाम रखना चाहती हैं ?" रामलिंगम् ने कहा।

"हाँ, तुम ही नाम रख दो। इसमें तुम्हें कोई बड़ा श्रमदान न करना पड़ेगा ऐसा सोचता हूँ। जो नाम तुम रक्खोगी वही नाम हम मान लेंगे" चिदम्बरम् बोला।

"पत्रिका का उद्देश्य तो अभी मुझे बताया ही नहीं न ?"

"पढ़ लो," चिदम्बरम् ने कागज उसको दे दिया।

भुवना ने उसे पढ़ा। किसी भी राजनीतिक दल से दूर रह, जनता के ज्ञान, आचरण, संस्कार-निर्माण जैसे कार्यों सहित जनता में समुचित राजनीतिक जागरण, जन-कल्याण के कार्यों को बढ़ावा देने तक कई उद्देश्य लिख लिये गये थे।

पढ़ने के बाद भुवना एकटक चिदम्बरम् के चेहरे को देखती रही।

"क्या कहती हो ?" चिदम्बरम् ने पूछा।

"इस धरती में आप अपनी कलम के बल पर आकाश को उतार ले आने का विश्वास रखते हैं" बोली।

"यदि हम में उत्साह हो तो आकाश से भी ऊपर उड़कर नहीं जा सकते क्या ? यदि लक्ष्य महान हैं तो क्या अंतर पड़ता है। इस जीवन में यथासंभव हम पूरा करेंगे।"

"आप बहुत बड़े महत्वाकांक्षी हैं।" कहकर भुवना हँस पड़ी।

"अच्छा, क्या नाम रखा जाय, पहले यह तो बताओ ?"

भुवना ने सोचकर कहा, " 'नया जीवन' रख सकते हैं।"

"बहुत उपयुक्त नाम है" रामलिंगम् ने कहा।

अब्दुल सलीम ने भी स्वीकार किया। अपने मन की बात भुवना के मुँह से सुनकर चिदम्बरम् को बड़ी खुशी हुई।

इस नाम के, एक दूसरे आंतरिक भाव की कल्पना कर, चिदम्बरम् ने भुवना के चेहरे को ध्यान से देखा। 'तुम भी अपने नये जीवन के लिये तैयार हो ?' उसकी नजरों में यह प्रश्न झलक रहा था।

३९. योद्धा के हाथ का अस्त्र

'नया जीवन' पत्रिका की कोई भी जिम्मेदारी न लेने की बात करनेवाली भुवना उसकी सभी जिम्मेदारियाँ अपने ऊपर लेकर लट्टू जैसा नाच रही थी। उसके उत्साह को देखकर, उस समय उसकी बीमारी भी कहीं छिप गई थी। चेहरे का छोटा-सा फोड़ा केवल शेष रह गया था।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अपने जीवन का सबसे प्रमुख कार्य कम से कम समय में पूरा कर लेने के लिये वह अधीर थी। उसका उत्साह देखकर रार्मालिगम् चकित थे।

रार्मालिगम् के मित्रों को साझीदार बनाना, विज्ञापन के लिये कंपनियों से संपर्क करना, वेंचने वालों को पत्र लिखना—सभी कामों को आगे आकर कर रही थी।

"दूसरी सभी जिम्मेदारियाँ मुझ पर छोड़ दीजिये, आप केवल बढ़िया साज-सज्जा से पत्रिका निकालने के काम में ध्यान दीजिये" उसने चिदम्बरम् से कह दिया था।

उसके दिये तीन लाख के अनुदान के अलावा रार्मालिगम् के मित्रों से दो लाख रुपए एकत्रित हो गये थे। इस समय पाँच लाख की पूँजी थी।

"इस पैसे और अपने श्रम से आप प्रथम स्तर की पाँच लाख प्रतियाँ बिक्री के लिये निकालिये। तमिल लोगों के मन में जहर घोलने वाले, उनकी संस्कृति को नष्ट करने वाले इन लेखन के कुलियों से आपको तमिल लोगों की रक्षा करनी है, नहीं तो इस राज्य में जनतंत्र, पैसावाद अथवा पदवीवाद का गुलाम बन जायगा।" भुवना ने चिदम्बरम् से कहा।

इन सब कामों के साथ-साथ भुवना सुभाष के केस को भी न भूली थी। उसकी जमानत आदि दूसरे कामों को भी देख रही थी। सुभाष जमानत पर छूट गया था। ऐसा लगता था कि मुकदमे से उसे किसी प्रकार का भय न था।

पत्रिका के लिये, किराये पर लिये गये भवन में, एक ओर प्रेस था; दूसरी ओर दो भागों में, एक में संपादकीय विभाग और दूसरे में निर्वहण कार्यालय था। संपादकीय विभाग के बड़े कमरे में भुवना ने अपने घर की पुस्तकें लाकर रख दी थी। देश-विदेश के बड़े-बड़े विचारकों, मनीषियों की पुस्तकें थीं।

'नया जीवन' का पहला अङ्क छप रहा था। लेखक रत्नम् और तमिलनाडु के सभी प्रमुख साहित्यकारों की कहानियाँ, कवितायें और निबंध मँगाकर चिदम्बरम् ने प्रथम अंक में शामिल किया था। जनता की भलाई के लिये त्याग करने वाले कुछ त्यागी पुरुषों के संबंध में, जिन्हें एकदम भुला दिया गया था, चिदम्बरम् ने स्वयं एक लेख लिखा था।

'धर्म और राजनीति को एक साथ जीवन में उतारने वाला महात्मा' इन शब्दों के साथ महात्मा गाँधी का चित्र मुखपृष्ठ पर था।

छप जाने पर, दो-तीन प्रतियाँ लेकर, भुवना रार्मालिगम् के कमरे में गई। अब्दुल सलीम भी वहीं थे। " 'नया जीवन' का जन्म हो चुका है, इसके लालन-पालन की जिम्मेदारी आप पर है", कह कर भुवना हँस दी।

"क्यों आपकी इसमें कोई जिम्मेदारी नहीं है क्या ?"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"मेरा काम अब इसीके साथ समाप्त होता है।"

रामलिंगम् ने सोचा इसकी आदत ही है, ऐसी बात करने की; पैसा देते समय भी ऐसा ही कहा था।

"संपादक महोदय नाराज हो रहे होंगे, उनके 'शिशु' को ले जाकर उन्हें दे दूँ", कह कर वह चिदम्बरम् के पास चली गई। " 'तुम दोनों का 'शिशु' है यह" ये शब्द रामलिंगम् के ओठों तक आ गये थे लेकिन उन्होंने बाहर न निकलने दिया; इनको प्रकट करने के उपयुक्त समय की प्रतीक्षा में अपने को रोक लिया।

पहला अंक देखते ही चिदम्बरम् की आँखों के कोरों में बूँदें डबडबा आईं।

"इस 'नया जीवन' को मुझे देने वाली तुम हो", कहकर उसने उस अङ्क को अपनी आँखों से लगा लिया।

"बस बस !" मुस्कराते हुये भुवना ने कहा।

"आप का आज का काम समाप्त हो गया है, है न ?' भुवना ने पूछा।

"हाँ।"

"आपने पत्रिका निकालने के उपलक्ष्य में भोज दिया है, उसके लिये मैं भी आपको आज निमन्त्रण खिलाना चाहती हूँ। अपने पिताजी से कहकर मेरे साथ चलियेगा ?"

"अभी चलता हूँ।"

चिदम्बरम् ने घूम-घूम कर कार्यालय को देखा। छपे हुये कागजों को तेजी से मोड़ा जा रहा था; बाहर भेजी जाने वाली पत्रिकाओं के बंडल बनाये जा रहे थे; कुछ लोग काम समाप्त कर पत्रिका पलट रहे थे। भुवना के घर भोजन के लिये जाने की बात पिता से बता कर, चिदम्बरम् भुवना के साथ चल पड़ा।

भुवना के मकान में चिदम्बरम् को एकदम परिवर्तन दिखाई पड़ा। गेट में न तो दरवान था, न कीमती चीजें और नौकर-चाकर। कुछ भी न था। बाहर केवल बागवान और भीतर केवल भोजन बनाने वाली थी।

"भोजन बनाया तो नहीं न ?"

"आपने मना कर दिया था, इसलिये........" खाना बनाने वाली ने कहा।

"इनकी इच्छा है कि इन्हें मैं स्वयं बनाकर खिलाऊँ। आप अपने घर जा सकती हैं; आठ बजे तक आ जाइयेगा।"

रसोईघर में एक कुर्सी रखकर, उसमें चिदम्बरम् को बैठाकर, सब्जी काटने में लग गई।

आडंबरपूर्ण आधुनिक सभ्यता की अभ्यस्त भुवना एकाएक ग्रामीण गृहिणी बन गई थी। जैसे उसका नया जन्म हो गया था। चिदम्बरम् को देख-देख कर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आश्चर्य हो रहा था। अभी तक का इसका रूप केवल दिखावा था, भुवना सचमुच पारिवारिक लड़की थी, चिदम्वरम् को पूरा विश्वास हो गया।

चेहरे पर पसीने की बूंदें, कसकर बँधा हुआ आँचल, मानो पुरानी गृहिणी हो, इस प्रकार भुवना रसोई बनाने में लगी थी। भुवना को इस रूप में देखकर चिदम्बरम् को लगा कि अब उसके बगैर उसका जीवन सूना रहेगा।

भोजन बनाने के बाद, हाथ-मुँह धोकर भुवना आ गई। एक बड़ा-सा केले का पत्ता जमीन पर लगा दिया।

"भोजन करने आइये न ?"

"अपने लिये भी एक पत्ता डाल लो न !"

"मैं जो कहती हूँ वैसा कीजिये; ऊँ ! आइये जल्दी !"

चिदम्बरम् का हाथ पकड़कर अधिकारपूर्वक उठा लिया। हाथ धुला कर, पत्ते के सामने बैठा दिया। झुकी हुई उसे खाना परोसने लगी। भोजन भी बिलकुल सादा था; सेम का साग, मुनगे का साँभर, दही का रायता, पापड़, रसम्, मठा।

भोजन करते हुये, "यदि तुम स्वयं बनाकर खिलाओगी तो अब रोज-रोज खाने के लिये यहीं आया करूँगा", चिदम्बरम् बोला।

"मजाक न कीजिये, सच-सच बताइये भोजन कैसा बना है ?"

चिदम्बरम् पेट को निराश न कर खा गया। उसने भी उसे छोड़ा नहीं। "थोड़ा और, थोड़ा और" कहकर उसे भरपूर खिलाया।

भोजन के बाद हाथ धोकर चिदम्बरम् कुर्सी पर आ गया। भुवना ने स्वयं पान बनाकर उसे दिया। पान खाने की उसकी आदत न थी, किन्तु इस अवसर को वह जाने देना न चाहता था।

चिदम्वरम् ने जिस पत्ते में खाना खाया था, उसी पत्ते में अपने लिये भी खाना परोसकर भुवना खाने लगी।

"यह क्या भुवना ?" वह अचकचा गया।

उसकी ओर देखकर वह हँसने लगी।

"रुको, तुम्हारे लिये मैं स्वयं दूसरा पत्ता लगाये देता हूँ।"

"क्यों, आपके जूठे पत्ते में खाने लायक मैं नहीं हूँ क्या, अथवा आप स्वयं ऐसा करने देना नहीं चाहते ?"

चिदम्बरम् भौंचक्का रह गया; वह उसके लिये एक पहेली थी। उसी हालत में वह उसको परोसने लगा।

"आप जाकर बैठिये, मैं पाँच मिनट में आती हूँ।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वह पाँच मिनट क्या, दस मिनट में भी नहीं आई। दो ग्रास निगलने के बाद, जैसे पागल हो गई हो, चुपचाप बैठी रही। उसके आँसू पत्ते पर टप्-टप्, गिर रहे थे; वह फूट-फूट कर रोने लगी।

"भुवना ?"

चिदम्बरम् ने उसके पास जा आहिस्ते से उसका कंधा पकड़ लिया। भुवना ने वेदनाभरी नजरों से उसके चेहरे को देखा। फिर दायाँ हाथ पत्ते पर रखे ही, उसकी गोदी में लुढ़क गई। वह पोंछता जा रहा था, उसकी आँखों से आँसू बहते जा रहे थे।

"यह क्या, भुवना ? क्या हो गया तुम्हें ? जो भी हो मुझ से बताओ न, मैं हूँ, भुवना !"

लंबी साँस लेकर वह कहने लगी—

"एक समय मेरी अभिलाषा थी, कि कहीं काम करते हुये मैं भी इसी प्रकार अपनी गृहस्थी चलाऊँगी। वह अभिलाषा........वह अभिलाषा........।"

इसके आगे वह केवल रो ही सकी।

"वह अभिलाषा निश्चय ही पूरी होगी भुवना। मैं तुम से शादी करने जा रहा हूँ; तुम मेरे परिवार की रानी बनोगी।"

वह एकदम उसकी गोदी से उठ गई; बाएँ हाथ से उसका मुँह बंद कर, "ये पागलों जैसी बात न कीजिये", बोली।

"एक बात कहे देता हूँ", उसे जैसे आवेश आ गया हो, "यदि तुम मुझ से शादी न करोगी तो इस जिन्दगी में मैं किसी दूसरी लड़की से शादी न करूँगा।"

"क्या कहा ?" भुवना ने क्रोधित हो पूछा।

"तुम्हारे अलावा, इस जन्म में, किसी दूसरी लड़की के विषय में सोचूँगा भी नहीं, अभी तक सोचा भी नहीं।"

"मैं इसे कदापि सहन न कर सकूँगी; कृपा कर मेरे लिये, इस कठोर व्रत को भूल जाइये।" भुवना ने गिड़गिड़ाकर कहा।

इसके बाद उससे खाया न गया। जूठा पत्ता फेंक कर, बर्तन-भाँड़े साफ कर रख दिया। फिर अपने हाथ-पाँव, मुँह धोकर आ गई।

"चलिये, ऊपर चलें, वहीं बातें करेंगे।"

दोनों ऊपर जा भुवना के व्यक्तिगत, कमरे में चले गये। भुवना एक धूपबत्ती जला कर उसके पास जा, बगल में, चारपाई पर बैठ गई।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

४०. मातृत्व की ललक

एक दूसरे को देखते, दोनों चारपाई पर बैठे थे। बीच में एक पुस्तक पड़ी थी। चिदम्बरम् ने किताव को उठा कर देखा। वह पट्टिनन्तार का काव्य संग्रह था। भुवना उस पुस्तक को बड़ी रुचि और लगन से पढ़ती थी।

"मेरे ऊपर पाँच-दस हजार खर्च करने वालों को इस पुस्तक को पढ़ना चाहिये। शासकीय अधिकारी, शिक्षक, पत्रकार सव के लिये इसे पढ़ना अनिवार्य कर दिया जाना चाहिये। हमें अपना काम प्रारंभ करने के पहले इसे अवश्य पढ़ना चाहिये!"

"केवल पढ़ना पर्याप्त होगा?"

"पढ़ने वाला यदि चौपाया नहीं है, तो निश्चय ही धीरे-धीरे कुछ अंश तक अवश्य वदल जायगा।"

"तुमने भी तो इसे पढ़ा है!" चिदम्वरम् ने परिहास किया।

"इसीलिये तो, पट्टिनन्तार और अरुणगिरिनाथ के जीवन में आये अचानक परिवर्तन के समान, मेरे जीवन में भी परिवर्तन आ गया है।"

"परिवर्तन?"

"हाँ! जिस रात आप पुलिस 'लॉक-अप' में थे, उस रात मैं किस स्थिति में थी, मुझे दूसरे दिन सुवह समझ में आया। आपको 'लॉक-अप' में देखने के वाद ही मुझ में परिवर्तन आ गया था। अब इस घर में कोई नहीं आ सकता। कन्हैयालाल की कंपनी का काम भी छोड़ चुकी हूँ।

"नौकर-चाकर भी नहीं दिखाई पड़ते!"

"सब को एक वर्ष का वेतन देकर छुट्टी दे दिया है। वेंचने काबिल सामान वेंचकर, पैसा माँ-वाप को भेज दिया है; जिससे अब वे मेरे पैसे के भरोसे न रहें।"

"संन्यासिनी वनना चाहती हो?"

"धन-संपत्ति, आदि सांसारिक सभी वंधनों से मुक्त होना चाहती हूँ।"

"तुम्हारा भविष्य?"

"आप क्यों उसकी चिंता करते हैं?"

"मेरा भविष्य उसी में है, भुवना!"

"नहीं, नहीं; आप व्यर्थ में मुझे अपने साथ न जोड़िये। मैं वेश्या हूँ। मेरे पूर्वजन्म का कलंक नहीं धुलेगा।"

"देखो भुवना! दुनिया में कितने ही लोगों से तुम बहुत ऊपर हो। तुम मेरे लिये विलकुल कलंकित नहीं हो, दूसरों की मुझे चिंता नहीं।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"ये देखिये; मेरे कलंक का चिह्न, मेरे गाल के इस घाव को देखिये।"

"इसे ठीक किया जा सकता है।"

"असंभव है! मेरे नीच कर्मों का फल है यह। यह भयंकर छूत की बीमारी है। अब आप की जीवनसाथी बनना, मेरी आत्मा के साथ पक्का विश्वास-घात होगा।"

"मूर्ख! मैं तुम्हारे शारीरिक सौन्दर्य के कारण तुम्हारे नजदीक आया हूँ, यह भी कोई विचार है? यदि तुम्हारी इच्छा हो तो मैं शरीर को भूलकर भी जी सकता हूँ।"

"क्या! सच कह रहे हैं? मेरे साथ आप उस तरह रह सकते हैं?" भुवना अपनी नजरों से उसके अंदर की गहराई की थाह ले रही थी।

"इसी देश में, इसी समय, जी रहे, जयप्रकाशनारायण और उनकी पत्नी के विषय में सुना है तुमने? पूछकर चिदम्बरम्, उनके गार्हस्थ्य जीवन की कहानी बता गया। 'जब तक देश स्वतंत्र न हो जायगा तब तक विवाह न करूँगा' जयप्रकाश-नारायण ने ऐसा व्रत ले रखा था। जिस लड़की से विवाह करना था, उससे विवाह करने के बाद, देश स्वतंत्र होने तक ब्रह्मचर्य पालन करते हुये रहे आयेंगे' इस प्रकार उन्होंने कहा था। इसी शर्त पर विवाह हुआ था।

इस कहानी को बताकर, "हम भी ऐसा ही क्यों नहीं कर सकते?" चिदम्बरम् ने पूछा।

चिदम्बरम् की इन बातों को सुनकर भुवना को लगा कि वह संसार में सब से बड़ी भाग्यशालिनी है। उस ने लंबी साँस लेकर, "आप हजारों में एक नहीं; लाखों में एक नहीं, करोड़ों में एक हैं" कहा।

"मैं भी आप को एक कहानी सुना दूँ?" मजाक की हँसी हँसती हुई भुवना बोली।

"बताओ।"

"कहते हैं, एक वेश्या को एक भिक्षु से प्यार हो गया, उस समय उस भिक्षु ने उसकी बात नहीं सुनी। वर्षों बाद लोगों द्वारा ठुकरा देने के बाद, रोगी हो वह सड़क पर पड़ी थी। तब भिक्षु उसके पास आये थे। इस समय आप वही भिक्षु बन कर मेरे पास आये हैं।"

"भिक्षु दया के कारण उसके पास गये थे, मैं तुम्हारे प्यार के कारण तुम्हारे पास आया हूँ", चिदम्बरम् ने कहा।

"मुझ से शादी कर, मेरी बीमारी लेकर आपको उस बीमारी की देखभाल में ही दिन काटना पड़ेगा। मैं पैसे वाले मगरमच्छों की शिकार बन चुकी हूँ, उन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मगरमच्छों से बचे रहना कोई साधारण काम न होगा। वे आप को शान्ति से न रहने देंगे। आप अपमानित हो, सिर झुका कर रहें, इसके लिये मुझमें साहस नहीं है। मेरी स्थिति पर आप थोड़ा विचार कीजिये", चिदम्बरम् का ओठ पकड़े भुवना विनती करती रही, उसकी आँखें डबडबाई थीं।

"तुम्हारे लिये मैं उनसे संघर्ष कर लूँगा।"

"नहीं, नहीं; आप इस देश की निधि हैं। लाखों लोगों को राह दिखाने का उत्तरदायित्व आप पर है। मुझे मेरे भाग्य पर छोड़ दीजिये; कृपा कर छोड़ दीजिये।"

संपादक गोपालन् के यही शब्द चिदम्बरम् को याद आ गये। उन्होंने भी उससे कहा था, "तुम इस देश की निधि हो।"

चिदम्बरम् जाने के लिये सोच ही रहा था कि भुवना उसकी गोदी में सिर रखकर लेट गई। अपने दोनों हाथ उसके गले में डाल दिया। चिदम्बरम् अपनी उँगलियों से उसके बाल सहलाने लगा, इसके अलावा उसे और कुछ न सूझा।

"मुझ से नाराज हैं आप ?"

"नहीं।"

उसके हाथ अपने सीने से लगा कर, "सच-सच बताइये ?" बोली।

"सचमुच मुझे तुम्हारे ऊपर नाराजगी नहीं है; मैं तुम्हारे मन को समझ रहा हूँ।"

"आपका दुःख मैं समझती हूँ। आपकी नाराजगी मैं सहन नहीं कर सकती।"

"एक महीने में ही सब ठीक हो जायगा।"

झटके से झुककर चिदम्बरम् ने अपने होंठ उसके होंठों से लगा दिये। वह भी एक क्षण तक अपने को भूलकर, उसके गले में हाथ डाले पड़ी रही। दोनों साथ-साथ जैसे हिमालय के ऊपर उड़े चले जा रहे हों, इस आत्मविभोर परिस्थिति में थे। एक क्षण ही ऐसा रहा। फिर न जाने भुवना के मन में क्या सूझा कि झटके से उठकर अलग हो गई। भय से उसका चेहरा सफेद पड़ गया था।

"मुझे क्षमा कर दीजिये, मैं छूत की बीमारी की रोगी हूँ।" बोली।

"तो क्या होगा ? इस बीमारी के रूप में ही तुम मेरे साथ रहोगी तो ?" चिदम्बरम् खड़ा हो, जाने के लिये तैयार हो गया।

भुवना उठकर, उसके दोनों पाँव पकड़कर दंडवत् लेट गई। अपना मुँह उसके पाँवों में गड़ाकर फूट-फूटकर रोने लगी। वह उसे न जाने देना चाहती थी। मजबूती से उसके पाँव पकड़ लिये।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चिदम्बरम् ने उसे पकड़कर उठा लिया। "मैं चलता हूँ, हम कल फिर मिलेंगे !" बोला।

"मेरी निशानी के रूप में इसे पहन लीजिये" कहकर भुवना ने अपनी अँगूठी उतार कर उसकी उँगली में पहना दी। "मेरी निशानी यही है, ऐसा न सोचियेगा। 'नया जीवन' पत्रिका, हम दोनों की संतान है यह बात अवश्य ध्यान में रखियेगा। मेरे लिये यही पर्याप्त है।"

एक छोटी-सी अटैची उठाकर चिदम्बरम् को पकड़ा दिया। वह कुछ वजनी थी।

"इसके अंदर मेरी डायरी है। इनमें बड़े-बड़े लोगों के संबंध की बातें हैं। समय मिले तो पढ़ लीजियेगा। आप एक पत्रकार हैं, इस नाते दे रही हूँ।"

"क्यों, अब तुम्हें इनकी आवश्यकता नहीं है ?"

"अब मुझे किसी की आवश्यकता नहीं है। मैं इस जिन्दगी का भार ढोते-ढोते थक गई हूँ।"

बाहर निकल कर भुवना चिदम्बरम् को कार में बैठा चल पड़ी। बागवान को चाभी देकर, रसोई बनाने वाली के आने पर दे देने के लिये कह दिया था। कार चिदम्बरम् के घर के सामने खड़ी हो गई।

"अंदर चलकर पिताजी और माँ से मिल लो, फिर चली जाना," चिदम्बरम् ने कहा।

"नींद के मारे मेरी आँखें मुंद रही हैं, कृपा कर मुझे जाने दीजिये;" भुवना ने बहाना बता दिया।

चिदम्बरम् अटैची लेकर उतर गया। भुवना ने उसका दायाँ हाथ पकड़कर अपने ओठों से लगा लिया, फिर अपनी डबडबाई आँखों से लगाकर, छोड़ दिया।

"जाकर आराम से सोओ ! खूब अच्छे-अच्छे स्वप्न देखना, कल मुझसे बताना। कल हम फिर मिलेंगे !" चिदम्बरम् ने कहा।

"कल ?" भुवना मुस्करा कर, तेजी से कार ले चल पड़ी। कार के ओझल हो जाने पर, चिदम्बरम् मन ही मन हँसते हुये अंदर चला गया।

रात में बड़ी देर तक चिदम्बरम् को नींद नहीं आई। वह भुवना की डायरी में खोया था। एक बज गये। वह बिस्तर पर लुढ़क तो गया किन्तु नींद न आ रही थी। जब भी नींद आती उसे भयंकर स्वप्न दिखाई पड़ते, सभी स्वप्नों में भुवना होती। कभी वह, हवाई जहाज गिर जाने के कारण, आग में जलती दिखाई पड़ती, कभी कार दुर्घटना में मरणासन्न अवस्था में दिखाई पड़ती। वह भी कितना कठोर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

था कि उसको जलते हुये खड़े-खड़े देखता रहा, उसको बचाने के लिये कुछ न कर सका था।

लगभग चार बजे के बाद उसे नींद आ गई; काफी दिन चढ़ जाने पर भी वह न उठा। उसके कमरे में रखे टेलिफोन की घंटी बज उठी। उसकी नींद टूट गई! घंटी बजती ही चली जा रही थी, जैसे उसे पूरी तरह नींद से मुक्त कर देना चाहती हो। घंटी सुनकर रामलिंगम् भी वहाँ आ गये।

चिदम्बरम् ने, टेलिफोन उठाकर कान से लगा लिया। दूसरी ओर से कोई आवाज न आ रही थी, केवल सुबक-सुबक कर रोने की आवाज ही सुनाई पड़ती थी। चिदम्बरम् की नींद पूरी तरह दूर हो गई।

"कौन, भुवना ?"

"भुवना, अम्मा की रसोइया हूँ; वे बिस्तर से उठी ही नहीं हैं, लगता है अब कभी न उठेंगी। आपको और पुलिस को फोन करने के लिये, मेरे नाम एक पत्र छोड़ गई हैं। वह फिर फूट-फूटकर रोने लगी। चिदम्बरम् सब समझ गया। "कल ?" इस प्रश्न के साथ वह कार लेकर चली गई थी।

चिदम्बरम् और रामलिंगम् टैक्सी पकड़कर, तेजी से भुवना के बँगले पहुँच गये। चिदम्बरम्, पागलों जैसा, धम्-धम् सीढ़ियाँ पार कर ऊपर पहुँच गया।

एक दिन पहले चिदम्बरम् और भुवना जिस चारपाई पर बैठे थे, उसी चारपाई पर भुवना लेटी थी। शरीर में जीवन के कोई लक्षण न थे। उसके सीने पर, जैसे माँ की छाती पर बच्चा चिपका रहता है, 'नया जीवन' की प्रति रखी थी। उसका दायाँ हाथ उसको प्यार से पकड़े हुये था। उसके पिता पास ही हैं चिदम्बरम् इस बात को भी भूल गया। उसके ऊपर गिरकर, "भुवना! भुवना! तुम चली गई भुवना ?" चिदम्बरम् चीखने लगा।

पास ही पड़ी एक शीशी को रामलिंगम् ने उठा लिया। वह नींद की गोलियों की शीशी थी। उसमें एक भी गोली न थी। पूरी गोलियाँ खाकर वह गहरी नींद, कभी न टूटने वाली नींद में सो गई थी।

मेज पर तीन पत्र पड़े थे। उनमें एक रसोइया के नाम का पत्र खुला था। बाकी दो पत्र, एक पुलिस के लिये दूसरा चिदम्बरम् के लिये था।

रामलिंगम् ने, चिदम्बरम् का कंधा पकड़ कर उसे आहिस्ते से उठाया। उसका पत्र उसे दे दिया। उन्होंने स्वयं पुलिस को सूचना दी।

आँखों से आँसू गिराते हुये, भुवना के लिखे गये पत्र को चिदम्बरम् पढ़ने लगा। उसने लिखा था :—

"मेरे जीवन के एकमात्र अधिकारी चिदम्बरम् को,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुझे कहानी लिखना नहीं आता, फिर भी लिख रही हूँ। आप जब यहाँ से जाने लगे थे मैं आपके चरणों में गिर पड़ी थी, याद है ? उसी समय मैं आपसे विदा ले चुकी थी। मैं तीन महीने पहले ही निश्चय कर चुकी थी। इसे पूरा भी कर लेती, किन्तु 'नया जीवन' का उदय इन आँखों से देखे बिना, मेरा मन इस संसार से जाने को न करता था। इस संसार में, जहाँ लोग केवल शरीर से जीते हैं, शरीर, मन, विचार और आत्मा के साथ जीने वाले आपके सान्निध्य में मैं आ सकी, मैं सचमुच बड़ी भाग्यशालिनी हूँ। जब हम कालेज में पढ़ते थे, उस समय, मेरी आँखें यदि सुन्दरेशन् के झूठे परदे से मुँद न गई होतीं तो इस समय मेरी जिन्दगी कैसी होती; इसे सोचकर ही, जाते समय मैंने आपको बुलाकर, अपने हाथों से बनाकर खिलाया था। इससे मुझे तृप्ति मिली थी।

"जो लोग मेरे ज्ञान, मेरी शिक्षा, मेरे श्रम को जानते हैं उन्हें देखने का साहस मुझमें न था। सभी पुरुष, केवल मेरी देह का सम्मान करते थे। बड़े-बड़े शिक्षाविद्, राजनीतिज्ञ, व्यापारी, उद्योगपति; अधिकारी, अनेक प्रकार के लोगों से मेरा संबंध रहा है। इनके साथ से मैं एक ही बात समझ सकी हूँ; अपने को मार्गदर्शक कहने वाले ये लोग, अभी भी शरीर से जीने वाले जानवरों के जीवन से, मानवता की ओर नहीं बढ़े हैं।

"अच्छी शिक्षा, अच्छा मन, अच्छा चिंतन, अच्छा कुल, इन सबके होते हुये भी मात्र पैसा न होने के एक कारण से मैं उजड़ी हूँ। इस देश में असीम पैसा है; संस्कारविहीन चोरों के हाथ में वह बंद पड़ा है। इस भले देश में, जिन समाज-विरोधियों को जेल के सींखचों के भीतर बंद किया जाना चाहिये, वही लोग, यहाँ बड़े बनकर शान से घूम रहे हैं।

" 'नया जीवन' जनता में राजनीतिक जागृति और संस्कार के प्रति सम्मान की भावना जगायेगा, मुझे इस बात का पूरा विश्वास है। दूसरों को बिना धोखा दिये, दूसरों का शोषण न कर हमें जीना चाहिये, यह भावना जनता में प्रचारित की जानी चाहिये।

"मैं और कहीं जा रही हूँ, ऐसा न सोचियेगा। मेरे इस शरीर से मुझे स्वयं घृणा हो गई है, इसे लेकर आपके पास आना मेरी अंतरात्मा के अनुकूल नहीं है। इस शरीर का त्याग कर, अब आपकी पत्नी बनकर आपके पास आ रही हूँ। हम अपनी संतान, 'नया जीवन' का लालन-पालन करेंगे। आपकी पत्नी ही क्यों, मैं आपके 'बच्चे' की माँ भी हूँ, मुझे इस बात का गर्व है। सभी प्राणी सुखमय जीवन व्यतीत करें, 'नया जीवन' का यही उद्देश्य है ? जनता के साथ अपराध करने वालों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

को देखकर, 'भारती' की कविता के अनुसार, हमारा बच्चा—'नया जीवन'—उनसे टकरा कर उन्हें कुचल दे, उनके मुंह में थूक दे !

"अपने माता-पिता को भी पत्र लिख दिया है, वे आयेंगे उन्हें सान्त्वना दीजियेगा। समय मिलने पर कुछ दिन के लिये मेरे गाँव हो आइयेगा।

" 'यह लड़की आपके घर, आपकी बहू बनकर आनेवाली थी; किसी कारण से वेश्या बन गई थी; मरते समय आपके बेटे को ही वरण कर आँखें मूंद ली थीं' यह अपने माता-पिता से बता दीजियेगा।

"आपके लिये क्या कहूँ ? कर्मवीर गाँधी के आप सच्चे उत्तराधिकारी हैं; पैसा और उससे भी बुरे पद की लालसा के वशीभूत न हो आप सत्य की रक्षा के लिये संघर्ष करने वाले हैं। सत्य के सामने चुनौतियाँ आ सकती हैं, किन्तु उसकी पराजय नहीं हो सकती।

देर हो रही है। आपने मुझे स्वप्न देखने के लिये कहा था। मैं आपके स्वप्न में आकर आपकी साँसों में मिल जाने के लिये तड़प रही हूँ।

आ सकती हूँ आपके पास ?
आपकी, प्राणों से भी प्रिय

भुवनेश्वरी"

भुवनेश्वरी का मुँह और उसके हाथ के स्नेहपाश में पड़े 'नया जीवन' को बारी-बारी से देखता, चिदम्बरम् आँसू ढरका रहा था।

●

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जन्म-स्थान : रामपिरुक्कूर (पुदुक्कोटे रियासत)

जन्म : २७ जून १९२२ ई० ।

शिक्षा : पिता की असामयिक मृत्यु से जैसे-तैसे हाईस्कूल तक। तदनन्तर गांधीजी के आह्वान पर स्वातन्त्र्य-आन्दोलन में पदार्पण। लिखने का शौक किशोरावस्था से ही। आगे चलकर तमिल-साहित्य के एक प्रमुख कलाकार के रूप में परिणित।

मानव-हृदय की सूक्ष्म अनुभूतियों के चित्रण का कौशल लेखक का व्यक्तिगत वैशिष्ट्य है। लेखक साहित्य के माध्यम से समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार, छल-छद्म, पाखण्ड और दम्भ का उन्मूलन करना चाहता है। देश और राष्ट्र का चतुर्मुख विकास उसका अभीष्ट है। लेखक की विभिन्न कृतियों के पढ़ने से ये विशेषताएँ पाठक के सामने मूर्तिमती हो जाएँगी। तमिल-साहित्य को आपने समृद्ध किया।

पुरस्कार : भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार साहित्य अकादमी पुरस्कार आदि।

अनुवाद : हिन्दी, अंग्रेजी, जर्मन, रूसी, चेक आदि अनेक देशी-विदेशी भाषाओं में।

निधन : १९८८ ई०।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रमुख कथा-साहित्य

कर्मभूमि	प्रेमचन्द
नसीब अपना-अपना	विमल मित्र
महाकवि कालिदास की आत्म-कथा	डॉ० जयशंकर त्रिपाठी
काले बच्चे	लालजी सिंह
कामरूप	लालजी सिंह
बहुत देर कर दी	अलीम मसरूर
दिल का पौधा	अलीम मसरूर
मंगला	अनन्त गोपाल शेवड़े
नेफा : सुन्दरी नेफा	वासुदेव वसु
चौदह फेरे	शिवानी
एक कैकेयी : पाँच मन्थरा	उर्वशी शर्मा
हँसते चेहरे : बरसते नयन	कपिलदेवप्रसाद गुप्त
ललिता (तमिल उपन्यास का अनुवाद)	अखिलन
व्याघ्र पुत्र	अखिलन
समकालीन हिन्दी कथा-लेखिकाएँ	रामकली सराफ
आखिरी हँसी	निशान्तकेतु
गांधी की काँवर	हरीन्द्र दवे
वनगंगी मुक्त है	विवेकीराय
रिपोर्टर	गिरिराज शाह
प्रतिद्वन्द्वी	गिरिराज शाह



विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri